हिन्दी गाइड

कक्षा 9

गद्य खण्ड

1 गद्य का स्वरूप एवं विकास : एक परिचय

प्रश्न 1. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं के नाम लिखिए।

उत्तर—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा प्रकाशित पत्रिकाएँ 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' और 'कविवचन सुधा' है।

प्रश्न 2. भारतेन्दु युग की प्रमुख पत्रिकाओं के नाम लिखिए, जिनसे हिन्दी-साहित्य के विकास में बहुत बड़ी सहायता मिली।

उत्तर—(1) सरस्वती, (2) नागरी प्रचारिणी पत्रिका, (3) इन्दु (4) माधुरी (5) मर्यादा (6) सुधा (7) जागरण (8) हंस (9) प्रभा (10) कर्मवीर (11) विशाल भारत।

प्रश्न 3. द्विवेदी युग की उन पत्रिकाओं के नाम लिखिए, जिनसे हिन्दी-साहित्य के विकास में बहुत बड़ी सहायता मिली।

उत्तर—सरस्वती, नागरी प्रचारिणी पत्रिका, इन्दु, माधुरी, मर्यादा, सुधा, जागरण, हंस, प्रभा, कर्मवीर, विशाल भारत आदि ने हिन्दी साहित्य के सर्वतोमुखी विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

प्रश्न 4. अच्छी जीवनी की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर—(1) प्रामाणिकता (2) तथ्यपूर्ण साहित्यिक विवरण (3) आत्मीयता (4) प्रेरणादायक स्थलों पर बल (5) रोचकता; अच्छी जीवनी की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

प्रश्न 5. जीवनी और आत्मकथा में क्या अन्तर है?

उत्तर—जीवनी में लेखक के द्वारा किसी अन्य व्यक्ति के जीवन की घटनाओं का वर्णन किया जाता है, जबकि आत्मकथा में लेखक स्वयं अपने जीवन की कथा पाठकों के समझ प्रस्तुत करता हैं।

प्रश्न 6. द्विवेदी युग के तीन साहित्य इतिहास लेखकों के नाम लिखिए।

उत्तर—(1) पद्मसिंह शर्मा (2) श्यामसुन्दर शर्मा (3) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।

प्रश्न 7. रामचन्द्र शुक्ल की गद्य की किन दो विधाओं में सर्वाधिक प्रसिद्धि है?

उत्तर—(1) आलोचना (2) निबन्ध।

प्रश्न 8. द्विवेदी युग के दो महत्त्वपूर्ण लेखकों के नाम लिखिए।

उत्तर—(1) आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी (2) सरदार पूर्णसिंह।

प्रश्न 9. हिन्दी का प्रथम मौलिक उपन्यास किसे माना जाता है?

उत्तर—सन् 1882 ई० में लाला श्रीनिवासदास द्वारा रचित 'परीक्षा गुरु' को हिन्दी का प्रथम मौलिक उपन्यास माना जाता है।

प्रश्न 10. दैनन्दिनी, रोचनामचा तथा दैनिकी किस विधा के प्रमुख पर्यायवाची हैं?

उत्तर—दैनन्दिनी, रोचनामचा तथा दैनिकी 'डायरी विधा' के प्रमुख पर्यायवाची है।

प्रश्न 11. हिन्दी नाटक के विकास में किस नाटककार का सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है? उसके द्वारा लिखित दो नाटकों के नाम लिखिए।

उत्तर—हिन्दी-नाटक के विकास में श्री जयशंकर प्रसाद का सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। उनके द्वारा लिखित दो नाटक हैं—'अजातशत्रु' तथा 'ध्रुवस्वामिनी'।

प्रश्न 12. हिन्दी के ऐतिहासिक नाटककारों एवं उनके एक-एक नाटकों के नाम लिखिए।

उत्तर—हिन्दी के प्रमुख ऐतिहासिक नाटककार एवं उनके एक-एक नाटक का नाम हैं—

(1) जयशंकर प्रसाद— चन्द्रगुप्त, (2) हरिकृष्ण प्रेमी—रक्षाबन्धन

(3) गोविन्दवल्लभ पन्त—राजमुकुट (4) सेठ गोविन्ददास — हर्ष

(5) वृन्दावनलाल वर्मा — झाँसी की रानी, (6) लक्ष्मीनारायण मिश्र—वत्सराज।

प्रश्न 13. भारतेन्दु युग की दो मुख्य विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर—भारतेन्दु युग की दो प्रमुख विशेषताएँ थी—(1) इस युग में हिन्दी गद्य का स्वरूप निर्धारित हुआ था। (2) इस युग के लेखकों में अपनी भाषा, जाति और राष्ट्र के उत्थान के लिए गहरी समर्पण भावना थी।

प्रश्न 14. भारतेन्दु युग का काल-निर्धारण कीजिए।

उत्तर—हिन्दी गद्य के विकास में सन् 1850 से 1900 ई० तक का समय भारतेन्दु युग कहलाता है।

प्रश्न 15. भारतेन्दु-मण्डल के लेखकों में से किन्हीं दो का नामोल्लेख कीजिए।

उत्तर—(1) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, (2) प्रतापनारायण मिश्र।

प्रश्न 16. भारतेन्दु के बाद ऐतिहासिक नाटक के क्षेत्र में सर्वाधिक योगदान किसका रहा?

उत्तर—भारतेन्दु के बाद नाटक के क्षेत्र में सर्वाधिक योगदान जयशंकर प्रसाद का रहा है।

प्रश्न 17. भारतीय आचार्यों द्वारा बताये गये नाटक के तत्वों के नाम लिखिए।

उत्तर—भारतीय आचार्यों ने नाटक के पाँव तत्व बताये हैं—(1) कथावस्तु, (2) नायक, (3) रस, (4) अभिनय, (5) वृत्ति।

प्रश्न 18. हिन्दी-साहित्य के दो विचारात्मक निबन्धकारों के नाम लिखिए।

उत्तर—(1) बाबू श्यामसुन्दर दास (2) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।

प्रश्न 19. विचारात्मक और भावात्मक निबन्ध में क्या अन्तर है?

उत्तर—विचारात्मक निबन्ध में बुद्धि तत्व की तथा भावात्मक निबन्ध में हृदय तत्व की प्रधानता होती है।

प्रश्न 20. हिन्दी गद्य-काव्य-लेखकों में से किन्हीं दो लेखकों के नाम लिखिए।

उत्तर—(1) वियोगी हरि तथा (2) रायकृष्ण दास; हिन्दी के दो गद्य-काव्य लेखक हैं।

प्रश्न 21. हिन्दी-गद्य की किन्हीं दो नवीन विधाओं के नाम लिखिए।

उत्तर—(1) डायरी तथा (2) रिपोर्ताज; हिन्दी गद्य की दो नवीन विधाएँ हैं।

प्रश्न 22. रेखाचित्र और संस्मरण विधाओं का अन्तर स्पष्ट कीजिए तथा दोनों की एक-एक रचना का नाम उनके लेखक के नाम सहित लिखिए।

उत्तर—रेखाचित्र में स्मृति-चित्र अधूरा भी हो सकता है, पर संस्मरण में वह पूर्ण होता है। रेखाचित्र में कल्पना का महत्त्व होता है जबकि संस्मरण में यथार्थ का।

(1) रेखाचित्र — श्रीमती महादेवी वर्मा

(2) संस्मरण — कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'।

प्रश्न 23. यात्रा-साहित्य और रिपोर्ताज के एक-एक लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—यात्रा-साहित्य के लेखक-**राहुल सांस्कृत्यायन**, रिपोर्ताज के लेखक—**विष्णु प्रभाकर**।

प्रश्न 24. प्रमुख रेखाचित्र लेखकों के नाम लिखिए।

उत्तर—श्रीमती महादेवी वर्मा, बनारसीदास चतुर्वेदी, विष्णु प्रभाकर, रामवृक्ष बेनीपुरी, कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' आदि प्रमुख रेखाचित्र-लेखक हैं।

प्रश्न 25. जयशंकर प्रसाद के बाद के प्रमुख नाटककारों के नाम लिखिए।

उत्तर—(1) लक्ष्मीनारायण मिश्र (2) हरिकृष्ण प्रेमी (3) रामकुमार वर्मा (4) सेठ गोविन्ददास (5) उदयशंकर भट्ट, (6) गोविन्दवल्लभ पन्त तथा (7) उपेन्द्रनाथ अश्क।

गद्य साहित्य के विकास पर आधारित

प्रश्न 1. गद्य का अर्थ लिखिए।

उत्तर—गद्य हमारे दैनिक जीवन में प्रयुक्त होने वाली भाषा का नाम है। इसकी विषयवस्तु हमारी बोध-वृत्ति पर आधारित होती है तथा इसमें किसी विषय को विस्तार से कहने की प्रवृत्ति होती है। यह वास्तविकता और व्यावहारिकता से ओत-प्रोत होता है।

प्रश्न 2. गद्य और पद्य (काव्य) में अन्तर बताइए।

उत्तर—गद्य मस्तिष्क के तर्कप्रधान चिन्तन की उपज है। छन्दबद्ध, भावपूर्ण तथा ओजयुक्त रचनाएँ पद्य (काव्य) कहलाती हैं। गद्य में विस्तार, वास्तविकता तथा व्यावहारिकता अधिक होती है, जबकि काव्य में संकेत-रूप में बात कही जाती है। इसमें काल्पनिकता का प्राधान्य होता है।

प्रश्न 3. गद्य का प्रथम विकास किस रूप में होता है?

उत्तर—गद्य का प्रथम विकास सामान्य बोलचाल की भाषा के रूप में होता है।

प्रश्न 4. भाषा-रूपों के विकास की दृष्टि से गद्य की कितनी कोटियाँ उपलब्ध हैं?

उत्तर—भाषा—रूपों के विकास की दृष्टि से गद्य की चार कोटियाँ—(1) वर्णनात्मक, (2) विवेचनात्मक, (3) भावात्मक, (4) विवरणात्मक—उपलब्ध हैं।

प्रश्न 5. गद्य का महत्त्व समझाइए।

उत्तर—गद्य के द्वारा हम अपने विचारों या भावों को सरल या सहज भाषा में अभिव्यक्त करते हैं। ज्ञान-विज्ञान आदि सभी क्षेत्रों की सफल, सरल और बोधगम्य अभिव्यक्ति का माध्यम गद्य ही है।

प्रश्न 6. हिन्दी गद्य के प्राचीनतम प्रयोग किस भाषा में मिलते हैं?

उत्तर—हिन्दी गद्य के प्राचीनतम प्रयोग **राजस्थानी** और **ब्रज भाषा** में मिलते हैं।

प्रश्न 7. प्राचीन राजस्थानी गद्य कब और किन रूपों में मिलता है?

उत्तर—राजस्थानी गद्य हमें दसवीं शताब्दी के दानपत्रों, पट्टे—परवानों, टीकाओं व अनुवाद—ग्रन्थों के रूप में देखने को मिलता है।

प्रश्न 8. ब्रज भाषा गद्य का सूत्रपात किस वर्ष के आसपास हुआ?

उत्तर—ब्रज भाषा गद्य का सूत्रपात संवत् 1400 वि० (सन् 1343 ई०) के आसपास हुआ।

प्रश्न 9. ब्रज भाषा गद्य के दो प्रमुख लेखकों तथा उनकी एक-एक रचनाओं के नाम लिखिए।

उत्तर—(1) गोस्वामी बिट्ठलनाथ, रचना—'शृंगार रस—मण्डन'।

(2) गोकुलनाथ, रचना—'चौरासी वैष्णवन की वार्त्ता' और 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्त्ता'।

प्रश्न 10. खड़ीबोली गद्य के प्रथम दर्शन किस ग्रन्थ में होते हैं?

या, खड़ीबोली गद्य के प्रथम लेखक और उसकी प्रथम रचना का नाम लिखिए।

उत्तर—खड़ीबोली गद्य के प्रथम दर्शन कवि गंग द्वारा लिखित **'चंद छंद बरनन की महिमा'** नामक ग्रन्थ में होते हैं। अत: **कवि गंग** को खड़ीबोली गद्य का प्रथम लेखक और उनकी रचना **'चंद छंद बरनन की महिमा'** को खड़ीबोली गद्य की प्रथम रचना माना गया है। कुछ विद्वान् जटमल कृत **'गोरा बादल की कथा'** को खड़ीबोली गद्य की प्रथम रचना मानते हैं।

प्रश्न 11. कवि गंग किसके दरबारी कवि थे?

उत्तर—कवि गंग अकबर के दरबारी कवि थे।

प्रश्न 12. सदल मिश्र और मुंशी इंशा अल्ला खाँ की भाषा का अन्तर बताइए।

उत्तर—सदल मिश्र की भाषा में पूर्वी क्षेत्र के शब्दों का अधिक प्रयोग हुआ है, जबकि मुंशी इंशा अल्ला खाँ की भाषा में ठेठ खड़ीबोली के दर्शन होते हैं।

प्रश्न 13. रामचन्द्र शुक्ल ने किस लेखक की भाषा को 'रंगीन और चुलबुली' कहा है?

उत्तर—रामचन्द्र शुक्ल ने मुंशी इंशा अल्ला खाँ की भाषा को 'रंगीन और चुलबुली' कहा है।

प्रश्न 14. हिन्दी गद्य के प्रसार में ईसाई पादरियों का क्या योगदान रहा था?

उत्तर—ईसाई पदारियों ने अपने धर्म-प्रचार के लिए जनसाधारण में प्रचलित खड़ीबोली को अपनाया और बाइबिल का हिन्दी में अनुवाद कर उसे उत्तर भारत के विभिन्न स्थानों पर वितरित किया। इस प्रकार ईसाई धर्म के साथ-साथ हिन्दी का प्रचार-प्रसार भी होता रहा।

प्रश्न 15. राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द' तथा राजा लक्ष्मण सिंह की भाषा-शैली का अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—भारतेन्दु से पूर्व **राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द'** ने अरबी-फारसी मिश्रित खड़ी बोली को तथा **राजा लक्ष्मण सिंह** ने ठेठ संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली को अपनाया। इन दोनों की भाषा-शैली का यही मुख्य अन्तर है।

निबन्ध

प्रश्न 1. निबन्ध किसे कहते हैं?

उत्तर—निबन्ध उस गद्य-विधा को कहते हैं, जिससें किसी विषय पर सभी दृष्टियों से प्रस्तुत किये गये विचारों का मौलिक और स्वतन्त्र रूप में विवेचन; विचारपूर्ण, विवरणात्मक और विस्तृत रूप में किया गया हो। इसमें लेखक स्वतन्त्रतापूर्वक अपने विचारों तथा भावों को प्रकट करता है।

प्रश्न 2. हिन्दी निबन्ध-लेखन की विभिन्न शैलियों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—हिन्दी निबन्ध-लेखन में वर्णनात्मक, विवरणात्मक तथा भावात्मक शैलियों को अपनाया गया है।

प्रश्न 3. विचारात्मक निबन्ध और वर्णनात्मक निबन्ध में अन्तर बताइए।

उत्तर—विचारात्मक निबन्ध में तर्कपूर्ण विवेचन, विश्लेषण एवं खोजपूर्ण अध्ययन की प्रधानता होती है, किन्तु वर्णनात्मक निबन्ध में लेखक किसी वस्तु, घटना या दृश्य का वर्णन निरीक्षण के आधार पर करता है।

प्रश्न 4. प्रतापनारायण मिश्र द्वारा रचित दो प्रसिद्ध निबन्धों के नाम लिखिए।

उत्तर—प्रतापनारायण मिश्र द्वारा रचित दो प्रसिद्ध निबन्ध हैं—(1) रिश्वत तथा (2) समझदार की मौत।

प्रश्न 5. विचारात्मक और भावात्मक निबन्ध में क्या अन्तर है?

उत्तर—विचारात्मक निबन्ध में बुद्धि तत्व की तथा भावात्मक निबन्ध में हृदय तत्व की प्रधानता होती है।

प्रश्न 6. विचारात्मक तथा भावात्मक निबन्ध-लेखकों में से एक-एक निबन्ध-लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—(1) रामचन्द्र शुक्ल-विचारात्मक निबन्ध-लेखक तथा (2) वियोगी हरि-भावात्मक निबन्ध-लेखक।

प्रश्न 7. हिन्दी-साहित्य के दो विचारात्मक निबन्धकारों के नाम लिखिए।

उत्तर—(1) बाबू श्यामसुन्दर दास तथा (2) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य के दो विचारात्मक निबन्धकार हैं।

प्रश्न 8. निबन्ध के विकास में योगदान करने वाले किन्हीं दो निबन्धकारों के नाम बताइए।

उत्तर—(1) आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी तथा (2) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल; हिन्दी निबन्ध के विकास में योगदान करने वाले दो निबन्धकार हैं।

प्रश्न 9. भारतेन्दु युग के दो प्रमुख निबन्धकारों के नाम लिखिए।

उत्तर—भारतेन्दु युग के दो प्रमुख निबन्धकारों के नाम हैं—(1) बालकृष्ण भट्ट और (2) प्रतापनारायण मिश्र।

प्रश्न 10. वियोगी हरि की दो धार्मिक एवं उपदेशात्मक रचनाओं के नाम लिखिए।

उत्तर—(1) मन्दिर प्रवेश तथा (2) विश्व धर्म; वियोगी हरि की दो धार्मिक एवं उपदेशात्मक रचनाएँ हैं।

नाटक

प्रश्न 1. नाटक किसे कहते हैं?

उत्तर—नाटक साहित्य की एक से अधिक अंकों वाली वह दृश्य विधा है, जो रंगमंच पर अभिनय द्वारा प्रस्तुत करने की दृष्टि से लिखी जाती है तथा पात्रों एवं उनके संवादों पर आधारित होती है।

प्रश्न 2. भारतीय आचार्यों द्वारा बताये गये नाटक के तत्व लिखिए।

उत्तर—भारतीय आचार्यों ने नाटक के पाँच तत्व बताये हैं—(1) कथावस्तु, (2) नायक, (3) रस, (4) अभिनय एवं (5) वृत्ति।

प्रश्न 3. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के चार नाटकों के नाम लिखिए।

उत्तर—(1) भारत दुर्दशा, (2) सत्य हरिश्चन्द्र, (3) अँधेर नगरी, (4) वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति।

प्रश्न 4. भारतेन्दु युग के प्रमुख नाटककारों के नाम लिखिए।

उत्तर—(1) राधाचरण गोस्वामी, (2) पं० बालकृष्ण भट्ट, (3) बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' एवं (4) किशोरीलाल गोस्वामी भारतेन्दु युग के प्रमुख नाटककार हैं।

प्रश्न 5. भारतेन्दु के बाद नाटक के क्षेत्र में सर्वाधिक योगदान किसका रहा?

उत्तर—भारतेन्दु के बाद नाटक के क्षेत्र में सर्वाधिक योगदान जयशंकर प्रसाद का रहा।

प्रश्न 6. हिन्दी के प्रमुख नाटककारों के नाम लिखिए।

उत्तर—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, जयशंकर प्रसाद, वृन्दावनलाल वर्मा, लक्ष्मीनारायण मिश्र, सेठ गोविन्ददास, विष्णु प्रभाकर, हरिकृष्ण प्रेमी, उदयशंकर भट्ट, उपेन्द्रनाथ 'अश्क' आदि हिन्दी के प्रमुख नाटककार हैं।

प्रश्न 7. हिन्दी-नाटक के विकास में किस नाटककार का सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है? उसके द्वारा लिखित दो नाटकों के नाम लिखिए।

उत्तर—हिन्दी-नाटक के विकास में श्री जयशंकर प्रसाद का सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। उनके द्वारा लिखित दो नाटक हैं—'अजातशत्रु' और 'ध्रुवस्वामिनी'।

प्रश्न 8. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटक किन विषयों पर आधारित हैं?

उत्तर—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटक राष्ट्रप्रेम, धर्म, राजनीति, समाज-सुधार आदि विषयों पर आधारित हैं। इनके नाटकों में प्रेमतत्व की प्रमुखता है।

प्रश्न 9. जयशंकर प्रसाद के नाटकों के क्या विषय हैं?

उत्तर—प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति का समन्वय, देशप्रेम, आधुनिक युग की समस्याएँ, मानव-मन का द्वन्द्व आदि जयशंकर प्रसाद के नाटकों के प्रमुख विषय हैं।

प्रश्न 10. प्रसाद युग के किन्हीं दो नाटककारों व उनकी एक-एक रचनाओं के नाम लिखिए।

उत्तर—**(1) जयशंकर प्रसाद**—अजातशत्रु तथा **(2) हरिकृष्ण प्रेमी**—रक्षाबन्धन।

कहानी

प्रश्न 1. कहानी किसे कहते हैं?

उत्तर—कहानी गद्य की वह विधा है, जो छोटी होते हुए भी बड़े-से-बड़े भाव की व्यंजना करने में समर्थ होती है। इसका आरम्भ तथा अन्त कलात्मक व प्रभावपूर्ण होता है। यह गद्य-विधा अपनी यथार्थपरकता और मनोवैज्ञानिकता के कारण पाठकों को अत्यधिक प्रभावित करती है।

प्रश्न 2. आधुनिक साहित्य की सबसे अधिक लोकप्रिय विधा का नाम लिखिए।

उत्तर—आधुनिक कहानी (1) रोचकता, (2) कलात्मकता, (3) संवेदनशीलता, (4) संक्षिप्तता, (5) प्रभावोत्पादकता, (6) भावात्मकता आदि गुणों के कारण साहित्य की सर्वाधिक लोकप्रिय विधा मानी जाती है।

प्रश्न 3. हिन्दी की प्रथम आधुनिक कहानी का नाम लिखिए।

उत्तर—हिन्दी की प्रथम आधुनिक कहानी किशोरीलाल गोस्वामी द्वारा रचित **'इन्दुमती'** को माना जाता है।

प्रश्न 4. आधुनिक कहानी किस उद्देश्य से लिखी जाती है?

उत्तर—आधुनिक कहानी के लिखे जाने का मुख्य उद्देश्य पाठकों के मनोरंजन के साथ-साथ किसी पात्र, घटना, भाव या संवदेना की मार्मिक अभिव्यंजना करना है।

प्रश्न 5. हिन्दी-कथा-साहित्य में युगान्तर उपस्थित करने वाले कथाकार कौन थे?

उत्तर—छात्र स्वयं करें।

प्रश्न 6. 'मानसरोवर' में किसकी रचनाएँ संकलित हुई हैं?

उत्तर—प्रेमचन्द की समस्त कहानियों का संकलन-प्रकाशन 'मानसरोवर' के आठ भागों में किया गया है।

प्रश्न 7. भारतेन्दु युग के दो कहानीकारों और उनकी रचनाओं के नाम लिखिए।

उत्तर—भारतेन्दु युग के दो कहानीकारों के नाम हैं—(1) अम्बिकादत्त व्यास तथा (2) चण्डीप्रसाद सिंह। इनकी रचनाओं के नाम क्रमश: 'कथा-कुसुम कलिका' तथा 'हास्य रतन' हैं।

प्रश्न 8. विषय के आधार पर कहानी कितने प्रकार की होती है?

उत्तर—विषय की प्रधानता के आधार पर कहानी चार प्रकार की होती है—(1) घटनाप्रधान, (2) चरित्रप्रधान,
(3) भावप्रधान तथा (4) वातावरणप्रधान।

प्रश्न 9. द्विवेदी युग के चार प्रसिद्ध कहानीकारों के नाम लिखिए।

या द्विवेदी युग के दो कहानीकारों के नाम लिखिए।

उत्तर—(1) प्रेमचन्द, (2) चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी', (3) जयशंकर प्रसाद, (4) विश्वम्भरनाथ 'कौशिक'; द्विवेदी युग के चार प्रसिद्ध कहानीकार हैं।

प्रश्न 10. प्रेमचन्द की प्रमुख कहानियों के नाम लिखिए।

उत्तर—ईदगाह, पूस की रात, शतरंज के खिलाड़ी, बड़े भाई साहब, कफन, मन्त्र, पंच परमेश्वर आदि प्रेमचन्द की प्रमुख कहानियाँ हैं।

उपन्यास

प्रश्न 1. उपन्यास का व्युत्पत्तिपरक अर्थ बताइए।

उत्तर—'उपन्यास' शब्द संस्कृत भाषा के 'उपन्यस्त' शब्द से बना है, जिसका अर्थ होता है—सामने रखा हुआ। इस प्रकार मानव-जीवन, समाज या इतिहास के यथार्थ सत्य को संवाद एवं दृश्यात्मक घटनाओं पर आधारित चित्रण के माध्यम से पाठकों के सम्मुख यथार्य रूप से प्रस्तुत करने वाली विधा ही उपन्यास कहलाती है।

प्रश्न 2. उपन्यास के कौन-कौन-से प्रमुख तत्व हैं?

उत्तर—(1) कथावस्तु, (2) चरित्र-चित्रण, (3) कथोपकथन या संवाद, (2) भाषा-शैली, (5) देशकाल अथवा वातावरण तथा (6) उद्देश्य; उपन्यास के छ: प्रमुख तत्व हैं।

प्रश्न 3. विषय के आधार पर हिन्दी उपन्यास कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर—विषय के आधार पर हिन्दी उपन्यासों को (1) सामाजिक, (2) ऐतिहासिक, (3) आंचलिक, (4) मनोवैज्ञानिक, (5) पौराणिक, (6) राजनीतिक, (7) रहस्यात्मक आदि भागों में विभक्त किया जा सकता है।

प्रश्न 4. प्रेमचन्द के चार उपन्यासों के नाम बताइए।

उत्तर—प्रेमचन्द द्वारा लिखित चार प्रमुख उपन्यास हैं—(1) गोदान, (2) गबन, (3) सेवासदन तथा (4) निर्मला।

प्रश्न 5. प्रेमचन्द के उपन्यास किन विषयों पर आधारित हैं?

उत्तर—प्रेमचन्द के उपन्यास दीन-हीन, किसान-मजदूरों, नारी-उद्धार, समाज-सुधार, राष्ट्रीय-चेतना आदि विषयों पर आधारित हैं।

प्रश्न 6. भारतेन्दु युग के दो उपन्यासकारों और उनकी एक-एक रचना का नाम लिखिए।

उत्तर—भारतेन्दु युग के दो उपन्यासकार और उनकी एक-एक रचनाएँ हैं—(1) लाला श्रीनिवास-दास; रचना—परीक्षा-गुरु तथा (2) बालकृष्ण भट्ट; रचना—नूतन ब्रह्मचारी।

प्रश्न 7. हिन्दी के प्रथम मौलिक उपन्यास का नाम बताइए।

उत्तर—सन् 1882 ई० में लाला श्रीनिवासदास द्वारा रचित 'परीक्षा गुरु' को हिन्दी का प्रथम मौलिक उपन्यास माना जाता है।

प्रश्न 8. जयशंकर प्रसाद के दो उपन्यासों के नाम लिखिए।

उत्तर—(1) तितली तथा (2) कंकाल जयशंकर प्रसाद के दो उपन्यास हैं। 'इरावती' इनका तीसरा उपन्यास है, जो पूरा नहीं हो सका।

प्रश्न 9. देवकीनन्दन खत्री के एक तिलिस्मी उपन्यास का नाम लिखकर उनके युग का उल्लेख भी कीजिए।

उत्तर—**उपन्यास**—चन्द्रकान्ता। **युग**—भारतेन्दु।

प्रश्न 10. हिन्दी के प्रमुख सामाजिक उपन्यासकारों के नाम लिखिए।

उत्तर—मुंशी प्रेमचन्द, जयशंकर प्रसाद, वृन्दावनलाल वर्मा, आचार्य चतुरसेन शास्त्री, विश्वम्भरनाथ 'कौशिक' आदि हिन्दी के प्रमुख सामाजिक उपन्यासकार हैं।

पत्र-पत्रिकाएँ

प्रश्न 1. भारतेन्दु युग की प्रमुख पत्रिकाओं के नाम लिखिए।

उत्तर—भारतेन्दु युग की प्रमुख पत्रिकाओं के नाम निम्नलिखित हैं—

(1) ब्राह्मण—प्रतापनारायण मिश्र द्वारा सम्पादित मासिक पत्र।

(2) हिन्दी प्रदीप—बालकृष्ण भट्ट द्वारा सम्पादित।

(3) आनन्द कादम्बिनी—बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' द्वारा सम्पादित।

प्रश्न 2. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं के नाम लिखिए।

उत्तर—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा प्रकाशित पत्रिकाएँ **'हरिश्चन्द्र मैगजीन'** और **'कविवचन सुधा'** हैं।

प्रश्न 3. हिन्दी की उन पत्रिकाओं के नाम लिखिए, जिनसे हिन्दी-साहित्य के विकास में बहुत सहायता मिली।

उत्तर—(1) सरस्वती, (2) नागरी प्रचारिणी पत्रिका, (3) इन्दु, (4) माधुरी, (5) मर्यादा, (6) सुधा, (7) जागरण, (8) हंस, (9) प्रभा, (10) कर्मवीर, (11) विशाल भारत।

प्रश्न 4. 'काशी नागरी प्रचारिणी' पत्रिका के सम्पादक का नाम लिखिए।

उत्तर—काशी नागरी प्रचारिणी पत्रिका के सम्पादक का नाम बाबू श्यामसुन्दर दास है।

प्रश्न 5. 'हंस' पत्रिका के संस्थापक का नाम बताइए।

उत्तर—मुंशी प्रेमचन्द 'हंस' पत्रिका के संस्थापक थे।

प्रश्न 6. रामवृक्ष बेनीपुरी द्वारा सम्पादित दो पत्रिकाओं के नाम लिखिए।

उत्तर—रामवृक्ष बेनीपुरी द्वारा सम्पादित पत्रिकाएँ हैं—(1) तरुण भारत तथा (2) कर्मवीर।

प्रश्न 7. हिन्दी की किसी साहित्यिक पत्रिका का नाम तथा उसके सम्पादक का नाम लिखिए।

उत्तर—'सरस्वती' का प्रथम प्रकाशन सन् 1900 ई० में हुआ। एक वर्ष तक इसका सम्पादन पाँच सम्पादकों के एक मण्डल द्वारा किया गया, जिसके एक सम्पादक बाबू श्यामसुन्दर दास थे। सन् 1901–02 ई० में इसका सम्पादन केवल बाबू श्यामसुन्दर दास द्वारा किया गया। सन् 1903 से 1920 ई० तक सम्पादन महावीरप्रसाद द्विवेदी ने किया।

प्रश्न 8. 'सरस्वती' पत्रिका के सर्वाधिक प्रसिद्ध सम्पादक का नाम बताइए।

उत्तर—आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी।

प्रश्न 9. आत्मकथा की किन्हीं दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—(1) आत्मकथाएँ मार्गदर्शक और प्रेरक होती हैं तथा (2) आत्मकथाओं में लेखक के अन्तरंग जीवन का पूर्ण आत्मीयता के साथ रोचक शैली में प्रस्तुतीकरण होता है।

प्रश्न 10. अच्छी जीवनी की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर—(1) प्रामाणिकता, (2) तथ्यपूर्ण साहित्यिक विवरण, (3) आत्मीयता, (4) प्रेरणादायक स्थानों पर बल, (5) रोचकता; अच्छी जीवनी की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

❑

1

बात

(पं० प्रतापनारायण मिश्र)

परीक्षापयोगी प्रश्न

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. प्रतापनारायण मिश्र द्वारा रचित एक निबन्ध संग्रह और एक नाटक का नाम बताइए।

उत्तर—**निबन्ध संग्रह**—समझदार की मौत, **नाटक**—हठी हम्मीर

प्रश्न 2. प्रतापनारायण मिश्र द्वारा रचित दो नाटकों के नाम लिखिए।

उत्तर—(1) हठी हम्मीर (2) भारत दुर्दशा, प्रतापनारायण मिश्र द्वारा रचित नाटक है।

प्रश्न 3. प्रतापनारायाण मिश्र की 'बात' किस भाषा-शैली में लिखी हुई है?

उत्तर—'बात' मिश्र जी की हास्य-व्यंग्य प्रधान शैली; जो इनकी प्रतिनिधि शैली कही जाती है, के अन्तर्गत आने वाले प्रसिद्ध निबन्धों में से एक है इनकी भाषा प्रवाहयुक्त, सरल एवं मुहावरेदार है।

प्रश्न 4. प्रतापनारायण मिश्र ने किस प्रसिद्ध मासिक पत्र का सम्पादन किया?

उत्तर—प्रतापनारायण मिश्र ने ब्राह्मण एवं हिन्दुस्तान पत्र का सम्पादन किया।

प्रश्न 5. प्रतापनारायण मिश्र की भाषा की दो विशेषताएँ लिखिएँ।

उत्तर—प्रतापनारायण मिश्र की भाषा प्रवाहयुक्त, मुहावरेदार और सुबोध है तथा भाषा का चुटीलापन मन पर सीधा प्रभाव डालता है।

प्रश्न 6. प्रतापनारायण मिश्र द्वारा रचित दो प्रसिद्ध निबन्धों के नाम लिखिए।

उत्तर—प्रतापनारायण मिश्र द्वारा रचित दो प्रसिद्ध निबन्ध हैं—(1) रिश्वत तथा (2) समझदार की मौत।

प्रश्न 7. आधुनिक हिन्दी-निर्माताओं की वृहत्त्रयी में किन लेखकों को गिना जाता है?

उत्तर—आधुनिक हिन्दी-निर्माताओं की वृहत्त्रयी में भारतेन्दु हरिचन्द्र, बालकृष्ण भट्ट और प्रतापनाराण मिश्र की गणना होती है।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. प्रतापनारायण मिश्र का जीवन-परिचय एवं इनकी कृतियों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—**जीवन-परिचय :** प्रतापनारायण मिश्र आधुनिक हिन्दी गद्य के निर्माताओं में प्रमुख हैं। इनका जन्म उन्नाव जिले के 'बैजे' गाँव में सन् 1956 ई० में हुआ था। इनके पिता संकटाप्रसाद मिश्र अच्छे ज्योतिषी थे। इनके जन्म के कुछ समय पश्चात् इनके पिता सपरिवार कानपुर में आकर रहने लगे थे। इसलिए इनकी प्रारम्भिक शिक्षा कानपुर में हुई। इनके पिता इन्हें पैतृक व्यवसाय में लगाना चाहते थे, परन्तु फक्कड़, मनमौजी और मस्त स्वभाव के मिश्र जी का मन नीरस ज्योतिष में न रमा। ये स्कूली शिक्षा का बन्धन भी स्वीकार न कर सके; अत: घर पर ही स्वाध्याय द्वारा इन्होंने संस्कृत, उर्दू, फारसी, अंग्रेजी तथा बाँग्ला भाषाओं का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया।

मिश्र जी विपुल प्रतिभा और विविध रुचियों के धनी थे। साहित्यकार होने के साथ-साथ ये सामाजिक जीवन से भी जुड़े हुए थे। ये हाजिर-जवाबी और विनोदी स्वभाव के लिए प्रसिद्ध थे। भारतेन्दु जी को ये अपना गुरु और आदर्श मानते थे। इन्होंने सदा हिन्दू और हिन्दुस्तान का समर्थन किया और नवजागरण का सन्देश घर-घर तक पहुँचाने के लिए सन् 1883 ई० में 'ब्राह्मण' नामक पत्र निकालना आरम्भ किया, जिसे घाटा उठाकर भी ये वर्षों

तक चलाते रहे। सन् 1894 ई० में 38 वर्ष की अल्प आयु में ही इनका स्वर्गवास हो गया।

प्रमुख कृतियाँ—नाटक—हठी हम्मीर, कलि-कौतुक, भारत दुर्दशा, गौ संकट।

पद्य-नाटक— संगीत शाकुन्तल। निबन्ध **संग्रह-निबन्ध** नवनीत, प्रताप पीयूष तथा प्रताप समीक्षा। **प्रहसन**-ज्वारी-जुआरी तथा समझदार की मौत। **काव्य-रचनाएँ एवं काव्य-संग्रह-मन** की लहर, शृंगार-विलास, लोकोक्ति-शतक, प्रेम-पुष्पावली, दंगल खण्ड, तृप्यन्ताम, ब्राडला-स्वागत मानस-विनोद, शैव-सर्वस्व, प्रताप-लहरी, प्रताप संग्रह, रसखान, शतक। इनकी सभी रचनाओं का संग्रह 'प्रताप नारायण मिश्र ग्रन्थावली' नाम से प्रकाशित किया गया है। इनके अतिरिक्त मिश्र जी ने 10 से अधिक उपन्यास, जीवन-चरित्र और नीति ग्रन्थों के अनुवाद भी किये हैं।

साहित्य में स्थान—श्री प्रतापनारायण मिश्र आधुनिक हिन्दी-गद्य निर्माताओं की वृहत्त्रयी में से एक हैं और भारतेन्दु युग के साहित्यकारों में इनका महत्त्वपूर्ण स्थान है। स्मरणीय है कि मिश्र जी ने कम उम्र में ही अपनी प्रतिभा व लगन से उस युग में महत्त्वपूर्ण स्थान बना लिया था।

प्रश्न 2. निम्नलिखित अवतरणों के आधार पर उनके साथ दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(1) यदि हम वैद्य होते तो कफ और पित्त के सहवर्ती बात की व्याख्या करते तथा भूगोल-वेत्ता होते तो किसी देश के जलबात का वर्णन करते, किन्तु दोनों विषयों में से हमें एक बात कहने का भी प्रयोजन नहीं है। हम तो केवल उसी बात के ऊपर दो-चार बातें लिखते हैं, जो हमारे-तुम्हारे संभाषण के समय मुख से निकल-निकल के परस्पर हृदयस्थ भाव को प्रकाशित करती रहती है।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के गद्य 'खण्ड' से संकलित है एवं पं० प्रतापनारायण मिश्र द्वारा लिखित 'बात' शीर्षक निबन्ध से अवतरित है।

(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—प्रतापनारायण मिश्र जी अपनी हास्य-विनोद से ओत-प्रोत शैली में कहते हैं कि वे बातचीत अर्थात् बोलने के महत्त्व पर ही कुछ लिख रहे हैं। वैद्य लोग जिस कफ, पित्त और वायु-विकार के सम्बन्ध में बात कर रोग का निदान करते हैं, उस 'बात' पर उन्हें विचार प्रकट नहीं करना हैं। भूगोल के जानकार जिस जलवायु (जल-बात) की बात करते हैं, उस पर भी उन्हें कुछ नहीं लिखना है।

(iii) लेखक किस 'बात' के बारे में व्याख्या करना चाहता है?

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने 'बात' शब्द का विभिन्न अर्थों में प्रयोग कर अपने शब्द-कौशल और चिकित्सा शास्त्र, भूगोल एवं साहित्य सम्बन्धी ज्ञान को प्रकट करते हुए सम्भाषण (बातचीत) के महत्त्व पर प्रकाश डाला है।

(2) सच पूछिये तो इस बात की भी क्या ही बात है, जिसके प्रभाव से मानव जाति समस्त जीवधारियों की शिरोमणि (अशरफ-उल मखलूकात) कहलाती है। शुकसारिकादि पक्षी केवल थोड़ी-सी समझने योग्य बाते उच्चरित कर सकते हैं, इसी से अन्य नभचारियों की अपेक्षा आद्रत समझे जाते हैं। फिर कौन न मानेगा कि बात की बड़ी बात है। हाँ, बात की बात इतनी बड़ी है कि परमात्मा को लोग निराकार कहते हैं तो भी इसका सम्बन्ध उसके साथ लगाये रहते हैं। वेद, ईश्वर का वचन हैं; कुरआनशरीफ कलामुल्लाह है, होली बाइबिल वर्ड ऑफ गॉड है।

(i) उपयुक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के गद्य 'खण्ड' से संकलित है एवं पं० प्रतापनारायण मिश्र द्वारा लिखित 'बात' शीर्षक निबन्ध से अवतरित है।

(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—लेखक का कहना है कि भले ही ईश्वर निराकार है, परन्तु वह भी बात करता है। निराकार का कोई आकार-प्रकार नहीं होता; वह न तो सुन सकता हैं और न ही बात कर सकता है। पर लोग मानते हैं कि वेदों में जितनी बातें लिखी है, वे सब ईश्वर की कही हुई बातें हैं। इसी प्रकार कुरान और बाइबिल में भी सब ईश्वर की कहीं बातें हैं।

(iii) 'अशरफ-उल मखलूकात' क्या है? किसके प्रभाव से मानव अशरफुल मखलूकात कहलाते हैं?

उत्तर—'अशरफुल मखलूकात' अरबी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है—समस्त जीवधारियों में सर्वोपरि। बातचीत करने का गुण बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसी गुण के कारण ही मनुष्य अशरफुल मखलूकात कहलाते हैं।

(3) निराकार शब्द का अर्थ श्री शालिग्राम शिला है, जो उसकी श्यामता का द्योतन करती है अथवा योगाभ्यास का आरम्भ करने वाले को आँखे मूँदने पर जो कुछ पहले दिखाई देता है, वह निराकार अर्थात् बिल्कुल काला रंग है। सिद्धान्त यह है कि रंग-रूपरहित को सब रंग-रंजित एवं अनेक रूपसहित ठहरावेंगे, किन्तु कानों अथवा प्राणों व दोनों को प्रेम-रस से सिंचित करने वाली उसकी मधुर मनोहर बातों के मजे से अपने को वंचित न रहने देंगे।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक हिन्दी' के गद्य 'खण्ड' से संकलित है एवं पं० प्रतापनारायण मिश्र द्वारा लिखित 'बात' शीर्षक निबन्ध से अवतरित है।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—विद्वान लेखक का कहना है कि निराकार ब्रह्म रंग-रूप से रहित है और लोग निराकार ईश्वर की मधुर-मनोहर बातों का आनन्द कानों की सहायता से या जीवन्त होने से या दोनों से उठा ही लेते हैं। आशय यह है कि वे उस ईश्वर के सम्बन्ध में की गयी बातचीत अर्थात् बतरस के आनन्द से स्वयं को अलग नहीं होने देते।

(iii) प्रस्तुत गद्यांश में निराकार के सम्बन्ध में क्या कहा गया है?

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश में कहा गया है कि निराकार ब्रह्म के उपासक भगवान विष्णु की आराधना करते हैं क्योंकि योगभ्यास का आरम्भ करने पर साधक जब अपने नेत्र बन्द करता है, तब उसे सर्वप्रथम काला रंग ही दिखाई देता है जो कि निराकार का प्रतीक है।

(4) वचन, कलाम और वर्ड बात ही के पर्याय है, जो प्रत्यक्ष मुख के बिना स्थिति नहीं कर सकती। पर बात की महिमा के अनुरोध से सभी धर्मावलम्बियों ने 'बिन बानी वक्ता जड़ जोगी' वाली बात मान रखी है। यदि कोई न माने तो लाखों बातें बना के मनाने पर कटिबद्ध रहते हैं। यहाँ तक कि प्रेम सिद्धान्ती लोग निरवयव नाम से मुँह बिचकावेंगे। 'अपाणि जवनो ग्रहीता' पर हठ करने वाले को यह कह के बातों में उड़ावेंगे कि 'हम लूले-लँगडे ईश्वर को नहीं मान सकते, हमारा प्यारा तो कोटि काम सुन्दर श्याम वर्ण विशिष्ट है,

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के गद्य 'खण्ड' से संकलित है एवं पं० प्रतापनारायण मिश्र द्वारा लिखित 'बात' शीर्षक निबन्ध से अवतरित है।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—व्याख्या—श्री प्रतापनारायण मिश्र जी ने कहा है कि प्रेम-सिद्धान्ती लोग निराकार के नाम से कदापि सन्तुष्ट नहीं होंगे, अपितु 'बिना पैरो के चलने वाले और बिना हाथों के ग्रहण करने वाले ईश्वर को वो लूला-लँगडा बताकर मान्यता नहीं देंगे। वे निराकार के उपासकों से कहेंगे कि हमारा प्यारा ईश्वर तो करोड़ो कामदेवो से भी सुन्दर और साँवले रंग का है।

(iii) वचन, कलाम और वर्ड से क्या आशय है? सभी धर्मावलम्बियों ने कौन-सी बात मान रखी है?

उत्तर—वचन, कलाम और वर्ड तीनों का आशय एक ही शब्द 'बात' से है, जिनकी स्थिति मुख के बिना सम्भव ही नहीं है। सभी धर्मावलम्बियों ने यह बात मान रखी है कि ''ईश्वर वाणी के बिना भी बहुत कुछ कह देता है।''

(5) जब परमेश्वर तक बात का प्रभाव पहुँचा हुआ है तो हमारी कौन बात रही? हम लोगों के तो 'गात माँहि बात करामात है।' नाना शास्त्र, पुराण, इतिहास, काव्य, कोश इत्यादि सब बात ही के फैलाव हैं, जिनके मध्य एक-एक बात ऐसी पायी जाती है, जो मन, बुद्धि, चित्त को अपूर्व दशा में ले जाने वाली अथवा लोक-परलोक में सब बात बनाने वाली है। यद्यपि बात का कोई रूप नहीं बतला सकता कि कैसी है, पर बुद्धि दौड़ाइए तो ईश्वर की भाँति इसके भी अगणित ही रूप पाइएगा। बड़ी बात, छोटी बात, सीधी बात, टेढ़ी बात, खोटी बात, मीठी बात, कड़वी बात, भली बात, बुरी बात, सुहाती बात, लगती बात इत्यादि सब बात ही तो हैं।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के गद्य 'खण्ड' से संकलित है एवं पं० प्रतापनारायण मिश्र द्वारा लिखित 'बात' शीर्षक निबन्ध से अवतरित है।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—मिश्र जी का कहना है कि जिन पाँच तत्त्वों से हमारा शरीर बना है, उनमें वात (समीर) भी एक है। अनेक शास्त्रों, पुराणों, इतिहास, दर्शन, कोश आदि ग्रन्थों में जो कुछ कहा गया है, वह किसी-न-किसी बात पर ही कहा गया है। उनमें ऐसी-ऐसी बातें लिखी हैं, जो हमारे मस्तिष्क और हृदय पर अनोखा प्रभाव डालती हैं और इस लोक के अलावा परलोक तक को सँवार देती हैं।

(iii) क्या मनुष्य की पहचान बात से होती है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—मनुष्य की पहचान बात से ही होती है, क्योंकि बात ही कहने वाले और सुनने वाले दोनों के मस्तिष्क, बुद्धि और हृदय पर अनोखा प्रभाव डालती है।

(6) हमारे-तुम्हारे भी सभी काम बात पर ही निर्भर करते हैं। 'बातहि हाथी पाइये बातहि हाथी पाँव' बात ही से पराये अपने और अपने पराये हो जाते हैं, मक्खीचूस उदार तथा उदार स्वल्पव्ययी, कापुरूष युद्धोत्साही एवं युद्धप्रिय शान्तिशील, कुमार्गी सुपथगामी अथवा सुपंथी कुराही इत्यादि बन जाते हैं।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के गद्य 'खण्ड' से संकलित है एवं पं० प्रतापनारायण मिश्र द्वारा लिखित 'बात' शीर्षक निबन्ध से अवतरित है।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—मिश्र जी का कहना है कि बात के प्रभावशाली होने पर लोग राजाओं से उपहार स्वरूप हाथी पा लिया करते थे और बात के ही द्वारा दण्डस्वरूप हाथी के पैरों के नीचे कुचलवा दिये जाते थे। बातों से ही अपने पराये और पराये अपने हो जाते हैं, कँजूस व्यक्ति उदार और उदार व्यक्ति कँजूस बन जाते हैं। ओजपूर्ण वाणी को सुनकर अत्यधिक कायर पुरुष भी युद्ध के लिये प्रस्तुत हो जाते हैं और युद्ध के लिए तैयार व्यक्ति भी शान्तिप्रिय बन जाते है।

(iii) किसके द्वारा अपने पराये तथा पराये अपने हो जाते हैं? उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।

उत्तर—बात कहने के ढंग और शब्दों के प्रयोग निश्चित ही व्यक्ति पर अपना आश्चर्यजनक प्रभाव डालते हैं और इसी प्रकार अपने पराये और पराये अपने हो जाते हैं।

(7) बात का तत्त्व समझना हर एक का काम नहीं है और दूसरों की समझ पर अधिपत्य जमाने योग्य बात गढ़ सकना भी ऐसों-वैसों का साध्य नहीं है। बड़े-बड़े विज्ञवरों तथा महा-महा कवीश्वरों के जीवन बात ही के समझने-समझाने में व्यतीत हो जाते हैं। सहृदयगण की बात के आनन्द के आगे सारा संसार तुच्छ जँचता है। बालकों की तोतली बातें, सुन्दरियों की मीठी-मीठी, प्यारी-प्यारी बातें, सत्कवियों की रसीली बातें, सुवक्ताओं की प्रभावशालिनी बातें, जिनके जी को और का और न कर दें, उसे पशु नहीं पाषाणखण्ड कहना चाहिए।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के गद्य 'खण्ड' सें संकलित है एवं पं० प्रतापनारायण मिश्र द्वारा लिखित 'बात' शीर्षक निबन्ध से अवतरित है।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—श्री मिश्र जी का कहना है कि जिस प्रकार किसी व्यक्ति की कही हुई बात का सही अर्थ समझना हर एक के वश की बात नहीं होती, उसी प्रकार अपनी बातों से दूसरों को प्रभावित करने की योग्यता भी सभी लोगों में नहीं पायी जाती है। ऐसे अनेक जानकार और महाकवि हुए हैं, जिनका सारा जीवन या तो दूसरों की बात समझने में ही बीत गया, या फिर दूसरों को अपनी बात समझाने में।

(iii) किस बात के आगे सारा संसार तुच्छ दिखता है?

उत्तर—सच्चे हृदय वाले मनुष्य की बातों के आनन्द के आगे सारा संसार तुच्छ दिखता है।

(8) हमारे परम पूजनीय आर्यगण अपनी बात का इतना पक्ष करते थे कि 'तन तिय तनय धाम धाम धरनी। सत्यसंघ कहँ तृन सम बरनी।' अथवा 'प्रानन ते सुत अधिक है सुत ते अधिक परान। ते दूनो दशरथ तजे वचन न दीन्हो जान।' इत्यादि उनकी अक्षर-संबद्धा कीर्ति सदा संसार-पट्टिका पर 'सोने के अक्षरों' से लिखी रहेगी। पर आजकल के बहुतेरे भारत कुपुत्रों ने यह ढंग पकड़ रखा है 'मर्द की जबान' और गाड़ी का पहिया चलता-फिरता ही रहता' है।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के गद्य 'खण्ड' से संकलित है एवं पं० प्रतापनारायण मिश्र द्वारा लिखित 'बात' शीर्षक निबन्ध से अवतरित है।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—श्री मिश्र जी का कहना है कि हमारे पूर्वज आर्य कहलाते थे। वे अपने वचनों की रक्षा के लिए स्त्री, पुत्र, घर, धन तथा पृथ्वी को भी तृण के समान त्याग देते थे। कहा जाता है कि मनुष्य के लिए शरीर से अधिक

पुत्र का और पुत्र से अधिक प्राणों का महत्त्व है, परन्तु महाराज दशरथ ने अपने वचनों की रक्षा के लिए अपने प्रिय पुत्र राम को वन में भेज दिया था और उसके वियोग में अपने प्राण भी त्याग दिये थे।

(iii) प्राचीन काल में बात का क्या महत्त्व था? सोदाहरण बताइए।

उत्तर—प्राचीन काल में लोग अपने वचन का पालन करने के लिए प्राण भी न्योछावर कर देते थे। महाराज दशरथ के जीवन से यह बात स्पष्ट होती हैं।

(9) आज जो बात है कल ही स्वार्थान्वता के वश हुजूरों की मरजी के मुवाफिक दूसरी बातें हो जाने में तनिक भी विलम्ब की सम्भावना नहीं है। यद्यपि कभी-कभी अवसर पड़ने पर बात के अंश का कुछ रंग-ढंग परिवर्तित कर लेना, नीति-विरुद्ध नहीं है। पर कब? जात्युपकार, देशोद्धार, प्रेम-प्रचार आदि के समय, न कि पापी पेट के लिए।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के गद्य 'खण्ड' से संकलित है एवं पं० प्रतापनारायण मिश्र द्वारा लिखित 'बात' शीर्षक निबन्ध से अवतरित है।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—श्री प्रतापनारायण मिश्र जी का कहना है कि यदि कभी बात का कुछ अंश बदलना भी पड़े तो किसी महान् उद्देश्य; यथा-समाज के उपकार, देश के उद्धार, प्रेम अर्थात् सद्भावना के प्रचार-प्रसार के लिए ही ऐसा करना चाहिए, व्यक्तिगत स्वार्थ-पूर्ति के लिए नहीं।

(iii) बातों में मन के अनुसार परिवर्तन किस स्थिति में उचित नहीं है?

उत्तर—स्वार्थ के वशीभूत होकर मात्र अपनी क्षुधा-पिपासा-तृप्ति के लिए अपनी बातों को परिवर्तित कर देना उचित नहीं है।

(10) एक हम लोग है, जिन्हें आर्यकुल रत्नों के अनुगमन की सामर्थ्य नहीं है? किन्तु हिन्दुस्तानियों के नाम पर कलंक लगाने वालों के भी सहभागी बनने में घिन लगती है। इससे यह रीति अंगीकार कर रखी है कि चाहे कोई बड़ा बतकहा अर्थात बातूनी कहे, चाहे यह समझे कि बात कहने का भी शऊर नहीं है; किन्तु अपनी मति के अनुसार ऐसी बातें बनाते रहना चाहिए, जिनमें कोई-न-कोई किसी-न-किसी के वास्तविक हित की बात निकलती रहे।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के गद्य 'खण्ड' से संकलित है एवं पं० प्रतापनारायण मिश्र द्वारा लिखित 'बात' शीर्षक निबन्ध से अवतरित है।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—लेखक का कहना है कि दशरथ जैसे हमारे पूर्वजों ने अपने वचन की रक्षा के लिए प्राण त्याग दिये, किन्तु अपनी बात से टस से मस नहीं हुए। आज हम उन्हीं की सन्तान कहलाने वाले आर्य उनके इस मार्ग का अनुसरण नहीं कर रहे हैं। हम उन लोगों की बातों को चुप रहकर प्रोत्साहित ही करते हैं, जो अपनी घिनौनी बातों से हिन्दुस्तान और हिन्दुस्तानियों के माथे पर कलंक का टीका लगाते हैं।

(iii) बात का बतंगड़ बना लेने का क्या अर्थ है?

उत्तर—बात का बतंगड बना लेने का अर्थ है किसी भी बात को बढ़ा चढ़ाकर बोलना।

व्याकरण एवं रचना-बोध

1. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

बात जमना, बात की बात, बात जाते रहना, बात का बतंगड़ बनाना, बात आ पड़ना, बात उखड़ना।

उत्तर—**(1) बात जमना** (विश्वसनीयता स्थापित होना)—विकास को धीरज की **बात नहीं जमी,** इसलिए उसने साझे में व्यापार करने से स्पष्ट मना कर दिया।

(2) बात की बात (बहुत आसानी से/इज्जत के लिए किसी बात पर अटल रहना)—राम ने **बात की बात** में शिव का धनुष तोड़ दिया।

(3) बात जाती रहना (प्रतिष्ठा का समाप्त हो जाना)—अपनी रंगीनमिजाजी के कारण वर्तमान समय में नवाबों की **बात जाती रही।**

(4) बात का बतंगड़ बनाना (साधारण-सी बात को विवादास्पद बना देना)—**बात का बतंगड़ बनाते** देर नहीं लगती; अत: व्यक्ति को सदैव सोच-समझकर ही बोलना चाहिए।

(5) बात आ पड़ना (किसी कार्य का उत्तरदायित्व आना)—जब **बात आ पड़ी** तो मुझे मंच का संचालन सँभालना ही पड़ा।

(6) बात उखड़ना (विश्वसनीयता समाप्त होना)—घोटालों के चलते राजनीतिक दलों की **बात उखड़ गयीं,** उन्हें चुनाव में व्यापार करने से स्पष्ट मना कर दिया।

2. निम्नलिखित पदों का सनियम सन्धि-विच्छेद कीजिए-

परमेश्वर, निराकार, धर्मावलम्बी, निरवयव, मनोहर, युद्धोत्साही, स्वार्थान्धता, कवीश्वर, विदग्धालाप।

उत्तर—

पद		सन्धि विच्छेद				सन्धि का नाम
परमेश्वर	—	परम	+	ईश्वर	—	गुण सन्धि
निराकार	—	नि:	+	आकार	—	विसर्ग सन्धि
धर्मावलम्बी	—	धर्म	+	अवलम्बी	—	दीर्घ सन्धि
निरवयव	—	नि:	+	अवयव	—	विसर्ग सन्धि
मनोहर	—	मन:	+	हर	—	विसर्ग सन्धि
युद्धोत्साही	—	युद्ध	+	उत्साही	—	गुण सन्धि
स्वार्धान्धता	—	स्वार्थ	+	अन्धता	—	दीर्घ सन्धि
कवीश्वर	—	कवी	+	ईश्वर	—	दीर्घ सन्धि
विदग्धालाप	—	विदग्ध	+	आलाप	—	दीर्घ सन्धि

3. निम्नलिखित शब्दों में समास-विग्रह करके समास का नाम लिखिए-

कापुरुष, कुमार्गी, पाषाणखण्ड, अपाणिपादो, यथासामर्थ्य, आजकल।

उत्तर—

शब्द		समास विग्रह		समास का नाम
कापुरुष	—	कायर पुरुष	—	अव्ययीभाव समास
कुमार्गी	—	बुरे मार्ग पर चलने वाला	—	तत्पुरुष (अधिकरण)
पाषाणखण्ड	—	पाषाण के खण्ड	—	तत्पुरुष (सम्बन्ध)
अपाणिपादो	—	बिना पैरो के चलने वाला	—	अव्ययीभाव समास

यथासामर्थ्य	—	सामर्थ्य क अनुसार	—	अव्ययीभाव समास
आजकल	—	आज और कल	—	द्वन्द्व समास

❑

2

मन्त्र

(प्रेमचन्द)

परीक्षापयोगी प्रश्न

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. प्रेमचन्द द्वारा रचित हिन्दी के एक सर्वश्रेष्ठ उपन्यास का नाम लिखिए।

उत्तर—'गोदान' प्रेमचन्द द्वारा रचित हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है।

प्रश्न 2. हिन्दी के कथा सम्राट कौन हैं?

उत्तर—हिन्दी के कथा सम्राट प्रेमचन्द जी को कहा जाता है।

प्रश्न 3. प्रेमचन्द के बचपन का नाम क्या था?

उत्तर—प्रेमचन्द के बचपन का नाम धनपत राय था।

प्रश्न 4. हिन्दी कथा साहित्य में युगान्तर उपस्थित करने वाले कथाकार कौन थे?

उत्तर—प्रेमचन्द कथा साहित्य में युगान्तर उपस्थित करने वाले कथाकार थे।

प्रश्न 5. 'मानसरोवर' में किसकी रचनाएँ प्रकाशित हुईं?

उत्तर—प्रेमचन्द की समस्त कहानियों का संकलन-प्रकाशन 'मानसरोवर' के आठ भागों में किया गया है।

प्रश्न 6. प्रेमचन्द ने सर्वप्रथम किस पत्रिका का सम्पादन किया?

उत्तर—प्रेमचन्द ने सर्वप्रथम 'मर्यादा' नामक पत्रिका का सम्पादन किया।

प्रश्न 7. प्रेमचन्द की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—इन्होंने मुख्य रूप से पाँच शैलियों का प्रयोग किया है—(1) वर्णनात्मक; (2) विवेचनात्मक; (3) मनोवैज्ञानिक; (4) हास्य-व्यंग्यप्रधान तथा (5) भावात्मक।

प्रश्न 8. प्रेमचन्द के किन्हीं दो उपन्यासों के नाम लिखिए।

उत्तर—इनके दो प्रसिद्ध उपन्यास 'सेवासदन' और 'गबन' हैं।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. मुंशी प्रेमचन्द का संक्षिप्त जीवन-परिचय देकर उनकी कृतियों (निबन्ध, उपन्यास एवं कहानी) का वर्णन कीजिए।

उत्तर—जीवन-परिचय—उपन्यास-सम्राट एवं महान् कहानीकार प्रेमचन्द का जन्म वाराणसी जिले के लमही नामक ग्राम में सन् 1880 ई० में हुआ था। इनके बचपन का नाम धनपतराय था। इनके पिता का नाम अजायबराय एवं माता का नाम आनन्दी देवी था। अल्पायु में ही पिता की मृत्यु हो जाने के कारण इन्हें बचपन से ही संघर्षमय जीवन व्यतीत करना पड़ा। साहस और परिश्रम से इन्होंने अपनी शिक्षा का क्रम जारी रखा। आगे चलकर ये एक स्कूल में अध्यापक हो गये और इसी कार्य को करते हुए इन्होंने बी०ए० की परीक्षा भी उत्तीर्ण की। बाद में ये शिक्षा विभाग में इंस्पेक्टर हो गये, किन्तु गाँधीजी के सत्याग्रह के राष्ट्रीय आन्दोलन से प्रभावित होकर इन्होंने नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और देश-सेवा के कार्य में जुट गये। इन्होंने बम्बई में एक फिल्म निर्माण कम्पनी में भी नौकरी की और बाद में ये काशी आकर अपने गाँव में ही रहने लगे और निरन्तर साहित्य-सेवा करते रहे।

कठोर जीवन-संघर्ष और धनाभाव से जूझता हुआ यह 'कलम का सिपाही' स्वास्थ्य के निरन्तर पतन से रोगग्रस्त होकर सन् 1936 ई० में गोलोकवासी हो गया।

प्रमुख कृतियाँ—इनकी प्रमुख कृतियाँ निम्नलिखित हैं—

(1) उपन्यास—प्रेमचन्द जी ने 'गोदान', 'सेवासदन', 'कर्मभूमि', 'रंगभूमि', 'गबन', 'प्रेमाश्रम', 'निर्मला', 'वरदान', 'प्रतिज्ञा' और 'कायाकल्प' नामक श्रेष्ठ उपन्यास लिखे।

(2) कहानी संग्रह—प्रेमचन्द जी ने लगभग 300 कहानियाँ लिखीं। इनके संग्रहों में 'सप्तसुमन', 'नवनिधि', 'प्रेम-प्रसून', 'मानसरोवर', 'ग्राम्य जीवन की कहानियाँ', 'प्रेरणा', 'कफन', 'कुत्ते की कहानी', 'प्रेम-चतुर्थी' और 'प्रेम गंगा' प्रमुख हैं।

(3) नाटक—'संग्राम', 'प्रेम की वेदी', 'कर्बला' और 'रूठी रानी'।

(4) निबन्ध—'कुछ विचार' और 'साहित्य का उद्देश्य' में प्रेमचन्द जी के निबन्धों का संग्रह है।

(5) सम्पादन—माधुरी, मर्यादा, हंस, जागरण आदि।

(6) सम्पादित रचनाएँ—'गल्परत्न' और 'गल्प समुच्चय'।

(7) अनूदित रचनाएँ—'अंहकार', 'सुखदास', आजाद-कथा, 'चाँदी की डिबिया' और सृष्टि का आरम्भ।

साहित्य में स्थान—प्रेमचन्द जी भारतीय जनता के सच्चे प्रतिनिधि साहित्यकार हैं। उन्होंने अपने साहित्य में यथार्थ का चित्रण कर उसे आदर्श की ओर प्रेरित किया है। ये सच्चे अर्थ में हिन्दी-साहित्याकाश के चन्द्रमा हैं। उपन्यास के क्षेत्र में इनका स्थान सर्वोपरि है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित अवतरणों के आधार पर उनके साथ दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(1) संसार में ऐसे मनुष्य भी होते हैं, जो अपने आमोद-प्रमोद के आगे किसी की जान की भी परवाह नहीं करते, शायद इसका उसे अब भी विश्वास न आता था। सभ्य संसार इतना निर्मम, इतना कठोर है, इसका ऐसा मर्मभेदी अनुभव अब तक न हुआ था। वह उन पुराने जमाने के जीवों में था, जो लगी हुई आग को बुझाने, मुर्दे को कंधा देने, किसी के छप्पर को उठाने और किसी कलह को शान्त करने के लिए सदैव तैयार रहते थे।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के 'गद्य खण्ड' से संकलित एवं सुप्रसिद्ध कहानीकार प्रेमचन्द द्वारा लिखित 'मन्त्र' कहानी से लिया गया है।

(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—प्रेमचन्द जी बूढ़े भगत की मानसिक अवस्था का चित्रण करते हुए कहते हैं कि उसे अपने साथ हो चुके उस अमानवीय व्यवहार पर विश्वास ही न होता था। वह तो ऐसे लोगों में से था, जो दूसरों के घर में लगी आग को बुझाते हैं, पास-पड़ोस में किसी की मृत्यु होने पर उसे कंधा देते हैं, पड़ोसी के घर का छप्पर उठवाते हैं और दूसरों के झगड़ों को समाप्त करने के लिए सदैव तैयार रहते हैं।

(iii) बूढ़े भगत को किस प्रकार के मनुष्यों का अनुभव न हुआ था?

उत्तर—बूढ़े भगत को इस प्रकार के मनुष्यों का अनुभव न हुआ था जो अपने आमोद-प्रमोद अर्थात् मनोरंजन के आगे किसी की जान की भी परवाह नहीं करते।

(2) एक महाशय का किसी झाड़ने वाले से परिचय था। वह दौड़कर उसे बुला लाए, मगर कैलाश की सूरत देखकर उसे मन्त्र चलाने की हिम्मत न पड़ी। बोला-'अब क्या हो सकता है, सरकार! जो कुछ होना था हो चुका।' 'अरे मूर्ख, यह क्यों नहीं कहता कि जो कुछ न होना था, हो चुका। जो कुछ होना था, वह कहाँ हुआ? माँ-बाप ने बेटे का सेहरा कहाँ देखा? मृणालिनी का कामना-तरु क्या पल्लव और पुष्प से रंजित हो उठा? मन के वह स्वर्ण-स्वप्न जिनसे जीवन आनन्द का स्त्रोत बना हुआ था, क्या पूरे हो गये? जीवन के नृत्यमय तारिका-मंडित सागर में आमोद की बहार लूटते हुए क्या उसकी नौका जलमग्न नहीं हो गयी, जो न होना था, वह हो गया।'

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के 'गद्य खण्ड' से संकलित एवं सुप्रसिद्ध कहानीकार प्रेमचन्द द्वारा लिखित 'मन्त्र' कहानी से लिया गया है।

(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—झाड़ने वाले की बात सुनकर डॉ० चड्ढा का मित्र कहता है जो कुछ होना चाहिए था वह नहीं हुआ। होना तो यह चाहिए था कि कैलाश के माँ-बाप उसका विवाह होते देखते उसके सर पर सेहरा देखते। कैलाश तथा उसकी प्रेमिका मृणालिनी की सुन्दर, कोमल और रंगीन कल्पनाएँ पूर्ण होतीं तथा उनका जीवन आनन्दमय होता पर उसके जीवन की तो सभी इच्छाएँ पूरी हुए बिना ही समाप्त हो गयीं। जब वह तारों की जगमगाहट से शोभित जीवन रूपी सागर की नाचती लहरों पर नौका-विहार का आनन्द ले रही थी, तब क्या उसकी नौका डूब नहीं गयी। भाव यह है कि ऐसा नहीं होना चाहिए था, पर ऐसा ही हो गया।

(iii) ''यह क्यों नहीं कहता कि जो कुछ न होना था, हो चुका।'' वाक्य का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—कैलाश की गम्भीर स्थिति को देखकर झाड़ने वाला निराश होकर कहता है, जो कुछ होना था हो चुका, अब कुछ सम्भव नहीं। यह सुनकर डॉ० चड्ढा का मित्र आक्रोशपूर्वक प्रश्न में कहता है कि ''यह क्यों नहीं कहता है कि जो कुछ न होना था, हो चुका।'' इसका आशय यह है कि ऐसा युवक जिसे अभी जीवन का सुख भोगने के लिए जीना चाहिए था, वह अनहोनी का शिकार होकर मृत्यु को प्राप्त हो गया।

(3) पर उसके मन की कुछ ऐसी दशा थी, जो बाजे की आवाज कान में पड़ते ही उपदेश सुनने वालों की होती है। आँखे चाहे उपदेशक की ओर हों, पर कान बाजे ही की ओर होते हैं। दिल में भी बाजे की ध्वनि गूँजती रहती है। शर्म के मारे जगह से नहीं उठता। निर्दयी प्रतिघात का भाव भगत के लिए उपदेशक था, पर हृदय उस अभागे युवक की ओर था, जो इस समय मर रहा था, जिसके लिए एक-एक पल का विलम्ब घातक था।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के 'गद्य खण्ड' के संकलित एवं सुप्रसिद्ध कहानीकार प्रेमचन्द द्वारा लिखित 'मन्त्र' कहानी से लिया गया है।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—भगत के मन की द्वन्द्वपूर्ण स्थिति पर प्रकाश डालते हुए लेखक कहता है कि भगत ने डॉ० चड्ढा के घर न जाने का निश्चय कर तो लिया था, पर वह चैन से न सो सका। उस समय उसके मन की स्थिति उस उपदेश सुनने वाले के जैसी हो रही थी, जिसके कानों में बाजे की मधुर ध्वनि सुनायी पड़ रही हो और उसका मन उपदेश सुनना छोड़कर बाजा सुनने को लालायित हो रहा हो। उसका मन बाजे की ध्वनि सुनते ही उचट तो जाता है, परन्तु संकोच के कारण उपदेश सुनना छोड़कर बाजे की ध्वनि सुनने नहीं जाता है। उसके हृदय में बाजे की ध्वनि गूँजती रहती है। यही दशा उस समय भगत की भी हो रही थी।

(iii) कौन-सा व्यक्ति शर्म के कारण अपने स्थान से नहीं उठता?

उत्तर—शर्म के कारण वह व्यक्ति अपने स्थान से नहीं उठता, जिसके नेत्र तो उपदेशक की ओर होते हैं, लेकिन कान किसी वाद्य की मधुर ध्वनि सुनते रहते हैं।

(4) जैसे नशे में आदमी की देह अपने काबू में नहीं रहती, पैर कहीं रखता है, पड़ता कहीं है, कहता कुछ है, जबान से निकलता कुछ है। वही हाल इस समय भगत का था। मन में प्रतिकार था, पर कर्म मन के अधीन न था। जिसने कभी तलवार नहीं चलायी, वह इरादा करने पर भी तलवार नहीं चला सकता। उसके हाथ काँपते हैं, उठते ही नहीं। भगत लाठी खट-खट करता लपका चला जाता था। चेतना रोकती थी, पर उपचेतना ठेलती थी। सेवक स्वामी पर हावी था।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के 'गद्य खण्ड' से संकलित एवं सुप्रसिद्ध कहानीकार प्रेमचन्द द्वारा लिखित 'मन्त्र' कहानी से लिया गया है।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—चौकीदार के द्वारा कैलाश की मरणासन्न स्थिति की बात सुनकर भगत की स्थिति ऐसी हो गयी, जैसे वह नशे में हो। उसके मन में डॉ० चड्ढा से बदला लेने की भावना प्रबल थी। वह चाहता था कि कैलाश का विष उतारने डॉ० चड्ढा के घर न जाये, पर दूसरी ओर उसके कर्म पर उसके मन का अधिकार नहीं था। भगत की ऐसी स्थिति थी जैसे कि कोई तलवार नहीं चला सकता और तलवार हाथ में लेते ही उसके हाथ काँपने लगते हैं। भगत भी ऐसे ही व्यक्तियों में से था, जिसने कभी बदला लेने की भावना से कोई कार्य किया ही नहीं था। यही कारण था कि बूढ़ा भगत अपने हाथ की लाठी से खट-खट करता, तीव्र गति से डॉ० चड्ढा के घर की ओर चला जा रहा था। यद्यपि एक ओर उसकी बुद्धि उसे आगे बढ़ने से रोकती थी पर उसकी अन्तर्मन उसे आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करता था। भगत की अन्तरात्मा (सेवक) उसकी बुद्धि (स्वामी) पर हावी थी।

(iii) सेवक स्वामी पर हावी कैसे था? यह भी बताइए कि स्वामी कौन था तथा सेवक कौन?

उत्तर—प्रस्तुत अंश में सेवक से आशय अन्तरात्मा से और स्वामी से आशय बुद्धि से है। लेकिन भगत की स्थिति इसके विपरीत थी। उसका चेतन मन उसे डॉ० चड्ढा के यहाँ जाने से रोकता था लेकिन अवचेतन मन प्रेरित करता था। इसीलिए यह कहा गया है कि सेवक स्वामी पर हावी था।

(5) बूढ़े ने कठोर भाव से सिर हिलाकर कहा-मैं नहीं जाता। मेरी बला जाए। वही चड्ढा है। खूब जानता हूँ। भैया को लेकर उन्हीं के पास गया था। खेलने जा रहे थे। पैरों पर गिर पड़ा कि एक नजर देख कीजिए, मगर सीधे मुँह से बात तक न की। भगवान बैठे सुन रहे थे। अब जान पड़ेगा कि बेटे का गम कैसा होता है। कई लड़के हैं?' 'नहीं जी, यही तो एक लड़का था। सुना है, सबने जवाब दे दिया है।'

'भगवान बड़ा कारसाज है। उस बखत मेरी आँखों से आँसू निकल पड़े थे, पर उन्हें तनिक भी दया न आयी थी। मैं तो उनके द्वार पर होता तो भी बात न पूछता।'

'तो न जाओगे? हमने जो सुना था, सो कह दिया।'

'अच्छा किया-अच्छा किया। कलेजा ठंडा हो गया, आँखें ठंडी हो गयीं। लड़का भी ठंडा हो गया होगा। तुम जाओ। आज चैन की नींद सोऊँगा (बुढ़िया से) जरा तमाखू दे दे। एक चिलम और पीऊँगा।'

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के 'गद्य खण्ड' से संकलित एवं सुप्रसिद्ध कहानीकार प्रेमचन्द द्वारा लिखित 'मन्त्र' कहानी से लिया गया है।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—बूढ़ा भगत उस डॉक्टर के पुत्र को साँप द्वारा डस लिए जाने की प्रतिक्रियास्वरूप कहता है कि भगवान बड़ा न्यायी है। वह सभी का काम बनाने वाला है। जब मेरा बेटा मृत्यु से संघर्ष कर रहा था तो इसी डॉक्टर को जरा-सी भी दया नहीं आयी थी। आज मैं वहाँ होता तो भी मैं उसके लड़के की जीवन-रक्षा हेतु कुछ नहीं करता।

(iii) बूढ़ा भगत डॉ० चड्ढा से किस हाल-चाल के बारे में पूछने के लिए उत्सुक था?

उत्तर—बूढ़ा भगत डॉ० चड्ढा से उसके मिजाज के बारे में हाल-चाल पूछने के लिए उत्सुक था।

व्याकरण एवं रचना-बोध

1. निम्नलिखित मुहावरों का अपने वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि इनका अर्थ स्पष्ट हो जाए–

कलेजा ठण्डा होना, हाथ से चला जाना, आनन-फानन में, चैन की नींद सोना, किस्मत ठोंकना, सूरत आँखों में फिरना, आँखें पथरा जाना।

उत्तर—**(1) कलेजा ठण्डा होना** (शान्ति पड़ना)—राम की श्याम से लड़ाई कराकर तुम्हारा **कलेजा ठण्डा हो** गया होगा।

(2) हाथ से चला जाना (मौका हाथ से निकल जाना)—शीला एक अच्छी अभिनेत्री बन सकती थी, लेकिन उसके **हाथ से मौका चला गया।**

(3) आनन फानन में (जल्दबाजी में)—राम ने **आनन-फानन** में अपनी बेटी की शादी कर दी।

(3) चैन की नींद सोना (बेफिक्र होना)—परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर मैं **चैन की नींद सोया।**

(4) किस्मत ठोंकना (भाग्य को दोष देना)—परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने पर मैंने **किस्तम ठोंक** ली।

(5) सूरत आँखों में फिरना (बार-बार ध्यान में आना)—मोहित ने मुझे धोखा दिया है रह-रहकर उसकी **सूरत मेरी आँखों में तैर** रही है।

(6) आँखे पथरा जाना (घबरा जाना)—जब मैनें उसे चोरी करते रंगे हाथों पकड़ लिया, तो मुझे देखते ही उसकी आँखे पथरा गई।

2. निम्नलिखित शब्दों का सन्धि-विच्छेद करते हुए सन्धि का नाम बताइए–

नि:स्वार्थ, नि:शब्द, औषधालय, निश्चल, सज्जन।

उत्तर—निम्नलिखित शब्दों का सन्धि-विच्छेद करते हुए सन्धि का नाम लिखिए—

शब्द		समाज-विग्रह				सन्धि का नाम
नि:स्वार्थ	—	नि:	+	स्वार्थ	—	विसर्ग सन्धि
नि:शब्द	—	नि:	+	शब्द	—	विसर्ग सन्धि
औषधालय	—	औषध	+	आलय	—	दीर्घ सन्धि
निश्चल	—	नि:	+	चल	—	विसर्ग सन्धि
सज्जन	—	सत्	+	जन	—	व्यंजन सन्धि

3. निम्नलिखित समस्तपदों का समास-विग्रह कीजिए और समास का नाम भी लिखिए–

आत्मरक्षा, कामना-तरु, जलमग्न, मित्र-समाज, करुणा-क्रन्दन, सावन-भादों, जीवनपर्यन्त, जीवनदान।

उत्तर—निम्नलिखित समस्त-पदों का समास-विग्रह कीजिए और समास नाभ लिखिए—

समस्त-पद		समास-विग्रह		समास का नाम
आत्मरक्षा	—	स्वयं की रक्षा	—	अव्ययीभाव समास
कामना-तरु	—	कामना रूपी तरु	—	कर्मधारय समास
जलमग्न	—	जल में मग्न	—	तत्पुरुष समास (अधिक)
मित्र-समाज	—	मित्र और समाज	—	द्वन्द्व समास
करुणा क्रन्दन	—	करुण और क्रन्दन	—	द्वन्द्व समास
सावन-भादों	—	सावन और भादों	—	द्वन्द्व समास
जीवन पर्यन्त	—	जन्म से	—	अव्ययीभाव समास
जीवनदान	—	जीवन रूपी दान	—	कर्मधारम समास

❑

3

गुरु नानकदेव

(हजारीप्रसाद द्विवेदी)

परीक्षापयोगी प्रश्न

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. आचार्य द्विवेदी का जन्म कब और कहाँ हुआ था।

उत्तर—आचार्य द्विवेदी का जन्म 1907 ई० में दुबे का छपरा, बलिया (उ० प्र०) में हुआ था।

प्रश्न 2. कुटुज, अशोक के फूल और पुनर्नवा के लेखक का नाम बताइए।

उत्तर—आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी।

प्रश्न 3. 'कबीर' पर आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी को कौन-सा पारितोषिक प्राप्त हुआ था?

उत्तर—'कबीर' पर आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी को मंगलाप्रसाद पारितोषिक प्रदान किया गया।

प्रश्न 4. आचार्य हजारीप्रसाद की एक निबन्ध तथा एक आलोचनात्मक रचना का नाम लिखिए।

उत्तर—साहित्य के साथी, निबन्ध तथा कालिदास की ललित्य योजना इनकी आलोचनात्मक रचना है।

प्रश्न 5. 'गुरु नानकदेव' पाठ की भाषा किस प्रकार की है, दो पंक्तियों में लिखिए।

उत्तर—'गुरु नानकदेव' पाठ की भाषा प्रांजल, मृदुल एवं प्रवाहपूर्ण है। संस्कृतनिष्ठ सामासिक पदावली का प्रयोग होने के पश्चात् भी भाषा में बोधगम्यता का गुण विद्यमान हैं।

प्रश्न 6. आचार्य हजारी प्रसाद किस युग के लेखक हैं?

उत्तर—आचार्य हजारी प्रसाद शुक्लोत्तर युग के लेखक हैं।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. हजारीप्रसाद द्विवेदी के जीवन-परिचय का उल्लेख करते हुए उनकी प्रमुख कृतियों के नाम लिखिए।

उत्तर—हिन्दी के मूर्धन्य निबन्धकार आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का जन्म बलिया जिले के 'दुबे का छपरा' नामक ग्राम में सन् 1907 ई० में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री अनमोल द्विवेदी एवं माता का नाम श्रीमती ज्योतिकली देवी था। इन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से संस्कृत-साहित्य तथा ज्योतिष में आचार्य की उपाधि प्राप्त की। आचार्य क्षितिमोहन सेन की प्रेरणा से ये शान्ति-निकेतन गये और वहाँ जाकर साहित्य का गम्भीर अध्ययन और बाँग्ला भाषा का सम्यक् ज्ञान प्राप्त किया। वहाँ सन् 1940 ई० में ये हिन्दी-विभाग में अध्यापन करने लगे। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की प्रेरणा से ये साहित्य-सृजन की ओर प्रवृत्त हुए। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय और पंजाब विश्वविद्यालय में हिन्दी के विभागाध्यक्ष पद पर कार्य करते हुए ये हिन्दी साहित्य की सतत् सेवा करते रहे। सन् 1949 ई० में 'लखनऊ विद्यालय' ने साहित्य के क्षेत्र में इनकी महान् सेवाओं के लिए इन्हें डी० लिट्० की मानद उपाधि से अलंकृत किया। 'कबीर' पर इन्हें 'मंगलाप्रसाद पारितोषिक' भी प्रदान किया गया। निरन्तर साहित्य सृजन करते हुए 19 मई, सन् 1979 ई० को इनका स्वर्गवास हो गया।

कृतियाँ—इनकी कृतियों का विवरण निम्नलिखित है—

(1) निबन्ध-संग्रह—'विचार और वितर्क', 'अशोक के फूल', 'विचार-प्रवाह', 'कुटज', 'कल्पलता', 'कल्पना', 'साहित्य के साथी', 'आलोकपर्व' आदि।

(2) आलोचना-साहित्य—'सूर-साहित्य', 'कबीर', 'साहित्य का मर्म', 'कालिदास की लालित्य योजना', 'सूरदास और उनका काव्य', 'हमारी साहित्यिक समस्याएँ', 'भारतीय वाङ्मय', 'नख-दर्पण में हिन्दी कविता', 'साहित्य का साथी', 'समीक्षा साहित्य' आदि।

(3) इतिहास—'हिन्दी-साहित्य की भूमिका', 'हिन्दी-साहित्य का आदिकाल, 'हिन्दी-साहित्य', 'नाथ सम्प्रदाय', 'प्राचीन भारत का कला-विकास', 'मध्यकालीन धर्म-साधना' आदि।

(4) उपन्यास—'बाणभट्ट की आत्मकथा', 'चारू चन्द्रलेख पुनर्नवा' तथा 'अनामदास का पोथा'।

(5) सम्पादित ग्रन्थ—'नाथ-सिद्धों की बानियाँ', 'संक्षिप्त पृथ्वीराज रासो', 'सन्देश-रासक'।

(6) अनूदित साहित्य—'प्रबन्ध चिन्तामणि', 'पुरातन प्रबन्ध संग्रह', 'प्रबन्ध कोष', 'लाल कनेर', 'मेरा बचपन', 'विश्व परिचय' आदि।.

साहित्य में स्थान—आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी प्रकाण्ड विद्वान, उच्चकोटि के विचारक और समर्थ आलोचक हैं। ये भारतीय संस्कृति के युगीन व्याख्याता थे। हिन्दी-साहित्य में इनका मूर्धन्य स्थान है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित अवतरणों के आधार पर उनके साथ दिये प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(1) गुरु नानक के साथ इस पूर्णचन्द्र का सम्बन्ध जोड़ना भारतीय जनता के मानस के अनुकूल है। आज वह अपना आह्लाद प्रकट करती है।

गुरु नानकदेव का आविर्भाव आज से लगभग पाँच सौ वर्ष पूर्व हुआ। भारतवर्ष की मिट्टी में युग के अनुरूप महापुरुषों को जन्म देने का अद्भुत गुण है। आज से पाँच सौ वर्ष पहले का देश अनेक कुसंस्कारों में उलझा था। जातियों, सम्प्रदायों, धर्मों और संकीर्ण कुलाभिमानो से वह खण्ड विच्छिन्न हो गया था। देश में नये धर्म के आगुन्तकों के कारण एक ऐसी समस्या उठ खड़ी हुई थी, जो इस देश के हजारों वर्षों के लम्बे इतिहास में अपरिचित थी। ऐसे ही दुर्घट काल में इस देश की मिट्टी ने ऐसे अनेक महापुरूषों को उत्पन्न किया, जो सड़ी रूढ़ियों, मृतप्राय आचारों, बासी विचारों और अर्थहीन संकीर्णताओं के विरुद्ध प्रहार करने में कुण्ठित नहीं हुए और इन जर्जर बातों से परे सबमें विद्यमान सबको नयी ज्योति और नया जीवन प्रदान करने वाले महान् जीवन-देवता की महिमा प्रतिष्ठित करने में समर्थ हुए। इन सन्तों की ज्योतिष मण्डली में गुरु नानकदेव ऐसे सन्त हैं, जो शरतकाल के पूर्णचन्द्र की तरह ही स्निग्ध, उसी प्रकार शान्त-निर्मल, उसी प्रकार रश्मि के भण्डार थे।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के 'गद्य खण्ड' के अन्तर्गत यशस्वी निबन्धकार आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित 'गुरु नानकदेव' शीर्षक निबन्ध से लिया गया है।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—आचार्य द्विवेदी जी ने स्पष्ट किया है कि कठिन समय में भी हमारे देश की मिट्टी में अनेक महापुरुषों का जन्म हुआ। इन महापुरुषों ने दूषित संस्कारों, पुराने रीति-रिवाजों, अहितकर विचारों और संकुचित दृष्टिकोण को समाप्त करने के लिए पूरा-पूरा प्रयास किया। इन महापुरुषों ने जर्जर और खण्डित विचारधारा को समाप्त करके एक ऐसी विराट जीवन-दृष्टि को प्रतिष्ठित किया, जिसके कारण सभी मनुष्यों का मन नयी ज्योति, नयी दीप्ति, नयी आभा से जगमग हो गया। गुरु नानकदेव भी ऐसे ही महापुरुष थे।

(ii) नानकदेव का आविर्भाव आज से लगभग कितने वर्ष पूर्व हुआ?

उत्तर—गुरु नानकदेव का आविर्भाव आज से लगभग पाँच सौ वर्ष पूर्व हुआ।

(iv) देश में कौन-सी नयी समस्या उठ खड़ी हुई?

उत्तर—देश जाति, सम्प्रदाय, धर्म आदि की विभिन्न मान्यताओं के कारण खण्डश: विच्छिन्न हो गया था।

(v) पूर्ण चन्द्रमा की तिथि किस महामानव का स्मरण कराती है?

उत्तर—पूर्ण चन्द्रमा की तिथि महामानव गुरु नानकदेव का स्मरण कराती है।

(2) धन्य हो, हे अगम, अगोचर, अलख, अपार देव तुम्हीं मेरी चिन्ता करो। जहाँ तक देखता हूँ वहाँ तक जल में, थल में, पृथ्वी में-सर्वत्र तुम्हारी ही लीला व्याप्त है, घट-घट में तुम्हारी ज्योति उद्‌भासित हो रही है।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के 'गद्य खण्ड' के अन्तर्गत यशस्वी निबन्धकार आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित 'गुरु नानकदेव' शीर्षक निबन्ध से लिया गया है।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—प्रस्तुत पंक्तियों में आचार्य द्विवेदी ने गुरु नानक के उस दृष्टिकोण को सामने रखा है, जिसमें उन्होंने प्रत्येक मनुष्य एवं प्राणी में उसी अगम, अगोचर, अलख कहलाने वाले ईश्वर की ज्योति देखी है, जो स्वयं उनके हृदय में भी विराजमान है। गुरु नानक कहते हैं कि देव! तुम्ही मेरी चिन्ता करो; क्योंकि जल में, स्थल में और इस पृथ्वी पर जहाँ-जहाँ तक मेरी दृष्टि जाती है, वहाँ-वहाँ तक सर्वत्र तुम्हारी ही लीला व्याप्त है और तुम्हारी ही ज्योति से इस धरा का कण-कण चमक रहा है।

(iii) प्रस्तुत अंश कविता की दो पंक्तियों का हिन्दी अनुवाद है, उन दो मूल पंक्तियों को लिखिए।

उत्तर—कविता की दो मूल पंक्तियाँ निम्नलिखित हैं—

अगम अगोचर अलख अपारा, चिन्ता करहु हमारी।
जलि थलि माहि अलि भरिपुरि घट घट ज्योति तुम्हारी।।

(3) अद्‌भुत है गुरु की बानी की सहज बेधक शक्ति। कहीं कोई आडम्बर नहीं, कोई बनावट नहीं। सहज हृदय से निकली हुई सहज प्रभावित करने की अपार शक्ति। सहज जीवन बड़ी कठिन साधना है। सहज भाषा बड़ी बलवती आस्था है। सीधी लकीर खींचना टेढ़ा काम है। गुरु का अनाडम्बर सहज धर्म ऐसी ही सहजवाणी से प्रचारित हो सकता था। कितनी अद्‌भुत निराभिमान शैली है। कही भी पांडित्य का दुर्धर बोझ नहीं और फिर भी पंडितों को आन्दोलित करने वाली यह वाणी धन्य है।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के 'गद्य खण्ड' के अन्तर्गत यशस्वी निबन्धकार आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित 'गुरु नानकदेव' शीर्षक निबन्ध से लिया गया है।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—लेखक का कथन है कि सरल और आडम्बररहित जीवन व्यतीत करना बहुत कठिन होता है। सहज भाषा में अद्‌भुत शक्ति होती है। सरल जीवन व्यतीत करना ऐसा ही टेढ़ा काम है, जैसा सीधी लकीर खींचना। यहाँ सीधी लकीर का तात्पर्य सरल और निष्कपट जीवन से है। लेखक का तात्पर्य है कि गुरु नानकदेव ने बिना किसी आडम्बर के अपने भावों को जनसाधारण तक पहुँचाया। विद्वानों को भी पूर्णरूप से प्रभावित करने वाली उनकी वाणी धन्य है जिसने रुढ़ियों में जकड़े समाज को असाधारण रूप से प्रभावित किया है।

(iii) गुरु नानकदेव की वाणी कैसी है?

उत्तर—गुरु नानकदेव की वाणी हृदय पर सीधा असर करती थी। उसमें कहीं कोई दिखावा और कृत्रिमता नहीं थी।

(4) किसी लकीर को मिटाये बिना छोटी बना देने का उपाय है, बड़ी लकीर खींच देना। क्षुद्र अहमिकाओं और अर्थहीन संकीर्णताओं की क्षुद्रता सिद्ध करने के लिए तर्क और शास्त्रार्थ का मार्ग कदाचित ठीक नहीं है। सही उपाय है बड़े सत्य को प्रत्यक्ष कर देना। गुरु नानक ने यही किया। उन्होंने जनता को बड़े-से-बड़े सत्य के सम्मुखीन कर दिया। हजारों दीये उस महाज्योति के सामने स्वयं फीके पड़ गये।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के 'गद्य खण्ड' के अन्तर्गत यशस्वी निबन्धकार आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित 'गुरु नानकदेव' शीर्षक निबन्ध से लिया गया है।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—आचार्य द्विवेदी जी का कहना है कि यदि किसी रेखा को बिना मिटाये छोटी बनाना हो तो इसका सबसे अच्छा उपाय यही होगा कि उसके सामने उससे बड़ी रेखा खींच दी जाये। मानव के मन में जो अहंकार की तुच्छ भावना और गन्दे विचार भरे हुए हैं, उनकी तुच्छता और निरर्थकता सिद्ध करने के लिए लोगों के सामने बड़ा, उदार और आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए अर्थात् एक बड़े सत्य को उनके सम्मुख रखना चाहिए।

(iii) गुरु नानकदेव जी ने सत्य को किस प्रकार प्रत्यक्ष किया है?

उत्तर—गुरु नानकदेव ने तुच्छ एवं संकुचित आचरण के सम्मुख अपनी उदारता का महान आदर्श रखा और लोगों के सम्मुख सर्वोच्च सत्य को प्रकट कर दिया।

(iv) छोटी लकीर के सामने बड़ी लकीर खींच देने का क्या तात्पर्य है?

उत्तर—छात्र स्वयं करें।

(5) वह सब प्रकार से लोकोत्तर है। उसका उपचार प्रेम और मैत्री हैं। उसका शास्त्र सहानुभूति और हित-चिन्ता है। वह कुसंस्कारों के अन्धकार को अपनी स्निग्ध-ज्योति से भेदता है, मुमूर्ष प्राणधारा

को अमृत का भाण्ड उँडेलकर प्रवाहशील बनाता है। वह भेदों में अभेद देखता है, नानात्व में एक का संधान बनाता है, वह सब प्रकार से निराला है। इस कार्तिक पूर्णिमा को अनायास उसके चरणों में नत हो जाने की इच्छा होती है।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के 'गद्य खण्ड' के अन्तर्गत यशस्वी निबन्धकार आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित 'गुरु नानकदेव' शीर्षक निबन्ध से लिया गया है।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—लेखक का कहना है कि गुरु नानक सभी दृष्टियों से एक अलौकिक पुरुष थे। दूसरों के प्रति सहानुभूति का भाव रखना और उनके कल्याण के प्रति चिन्तित रहना ही उनके लिए शास्त्र के समान था। अपने समय के बुरे संस्कारों को उन्होंने प्रेम तथा मैत्री के व्यवहार और सरल मधुर वाणी द्वारा दूर किया। अन्धविश्वासों, रूढ़ियों तथा कुसंस्कारों से जो जन-जीवन मृतप्राय हो गया था, गुरु नानक ने उसमें अमृत भरा और उसे पुन: नया जीवन देकर विविधता में एकता' की खोज कर बन्धुत्व की भावना को जगाया।

(iii) गद्यांश में लेखक किस कार्तिक पूर्णिमा पर किसके चरणों में नत हो जाने की बात कर रहा है?

उत्तर—गद्यांश में लेखक शरद पूर्णिमा के एक मास बाद अपने वाली कार्तिक पूर्णिमा पर गुरु नानकदेव के चरणों में नत होने की बात कर रहा है।

(6) गुरु नानक ने प्रेम का सन्देश दिया है, क्योंकि मनुष्य-जीवन का जो चरम प्राप्तव्य है, वह स्वयं प्रेमरूप है। प्रेम ही उसका स्वभाव है, प्रेम ही उसका साधन है। अरे ओ मुग्ध मनुष्य, सच्ची प्रीति से ही तेरा मान-अभिमान नष्ट होगा, तेरी छोटाई की सीमा समाप्त होगी, परम मंगलमय शिव तुझे प्राप्त होगा। उसी सच्चे प्रेम की साधना तेरे जीवन का परम लक्ष्य है। बाह्य आडम्बरों को तू धर्म समझ रहा है। मूल संस्कारों को तू आस्था मानता है? नहीं प्यारे, यह सब धर्म नहीं है। धर्म तो स्वयं रूप होकर भगवान के रूप में तेरे भीतर विराजमान है। उसी अगम-अगोचर प्रभु की शरण पकड़। क्या पड़ा है इन छोटे अहंकारों में। ये मुक्ति के नहीं, बंधन के हेतु हैं।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के 'गद्य खण्ड' के अन्तर्गत यशस्वी निबन्धकार आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित 'गुरु नानकदेव' शीर्षक निबन्ध से लिया गया है।

(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—लेखक का कहना है कि बाहरी आडम्बर धर्म नहीं है। धर्म तो आत्मा के रूप में व्यक्ति के अन्दर है, जिसे अहंकार को नष्ट करके ही जाना और पाया जा सकता है। इसलिए मूल संस्कारों को छोड़कर, बाहरी आडम्बरों से मुक्ति पाकर और अपने अन्दर के अहंकार को पूर्णत: नष्ट करके ही ईश्वर की शरण में जाना उचित है। इसी से मुक्ति मिलेगी। अहंकार और आडम्बरों से घिरे रहने पर सांसारिक बन्धनों से छुटकारा नहीं मिलेगा, क्योंकि ये बन्धन के कारक हैं, मुक्ति के हेतु नहीं।

(iii) नानकदेव के अनुसार मानव का चरम प्राप्तव्य क्या है और वह कैसे प्राप्त होता है?

उत्तर—नानकदेव का कहना है कि मनुष्य जीवन का प्राप्तव्य ईश्वर है, जो प्रेम स्वरूप है और जिसे प्रेम से ही पाया जा सकता है।

(7) भगवान जब अनुग्रह करते हैं तो अपनी दिव्य ज्योति ऐसे महान सन्तों में उतार देते हैं। एक बार जब यह ज्योति मानव-देह को आश्रय करके उतरती है तो चुपचाप नहीं बैठती। वह क्रियात्मक होती है, नीचे गिरे हुए अभाजन जनों को वह प्रभावित करती है, ऊपर उठती है। वह उतरती है और ऊपर उठती है। इसे पुराने पारिभाषिक शब्दों में कहें तो कुछ इस प्रकार होगा कि एक ओर उसका 'अवतार' होता है, दूसरी ओर औरों का 'उद्धार' होता है। अवतार और उद्धार की यह लीला भगवान के प्रेम का सक्रिय रूप है, जिसे पुराने भक्तजन 'अनुग्रह' कहते हैं।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए। अथवा रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के 'गद्य खण्ड' के अन्तर्गत यशस्वी निबन्धकार आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित 'गुरु नानकदेव' शीर्षक निबन्ध से लिया गया है।

द्विवेदी जी का कहना है कि परमात्मा भक्तजनों पर अनुग्रह करके अवतार लेता है और अधर्मियों का उद्धार करता है। इस प्रकार ईश्वर का अवतार लेना और भक्तजनों का उद्धार होना ही ईश्वर के प्रेम का सक्रिय रूप है। भगवान के इसी क्रियात्मक प्रेम को भक्त लोग अपनी भाषा में अनुग्रह या कृपा कहते हैं। यह ईश्वर की कृपा ही थी, जो उसने अपने को गुरु नानकदेव के रूप में धरती पर उतारा।

(ii) 'अवतार' एवं 'उद्धार' की लीला किस प्रकार की है?

उत्तर—अवतार शब्द का अर्थ है—नीचे उतरना और उद्धार शब्द का अर्थ है—ऊपर उठाना।

(iii) भगवान् के प्रेम में क्या सक्रिय रूप है?

उत्तर—छात्र स्वयं करें।

(8) महागुरु, नयी आशा, नयी उमंग, नये उल्लास की आशा में आज इस देश की जनता तुम्हारे चरणों में प्रणति निवेदन कर रही है। आशा की ज्योति विकीर्ण करो, मैत्री और प्रीति की स्निग्ध धारा से आप्लावित करो। हम उलझ गये हैं, भटक गये हैं, पर कृतज्ञता अब भी हममें रह गयी है। आज भी हम तुम्हारी अमृतोपम वाणी को भूल नहीं गये हैं। कृतज्ञ भारत का प्रणाम अंगीकार करो।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के 'गद्य खण्ड' के अन्तर्गत यशस्वी निबन्धकार आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित 'गुरु नानकदेव' शीर्षक निबन्ध से लिया गया है।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का कथन है कि गुरु नानकदेव एक महान सन्त थे। वे इस महान गुरु से प्रार्थना करते हैं कि वे भटके हुए भारतवासियों के हृदय में प्रेम, मैत्री और सदाचार का विकास करके उनमें नयी आशा, नये उल्लास व नयी उमंग का संचार करे। इस देश की जनता उनके चरणों में अपना प्रणाम निवेदन करती है। वर्तमान समाज में रहने वाले भारतवासी कामना, लोभ, तृष्णा, ईर्ष्या, ऊँच-नीच, जातीयता एवं साम्प्रदायिकता जैसे दुर्गुणों से ग्रसित होकर भटक गये हैं, फिर भी इनमें कृतज्ञता का भाव विद्यमान है।

(iii) दिए गए गद्यांश में किसके भटकने की बात कही गई है?

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश में अनेक दुर्गुणों से ग्रसित होकर भारतवासियों के भटकने की बात कही गई है।

व्याकरण एवं रचना-बोध

1. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद करते हुए सन्धि का नाम भी लिखिए-

अमृतोपम, कुलाभिमान, लोकोत्तर, अनायास, सर्वाधिक।

उत्तर—

शब्द	सन्धि-विच्छेद				सन्धि का नाम
अमृतोपम	अमृत	+	उपम	=	गुण सन्धि
कुलाभिमान	कुल	+	अभिमान	=	दीर्घ सन्धि
लोकोत्तर	लोक	+	उत्तर	=	गुण सन्धि
अनायास	अन	+	आयास	=	दीर्घ सन्धि
सर्वाधिक	सर्व	+	अधिक	=	दीर्घ सन्धि

2. समास-नाम का उल्लेख करते हुए निम्नलिखित शब्दों में समास-विग्रह कीजिए–

महापुरुष, ज्योतिपुंज, चित्तभूमि, अर्थहीन, व्यंग्य-बाण, प्राणधारा, स्वर्णकमल।

उत्तर—

शब्द		समास विग्रह		समास-नाम
महापुरुष	—	महान है जो पुरुष	—	कर्मधारय समास
ज्योतिपुंज	—	ज्योति का पुँज	—	तत्पुरुष (सम्बन्ध)
चित्तभूमि	—	चिन्त रूपी भूमि	—	कर्मधारय समास
अर्थहीन	—	अर्थ से हीन	—	तत्पुरुष (करण)
व्यंग्य-बाण	—	व्यंग्य और बाण	—	द्वन्द्व समास
प्राणधारा	—	प्राणों रूपी धारा	—	कर्मधारय समास
स्वर्णकमल	—	कमलरूपी स्वर्ण	—	कर्मधारय समास

3. निम्नलिखित शब्दों में प्रकृति-प्रत्यय को अलग-अलग करके लिखिए–

उल्लासित, स्वाभाविक, प्रहार, पांडित्य, संजीवनी।

उत्तर—

शब्द		(मूल शब्द)		प्रत्यय/प्रकृति
उल्लासित	—	उल्लास	—	इत
स्वाभाविक	—	स्वभाव	—	इक
प्रहार	—	हार	—	प्र
महत्त्व	—	महात	—	त्व
पांडित्य	—	पंड़ित	—	इत्य
संजीवनी	—	संजीव	—	नी

❑

4

गिल्लू

(महादेवी वर्मा)

परीक्षापयोगी प्रश्न

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. महादेवी का जन्म कब और कहाँ हुआ था।

उत्तर—महादेवी का जन्म 1907 ई० में फर्रुखाबाद जनपद (उ० प्र०) में हुआ था।

प्रश्न 2. उस लेखिका का नाम बताइए, जिसको आधुनिक मीरा के नाम से जाना जाता है।

उत्तर—महादेवी वर्मा को आधुनिक मीरा के नाम से जाना जाता है।

प्रश्न 3. छायावादी युग की सुप्रसिद्ध लेखिका का नाम लिखकर उनकी दो प्रसिद्ध गद्य रचनाओं के नाम लिखिए।

उत्तर—छायावादी युग की सुप्रसिद्ध लेखिका महादेवी वर्मा हैं तथा (1) पथ के साथी, (2) स्मृति की रेखाएँ, उनकी दो प्रसिद्ध गद्य रचनाएँ हैं।

प्रश्न 4. महादेवी वर्मा की दो रेखाचित्र कृतियों का नामोल्लेख कीजिए।

उत्तर—(1) अतीत के चलचित्र, (2) मेरा परिवार।

प्रश्न 5. 'गिल्लू' पाठ के आधार पर महादेवी वर्मा की भाषा-शैली की दो प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर—इस पाठ की भाषा-शैली सरस, आकर्षक तथा प्रभावोत्पादक है। शब्दों का चयन और वाक्य-विन्यास कलात्मक है।

प्रश्न 6. 'गिल्लू' का अन्त कैसे हुआ?

उत्तर—लेखिका कहती है कि गिल्लू के पंजे इतने ठंडे हो रहे थे कि लेखिका ने जागकर हीटर जलाया और उसके पंजों को गर्मी देने का प्रयास किया। परंतु सुबह की पहली किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया। अर्थात उसकी मृत्यु हो गई।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. श्रीमती महादेवी वर्मा का जीवन परिचय देकर उनकी कृतियों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—जीवन परिचय—श्रीमती महादेवी वर्मा का जन्म फर्रूखाबाद में सन् 1907 ई० में एक सम्पन्न कायस्थ परिवार में हुआ था। इनकी माता हेमरानी एक विदुषी महिला थीं और नाना ब्रजभाषा के अच्छे कवि थे। इनके पिता गोविन्दप्रसाद वर्मा भागलपुर के एक कॉलेज में प्रधानाचार्य थे। इन्होंने इन्दौर से प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करके क्रॉस्थवेट गर्ल्स कॉलेज, इलाहाबाद में शिक्षा प्राप्त की। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम० ए० उत्तीर्ण करने के बाद ये प्रयाग महिला विद्यापीठ में प्राचार्या हो गयीं।

इनका विवाह 9 वर्ष की छोटी आयु में ही हो गया था। इनके पति श्री स्वरूपनारायण वर्मा एक डॉक्टर थे, परन्तु इनका दाम्पत्य जीवन सफल नहीं था। ये उनसे अलग रहने लगी थीं। कुछ समय तक इन्होंने 'चाँद' पत्रिका का सम्पादन किया। कुछ वर्षों तक ये उत्तर प्रदेश विधान परिषद की मनोनीत सदस्या रही। ये प्रयाग में रहकर ही जीवनपर्यन्त साहित्य-साधना करती रहीं और 11 सितम्बर, 1987 को इस संसार से विदा हो गयीं।

कृतियाँ—महादेवी जी की गद्य एवं काव्य कृतियाँ निम्नलिखित हैं—

(1) निबन्ध-संग्रह—'शृंखला की कड़ियाँ', 'साहित्यकार की आस्था' तथा अन्य निबन्ध 'क्षणदा', 'अबला' और 'सबला'।

(2) संस्मरण और रेखांकित—'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ', 'मेरा परिवार', 'पथ के साथी'।

(3) सम्पादन—'चाँद' पत्रिका और 'आधुनिक कवि' तथा हिन्दी का विवेचनात्मक गद्य।

(4) आलोचना—'यामा' और 'दीपशिखा' की भूमिकाएँ तथा हिन्दी का विवेचनात्मक गद्य।

(5) काव्य-रचनाएँ—'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा', 'सान्ध्यगीत', 'दीपशिखा' और 'यामा'।

साहित्य में स्थान—महादेवी जी भावुक कवयित्री, समर्थ लेखिका और कुशल सम्पादिका हैं। उनकी गद्य शैली के विषय में साहित्यकार गुलाबराय ने कहा है—''मैं गद्य में महादेवी का लोहा मानता हूँ।'' गद्य के क्षेत्र में संस्मरण और रेखाचित्र विधाओं में तो उनका स्थान सर्वोपरि है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित अवतरणों के आधार पर उनके साथ दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(1) गिलहरियों के जीवन की अवधि दो वर्ष से अधिक नहीं होती; अत: गिल्लू की जीवन-यात्रा का अन्त आ ही गया। दिनभर उसने न कुछ खाया और न बाहर गया। रात में अन्त की यातना में भी वह अपने झूले से उतरकर मेरे बिस्तर पर आया और ठंडे पंजों से मेरी उँगली पकड़कर हाथ से चिपक गया, जिसे उसने अपने बचपन की मरणासन्न स्थिति में पकड़ा था।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के गद्य खण्ड' के अन्तर्गत 'श्रीमती महादेवी वर्मा' द्वारा रचित 'गिल्लू' शीर्षक रेखाचित्र से अवतरित है।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—महादेवी जी का कहना है कि गिल्लू को इस बात का अनुभव हो गया था कि उसका अन्तिम समय समीप आ चुका है इसलिए वह झूले से उतरकर उनकी शय्या पर आ गया और अपने ठण्डे, जीव-रहित हाथों से लेखिका की उँगली को पकड़कर उसके हाथ से चिपक गया, जैसे कि वह लेखिका से कह रहा हो कि अब मुझे पुन: वैसे ही बचा लो जैसे कि बचपन में मरणासन्न स्थिति से बचाया था।

(iii) लेखिका ने कैसे समझा कि गिल्लू का अन्त समय आ गया था?

उत्तर—लेखिक जानती थी कि गिलहरियों का जीवनकाल दो वर्ष से अधिक का नहीं होता और गिल्लू को भी लेखिका के पास लगभग दो वर्ष हो चुके थे। इसी आधार पर उन्होंने समझ लिया कि उसका अन्त समय आ गया था।

(2) उसका झूला उतारकर रख दिया है और खिड़की की जाली बन्द कर दी गयी है, परन्तु गिलहरियों की नयी पीढ़ी जाली के उस पार चिक-चिक करती ही रहती है और सोनजुही पर वसन्त आता ही रहता है।

सोनजुही की लता के नीचे गिल्लू को समाधि दी गयी–इसलिए भी कि उसे वह लता सबसे अधिक प्रिय थी–इसलिए भी कि लघुगात का, किसी वासन्ती दिन, जुही के पीलाभ छोटे फूल में खिल जाने का विश्वास मुझे संतोष देता है।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के गद्य खण्ड' के अन्तर्गत 'श्रीमती महादेवी वर्मा' द्वारा रचित 'गिल्लू' शीर्षक रेखाचित्र से अवतरित है।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—लेखिका का कहना है कि सोनजुही की लता के नीचे गिल्लू को समाधि दी गयी क्योंकि गिल्लू को सोनजुही की वह लता सबसे अधिक प्रिय थी। लेखिका को विश्वास है कि एक-न-एक दिन गिल्लू का वह छोटा-सा शरीर किसी वसन्त में अवश्य ही सोनजुही का सुन्दर पीला फूल बनकर खिलेगा। उनका यही विश्वास उन्हें गिल्लू की स्मृतियों के प्रति अत्यधिक सन्तोष प्रदान करता है।

(iii) गिल्लू के न रहने पर लेखिका ने क्या किया?

उत्तर—गिल्लू के न रहने पर लेखिका ने गिल्लू के प्रिय झूले को उतारकर रख दिया और खिड़की की उस जाली को बन्द कर दिया जिससे गिल्लू बाहर आता-जाता था।

(3) सोनजुही में आज एक पीली कली लगी है। उसे देखकर अनायास ही उस छोटे जीव का स्मरण हो आया, जो इस लता की सघन हरीतिमा में छिपकर बैठता था और फिर मेरे निकट पहुँचते ही कंधे पर कूदकर मुझे चौंका देता था। तब मुझे कली की खोज रहती थी, पर आज उस लघु प्राणी की खोज है।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के गद्य खण्ड' के अन्तर्गत 'श्रीमती महादेवी वर्मा' द्वारा रचित गिल्लू शीर्षक रेखाचित्र से अवतरित है।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—महादेवी जी ने गिलहरी के एक घायल बच्चे के प्राण बचाये। एक दिन सोनजुही की लता में एक पीली कली को देखकर महादेवी जी को उस छोटे जीव गिल्लू की याद आ गयी, जो इस लता की हरियाली में छिपकर बैठा करता था और जब महादेवी जी उस लता के पास पहुँचती थीं तो वह (गिल्लू) उनके कन्धे पर कूद जाया करता था जिससे लेखिका चौंक जाती थीं। उन दिनों महादेवी जी अपनी सोनजुही की लता में किसी कली को ढूँढ़ती थीं। पर इसके विपरीत आज वे कली को नहीं, अपितु उस छोटे-से जीव को ढूँढ़ती हैं।

(iii) प्रस्तुत गद्यांश में लेखिका किसकी बात कर रही हैं? इस गद्यांश में वे किसे खोज रही हैं?

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश में लेखिका गिल्लू नाम की एक गिलहरी की बात कर रही हैं। लेखिका पहले सोनजुही के पत्तों में कली को खोजा करती थीं, लेकिन अब वे गिल्लू को खोज रही हैं।

(4) यह कागभुशुण्डि भी विचित्र पक्षी है—एक साथ समादरित, अनादरित, अति सम्मानित, अति अवमानित।

हमारे बेचारे पुरखे न गरूड़ के रूप में आ सकते हैं, न मयूर के, न हंस के। उन्हें पितरपक्ष में हमसे कुछ पाने के लिए काक बनकर ही अवतीर्ण होना पड़ता है। इतना ही नहीं, हमारे दूरस्थ प्रियजनों को भी अपने आने का मधु संदेश इनके कर्कश स्वर में ही दे देना पड़ता है। दूसरी ओर हम कौआ की काँव-काँव करने को अवमानना के अर्थ में ही प्रयुक्त करते हैं।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के गद्य खण्ड' के अन्तर्गत 'श्रीमती महादेवी वर्मा' द्वारा रचित 'गिल्लू' शीर्षक रेखाचित्र से अवतरित है।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—महादेवी जी का कहना है कि उनको कौओं के प्रति भारतीय अवधारणाओं की विचित्रता पर बड़ा आश्चर्य होता है। वे सोचती हैं कि

यद्यपि कौओं से कई गुना सुन्दर पक्षी हमारे देश में हैं, जैसे—गरूड़, हंस और मोर, फिर भी भारतीयों का ऐसा विश्वास है कि उनके पूर्वजों की आत्माएँ पितृपक्ष में अपने वंशजों से कुछ प्राप्त करने के लिए काक बनकर पृथ्वी पर अवतीर्ण होती हैं। जब कौआ घर के छज्जे पर बैठकर काँव-काँव करता है तो व्यक्ति समझते हैं कि वह हमारे प्रियजनों के शुभ आगमन का मधुर सन्देश हमें दे रहा है।

(iii) कागभुशुण्डि कौन-सा पक्षी है? यह विचित्र कैसे है?

उत्तर—कागभुशुण्डि कौवे के नाम से जाना जाता है। यह विचित्र पक्षी इसलिए है कि यह मनुष्यों के द्वारा अत्यधिक सम्मानित होता है और अत्यधिक अपमानित भी।

(5) मेरी अस्वस्थता में वह तकिये पर सिरहाने बैठकर अपने नन्हें-नन्हें पंजों से मेरे सिर और बालों को इतने हौले-हौले सहलाता रहता कि उसका हटना एक परिचारिका के हटने के समान लगता। गर्मियों में जब मैं दोपहर में काम करती तो गिल्लू न बाहर जाता, न अपने झूले में बैठता। उसने मेरे निकट रहने के साथ गर्मी से बचने का एक सर्वथा नया उपाय खोज निकाला था। वह मेरे पास रखी सुराही पर लेट जाता और इस प्रकार समीप भी रहता और ठंडक में भी रहता।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के गद्य खण्ड' के अन्तर्गत 'श्रीमती महादेवी वर्मा' द्वारा रचित 'गिल्लू' शीर्षक रेखाचित्र से अवतरित है।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—महादेवी वर्मा का कथन है कि जब कभी वे अस्वस्थ होकर लेटी रहती थीं, तब गिल्लू उनके सिरहाने की ओर तकिये पर बैठ जाता था। वह अपने छोटे-छोटे पंजों से लेखिका के सिर एवं बालों को प्यार के साथ धीरे-धीरे सहलाता रहता था। जब गिल्लू वहाँ से हट जाता था, उस समय लेखिका को सेवा करने वाली परिचारिका के चले जाने जैसा अनुभव होता था।

(iii) गर्मियों की दोपहरी में गिल्लू की क्या दिनचर्या थी? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—गर्मियों की दोपहरी में गिल्लू घर के बाहर नहीं जाता था। वह लेखिका के पास रखी सुराही पर लेट जाता था।

व्याकरण एवं रचना-बोध

1. निम्नलिखित शब्दों की संधि-विच्छेद करके नाम लिखिए।

समादरित, दुर्गण, निर्भय, तपोवन, सन्तोष, युद्ध

उत्तर—समादरित— सम + आदरित = दीर्घ सन्धि

दुर्गण—दु + गण = दीर्घ सन्धि

निर्भय—नि: + भय = विसर्ग सन्धि

तपोवन—तप: + वन = विसर्ग सन्धि

सन्तोष—सम् + तोष = व्यंजन सन्धि

युद्ध—दुत् + ह = व्यंजन सन्धि

2. निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त उपसर्गों और प्रत्ययों पर ध्यान दीजिए तथा विचार कीजिए कि इनके प्रयोग से शब्द के मूल अर्थ में क्या परिवर्तन हुआ है? इसी प्रकार तीन-तीन अन्य शब्द भी लिखिए–

(क) उपसर्ग–अनादर, सम्मानित, अपवाद।

उत्तर—उपसर्ग

मूलशब्द	उपसर्ग	परिवर्तित शब्द	अन्य शब्द
आदर	अन	अनादर	अनुचित, अनपढ, अनदेखा
मान	सम्	सम्मान	सम्मति
वाद	अप	अपवाद	अयमान, अपशिष्ट, अपयश

(ख) प्रत्यय–हरीतिमा, स्वर्णिम, दूरस्थ।

उत्तर—प्रत्यय

मूलशब्द	प्रत्यय	परिवर्तित शब्द	अन्य शब्द
हरित	इमा	हरीतिमा	कालिमा, लालिमा, गरिमा
स्वर्ण	इम	स्वर्णिम	जालिम
दूर	स्थ	दूरस्थ	—

❑

5

स्मृति

(श्रीराम शर्मा)

परीक्षापयोगी प्रश्न

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. श्रीराम शर्मा ने किस प्रकार के साहित्य के लिए सर्वाधिक सराहनीय कार्य किया है?

उत्तर—श्रीराम शर्मा ने शिकार-साहित्य के लिए सर्वाधिक सराहनीय कार्य किया।

प्रश्न 2. हिन्दी साहित्य में शिकार-साहित्य के सुप्रसिद्ध लेखक कौन हैं?

उत्तर—श्रीराम शर्मा शिकार-साहित्य के सुप्रसिद्ध लेखक हैं।

प्रश्न 3. श्रीराम शर्मा की भाषा-शैली किस प्रकार की थी?

उत्तर—श्रीराम शर्मा जी की भाषा सहज, सरल, बोधगम्य एवं प्रवाहयुक्त है। इनकी शैली के भी विभिन्न रूप हैं, जो इस प्रकार हैं—(1) चित्रात्मक, (2) आत्मकथात्मक, (3) वर्णनात्मक, (4) विवेचनात्मक आदि।

प्रश्न 4. श्रीराम शर्मा का पत्रकारिता में क्या योगदान है?

उत्तर—पत्रकारिता के क्षेत्र में इनका महत्त्वपूर्ण स्थान है। इन्होंने 'विशाल भारत' का कुशलतापूर्वक सम्पादन किया।

प्रश्न 5. श्रीराम शर्मा की शिकार-साहित्य की कोई एक रचना लिखिए।

उत्तर—शिकार।

प्रश्न 6. 'विशाल भारत' पत्रिका का सम्पादन किसने किया?

उत्तर—'विशाल भारत' पत्रिका का सम्पादन श्रीराम शर्मा ने किया।

प्रश्न 7. 'स्मृति' लेख किस शैली में लिखा गया लेख है?

उत्तर—'स्मृति' लेख वर्णनात्मक शैली में लिखा गया।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. श्रीराम शर्मा के जीवन-परिचय, भाषा-शैली एवं कृतियों पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

उत्तर—शिकार साहित्य के सर्वाधिक प्रसिद्ध लेखक श्रीराम शर्मा का जन्म उत्तर प्रदेश के मैनपुरी जनपद के किरथरा (मक्खनपुर के समीप) नामक गाँव में 23 मार्च, सन् 1892 ई० को हुआ था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा मक्खनपुर के विद्यालय में हुई थी। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् देशप्रेम से प्रेरित होकर ये गाँधीजी के असहयोग आन्दोलन में सम्मिलित हो गये। कुछ समय तक ये 'प्रताप' के सह-सम्पादक तथा बाद में 'विशाल भारत' के सम्पादक हो गये। देश की सेवा के फलस्वरूप इनको जेल-यातनाएँ भी भोगनी पड़ीं। (सन् 1967 ई० में लम्बी बीमारी के बाद इनका देहान्त हो गया।

कृतियाँ—इनकी मुख्य कृतियाँ निम्नलिखित हैं—

(1) शिकार-साहित्य—'शिकार', 'प्राणों का सौदा', 'बोलती प्रतिमा', 'जंगल के जीव'।

(2) संस्मरण-साहित्य—'सन् बयालीस के संस्मरण', 'सेवाग्राम की डायरी'।

(3) सम्पादन—'प्रताप' और 'विशाल भारत'।

(4) जीवनी—'गंगा मैया' और 'नेताजी'।

भाषा-शैली—श्रीराम शर्मा जी की भाषा सहज, सरल, बोधगम्य एवं प्रवाहयुक्त है। भाषा को व्यावहारिक और रोचक बनाने के लिए इन्होंने मुहावरों और कहावतों का भी प्रयोग किया है। इनकी शैलीगत विशिष्टता सर्वथा निजी है। इनकी शैली के विभिन्न रूप हैं, जो इस प्रकार हैं—(1) चित्रात्मक, (2) आत्मकथात्मक, (3) वर्णनात्मक, (4) विवेचनात्मक आदि।

प्रश्न 2. निम्नलिखित अवतरणों के आधार पर उनके साथ दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(1) गाँव से मक्खनपुर जाते और मक्खनपुर से लौटते समय प्रायः प्रतिदिन ही कुएँ में ढेले डाले जाते थे। मैं तो आगे भागकर आ जाता था और टोपी को एक हाथ से पकड़कर दूसरे हाथ से ढेला फेंकता था। यह रोजाना की आदत हो गयी थी। साँप से फुसकार करवा लेना मैं उस समय बड़ा काम समझता था। मैं कुएँ की ओर बढ़ा। छोटा भाई मेरे पीछे हो लिया, जैसे बड़े मृगशावक के पीछे छोटा मृगशावक हो लेता है। कुएँ के किनारे से एक ढेला उठाया और उझककर एक हाथ से छोपी उतारते हुए साँप पर ढेला गिरा दिया, पर मुझ पर तो बिजली-सी गिर पड़ी। साँप ने फुसकार मारी या नहीं-ढेला उसे लगा या नहीं, यह बात अब तक स्मरण नहीं। टोपी के हाथ में लेते ही तीनों चिट्ठियाँ चक्कर काटती हुई कुएँ में गिर रही थीं। अकस्मात् जैसे घास चरते हुए हिरन की आत्मा गोली से हत होने पर निकल जाती है और वह तड़पता रह जाता है, उसी भाँति वे चिट्ठियाँ क्या टोपी से निकल गयीं मेरी तो जान निकल गयी। उनके गिरते ही मैंने उनको पकड़ने के लिए एक झपट्टा भी मारा, ठीक वैसे जैसे घायल शेर शिकारी को पेड़ पर चढ़ते देख उस पर हमला करता है। पर वे पहुँच से बाहर हो चुकी थीं। उनको पकड़ने की घबराहट में मैं स्वयं झटके के कारण कुएँ में गिर गया होता।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए। रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के गद्य खण्ड' के अन्तर्गत 'श्रीराम शर्मा' द्वारा लिखित 'स्मृति' नामक निबन्ध से लिया गया।

लेखक ने जब साँप के ऊपर ढेला गिराया तो लेखक की तीनों चिट्ठियाँ चक्कर काटती हुई कुएँ में गिर गईं। इस पर लेखक कहता है कि चिट्ठियों के कुएँ में गिर जाने से उन पर बिजली-सी गिर पड़ी। साँप को ढेला लगा या नहीं और साँप ने फुसकार मारी या नहीं, इस बात का लेखक को कुछ नहीं याद। लेखक कहता है कि मेरी हालत ऐसी हो गई जैसे अचानक घास चरते हुए हिरण को गोली लग जाती है और वह तड़पता रह जाता है। उसी तरह उन चिट्ठियों के टोपी से निकल जाने के बाद लेखक की भी जान सी निकल गयी और चिट्ठियों को पकड़ने के लिए लेखक ने कुछ इस तरह झपट्टा मारा जैसे घायल शेर शिकारी को पेड़ पर चढ़ता हुआ देखकर हमला करता है पर उसके हाथ कुछ नहीं लगता।

(ii) लेखक और उसका भाई रोजाना स्कूल जाते और आते समय क्या करते थे?

उत्तर—लेखक और उसका भाई रोजाना स्कूल जाते और आते समय कुएँ के भीतर साँप के ऊपर ढेले फेंकते थे और साँप से फुसकार लगवाते थे।

(iii) तीनों चिट्ठियाँ कहाँ गिर गई थीं?

उत्तर—तीनों चिट्ठियाँ कुएँ में गिर गई थीं।

(2) दृढ़ संकल्प से दुविधा का बेड़ियाँ कट जाती हैं। मेरी दुविधा भी दूर हो गयी। कुएँ में घुसकर चिट्ठियों को निकालने का निश्चय किया। कितना भयंकर निर्णय था। पर जो मरने को तैयार हो, उसे क्या? मूर्खता अथवा बुद्धिमत्ता से किसी काम को करने के लिए मौत का मार्ग ही स्वीकार कर ले और वह भी जान-बूझकर, तो फिर वह अकेला संसार से भिड़ने को तैयार हो जाता है। और फल? उसे फल की क्या चिन्ता? फल तो किसी दूसरी शक्ति पर निर्भर है। उस समय चिट्ठियाँ निकालने के लिए मैं विषधर से भिड़ने को तैयार हो गया। पासा फेंक दिया था। मौत का आलिंगन हो अथवा साँप से बचकर दूसरा जन्म, इसकी कोई चिन्ता न थी। पर विश्वास यह था कि डंडे से साँप को पहले मार दूँगा, तब फिर चिट्ठियाँ उठा लूँगा। बस इसी दृढ़ विश्वास के बूते पर मैंने कुएँ में घुसने की ठानी।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के गद्य खण्ड' के अन्तर्गत 'श्रीराम शर्मा' द्वारा लिखित 'स्मृति' नामक निबन्ध से लिया गया।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—लेखक कुएँ में उतरकर चिट्ठियाँ निकालने का दृढ़ निश्चय कर लेता है। यह निश्चय करते ही उसकी दुविधा समाप्त हो जाती है। पर यह निश्चय एक भयंकर निर्णय था। उसका यह कार्य मूर्खतापूर्ण हो या बुद्धिमत्तापूर्ण, परन्तु उसने तो जान-बूझकर मौत का मार्ग स्वीकार कर लिया था। कार्य के लिए मौत का मार्ग स्वीकार करने वाले ऐसे दृढ़ निश्चयी व्यक्ति अकेले ही संसार से संघर्ष करने को तैयार रहते हैं। ऐसे लोग फल की चिन्ता नहीं करते।

(iii) लेखक ने कुएँ में उतरने का निश्चय क्यों किया?

उत्तर—लेखक के बड़े भाई ने लेखक को डाक में डालने के लिए कुछ चिट्ठियाँ दी थीं। साँप को ढेला मारते समय वे चिट्ठियाँ कुएँ में गिर पड़ीं। उन चिट्ठियों को निकालने के लिए लेखक ने कुएँ में उतरने का निश्चय किया।

(3) छोटा भाई रोता था। उसके रोने का तात्पर्य था कि मेरी मौत मुझे नीचे बुला रही है, यद्यपि वह शब्दों से न कहता था। वास्तव में

मौत सजीव और नग्न रूप में कुएँ में बैठी थी, पर उस नग्न मौत से मुठभेड़ के लिए मुझे भी नग्न होना पड़ा।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के गद्य खण्ड' के अन्तर्गत 'श्रीराम शर्मा' द्वारा लिखित 'स्मृति' नामक निबन्ध से लिया गया।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—लेखक ने जब कुएँ के भीतर प्रवेश कर साँप के पास से चिट्ठियाँ लाने का निश्चय कर लिया तब उसका छोटा भाई यह सोचकर रोने लगा कि बड़े भाई को साँप डस लेगा और वह मर जायेगा। लेखक के छोटे भाई का रोना भी बिल्कुल ठीक था क्योंकि साँप के रूप में साक्षात् मौत नग्न रूप में कुएँ में बैठी थी। उस साँप रूपी मौत से लड़ने के लिए लेखक को भी नग्न होना पड़ा; अर्थात् कुएँ में उतरने के लिए उसे अपनी धोती उतारनी पड़ी।

(iii) ''नग्न मौत से मुठभेड़ के लिए नग्न होना पड़ा।'' से क्या आशय है?

उत्तर—उल्लेखित अंश का आशय है कि समस्या का सामना करने के लिए व्यक्ति को भी उसी रूप में तैयारी करनी चाहिए जिस रूप में समस्या सम्मुख हो।

(4) साँप को चक्षु:श्रवा कहते हैं। मैं स्वयं चक्षु:श्रवा हो रहा था। अन्य इन्द्रियों ने मानो सहानुभूति से अपनी शक्ति आँखों को दे दी दो। साँप के फन की ओर मेरी आँखें लगी हुई थीं कि कब किस ओर को आक्रमण करता है, साँप ने मोहिनी-सी डाल दी थी। शायद वह मेरे आक्रमण की प्रतीक्षा में था, पर जिस विचार और आशा को लेकर मैंने कुएँ में घुसने की ठानी थी, वह तो आकाश-कुसुम था। मनुष्य का अनुमान और भावी योजनाएँ कभी-कभी कितनी मिथ्या और उल्टी निकलती हैं। मुझे साँप का साक्षात् होते ही अपनी योजना और आशा की असंभवता प्रतीत हो गयी।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के गद्य खण्ड' के अन्तर्गत 'श्रीराम शर्मा' द्वारा लिखित 'स्मृति' नामक निबन्ध से लिया गया।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—लेखक का कहना है कि वह जिस विचार और आशा को लेकर कुएँ में उतरा था कि साँप को मारकर वह चिट्ठियाँ निकाल लेगा, साँप की आक्रामक मुद्रा को देखकर उसका विश्वास और आशा दोनों ही धूल-धूसरित हो गये थे। उसे अपनी योजना असम्भव और निरर्थक दिखाई दे रही थी। उस समय वह सोचने लगा कि मनुष्य सोचता तो बहुत बड़ी-बड़ी बातें है और बड़ी-बड़ी योजनाओं को क्रियान्वित करने की बात करता है, किन्तु समय पड़ने पर उसे अपनी सभी योजनाएँ और उन्हें पूरी करने की आशा और विश्वास झूठे प्रतीत होने लगते हैं।

(iii) लेखक की दृष्टि कुएँ में कहाँ लगी हुई थी ओर क्यों?

उत्तर—छात्र स्वयं करें।

व्याकरण एवं रचना-बोध

1. निम्नलिखित मुहावरों का आशय स्पष्ट करते हुए इनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

बिजली-सी गिरना, बेहाल होना, दिन का बुढ़ापा जाना, कलेजे पर तलवार फिरना, तोप के मुहरे पर खड़ा होना

उत्तर—**(1) बिजली-सी गिरना** (मानसिक आघात लगना)—आतंकवादी हमने में अपने बेटे की मौत होने का समाचार सुनकर सुनीता पर **बिजली-सी गिर पड़ी।**

(2) बेहाल होना (बुरी दशा हो जाना)—भूख के मारे बच्चा रोते-रोते **बेहाल हो गया।**

(3) दिन का बुढ़ापा जाना (दिन छिपने के समीप होना)—**दिन के बुढ़ापे को जाता** देखकर शिकारी दल ने अपना सामान समेटकर शिविर की ओर प्रस्थान कर दिया।

(4) कलेजे पर तलवार फिरना (हृदय पर गहरा आघात लगना)—जब सुनील ने यह सुना कि कुछ लोगों ने मिलकर उसके भाई की हत्या कर दी तो उसके **कलेजे पर तलवार-सी फिर गयी।**

(5) तोप के मुहरे पर खड़ा होना (मुकाबले पर डटना)—हमरे देश के फौजी **तोप के मुहरे पर खड़े होने** के लिए तैयार रहते हैं।

2. निम्नलिखित शब्दों का समास-विग्रह कीजिए–

प्रसन्नवदन, भयभीत, वानर-टोली, मृगसमूह, विषधर, चक्षु:श्रवा।

उत्तर—

प्रसन्नवदन	—	वदन से प्रसन्न
भयभीत	—	भय से भीत
वानर-टोली	—	वानर और टोली
मृगसमूह	—	मृगों का समूह
विषधर	—	विष को धारण करने वाला
चक्षु:श्रवा	—	आँख से सुनने वाला

❑

6

निष्ठामूर्ति कस्तूरबा

(काका कालेलकर)

परीक्षापयोगी प्रश्न

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. काका कालेलकर की प्रमुख शैली कौन-सी रही है?

उत्तर—इनकी शैली प्रमुखत: विवरणात्मक, विचारात्मक, चित्रात्मक एवं आत्मकथात्मक रही है।

प्रश्न 2. 'उस पार के पड़ोसी' की रचना विधा का नाम लिखिए।

उत्तर—'उस पार के पड़ोसी' रचना 'यात्रावृत्त' विधा से है।

प्रश्न 3. गाँधी संग्रहालय के प्रथम संचालक कौन थे?

उत्तर—गाँधी संग्रहालय के प्रथम संचालक काका कालेलकर थे।

प्रश्न 4. राष्ट्रभाषा-प्रचार को राष्ट्रीय कार्यक्रम मानने वाले हिन्दी लेखक का नाम बताइए।

उत्तर—काका कालेलकर राष्ट्रभाषा-प्रचार को राष्ट्रीय कार्यक्रम मानने वाले हिन्दी लेखक थे।

प्रश्न 5. काका कालेलकर हिन्दी के अतिरिक्त और किस भारतीय भाषा में लिखते थे?

उत्तर—काका कालेलकर हिन्दी के अतिरिक्त गुजराती में लिखते थे।

प्रश्न 6. विचारात्मक निबन्ध लिखने के अतिरिक्त काका साहब ने हिन्दी-साहित्य की किस विधा में कलम चलायी है?

उत्तर—विचारात्मक निबन्ध लिखने के अतिरिक्त काका साहब ने हिन्दी साहित्य की यात्रा-वृत विधा में रचनाएँ लिखी हैं।

प्रश्न 7. काका कालेलकर की दो रचनाओं के नाम लिखिए।

उत्तर—(1) जीवन लीला, (2) उस पार के पड़ोसी।

प्रश्न 8. 'निष्ठामूर्ति कस्तूरबा' पाठ की भाषा-शैली की दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर—(1) पाठ की भाषा सरल, स्वाभाविक और प्रवाहपूर्ण है।
(2) पाठ में चित्रात्मक और विचारात्मक शैलियाँ अपनाई गयी हैं।

प्रश्न 9. किन लोगों के व्यक्तित्व का प्रभाव कालेलकर के जीवन पर पड़ा?

उत्तर—महात्मा गाँधी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर और राजीव टंडन जी के व्यक्तित्व का प्रभाव काका कालेलकर के जीवन पर पड़ा।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. काका कालेलकर का संक्षिप्त जीवन-परिचय देते हुए उनके कृतित्त्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—राष्ट्रभाषा के प्रमुख प्रचारक एवं निर्भीक सेनानी काका कालेलकर का जन्म सन् 1885 ई० में महाराष्ट्र के सतारा जिले के एक सम्पन्न और प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। इनका पूरा नाम दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर है। इनके पिता बालकृष्ण कालेलकर कोषाधिकारी थे। सन् 1907 ई० में बी० ए० की उपाधि प्राप्त करके क्रान्तिकारियों के सम्पर्क में आकर इन्होंने देश और समाज की सेवा का व्रत ले लिया। इन्होंने 'राष्ट्रमत' नामक मराठी पत्र का सम्पादन किया।

काका कालेलकर संविधान सभा के सदस्य रहे। भारत सरकार ने इनको 'पद्मभूषण' की उपाधि से तथा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति ने इन्हें 'गाँधी पुरस्कार' से सम्मानित किया। राष्ट्रभाषा का प्रचारक और मानव-सेवा का साधक यह सन्त 21 अगस्त, सन् 1981 ई० को इस लोक से विदा हो गया।

कृतियाँ—इनकी प्रमुख कृतियाँ निम्नलिखित हैं—

(1) निबन्ध-संग्रह—'जीवन-साहित्य', 'जीवन का काव्य'।

(2) आत्मचरित—'जीवन-लीला' और 'धर्मोदय'।

(3) यात्रावृत्त—'हिमालय-प्रवास', 'लोकमाता', 'यात्रा', 'उस पार के पड़ोसी' आदि प्रसिद्ध यात्रावृत्त हैं।

(4) संस्मरण—'संस्मरण' तथा 'बापू की झाँकी'।

(5) सर्वोदय-साहित्य—इनकी 'सर्वोदय' रचना में सर्वोदय से सम्बन्धित विचार हैं।

साहित्य में स्थान—काका साहब महान् देशभक्त, उच्चकोटि के विद्वान, विचारक, राष्ट्रभाषा के प्रचारक और समर्थ लेखक थे। वे हिन्दी के श्रेष्ठ निबन्धकार एवं यात्रावृत्त लेखक थे। हिन्दी भाषा के प्रचारक के रूप में उनका महत्त्वपूर्ण स्थान है। हिन्दी जगत् उनकी नि:स्वार्थ सेवाओं के लिए सदैव उनका कृतज्ञ रहेगा।

प्रश्न 2. निम्नलिखित अवतरणों के आधार पर उनके साथ दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(1) आज के जमाने में स्त्री-जीवन सम्बन्ध के हमारे आदर्श हमने काफी बदल लिये हैं। आज कोई स्त्री अगर कस्तूरबा की तरह अशिक्षित रहे और किसी तरह महत्त्वाकांक्षा का उदय उसमें न दिखाई दे तो हम उसका जीवन यशस्वी या कृतार्थ नहीं कहेंगे। ऐसी हालत में जब कस्तूरबा की मृत्यु हुई, पूरे देश ने स्वयंस्फूर्ति से उनका स्मारक बनाने का तय किया। और सहज इकट्ठी न हो पाये, इतनी बड़ी निधि इकट्ठी कर दिखायी। इस पर से यह सिद्ध होता है कि हमारा प्राचीन तेजस्वी आदर्श अब देशमान्य है। हमारी संस्कृति की जड़ें आज भी काफी मजबूत हैं।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के 'गद्य खण्ड' में संकलित तथा उच्चकोटि के विचारक 'श्री काका कालेलकर' द्वारा लिखित 'निष्ठामूर्ति कस्तूरबा' नामक निबन्ध से उद्धृत है।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—काका साहब कहते हैं कि आज लोगों की स्त्री के जीवन के सम्बन्ध में सोच बदल गयी है। कस्तूरबा अशिक्षित रहीं, यह उनके तत्कालीन समाज की देन थी, किन्तु अशिक्षित रहकर भी अपनी कर्तव्यनिष्ठा के द्वारा वह उन लोगों की आकांक्षाओं पर खरी उतरीं, जिन पर आज की पढ़ी-लिखी स्त्री भी यश प्राप्त नहीं कर सकती। ऐसे ही यशस्वी जीवन को सफल कहा जा सकता है।

(iii) अशिक्षित स्त्री का जीवन यशस्वी या कृतार्थ क्यों नहीं कहा जा सकता?

उत्तर—अशिक्षित स्त्री का जीवन यशस्वी या कृतार्थ इसलिए नहीं कहा जा सकता; क्योंकि उसमें किसी तरह की महत्त्वाकांक्षा का उदय नहीं दिखाई देता।

(2) यह सब श्रेष्ठता या महत्ता कस्तूरबा में कहाँ से आयी? उनकी जीवन-साधना किस प्रकार की थी? शिक्षण के द्वारा उन्होंने बाहर से कुछ नहीं लिया था। सचमुच, उनमें तो आर्य आदर्श की शोभा देने वाले कौटुम्बिक सद्गुण ही थे। असाधारण मौका मिलते ही और उतनी ही असाधारण कसौटी आ पड़ते ही उन्होंने स्वाभावसिद्ध कौटुम्बिक सद्गुण व्यापक किये और उनके जोरों न हर समय जीवन-सिद्धि हासिल की। सूक्ष्म प्रमाण में या छोटे पैमाने पर जो शुद्ध साधना की जाती है, उसका तेज इतना लोकोत्तरी होता है कि चाहे कितना ही बड़ा प्रंसग आ पड़े या व्यापक प्रमाण में कसौटी हो, चारित्र्यवान मनुष्य को अपनी शक्ति का सिर्फ गुणाकार ही करने का होता है।

(i) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—लेखक का कहना है कि जब कोई सदाचारी व्यक्ति छोटे या बड़े पैमाने पर शुद्ध हृदय से और सच्ची लगन से कोई कार्य करता है तो उसका प्रभाव अलौकिक होता है। कस्तूरबा के सामने जितनी बार कठिनाइयाँ

अथवा परीक्षा की घड़ियाँ आयीं, उतनी बार उनकी कर्मनिष्ठा पहले से कई गुना बढ़ती रहती है। सच्ची लगन से कार्य करने पर ऐसा ही होता है।

(ii) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के 'गद्य खण्ड' में संकलित तथा उच्चकोटि के विचारक 'श्री काका कालेलकर' द्वारा लिखित 'निष्ठामूर्ति कस्तूरबा' नामक निबन्ध से उद्धृत है।

(iii) कस्तूरबा को सद्गुण कहाँ से प्राप्त हुए थे?

उत्तर—कस्तूरबा ने किसी विद्यालय से शिक्षा ग्रहण नहीं की थी। उनको अपने परिवार द्वारा ही महान् सद्गुण प्राप्त हुए थे।

(3) दुनिया में दो अमोघ शक्तियाँ हैं—शब्द और कृति। इसमें कोई शक नहीं कि 'शब्दों' ने सारी पृथ्वी को हिला दिया है, किन्तु अन्तिम शक्ति तो 'कृति' की है। महात्माजी ने इन दोनों शक्तियों की असाधारण उपासना की है। कस्तूरबा ने इन दोनों शक्तियों में से अधिक श्रेष्ठ शक्ति कृति की नम्रता के साथ उपासना करके सन्तोष माना और जीवन-सिद्धि प्राप्त की।

(i) गाँधीजी ने किन शक्तियों की उपासना की?

उत्तर—दुनिया में दो अमोघ शक्तियाँ हैं—शब्द तथा कृति; अर्थात् पहली पुस्तकीय ज्ञान की तथा दूसरी कर्म की। महात्मा गाँधी के पास ये दोनों शक्तियाँ थीं; अर्थात् उन्होंने उच्च ज्ञान भी प्राप्त किया था।

(ii) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के 'गद्य खण्ड' में संकलित तथा उच्चकोटि के विचारक 'श्री काका कालेलकर' द्वारा लिखित 'निष्ठामूर्ति कस्तूरबा' नामक निबन्ध से उद्धृत है।

(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—लेखक श्री काका कालेलकर का कहना है कि संसार में दो अचूक शक्तियाँ हैं—(1) शब्द (अक्षर) और (2) कृति (कर्म)। ये शक्तियाँ कभी निष्फल नहीं होती। पहली शक्ति पुस्तकीय ज्ञान की शक्ति है और दूसरी है कर्म की शक्ति। शिक्षा और कर्म में से शिक्षा (ज्ञान) ने सम्पूर्ण विश्व को आन्दोलित कर दिया है परन्तु अन्तिम शक्ति तो कर्म ही है। इसके बिना तो शिक्षा अर्थात् ज्ञान की प्राप्ति भी नहीं की जा सकती। दोनों ही अचूक शक्तियाँ हैं और निश्चित रूप से सफलता देने वाली हैं। गाँधी जी को ये दोनों शक्तियाँ प्राप्त थीं। वे पढ़े-लिखे भी थे और कर्मनिष्ठ भी। कस्तूरबा जी पढ़ी लिखी नहीं थीं। उनके पास एक ही शक्ति थी— कर्म की शक्ति।

(iv) संसार में कौन-सी दो महान शक्तियाँ हैं?

उत्तर—संसार में दो महान् शक्तियाँ हैं, जिनमें से एक है—शब्द की शक्ति और दूसरी है—कर्म की शक्ति।

(4) कस्तूरबा ने अपनी कृतिनिष्ठा के द्वारा यह दिखा दिया है कि शुद्ध और रोचक साहित्य के पहाड़ों की अपेक्षा कृति का एक कण अधिक मूल्यवान और आबदार होता है। शब्द-शास्त्र में जो लोग निपुण होते हैं, उनको कर्तव्य-अकर्तव्य की हमेशा ही विचिकित्सा करनी पड़ती है। कृतिनिष्ठ लोगों को ऐसी दुविधा कभी परेशान नहीं कर पाती। कस्तूरबा के सामने उनका कर्तव्य किसी दीये के समान स्पष्ट था। कभी कोई चर्चा शुरु हो जाती, तब 'मुझसे यही होगा' और 'यह नहीं होगा'– इन दो वाक्यों में ही अपना फैसला सुना देती।

(i) कस्तूरबा के चरित्र की मुख्य विशेषता लिखिए।

उत्तर—कस्तूरबा एक कर्तव्यनिष्ठ नारी थी। कस्तूरबा के सामने उनका कर्तव्य किसी दीये के समान स्पष्ट था। यही कस्तूरबा के चरित्र की मुख्य विशेषता थी।

(ii) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के 'गद्य खण्ड' में संकलित तथा उच्चकोटि के विचारक 'श्री काका कालेलकर' द्वारा लिखित 'निष्ठामूर्ति कस्तूरबा' नामक निबन्ध से उद्धृत है।

(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—लेखक का कथन है कि पूज्या कस्तूरबा कर्मनिष्ठ नारी थीं। उन्होंने अपनी कर्मनिष्ठा के द्वारा इस बात को सिद्ध कर दिया कि रुचिकर पुस्तकों के ढेर को पढ़ने से कहीं अच्छा है कोई छोटा-सा कार्य तत्परता और लगन से किया जाए। कर्म के करने से ही मनुष्य को यश प्राप्त हो सकता है, केवल पुस्तकें रटने से नहीं। जिन लोगों का पुस्तकीय ज्ञान विस्तृत है, वे अनेक बार सन्देह में पड़ जाते हैं कि उन्हें क्या करना चाहिए और क्या नहीं। पर जो कर्मनिष्ठ होते हैं, उन्हें कभी सन्देह या दुविधा में नहीं उलझना पड़ता।

(iv) शब्द शास्त्र में निपुण व्यक्तियों को कैसी दुविधा का सामना करना पड़ता है?

उत्तर—शब्द शास्त्र में निपुण अर्थात् जिन लोगों का पुस्तकीय ज्ञान विस्तृत है उन्हें अनेक बार 'क्या करना चाहिए और क्या नहीं' की दुविधा का सामना करना पड़ता है।

व्याकरण एवं रचना-बोध

1. निम्नलिखित विदेशज शब्दों के लिए हिन्दी शब्द लिखिए-

कायम, जिद्द, खुद, अमलदार, कतई, आबदार, हासिल।

उत्तर—

विदेशज शब्द	हिन्दी शब्द
कायम	अड़िग
जिद्द	हठ
खुद	स्वयं
अमलदार	अधिकारी (हुकूमत करने वाला)
कतई	बिल्कुल
आबदार	इज्जतदार
हासिल	प्राप्त

2. निम्नलिखित शब्दों का सन्धि-विच्छेद करते हुए सन्धि-नाम भी लिखिए-

निस्तेज, एकाक्षरी, लोकोत्तर, स्वागत, निर्भर्त्सना, सत्याग्रह, प्रत्युत्पन्न, गुणाकार, महत्त्वाकांक्षा।

उत्तर—

शब्द	सन्धि-विग्रह				सन्धि
निस्तेज	नि:	+	तेज	=	विसर्ग सन्धि
एकाक्षरी	एक	+	अक्षरी	=	दीर्घ सन्धि
लोकोत्तर	लोक	+	उत्तर	=	गुण सन्धि
स्वागत	स्व	+	आगत	=	दीर्घ सन्धि
निर्भर्त्सना	नि:	+	भर्त्सना	=	विसर्ग सन्धि
सत्याग्रह	सत्य	+	आग्रह	=	दीर्घ सन्धि
प्रत्युत्पन्न	प्रति	+	उत्पन्न	=	यण् सन्धि
गुणाकार	गुण	+	आकार	=	दीर्घ सन्धि
महत्त्वाकांक्षा	महत्त्व	+	आकांक्षा	=	दीर्घ सन्धि

3. निम्नलिखित शब्दों में समास-विग्रह कीजिए और समास का नाम भी बताइए-

जीवन-सिद्धि, धर्मनिष्ठा, माँ-बाप, देशसेवा, बन्धनमुक्त, प्राणघातक।

उत्तर—

	समास-विग्रह	समास
जीवन-सिद्धि	जीवन और सिद्धि	द्वन्द्व समास
धर्मनिष्ठा	धर्म से निष्ठ	तत्पुरुष समास
माँ-बाप	माँ और बाप	द्वन्द्व समास
देशसेवा	देश की सेवा	तत्पुरुष समास
बन्धन मुक्त	बन्धन से मुक्त	तत्पुरुष समास
प्राणघातक	प्राणों के लिए घातक	तत्पुरुष समास

❑

7

ठेले पर हिमालय

(धर्मवीर भारती)

परीक्षापयोगी प्रश्न

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. धर्मवीर भारती का जन्म-वर्ष एवं स्थान लिखिए।

उत्तर—साहित्यकार धर्मवीर भारती का जन्म 25 दिसम्बर 1926 ई० को इलाहाबाद में हुआ।

प्रश्न 2. 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' की विधा का नामोल्लेख कीजिए।

उत्तर—'सूरज का सातवाँ घोड़ा' हिन्दी की विधा उपन्यास से है।

प्रश्न 3. भारती जी को भारत सरकार ने कौन-सा पुरस्कार दिया।

उत्तर—भारत सरकार ने भारती जी को 'पदमश्री' पुरस्कार से सम्मानित किया।

प्रश्न 4. धर्मवीर भारती के साहित्यिक अवदान पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—धर्मवीर भारती ने साहित्य के क्षेत्र में विशेष योगदान दिया है इन्होंने, गुनाहों का देवता, सूरज का सातवाँ घोड़ा और चाँद और टूटे हुए लोग जैसे उपन्यास और कहानी संग्रह की रचना की है।

प्रश्न 5. 'संगम' साप्ताहिक पत्र कहाँ से निकलता था?

उत्तर—'संगम' साप्ताहिक पत्र इलाहाबाद से प्रकाशित होता था।

प्रश्न 6. धर्मयुग के सम्पादक का नाम बताइए।

उत्तर—'धर्मयुग' के सम्पादक धर्मवीर भारती हैं।

प्रश्न 7. 'गुनाहों का देवता' किस साहित्यिक विधा की रचना है? इसके रचयिता का नाम लिखिए।

उत्तर—'गुनाहों का देवता' धर्मवीर भारती द्वारा रचित उपन्यास विधा की रचना है।

प्रश्न 8. धर्मवीर भारती की दो प्रमुख रचनाओं के नाम बताइए।

उत्तर—(1) ठण्डा लोहा (2) अन्धा युग— धर्मवीर भारती की दो प्रमुख रचनाएँ है।

प्रश्न 9. 'ठेले पर हिमालय' का वर्ण्य विषय क्या है?

उत्तर—प्रस्तुत निबन्ध ठेले पर हिमालय पाठ इनका यात्रा-वृत्तान्त शृंखला का संस्मरणात्मक निबन्ध है। इस निबन्ध में इन्होंने नैनीताल से कौसानी तक की यात्रा का रोचक एवं मनोरम रूप से वर्णन किया है।

प्रश्न 10. धर्मवीर भारती किस युग के लेखक हैं?

उत्तर—धर्मवीर भारती आधुनिक युग के लेखक हैं।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. धर्मवीर भारती का जीवन-परिचय एवं शिक्षा-दीक्षा देते हुए उनकी कृतियों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—धर्मवीर भारती का जन्म 25 दिसम्बर सन् 1926 ई० को इलाहाबाद के एक निम्न मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ था। इनकी सम्पूर्ण शिक्षा-दीक्षा इलाहाबाद में ही हुई। इन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से ही हिन्दी में एम० ए०, पी० एच० डी० की उपाधि प्राप्त की। ये कुछ समय तक इलाहाबाद विश्व-विद्यालय के हिन्दी विभाग में प्राध्यापक रहे और इलाहाबाद से प्रकाशित होने वाले 'संगम' पत्र का सम्पादन भी किया। भारती जी ने बम्बई से प्रकाशित होने वाले हिन्दी के साप्ताहिक पत्र 'धर्मयुग' का बहुत समय तक सम्पादन किया। महात्मा गाँधी, जवाहर लाल नेहरू, विनोबा भावे इनके वरेण्य आदर्श रहे हैं। सन् 1972 ई० में भारत सरकार ने इन्हें 'पद्मश्री' की उपाधि से विभूषित किया। 4 सितम्बर, सन् 1997 ई० की प्रात: बम्बई में कलम का यह सिपाही इस आसार-संसार से विदा लेकर परलोकवासी हो गया।

कृतियाँ—भारती जी ने हिन्दी गद्य की अनेक विधाओं पर अपनी लेखनी चलायी है। इनकी प्रमुख कृतियाँ निम्नलिखित हैं—

(1) कथा-साहित्य—'गुनाहों का देवता', 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' इनके लोकप्रिय उपन्यास है। 'चाँद और टूटे हुए लोग' इनका कहानी-सग्रह हैं।

(2) नाटक व एकांकी—'नदी प्यासी थी' भारती जी का नाटक और 'नीली झील' प्रसिद्ध एकांकी है।

(3) निबन्ध संग्रह—'कहनी-अनकहनी', ठेले पर हिमालय', 'पश्यन्ती'।

(4) आलोचना—'मानव-मूल्य' और 'साहित्य'।

(5) काव्य-संग्रह—'कनुप्रिया', 'ठण्डा लोहा' और 'सात गीत वर्ष'।

(6) अनुवाद—'देशान्तर' में विश्व की कुछ भाषाओं का हिन्दी में अनुवाद है।

(7) सम्पादन—'संगम' और 'धर्मयुग'। धर्मयुग के सम्पादक के रूप में भारती जी ने विशेष ख्याति अर्जित की।

साहित्य में स्थान—भारती जी एक सहृदय कवि, ख्याति-प्राप्त पत्रकार, लब्ध-प्रतिष्ठ निबन्धकार एवं कुशल कथाकार थे। पत्रकार के रूप में हिन्दी-साहित्य में इनकी विशेष ख्याति एवं महत्त्वपूर्ण स्थान है क्योंकि इन्होंने पत्रकारिता को नयी ऊर्जा देकर उसे अनूठी ऊँचाइयों तक पहुँचाया।

प्रश्न 2. निम्नलिखित अवतरणों के आधार पर उनके साथ दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(1) इन धीरे-धीरे खिसकते हुए बादलों में यह कौन चीज है, जो अटल है। यह छोटा-सा बादल के टुकड़े-सा ..... और कैसा अजब रंग है इसका, न सफेद, न रूपहला, न हल्का नीला ..... पर तीनों का आभास देता हुआ। यह है क्या? बर्फ तो नही है। हाँ जी। बर्फ नहीं है तो क्या है? और अकस्मात् बिजली-सा यह विचार मन में कौंधा कि इसी कत्यूर घाटी के पार वह नगाधिराज, पर्वत सम्राट, हिमालय है, इन बादलों ने उसे ढँक रखा है, वैसे वह क्या सामने है, उसका एक कोई छोटा-सा बाल-स्वभाव वाला शिखर बादलों की खिड़की से झाँक रहा है। मैं हर्षतिरेक से चीख उठा ''बरफ''! वह देखो।'' शुक्ल जी, सेन, सभी ने देखा, पर अकस्मात् वह फिर लुप्त हो गया। लगा, उसे बाल-शिखर जान किसी ने अन्दर खींच लिया। खिड़की से झाँक रहा है, कहीं गिर न पड़े।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के 'गद्य खण्ड' में संकलित 'श्री धर्मवीर भारती' द्वारा लिखित 'ठेले पर हिमालय' नामक निबन्ध से लिया गया है।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—लेखक जब कत्यूर की घाटी के पास पहुँचा तो वहाँ से उसे बादलों से ढके हुए किसी पर्वत-शिखर के दर्शन हुए। उसे बादलों के बीच से कोई छोटा-सा पर्वत-शिखर दिखाई पड़ा। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि जैसे कोई छोटा-सा बालक किसी खिड़की से झाँक रहा है। एकाएक लेखक प्रसन्नता के अधिक्य से चीख उठता है कि ''बरफ! वह देखो।'' उसके कहने का आशय था कि वह सामने हिमालय है, उस ओर देखो। उसके सहयात्रियों ने उस ओर देखा। लेकिन वह पर्वत-शिखर गायब हो चुका था, अर्थात् उसके सामने बादल आ चुके थे। लेखक को ऐसा लगा कि किसी ने उसे छोटा समझकर अन्दर खींच लिया कि खिड़की से झाँक रहा है, कहीं नीचे न गिर पड़े।

(iii) लेखक को बादलों के बीच क्या दिखाई पड़ा? उसका वर्णन कीजिए।

उत्तर—लेखक को बादलों के बीच से नगधिराज पर्वतसम्राट हिमालय के दर्शन हुए। हिमालय का रंग विचित्र है। यह न तो सफेद है और न ही चाँदी के जैसा है और न ही हल्का नीला है। इसका रंग इन तीनों के मिश्रित रंग के समान है।

(2) पर उस एक क्षण के हिम-दर्शन ने हममें जाने क्या भर दिया था। सारी खिन्नता, निराशा, थकावट-सब छू-मन्तर हो गयी। हम सब आकुल हो उठे। अभी ये बादल छँट जाएँगे और फिर हिमालय हमारे सामने खड़ा होगा। निरावृत्त ..... असीम सौन्दर्यराशि हमारे सामने अभी-अभी अपना घूँघट धीरे से खिसका देगी और ..... और तब? सचमुच मेरा दिल बुरी तरह धड़क रहा था। शुक्ल जी शान्त थे, केवल मेरी ओर देखकर कभी-कभी मुस्कुरा देते थे, जिसका अभिप्राय था, 'इतने अधीर थे, कौसानी आयी भी नहीं और मुँह लटका लिया। अब समझे यहाँ का जादू।'

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के 'गद्य खण्ड' में संकलित 'श्री धर्मवीर भारती' द्वारा लिखित 'ठेले पर हिमालय' नामक निबन्ध से लिया गया है।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—भारती जी कहते हैं कि हिमालय को न देख पाने की निराशा और यात्राजन्य थकावट सब तत्काल ही गायब हो गयी। भारती जी और उनके साथ के सभी लोग हिमालय को देखने की लालसा में व्याकुल हो उठे। वे ऐसा सोच रहे थे कि ये जो बादल सामने छाये हुए है, जिनके कारण वे हिमालय को देख नहीं पा रहे हैं, वे जब तुरन्त ही सामने से हट जाएँगे और तब हिमालय उनके सामने प्रत्यक्ष खड़ा होगा, बिना किसी आवरण के, निरावृत्त वह असीम सौन्दर्य की राशि (हिमालय) बादलों के घूँघट रूपी आवरण को धीरे से खिसकाकर जब सामने आ जाएगी, उस समय क्या होगा? यह सोच-सोचकर भारती का हृदय बुरी तरह से धडक रहा था।

(iii) लेखक पर हिम-दर्शन के प्रभाव का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर—क्षण-मात्र के हिमालय के दर्शन ने लेखक को ऐसे उल्लास से भर दिया था, जिससे उसकी समस्त मानसिक परेशानी, निराशा और मार्ग की थकावट सब कुछ तुरन्त ही गायब हो गयी।

(3) इसी हिमालय को देखकर किसने-किसने क्या-क्या नहीं लिखा और यह मेरा मन है कि एक कविता तो दूर, एक पंक्ति, हाय एक शब्द भी तो नहीं जागता। ..... पर कुछ नहीं, यह सब कितना छोटा लग रहा है इस हिम-सम्राट् के समक्ष। पर धीरे-धीरे लगा कि मन के अन्दर भी बादल थे, जो छँट रहे हैं, कुछ ऐसा उभर रहा है, जो इन शिखरों की ही प्रकृति का है .....। कुछ ऐसा, जो इसी ऊँचाई पर उठने की चेष्टा कर रहा है, ताकि इनसे इन्हीं के स्तर पर मिल सके। लगा, यह हिमालय बड़े भाई कि तरह ऊपर चढ़ गया है और मुझे-छोटे भाई को-नीचे खड़ा हुआ कुंठित और लज्जित देखकर थोड़ा उत्साहित भी कर रहा है, स्नेहभरी चुनौती भी दे रहा है- ''हिम्मत है? उठोगे?''

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ ओर लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के 'गद्य खण्ड' में संकलित 'श्री धर्मवीर भारती' द्वारा लिखित 'ठेले पर हिमालय' नामक निबन्ध से लिया गया है।

(ii) हिमालय कौन-सी चुनौती दे रहा है?

उत्तर—हिमालय लेखक को बड़े भाई की तरह उत्साहित कर ऊँचे उठने की चुनौती दे रहा है।

(iii) रेखांकित अंश को व्याख्या कीजिए।

उत्तर—रेखांकित अंश की व्याख्या—लेखक कहता है कि पवित्र हिमालय के दर्शन से उसके साथ-साथ पर्यटकों का मन भी पवित्र हो रहा था, मन से दुर्भावनाएँ नष्ट हो रही थीं और हिम-शिखरों जैसी उच्च कोटि की भावनाएँ मन में उत्पन्न हो रही थीं। लेखक को ऐसा लगा कि हिमालय हमें अपने जैसा महान्, उच्च और पवित्र बनने की प्रेरणा दे रहा है। लेखक का कहना है कि उसके मन में ऐसे विचार आ रहे थे, जो उसे वैचारिक धरातल पर बहुत ऊँचा उठा रहे थे, जिससे वह इन ऊँची चोटियों से इन्हीं के जैसा बनकर मिल सके।

(iv) हिमालय दर्शन के उपरान्त लेखक को क्या प्रतीति हुई?

उत्तर—लेखक को ऐसा प्रतीत हुआ कि मानो हिमालय बड़े भाई की तरह अपने छोटे भाई लेखक को उदार और महान् बनने के लिए चुनौती दे रहा है तथा उसे उत्तेजित कर रहा है कि तुममें इतनी हिम्मत है कि मेरी तरह महान् बन सको? इस प्रेमपूर्ण चुनौती से लेखक संकोच और लज्जा का

अनुभव कर रहा है, क्योंकि हिमालय जैसी महानता, पवित्रता और उदारता प्राप्त करना असम्भव है।

व्याकरण एवं रचना-बोध

1. निम्नलिखित शब्दों में सनियम सन्धि-विच्छेद कीजिए और सन्धि का नाम भी लिखिए–

अनासक्ति, तन्द्रालस, निष्कलंक, नगाधिराज, हर्षातिरेक, रवीन्द्र।

उत्तर—

शब्द	सिन्ध-विच्छेद			सन्धि का नाम
अनासक्ति	अन्	+	आसिक्त	दीर्घ स्वर सन्धि
तन्द्रालस	तन्द्र	+	आलस	दीर्घ सन्धि
निष्कलंक	नि:	+	कलंक	विसर्ग सन्धि
नगाधिराज	नाग	+	अधिराज	दीर्घ सन्धि
हर्षातिरेक	हर्ष	+	अतिरेक	दीर्घ सन्धि
रवीन्द्र	रवि	+	इन्द्र	दीर्घ सन्धि

2. निम्नलिखित शब्दों में समास-विग्रह कीजिए–

जलराशि, हिमालय, शीर्षासन, पर्वतमाला।

उत्तर—	**समास-विग्रह**
जलराशि	जल की राशि
हिमालय	हिम का आलय
शीर्षासन	शीर्ष के लिए आसन
पर्वतमाला	पर्वतों की माला
तन्द्रालस	तन्द्रा से पूर्ण आलस
प्रसन्नवदन	प्रसन्न वदन वाला

3. निम्नलिखित शब्दों से प्रत्यय अलग करके लिखिए–

शीतलता, कष्टप्रद, कँकड़ीली, कुंठित, सुहावनापन।

उत्तर—

शब्द	मूल शब्द	—	प्रत्यय
शीतलता	शीतल	—	ता
कष्टप्रद	कष्ट	—	प्रद
कँकड़ीली	कंकड़	—	ईली
कुंठित	कुण्ड	—	इत
सुहावनापन	सुहावना	—	पन

4. निम्नलिखित शब्दों से उपसर्गों को पृथक् करके लिखिए–

लापरवाह, सहयोगी, अनासक्ति, प्रतिक्रिया, सुकुमार, निरावृत, खुशकिस्मत, अत्याधुनिक।

उत्तर—

शब्द	मूलशब्द		उपसर्ग
लापरवाह	परवाह	—	ला
सहयोगी	योगी	—	सह
अनासक्ति	आसक्ति	—	अन्
प्रतिक्रिया	क्रिया	—	प्रति
सुकुमार	कुमार	—	सु
निरावृत	आवृत	—	निर्
खुशकिस्मत	किस्मत	—	खुश
अत्याधुनिक	आधुनिक	—	अति

❑

8

तोता

(रवीन्द्रनाथ टैगोर)

परीक्षापयोगी प्रश्न

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. रवीन्द्रनाथ टैगोर की भाषा की दो मुख्य विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर—बंगाली एवं इंग्लिश।

प्रश्न 2. रवीन्द्रनाथ टैगोर का संक्षिप्त जीवन-परिचय लिखिए।

उत्तर—रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म 7 मई, 1861 ई. को कोलकाता के जोड़ासाँको ठाकुरबाड़ी में हुआ। इनके पिता का नाम देवेन्द्रनाथ ठाकुर और माता का नाम शारदा देवी था। इनकी मृत्यु 7 अगस्त, 1941 ई. को कोलकाता में हुई। रवीन्द्रनाथ टैगोर ऐसे व्यक्तित्व हैं जो मर कर भी अमर हैं।

प्रश्न 3. रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा रचित दो नाटकों के नाम लिखिए।

उत्तर—काबुलीवाला, चित्रा।

प्रश्न 4. नोबेल पुरस्कार से सम्मानित भारतीय लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—नोबेल पुरस्कार से सम्मानित भारतीय लेखक का नाम रवीन्द्रनाथ टैगोर है।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. रवीन्द्रनाथ टैगोर का जीवन-परिचय एवं इनकी कृतियों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म 7 मई, 1861 को कोलकाता के जोड़ासाँको ठाकुरबाड़ी में हुआ। इनके पिता का नाम देवेन्द्रनाथ ठाकुर और माता का नाम शारदा देवी था।

टैगोर जी की माता का निधन उनके बचपन में ही हो गया था और उनके पिता व्यापक रूप से यात्रा करने वाले व्यक्ति थे। अत: उनका लालन-पालन अधिकांशत: नौकरों द्वारा ही किया गया था।

इनकी आरम्भिक शिक्षा प्रतिष्ठित सेंट जेवियर स्कूल में हुई। उन्होंने बैरिस्टर बनने की इच्छा से 1878 ई. में ब्रिजटोन के पब्लिक स्कूल में नाम लिखाया। फिर लन्दन विश्वविद्यालय में कानून का अध्ययन किया, लेकिन 1880 ई. में बिना डिग्री प्राप्त किए ही स्वदेश वापस लौट आए। सन् 1883 ई. में मृणालिनी देवी के साथ उनका विवाह हुआ।

साहित्यिक योगदान—टैगोर परिवार बंगाल पुनर्जागरण के समय अग्रणी था उन्होंने साहित्यिक पत्रिकाओं का प्रकाशन किया, बंगाली और पश्चिमी शास्त्रीय संगीत एवं रंगमंच और पटकथाएँ वहाँ नियमित रूप से प्रदर्शित हुई थी।

ग्यारह वर्ष की उम्र में उनके उपनयन (आने वाला आजीवन) संस्कार के बाद, टैगोर और उनके पिता कई महीनों के लिए भारत का दौरा करने के लिए फरवरी 1873 ई. में कलकत्ता छोड़कर अपने पिता के शांतिनिकेतन सम्पत्ति और अमृतसर से डेलाहौसी के हिमालयी पर्वतीय स्थल तक निकल गए थे। 1873 ई. में अपने एक महीने के प्रवास के दौरान, वह सुप्रभात गुरबानी और नानक बनी से बहुत प्रभावित हुए थे, जिन्हें स्वर्णमंदिर में गाया जाता था, जिसके लिए दोनों पिता और पुत्र नियमित रूप से आंगतुक थे। उन्होंने इसके बारे में अपनी पुस्तक मेरी यादों में उल्लेख किया, जो 1912 ई. में प्रकाशित हुई थी।

कार्य—रवीन्द्रनाथ टैगोर ज्यादातर अपनी पद्य कविताओं के लिए जाने जाते हैं, टैगोर ने अपने जीवनकाल में कई **उपन्यास**, **निबन्ध**, लघु कथाएँ, यात्रावृत्त, नाटक और हजारों गानें भी लिखे हैं। टैगोर की गद्य में लिखी उनकी छोटी कहानियों को शायद सबसे अधिक लोकप्रिय माना जाता है। इस प्रकार इन्हें वास्तव में बंगाली भाषा के संस्करण की उत्पत्ति का श्रेय दिया जाता है। उनके काम अक्सर उनके लयबद्ध, आशावादी, और गितात्मक प्रकृति के लिए काफी उल्लेखनीय हैं। टैगोर ने इतिहास, भाषाविज्ञान और आध्यात्मिकता से जुड़ी कई किताबें लिखी थीं। टैगोर के यात्रावृत्त, निबंध और व्याख्यान कई खंडों में संकलित किए गए थे, जिन्होंने यूरोप के जटरिर पत्रों (यूरोप से पत्र) और मनुशर धरमो (द रीलिजन ऑफ मैन) शामिल थे। अल्बर्ट आइंस्टीन के साथ उनकी संक्षिप्त बातचीत, 'वास्तविकता की प्रकृति पर नोट'', बाद के उत्तरार्धी के एक परिशिष्ट के रूप में शामिल किया गया है।

टैगोर के 150 वें जन्मदिन के अवसर पर उनके कार्यों का एक (कालनुक्रोमिक रवीन्द्र रचनावली) नामक एक संकलन वर्तमान में बंगाली कालानुक्रमिक क्रम में प्रकाशित किया गया है। इसमें प्रत्येक कार्य के सभी संस्करण शामिल हैं और लगभग अस्सी संस्करण हैं। 2011 में, हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस ने विश्व-भारती विश्वविद्यालय के साथ अंग्रेजी में उपलब्ध टैगोर के कार्यों की सबसे बड़ी संकलन द एसेंटियल टैगोर, को प्रकाशित करने के लिए सहयोग किया है। यह फकराल आलम और राधा चक्रवर्ती द्वारा संपादित की गयी थी और टैगोर के जन्म की 150वीं वर्षगाँठ की निशानी है।

टैगोर में करीब 2,230 गीतों की रचना की। रवींद्र संगीत बांग्ला संस्कृति का अभिन्न अंग है। टैगोर के संगीत को उनके साहित्य से अलग नहीं किया जा सकता। उनकी अधिकतर रचनाएँ तो अब उनके गीतों में शामिल हो चुकी हैं। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की ठुमरी शैली से प्रभावित ये गीत मानवीय भावनाओं के अलग-अलग रंग प्रस्तुत करते हैं।

अलग-अलग रागों में गुरुदेव के गीत यह आभास कराते हैं कि मानो उनकी रचना उस राग विशेष के लिए ही की गई थी। प्रकृति के प्रति गहरा लगाव रखने वाला यह प्रकृति प्रेमी ऐसा एकमात्र व्यक्ति है जिसने दो देशों के लिए राष्ट्रगान लिखा।

उनकी काव्य रचना गीताजंलि के लिए उन्हें 1913 में साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिला।

प्रश्न 2. निम्नलिखित गद्यावतरणों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए–

(1) दामी पिंजरे की देख-रेख में राजा के भानजे बहुत व्यस्त रहने लगे। इतने व्यस्त कि व्यस्तता की कोई सीमा न रही। मरम्मत के काम भी लगे ही रहते। फिर झाड़ू-पोंछ और पालिश की धूम भी मची ही रहती थी। जो भी देखता, यही कहता कि ''उन्नति हो रही है।'' इन कामों पर अनेक-अनेक लोग लगाए गए और उनके कामों की देख-रेख करने पर और भी अनेक-अनेक लोग लगे। सब महीने-महीने मोटे-मोटे वेतन ले-लेकर बड़े-बड़े सन्दूक भरने लगे।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक '**हिन्दी**' के गद्य-खण्ड के अन्तर्गत हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ लोकप्रिय लेखक रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा रचित कहानी '**तोता**' शीर्षक से उद्धृत है।

पाठ का नाम—तोता।

लेखक का नाम—रवीन्द्रनाथ टैगोर।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—रेखांकित अंश की व्याख्या—लेखक कहते हैं कि तोते की देख-रेख इतनी बढ़ गई कि दामी यानी राजा के भानजे अब पूरी तरह उसी (तोते) की सेवा में उलझे रहने लगे। इतने उलझे रहने लगे जिसकी कोई सीमा नहीं। चारों ओर काम-ही-काम नजर आता। फिर साफ-सफाई जैसे झाड़ू लगाना, कहीं पोंछा लगाना या किसी चीज में पालिस करना आदि-आदि कामों की तो चहल-पहल-सी मची रहती। जो भी देखता तो यही कहता कि कार्य प्रगति पर है यानी काम पूरे जोर-शोर के साथ चल रहा है। किसी को शिकायत का कोई मौका नहीं है। लेखक के कहने का तात्पर्य यह है कि देश की स्थिति को लेकर उसके सुधार की चारों ओर धूम मची हुई है। देश के राजनेताओं द्वारा सुधार के लिए पूरी तरह तत्परता दर्शायी जा रही है। समाचार-पत्र, रेडियो तथा टेलीविजन की यही हेड-लाइन्स बनी हुई है कि ''देश का विकास हो रहा है।''

(iii) पिंजरे की देख-रेख में कौन व्यस्त रहते थे?

उत्तर—पिंजरे की देख-रेख में राजा के भानजे दामी व्यस्त रहते थे।

(2) राजा का मन हुआ कि एक बार चलकर अपनी आँखों से यह देखें कि शिक्षा कैसे धूमधड़ाके से और कैसी बगटुट तेजी के साथ चल रही है। सो, एक दिन वह अपने मुसाहबों, मुँहलगों, मित्रों और मन्त्रियों के साथ आप ही शिक्षा-शाला में आ धमके। उनके पहुँचते ही ड्योढ़ी के पास शंख, घड़ियाल, ढोल, तासे, खुरदक, नगाड़े, तुरहियाँ, भेरियाँ, दमामें, काँसे, बाँसुरिया, झाल, करताल, मृदंग, जगझम्प आदि-आदि आप-ही-आप बज उठे। पण्डित गले फाड़-फाड़कर और बूटियाँ फड़का-फड़काकर मन्त्र-पाठ करने लगे। मिस्त्री, मजदूर, सुनार, नकलनवीस, देखभाल करने वाले और उन सभी के ममेरे, फुफेरे, चचेरे, मौसेरे भाई जय-जयकार करने लगे।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर–प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक '**हिन्दी**' के गद्य-खण्ड के अन्तर्गत हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ लोकप्रिय लेखक रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा रचित कहानी '**तोता**' शीर्षक से उद्धृत है।

पाठ का नाम—तोता।

लेखक का नाम—रवीन्द्रनाथ टैगोर।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—रेखांकित अंश की व्याख्या—राजा ने सोचा कि चलकर अपनी आँखों से देखें कि जो कार्य कार्यकर्त्ताओं को सौंपा गया है उसकी

क्या स्थिति है। वह किसी तरह जोर-शोर और तेजी पकड़े हुए है। इसलिए एक दिन वे अपने साथ अपना दिल बहलाने वाले लोगों, अपने साथियों और मन्त्रियों को लेकर वहाँ पहुँच गए जहाँ पर तोते को शिक्षा देने का कार्य चल रहा था। राजा के शिक्षाशाला पहुँचने के पहले ही चारों ओर शंख, घड़ियाल, ढोल, तासे आदि-आदि वाद्ययन्त्र स्वयं ही बजने लगे यानी जब राजा वहाँ पहुँचे तो उनके पहुँचने के पहले ही वहाँ ऐसी तैयारियाँ कर दी गयीं कि राजा का ध्यान तोते पर न जाकर वहाँ के माहौल से ही संतुष्ट हो गया।

आज देश में कमजोर और शोषित वर्ग को लेकर जो भी सुधार के कार्यों के रूप में दिखाग हो रहा है उसकी जाँच या स्थिति का जो मौका-मुआयना किया जाता है वह सब दिखावा ही है यानी राजनीतिक दलों द्वारा ऐसा जाल बिछा दिया जाता है कि यदि किसी कार्य की, यह सोचकर कि यह कार्य हो भी रहा है या नहीं की जाँच भी होती है तो उसे इस तरह भ्रमित कर दिया जाता है कि जाँचकर्त्ता मुख्य विषय को नजर अंदाज कर देता है और हाल जैसा था उससे भी बदतर हो जाता है।

(iii) राजा को देखकर पण्डित क्या करने लगे?

उत्तर—राजा को देखकर पंडित गला फाड़-फाड़कर और बूटियाँ फड़का-फड़काकर मन्त्र-पाठ करने लगे।

(3) तोता दिन पर दिन भद्र रीति के अनुसार अधमरा होता गया। अभिभावकों ने समझा कि प्रगति काफी आशाजनक हो रही है। फिर भी पक्षी-स्वभाव के एक स्वाभाविक दोष से तोते का पिंड अब भी छूट नहीं पाया था। सुबह होते ही वह उजाले की ओर टुकुर-टुकुर निहारने लगता था और बड़ी ही अन्याय भरी रीति से अपने डैने फड़फड़ाने लगता था। इतना ही नहीं, किसी-किसी दिन तो ऐसा भी देखा गया कि वह अपनी रोगी चोंचों से पिंजरे की सलाखें काटने में जुटा हुआ है।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक '**हिन्दी**' के गद्य-खण्ड के अन्तर्गत हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ लोकप्रिय लेखक रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा रचित कहानी '**तोता**' शीर्षक से उद्धृत है।

पाठ का नाम—तोता।

लेखक का नाम—रवीन्द्रनाथ टैगोर।

(ii) रेखांकित अंशो की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—रेखांकित अंश की व्याख्या—जिस तरह का मंगलकारी कार्य तोते के लिए चल रहा था उसके अनुसार वह अधमरा हो लिया यानी विकास के स्थान पर दिनोंदिन उसका पतन होना शुरू हो गया। तोते के शुभचिन्तकों ने सोचा कि जब इतना जोर-शोर से कार्य हो रहा है तो इससे उम्मीद की जा सकती है कि परिणाम अच्छा ही होगा यानी तोते को अब शिक्षित करके ही छोड़ा जाएगा। लेकिन पक्षियों में एक दोष होता है उसका वह दोष अभी भी इतना शिक्षित करने के बाद में नहीं जाता है अर्थात् उक्त रेखांकित पंक्तियों के द्वारा लेखक कह रहे हैं कि शोषित-वर्ग के उत्थान के लिए सरकार द्वारा जो भी योजनाएँ लायी गयी थीं उनके द्वारा शोषित-वर्ग का उत्थान तो दूर की बात रही, बल्कि उससे उसका और भी शोषण कर लिया गया। समाज के शुभचिन्तक यही सोच रहे हैं कि यदि इतनी अच्छी योजनाएँ आई हैं तो अब अवश्य ही शोषित-वर्ग का उत्थान हो जाएगा; लेकिन अफसोस, उनका शोषण ही हुआ। बार-बार शोषण होने के बावजूद भी शोषित-वर्ग अंतिम साँस तक सरकार से यही उम्मीद लगाए रहता है कि शायद यह सरकार अब उनकी सुनवायी कर लेगी और उनको मुसीबतों से छुटकारा मिल जाएगा, पर ऐसा होना तो दूर की बात रही बल्कि ऐसी सोच रखना भी उनके लिए गलत है।

(iii) सुबह होते ही तोता क्या करने लगता था?

उत्तर—सुबह होते ही वह उजाले की ओर टुकुर-टुकुर निहारने लगता था और बड़ी ही अन्याय भरी रीति से अपने डैने फड़फड़ाने लगता था।

(4) तोता मर गया। कब मरा, इसका निश्चय कोई भी नहीं कर सकता। कमबख्त निन्दक ने अफवाह फैलाई कि ''तोता मर गया।'' राजा ने भानजे को बुलवाया और कहा, ''भानजे साहब यह कैसी बात सुनी जा रही है?''

भानजे ने कहा, ''महाराज, तोते की शिक्षा पूरी हो गई है!''

राजा ने पूछा, ''अब भी वह उछलता-फुदकता है?''

भानजा बोला, अजी, राम कहिए!''

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक '**हिन्दी**' के गद्य-खण्ड के अन्तर्गत हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ लोकप्रिय लेखक रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा रचित कहानी '**तोता**' शीर्षक से उद्धृत है।

पाठ का नाम—तोता।

लेखक का नाम—रवीन्द्रनाथ टैगोर।

(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—तोता मर गया। किसी को भी पता न चला कि तोता कब मरा। निन्दक ने अफवाह फैलायी कि तोता मर गया। राजा को जब इस बात का पता चला तो भानजे को बुलवाया। राजा ने भानजे से कहा कि कैसी बात सुनायी पड़ रही है। भानजे ने कहा कि महाराज! तोते की शिक्षा पूरी हो गयी है।

(iii) तोते के मरने के प्रश्न पर भानजे ने राजा को क्या कहकर सन्तुष्ट किया?

उत्तर—भानजे ने राजा को कहा कि महाराज! तोते की शिक्षा पूरी हो गयी है।

व्याकरण एवं रचना-बोध

1. निम्नलिखित शब्दों में सनियम सन्धि-विच्छेद कीजिए और सन्धि का नाम भी लिखिए–

देश-विदेश, नाम-निशान, तत्काल, अभिभावक, बेअदबी।

उत्तर—

देश-विदेश	देश	+	विदेश
नाम-निशान	नाम	+	निशान
तत्काल	तत्	+	काल
अभिभावक	अभि	+	भावक
बेअदबी	बे	+	अदबी

2. निम्नलिखित शब्दों में समास-विग्रह कीजिए और समास का नाम भी बताइए–

धूमधड़ाका, शिक्षाशाला, भूल-चूक।

उत्तर–

धूमधड़ाका	धूम और धड़ाका	द्वन्द्व समास
शिक्षाशाला	शिक्षा की शाला	बहुब्रीहि समास
भूल-चूक	भूल और चूक	द्वन्द्व समास

3. निम्नलिखित मुहावरों का आशय स्पष्ट करते हुए इनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

टोटा पड़ जाना, रफूचक्कर होना, व्यस्त रहना, ओछी बात करना, खुशी का ठिकाना न रहना, अधमरा होना।

उत्तर—टोटा पड़ जाना (अत्यधिक कमी होना)—जब से राम की नौकरी छूटी है उसके पास पैसों का टोटा पड़ गया है।

रफूचक्कर होना (भाग जाना)—फुलिस को आता देखकर चोर रफूचक्कर हो गया।

व्यस्त रहना (किसी कार्य में संलग्न होना)—परीक्षा समाप्त होते ही बच्चे खेल-कूद में व्यस्त रहने लगते हैं।

ओछी बात करना (हैसियत के अनुसार व्यवहार न करना निम्न आचरण करना)—लॉटरी में बहुत सा धन मिलने के बाद भी रमेश सदैव ही ओछी बात करता है।

खुशी का ठिकाना न रहना (अत्यधिक प्रसन्न होना)—कक्षा में प्रथम आने पर महेश की खुशी का ठिकाना नहीं रहा।

अधमरा होना (अत्यधिक घायल होना)—एक आदमी को डाकुओं ने लूट लिया, उसे बहुत मारा और रास्ते पर अधमरा छोड़कर चले गए। ❑

9

सड़क सुरक्षा एवं यातायात के नियम

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. सड़क पर यातायात नियन्त्रण रखने हेतु एक उपाय बताइए।

उत्तर—सड़क पर यातायात नियन्त्रण रखने हेतु कार सांझी की जा सकती हैं।

प्रश्न 2. यातायात के संकेत किसके द्वारा प्रकाशित किये जाते हैं?

उत्तर—यातायात के संकेत भारतीय रोड कांग्रेस (RIC) द्वारा प्रकाशित किये जाते हैं।

प्रश्न 3. ट्रैफिक लाइट का क्या महत्त्व है?

उत्तर—ट्रैफिक लाइटें चौराहों पर यातायात को नियन्त्रित करने के लिए लगाई जाती हैं।

प्रश्न 4. लाल, सफेद, नीली, स्पॉट लाइट का क्या प्रयोग है?

उत्तर—इनका प्रयोग केवल विशिष्ट उदेश्य के सेवा वाहनों के लिए सीमित किया गया है एवं किसी भी अन्य मोटर वाहन पर इनका प्रयोग प्रतिबंधित है।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. प्रदूषण नियन्त्रण प्रमाण-पत्र के नियम बताइये। प्रदूषण नियन्त्रण के कुछ उपाय भी बताएँ।

उत्तर—हर मोटर वाहन का प्रदूषण नियन्त्रण प्रमाणपत्र होना चाहिए, जो छ: महीने के लिए मान्य होता है। नए मोटर वाहन को पंजीकरण की तिथि के एक वर्ष बाद प्रदूषण नियन्त्रण प्रमाण-पत्र के लिए पुन: प्रमाणित करवाना होता है। प्रदूषण प्रमाण-पत्र हर समय वाहन में होना चाहिए।

अपने वाहन का रखरखाव अच्छा रखने और ड्राइविंग के दौरान निम्नलिखित अच्छी बातों का अनुसरण करने से ना केवल वायु प्रदूषण को कम करने में मदद मिलती है, बल्कि ईंधन की भी बचत होती है—

- इंजन को ठीक हालत में रखे और टायरों में हवा का दबाव सही रखें।
- सड़क पर सूचकों व यातायात के नियमों का पालन करें।
- निर्धारित गति सीमा के भीतर चलें।
- अचानक गति बढ़ाने अथवा ब्रेक लगाने से बचें।
- वाहन में अनावश्यक वजन न रखें।
- जहाँ सम्भव हो कार साँझी (Car Pooling) करें तथा सार्वजनिक परिवहन के साधनों द्वारा, बाइक या पैदल यात्रा करने से परहेज ना करें।
- बार—बार यात्रा करने की बजाय एक ही बार में अनेक कार्य निपटाएँ।
- लम्बे ठहराव, जाम आदि में इंजन बन्द करना ना भूलें।

प्रश्न 2. लाल बत्ती, पीली बत्ती एवं हरी बत्ती का उपयोग बताएँ।

उत्तर—लाल बत्ती—लाल बत्ती का अर्थ है कि चौराहे में प्रवेश से पहले स्टॉप लाइन या पैदल पारपथ से पहले रुकें तथा जब तक लाल बत्ती हरे रंग में नहीं बदल जाती, इन्तजार करें। लाल बत्ती पर तीर के निशान का मतलब है कि तीर की दिशा में मुड़ना या जाना मना है।

पीली बत्ती—यदि चौराहे में प्रवेश से पहले बत्ती पीली हो जाती है, तो स्टॉप लाइन या पैदल पारपथ से पहले ही रुक जाएँ। यदि आपके चौराहे में प्रवेश करने के बाद बत्ती पीली होती है तो सावधानीपूर्वक चलते रहें तथा चौराहा पार कर लें। पीले तीर के निशान का मतलब है तीर की दिशा में सावधानीपूर्वक चलना।

हरी बत्ती—हरी बत्ती का अर्थ है कि आप चौराहे में पहले से चल रहे पैदल यात्रियों और अन्य वाहनों को जगह देते हुए सावधानीपूर्वक आगे बढ़ सकते हैं। हरा तीर इंगित करता है कि आप अपनी उचित लेन में रहते हुए तीर की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

प्रश्न 3. वहान चलाते समय दुर्घटना से बचने हेतु कौन-कौन -सी सावधानियाँ रखनी चाहिए?

उत्तर—सड़क दुर्घटनाओं से बचने के लिए हमें यातायात के नियमों का पालन करना चाहिए। ये यातायात के नियम निम्नलिखित हैं—

1. पैदल यात्रियों, साइकिल एवं रिक्शा चालकों को हमेशा अपनी लेन में अर्थात् बायीं तरफ रहना चाहिए।
2. सड़क पार करते समय दायें-बायें देखने के बाद ही आगे बढ़ना चाहिए।
3. व्यस्त सड़कों पर हमेशा जेब्रा-क्रासिंग का प्रयोग करना चाहिए।
4. पैदल यात्रियों को सड़क पार करते समय मोटर वाहनों एवं अपने बीच पर्याप्त दूरी रखनी चाहिए।
5. दोपहिया वाहन चलाते समय हेलमेट का प्रयोग अवश्य करना चाहिए।

❑

काव्य खण्ड

परीक्षापयोगी प्रश्न

प्रश्न 1. आदिकाल की दो प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर—आदिकाल या वीरगाथा काल की प्रमुख विशेषताएँ या प्रमुख प्रवृत्तियाँ निम्नलिखित हैं—

(1) आश्रयदाताओं की प्रशंसा, (2) युद्धों का सुन्दर और सजीव वर्णन, (3) सामूहिक राष्ट्रीयता की भावना का अभाव, (4) वीर रस के साथ-साथ श्रृंगार का पुट, (5) जनसम्पर्क का अभाव।

प्रश्न 2. वीरगाथा काल के चार प्रमुख कवियों के नाम लिखिए।

उत्तर—वीरगाथा काल के चार प्रमुख कवि हैं—(1) दलपति विजय, (2) चन्दबरदाई, (3) शारंगधर, (4) नल्ल सिंह।

प्रश्न 3. वीरगाथा काल की चार प्रमुख रचनाओं के नाम लिखिए।

उत्तर—वीरगाथाकाल की चार प्रमुख रचनाएँ हैं—(1) खुमान रासो, (2) पृथ्वीराज रासो, (3) परमाल रासो या आल्हा खण्ड, (4) विजयपाल रासो।

प्रश्न 4. बीसलदेव रासो किसकी रचना है?

उत्तर—बीसलदेव रासो नरपति नाल्ह की रचना है।

प्रश्न 5. आदिकाल के एक महाकाव्य का नाम लिखिए।

उत्तर—आदिकाल का सर्वाधिक प्रसिद्ध और लोकप्रिय काव्य पृथ्वीराज रासो है।

प्रश्न 6. वीरगीत काव्यों में सर्वाधिक प्रसिद्ध रचना का नाम लिखिए।

उत्तर—वीरगीत काव्यों में सर्वाधिक प्रसिद्ध और लोकप्रिय काव्य 'आल्ह खण्ड' है।

प्रश्न 7. भक्तिकाल के नामकरण पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर—इस काल की रचनाओं में भक्ति-भावना की अधिकता होने के कारण इसका नाम 'भक्तिकाल' रखा गया, जो सर्वथा उपयुक्त है। भक्तिकाल में कबीर, जायसी, सूर, तुलसी जैसे भक्त कवियों ने भक्ति काव्यो की रचना की।

प्रश्न 8. भक्तिकाल के चार प्रमुख कवियों और उनकी मुख्य रचनाओं के नाम लिखिए।

उत्तर—भक्तिकाल के प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ इस प्रकार है—(1) कबीरदास-बीजक, (2) जायसी-पद्मावत, (3) सूरदास-सूरसागर तथा (4) तुलसीदास-रामचरितमानस।

प्रश्न 9. भक्तिकाल को कितनी शाखाओं में बाँटा गया है? उनके नाम लिखिए।

उत्तर—भक्तिकाल को दो शाखाओं में बाँटा गया है, जो इस प्रकार हैं—(1) सगुण-भक्ति शाखा तथा (2) निर्गुण-भक्ति शाखा।

प्रश्न 10. सगुण और निर्गुण भक्ति शाखा की दो-दो प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर—सगुण-भक्ति शाखा की विशेषताएँ—(1) राम तथा कृष्ण की पूर्ण ब्रह्म के रूप में प्रतिष्ठा तथा (2) लोक मंगल की भावना।

निर्गुण-भक्ति शाखा की विशेषताएँ—(1) इसमें ईश्वर के निराकार स्वरूप की उपासना हुई तथा (2) आन्तरिक साधना पर बल दिया गया।

प्रश्न 11. सगुण-भक्ति शाखा के दो प्रसिद्ध काव्य-ग्रन्थों और उनके रचयिताओं का नामोल्लेख कीजिए।

उत्तर—कवि तथा उनकी रचना—(1) तुलसीदास-रामचरितमानस तथा (2) हृदयराम-हनुमन्नाटक।

प्रश्न 12. सगुण-भक्ति शाखा किन दो काव्यधाराओं में विभक्त है?

उत्तर—सगुण-भक्ति शाखा दो काव्यधाराओं में विभक्त है, जो इस प्रकार हैं—(1) रामाश्रयी शाखा तथा (2) कृष्णाश्रयी शाखा।

प्रश्न 13. निर्गुण-भक्ति शाखा की कौन-सी दो उपशाखाएँ हैं?

उत्तर—निर्गुण-भक्ति काव्यधारा की दो उपशाखाएँ है—(1) ज्ञानाश्रयी या सन्त काव्यधारा तथा (2) प्रेमाश्रयी या सूफी-काव्यधारा।

प्रश्न 14. कबीर निर्गुण-भक्ति की किस शाखा के कवि हैं?

उत्तर—कबीर निर्गुण-भक्ति की ज्ञानाश्रयी शाखा के कवि हैं।

प्रश्न 15. ज्ञानाश्रयी और प्रेमाश्रयी शाखा के एक-एक प्रतिनिधि कवि का नाम उसकी प्रमुख रचना सहित लिखिए।

उत्तर—ज्ञानाश्रयी शाखा के कवि और उनकी रचना—कबीरदास-बीजक।

प्रेमाश्रयी शाखा के कवि और उनकी रचना—मलिक मुहम्मद जायसी-आखिरी कलाम।

प्रश्न 16. प्रेमाश्रयी सूफी काव्यधारा की पाँच विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर—प्रेमाश्रयी सूफी काव्यधारा की पाँच विशेषताएँ इस प्रकार हैं—(1) प्रेमतत्व का निरूपण, (2) मसनवी शैली, (3) श्रृंगार रस की प्रधानता, (4) हिन्दू संस्कृति व लोकजीवन का चित्रण तथा (5) लौकिक प्रेम के द्वारा अलौकिक प्रेम (परमात्म-प्रेम) की व्यंजना।

प्रश्न 17. 'पद्मावत' किस शाखा की रचना है?

उत्तर—'पद्मावत' निर्गुण-भक्ति शाखा के अन्तर्गत प्रेमाश्रयी उपशाखा की रचना है।

प्रश्न 18. 'हनुमन्नाटक' किसकी रचना है?

उत्तर—'हनुमन्नाटक' हृदयराम की रचना है।

प्रश्न 19. कृष्णभक्ति शाखा और रामभक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवियों का उनकी प्रमुख रचना सहित नामोल्लेख कीजिए।

उत्तर—कृष्णभक्ति शाखा के कवि और उनकी रचना—सूरदास-सूरसागर

रामभक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि और उनकी रचना—तुलसीदास-रामचरितमानस है।

प्रश्न 20. भक्तिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—भक्तिकाल के साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ (प्रवृत्तियाँ) इस प्रकार हैं—(1) भक्ति-भावना, (2) गुरु की महिमा, (3) सुधारवादी दृष्टिकोण एवं समन्वय की भावना, (4) रहस्य की भावना, (5) अहंकार का त्याग और लोकमंगल की भावना, (6) काव्य का उत्कर्ष एवं (7) जीवन की नश्वरता और ईश्वर के नाम-स्मरण की महत्ता।

प्रश्न 21. ''भक्तिकाल को हिन्दी-साहित्य का स्वर्ण युग कहा जाता है।'' कारण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—भक्तिकाल में भाव, भाषा एवं शिल्प की दृष्टि से हिन्दी-साहित्य का उत्कर्ष हुआ। भावपक्ष तथा कलापक्ष के उत्कृष्ट रूप के कारण ही भक्तिकाल को हिन्दी-साहित्य का स्वर्ण युग कहते हैं।

प्रश्न 22. कृष्ण भक्ति शाखा की किसी कवयित्री का नाम बताइए।

उत्तर—कृष्ण भक्ति शाखा की कवयित्री मीराबाई हैं।

प्रश्न 23. 'सूरसागर' किसकी रचना है?

उत्तर—'सूरसागर' सूरदास की रचना है।

प्रश्न 24. तुलसी की प्रमुख रचना कौन-सी है?

उत्तर—तुलसीदास की प्रमुख रचना 'रामचरितमानस' है।

प्रश्न 25. रीतिग्रन्थ किसे कहा जाता है?

उत्तर—रस, अंलकार, छन्द, नायक-नायिका आदि के उदाहरण-रूप में कविताओं की रचना को रीतिग्रन्थ या लक्षण ग्रन्थ कहा जाता है।

प्रश्न 26. रीतिग्रन्थ किन रूपों में मिलते हैं?

उत्तर—रीतिग्रन्थ दो रूपों में मिलते हैं। एक वे जो अलंकार पर आधारित हैं और दूसरे वे जो रस पर आधारित होते हैं।

प्रश्न 27. आधुनिक काल को किन अन्य नामों से भी जाना जाता है?

उत्तर—आधुनिक काल को गद्य-काल, नवीन विकास का काल, पुनर्जागरण काल आदि नामों से भी जाना जाता है।

प्रश्न 28. आधुनिक काल को किन युगों में विभाजित किया गया है? उनके नाम लिखिए।

उत्तर—आधुनिक काल को भारतेन्दु युग, छायावादी युग, प्रगतिवादी युग तथा प्रयोगवादी एवं नयी कविता के युगों में विभाजित किया गया है।

❑

1

साखी

(कबीरदास)

परीक्षापयोगी प्रश्न

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. कबीरदास की कोई एक रचना का नाम लिखिए।

उत्तर—कबीरदास की एक प्रमुख रचना बीजक है।

प्रश्न 2. निर्गुण काव्यधारा की ज्ञानमार्गी शाखा के एक प्रमुख कवि तथा उनकी एक कृति का नाम लिखिए।

उत्तर—निर्गुण काव्यधारा की ज्ञानमार्गी शाखा के प्रमुख कवि कबीरदास हैं तथा साखी उनकी एक कृति है।

प्रश्न 3. कबीरदास हिन्दी-साहित्य के किस काल के कवि हैं?

उत्तर—कबीरदास हिन्दी-साहित्य के भक्तिकाल के कवि हैं।

प्रश्न 4. कबीरदास के गुरु का नाम लिखिए।

उत्तर—कबीरदास के गुरु रामानन्द थे।

प्रश्न 5. कबीर की रचनाओं के आधार पर भक्तिकाल की विशेषताओं को संक्षेप में लिखिए।

उत्तर—कबीरदास की रचनाओं के आधार पर भक्तिकाल के साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं—(1) भक्ति भावना (2) गुरु की महिमा (3) सुधारवादी दृष्टिकोण एवं समन्वय की भावना (4) रहस्य की भावना (5) अहंकार का त्याग और लोकमंगल की भावना।

प्रश्न 6. कबीर की रचनाओं के काव्य-रूपों का परिचय दीजिए।

उत्तर—कबीर की रचनाओं में काव्य के तीन रूप मिलते हैं—साखी, सबद और रमैनी।

प्रश्न 7. कबीर ने कब और कहाँ जन्म लिया?

उत्तर—इनकी जन्म—तिथि ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा संवत् 1456 वि० (सन् 1399 ई०) मानी जाती है। इनके जन्म के सम्बन्ध में किंवदन्ती है कि ये नीरू एवं नीमा नामक नि:सन्तान जुलाहा दम्पत्ति को वाराणसी में लहरतारा तालाब के निकट प्राप्त हुए थे।

प्रश्न 8. 'बीजक' कितने भागों में वर्गीकृत है?

उत्तर—बीजक तीन भागों—साखी, सबद और रमैनी में वर्गीकृत है।

प्रश्न 9. कबीरदास का पालन-पोषण किसने किया?

उत्तर—कबीरदास का पालन—पोषण नीरू एवं नीमा नामक जुलाहा दम्पत्ति ने किया था।

प्रश्न 10. कबीर की मृत्यु कहाँ हुई थी?

उत्तर—कबीर की मृत्यु 'मगहर' में हुई थी।

प्रश्न 11. कबीर की भाषा को क्या कहा जाता है?

उत्तर—कबीर की भाषा को 'सधुक्कडी' कहा जाता है।

प्रश्न 12. कबीर के पुत्र और पुत्री का क्या नाम था?

उत्तर—कबीर के पुत्र का नाम कमाल और पुत्री का नाम कमाली था।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. कबीर के जन्म के विषय में प्रचलित किंवदन्ती को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—इनके जन्म के सम्बन्ध में किंवदन्ती है कि ये नीरू एवं नीमा नामक नि:सन्तान जुलाहा दम्पत्ति को वाराणसी में लहरतारा तालाब के निकट प्राप्त हुए थे। ये जुलाहा दम्पत्ति इस नवजात शिशु को अपने घर ले आये और पुत्र की तरह उसका लालन—पालन किया।

प्रश्न 2. कबीर की मृत्यु पर हिन्दू और मुस्लिम में किस प्रकार का विवाद हुआ?

उत्तर—इनके अन्तिम संस्कार को लेकर हिन्दू—मुस्लिमों में खूब विवाद हुआ, क्योंकि हिन्दू इनका दाह—संस्कार करना चाहते थे और मुस्लिम इन्हें दफनाना चाहते थे। कहा जाता है जब इनके शव से कफन उठाया गया तो शव के स्थान पर कुछ पुष्प रखे थे जिन्हें दोनों धर्मानुयायियों ने आधा—आधा बाँट लिया।

प्रश्न 3. गुरु और गोविन्द की प्राप्ति एक-दूसरे पर निर्भर है, कबीर की साखियों के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—कबीरदास जी ने अपनी साखियों में बताया है कि गुरु और गोविन्द दोनों ही एक—दूसरे के पूरक हैं क्योंकि गुरु की कृपा के बिना ईश्वर की प्राप्ति सम्भव नहीं है और ज्ञान के अभाव में गोविन्द के दर्शन नहीं

हो सकते। अत: गुरु उसी मनुष्य को प्राप्त होते हैं, जिन पर गोविन्द की कृपा होती है। इसलिए गुरु और गोविन्द की प्राप्ति एक–दूसरे पर निर्भर है।

प्रश्न 4. कबीर के अनुसार जीवन में गुरु के महत्त्व को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—कबीरदास ने अपनी साखियों में गुरु के प्रति असीम श्रद्धा और आदर की भावना व्यक्त की है। उन्होंने बताया है कि गुरु की कृपा होने से ही राम–नाम रूपी मंत्र और ईश्वरीय प्रेम की प्राप्ति होती है। गुरु की कृपा होने से ही मनुष्य आवागमन से मुक्ति प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार गुरु का हमारे जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है।

प्रश्न 5. गुरु के बारे में कबीर का क्या मत है?

उत्तर—कबीर गुरु को ईश्वर से भी बड़ा मानते हैं। उनका विश्वास है कि गुरु की कृपा के बिना ईश्वर के दर्शन नहीं हो सकते।

प्रश्न 6. प्रभु की प्राप्ति कब सम्भव हो सकती है? इस विषय में कबीर का अभिमत स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—कबीरदास ने अपनी साखियों में बताया है कि अहंकार को नष्ट कर देना चाहिए, उसका कारण यह है कि अहंकार को नष्ट किए बिना ईश्वर–ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती। शरीर और सम्पत्ति पर कभी गर्व नहीं करना चाहिए। मनुष्य को सदैव शान्त और मधुर वचनों का प्रयोग करना चाहिए तभी उसे ईश्वर की प्राप्ति सम्भव हो सकती है।

प्रश्न 7. संसार को सेमल के फूल के समान क्यों कहा गया है?

उत्तर—कबीर ने संसार को सेमल का फूल इसलिए कहा है क्योंकि वह देखने में उस फूल के समान सुन्दर तो अवश्य है, परन्तु गन्धहीन और क्षणभंगुर है। अर्थात् संसार के भोग–विलास देखने में सुखदायी हैं, परन्तु सारहीन हैं। उनसे सच्चे सुख की प्राप्ति नहीं होती है।

प्रश्न 8. मनुष्य को गर्व न करने का उपदेश कबीरदास जी क्यों देते हैं?

उत्तर—कबीर ने मनुष्य को गर्व न करने का उपदेश इसलिए दिया है क्योंकि संसार की सभी वस्तुएँ नाशवान हैं। उन पर गर्व करने से सच्चे लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो सकती। इसलिए मनुष्य को कभी शरीर और सम्पत्ति पर गर्व नहीं करना चाहिए।

प्रश्न 9. कबीर के मतानुसार जीवन की सार्थकता पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—कबीर का कथन है कि मानव–जीवन बड़ी कठिनाई से मिलता है। इसकी प्राप्ति प्राणी के लिए लोक–परलोक सुधारने का एक अच्छा अवसर है। हमें इस जीवन का महत्त्व समझना चाहिए और मन को प्रभु–प्रेम में लगाना चाहिए। परमात्मा का नाम स्मरण करना मनुष्य का प्रथम कर्तव्य है और इसी से उसे मोक्ष की प्राप्ति होती हैं।

प्रश्न 10. मोक्ष की प्राप्ति के लिए कबीरदास ने किन साधनों को अपनाने का उपदेश दिया है?

उत्तर—मोक्ष की प्राप्ति के लिए कबीर ने मुख्यत: मन को वश में करना, लोभ, मोह और भ्रम को छोड़ना, सच्चा ज्ञान प्राप्त करना, सत्संगति करना, दृढ़ मन से ईश्वर-भक्ति करना तथा सच्चे गुरु के उपदेशों को ग्रहण करना आदि साधनों को अपनाने का उपदेश दिया हैं।

प्रश्न 11. अँगार में मीठा नहीं है, फिर भी चकोर उसे चबा रहा है। कबीर इसका क्या कारण बता रहे हैं?

उत्तर—चाहे कितनी हीं हानि क्यूँ न हो जाय, जैसे अंगारे में क्या मिठास होती है जिसे चकोर (पक्षी) चबाता है? अर्थ यह है कि चकोर कि जीभ और चोंच भी जल जाय तो भी वह अंगारे को चबाना नहीं छोड़ता वैसे हीं भक्त को जब ईश्वर कि लगन लग जाती है तो चाहे कुछ भी हो वह ईश्वर भक्ति नहीं छोड़ता ।

प्रश्न 12. ईश्वर-प्राप्ति के लिए कबीर ने किसका त्याग आवश्यक बताया है?

उत्तर—ईश्वर–प्राप्ति के लिए कबीर ने अहंकार का त्याग करना आवश्यक बताया है। उन्होंने बताया है कि जब तक मनुष्य में अहंकार की भावना होगी तब तक ईश्वर की प्राप्ति असम्भव होगी क्योंकि अहंकार ईश्वर-प्राप्ति में बाधक है।

प्रश्न 13. कवि ने कच्चे घड़े की उपमा किसे दी है और क्यों?

उत्तर—कवि ने कच्चे घड़े की उपमा शरीर को दी है। उन्होंने कहा है कि अरे जीव; तुम्हारा शरीर कच्चे घड़े के समान क्षणभंगुर है। जैसे मिट्टी का कच्चा घड़ा थोडा–सा धक्का लगने पर फूट जाता है, उसी प्रकार काल का छोटा–सा झटका लगने पर यह शरीर भी नष्ट हो जाएगा और तुम्हारे हाथ कुछ नहीं आएगा।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. कबीरदास का जीवन-परिचय देते हुए उनकी कृतियों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—महान समाज सुधारक एवं संत कवि कबीरदास का जन्म काशी में किसी विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से हुआ था, जिसने लोक–लज्जा के भय से इनको लहरतारा नामक स्थान पर किसी तालाब के समीप छोड़ दिया। यहीं से नीरू नाम का जुलाहा और उसकी पत्नी नीमा इनको उठा लाए और इनका पालन–पोषण किया। इनकी पत्नी का नाम लोई और पुत्र व पुत्री का नाम कमाल व कमाली माना जाता है। कबीरपन्थियों के ग्रन्थ 'कबीर चरित्र बोध' में इनके जन्म के सम्बन्ध में निम्नलिखित उक्ति दी गयी है—

चौदह सौ पचपन साल गए, चन्द्रवार एक ठाठ ठए।
जेठ सुदी बरयासत को, पूरनमासी प्रगट भए।।

इस उक्ति के अनुसार इनकी जन्म–तिथि ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा संवत् 1456 वि० (सन् 1399 ई०) मानी जाती है। बाबू श्यामसुन्दर दास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी भी 1456 वि० को ही कबीर का जन्म–संवत् स्वीकार करते हैं। कहा जाता है कि इनके जीवन का अधिक समय काशी में ही बीता। बड़े होकर ये अपने माता–पिता के कार्यों में हाथ बँटाने लगे और बचे समय में ईश्वरभक्ति तथा विभिन्न सम्प्रदाय के धर्माचार्यों की संगति में रहते। इस अन्धविश्वास को दूर करने के लिए कि काशी में मृत्यु होने से स्वर्ग मिलता है, ये अन्तिम समय काशी छोड़कर मगहर चले गये और वहीं शरीर छोड़ा। एक जनश्रुति के अनुसार इनकी आयु 120 वर्ष थी। इस सम्बन्ध में एक उक्ति इस प्रकार है—

संवत् पंद्रह सौ पछत्तरा, कियो मगहर को गौन।
माघ सुदी एकादसी, रलौ पौन में पौन।।

कृतिया–सन्त कबीर ने स्वयं कोई ग्रन्थ नहीं रचा। इनके शिष्यों ने इनकी रचनाओं के संग्रह को 'बीजक' नाम दिया। बीजक के तीन भाग हैं—(1) साखी, (2) सबद, (3) रमैनी।

साखी–कबीर ने साखी में अपने जीवन के सच्चे और जीवन्त अनुभवों को व्यक्त किया है। इनकी साखियाँ 'ज्ञान की आँखें' हैं। इनमें कबीर ने समाज–कल्याण एवं सदाचार सम्बन्धी विचारों को दोहा–छन्द में व्यक्त किया है। इनमें उपदेशात्मकता अधिक है।

सबद–कबीर ने सबद की रचना गेय पदों में की है। इनमें विषय की गम्भीरता एवं संगीतात्मकता है।

रमैनी–रमैनी की रचना चौपाइयों में की गयी है। इनमें कबीर के रहस्यवादी एवं दार्शनिक विचारों का प्रतिपादन हुआ है।

साहित्य में स्थान–सन्त कवि कबीरदास का हिन्दी–साहित्य में मूर्धन्य स्थान है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने कहा है—''कबीर साधना के क्षेत्र में युग–गुरु थे और साहित्य के क्षेत्र में भविष्यद्रष्टा। उनके समकालीन एवं परवर्ती सभी कवियों ने उनकी वाणी का अनुसरण किया।''

प्रश्न 2. निम्नलिखित पद्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए तथा इनका काव्य-सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए–

(क) जब मैं था तब गुरु नहीं, अब गुरु हैं हम नाहिं |
प्रेम गली अति साँकरी, ता में दो न समाहिं ||

सन्दर्भ—प्रस्तुत साखी हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में संकलित और 'सन्त कबीरदास' द्वारा रचित 'साखी' कवित शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग—इस दोहे में कबीर ने गुरु से प्रेम को अहंकार के विनाश का साधन बताया है।

संकेत–इस शीर्षक के अन्तर्गत आने वाली सभी व्याख्याओं के लिए यही सन्दर्भ प्रयुक्त होगा।

व्याख्या—कबीरदास जी कहते हैं कि जब तक मेरे हृदय में अहंकार था, तब तक मेरे मन में गुरु के लिए कोई स्थान नहीं था अर्थात् मैं अहंकार के कारण गुरु के प्रति श्रद्धा न रख सका, किन्तु अब जब मेरे मन में गुरु के प्रति श्रद्धा और प्रेम उत्पन्न हो गया है तो मेरा सम्पूर्ण अहंकार ही नष्ट हो गया है। इसका कारण बताते हुए कबीरदास आगे कहते हैं कि प्रेमरूपी हृदय की गली अत्यधिक सँकरी है और उसमें एक साथ दो का प्रवेश नहीं हो सकता।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) अहंकार के रहते व्यक्ति के मन में गुरु के प्रति श्रद्धा नहीं हो सकती और गुरु को पाने के लिए अहंकार को छोड़ना ही पड़ता है। तात्पर्य यह है कि प्रभु–प्राप्ति में अहंकार ही सबसे अधिक बाधक है। (2) **भाषा**—सधुक्कडी। (3) **शैली**—उपदेशात्मक (4) **छन्द**—दोहा (5) **रस**—शान्त (6) **अलंकार**—प्रेम गली में **रूपक** और **अनुप्रास** (7) **भाव-साम्य**—कबीर ने ऐसे ही भाव अन्यत्र भी व्यक्त किये है—''जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाहि।''

(ख) यहु ऐसा संसार है, जैसा सैंबल फूल |
दिन दस के ब्यौहार कौं, झूठै रंग न भूल ||

सन्दर्भ—प्रस्तुत साखी हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में संकलित और 'सन्त कबीरदास' द्वारा रचित 'साखी' कवित शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग—इस दोहे में कबीर ने संसार की क्षणभंगुरता पर प्रकाश डालते हुए उसके बाहरी रूप–सौन्दर्य पर मुग्ध न होने का उपदेश दिया है।

व्याख्या—कबीरदास जी कहते हैं कि यह संसार सेमल के फूल की तरह कुछ ही दिन के बाहरी आकर्षण से भरा हुआ है। सेमल का फूल बड़ा ही सुन्दर और लाल रंग का होता है, किन्तु शीघ्र ही नष्ट हो जाता है। उसका फल भी खाने के काम नहीं आता, क्योंकि उसमें रूई भरी रहती है। इसलिए क्षणिक सौन्दर्य पर मुग्ध होकर किसी को अपना जीवन नष्ट नहीं करना चाहिए। आशय यह है कि झूठे सौन्दर्य के लालच में पड़कर मनुष्य को अपना यह दुर्लभ जीवन नष्ट नहीं करना चाहिए।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) बड़े ही तर्कसंगत तरीके से ईश्वर को शाश्वत एवं संसार को नश्वर बताया गया है। (2) **भाषा**—सधुक्कडी (3) **शैली**—मुक्तक (4) **छन्द**—दोहा (5) **अलंकार**—यहु ऐसा संसार है, जैसा सेंबल फूल में उपमा दिन दस में **अनुप्रास**। (6) **रस**—शान्त। (7) **शब्द-शक्ति**—लक्षणा। (8) **भाव-साम्य**—कविता का मुख्य भाव यह है कि ब्रह्म सत्य है और जगत् मिथ्या। इसलिए सनातन सत्य स्वरूप प्रभु–भक्ति में मन लगाना चाहिए।

(ग) ग्यान प्रकास्या गुर मिल्या, सो जिनि बीसरि जाइ |
जब गोबिन्द कृपा करी, तब गुरु मिलिया आइ ||

सन्दर्भ—प्रस्तुत साखी हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में संकलित और 'सन्त कबीरदास' द्वारा रचित 'साखी' कवित शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग—प्रस्तुत दोहे में कहा गया है कि कृपा के बिना सदगुरु की प्राप्ति नहीं होती।

व्याख्या—सन्त कबीर कहते हैं कि सच्चा गुरु मिलने पर चारों ओर ज्ञान का प्रकाश फैल जाता है इसलिए जो गुरु हमें ज्ञान का प्रकाश देता है, उसे कभी नहीं भूलना चाहिए अर्थात उसके प्रति हमेशा कृतज्ञ बने रहना चाहिए; क्योंकि, ईश्वर कृपा करते हैं तब ही सच्चा गुरु प्राप्त होता है।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) ईश्वर–प्रेम की प्राप्ति सद्गुरु की कृपा से ही सम्भव है और सद्गुरु की प्राप्ति ईश्वर की कृपा से ही होती है। (2) **भाषा**—सधुक्कडी। (3) **शैली**—मुक्तक। (4) **रस**—शान्त (5) **छन्द**—दोहा। **शब्द-शक्ति**—अभिधा। **अलंकार**—'कृपा करी' में **अनुप्रास**।

(घ) माया दीपक नर पतंग, भ्रमि-भ्रमि इवैं पड़ंत |
कहै कबीर गुर ग्यान तैं, एक आध उबरंत ||

सन्दर्भ—प्रस्तुत साखी हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में संकलित और 'सन्त कबीरदास' द्वारा रचित 'साखी' कवित शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग—इस दोहे में गुरु के महत्त्व को बताया गया है और कहा गया है कि गुरु द्वारा दिये गये ज्ञान से ही मनुष्य माया के बन्धन से छूट सकता है।

व्याख्या—कबीरदास जी कहते हैं कि जिस प्रकार कीट–पतंगे दीपक के प्रकाश से आकृष्ट होकर जल–भरते हैं, ठीक उसी प्रकार मनुष्य भी माया–मोह के बाहरी आकर्षक रूप पर मुग्ध होते हैं और नष्ट हो जाते हैं। केवल गुरु से प्राप्त ज्ञान ही हमें इस माया–मोह के बन्धन से मुक्त करके नष्ट होने से बचा सकता है, किन्तु गुरु के द्वारा दिये गये ज्ञान से भी नहीं बचते। कोई विरला ही होता है, जो गुरु–ज्ञान से मोक्ष प्राप्त कर अमर हो जाता है और जन्म–मरण के बन्धन से मुक्त होता है।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) सच्चे गुरु के ज्ञान के उपदेश से ही प्राणी माया के बन्धन तोड़कर संसार के आवागमन से छूट जाता है। (2) यहाँ 'नर' प्राणिमात्र के लिए प्रयुक्त हुआ है। (3) **भाषा**—सधुक्कडी, (4) **शैली**—मुक्तक (5) **छन्द**—दोहा। (6) **रस**—शान्त। (7) **अलंकार**—'माया–दीपक नर–पतंग' में **रूपक**, 'भ्रमि–भ्रमि' में **पुनरुक्तिप्रकाश** और 'कहै कबीर', 'गुरु ग्यान' में **अनुप्रास** है। (8) **शब्द-शक्ति**—अभिधा तथा लक्षणा।

(ङ) सतगुर हम सूँ रीझि करि, एक कह्या प्रसंग |
बरस्या बादल प्रेम का, भीजि गया सब अंग ||

सन्दर्भ—प्रस्तुत साखी हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में संकलित और 'सन्त कबीरदास' द्वारा रचित 'साखी' कवित शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग—इस साखी में कबीर ने गुरु का महत्त्व बताते हुए कहा है कि गुरु की कृपा से ईश्वर के प्रति प्रेम उत्पन्न होता है।

व्याख्या—कबीरदास जी कहते हैं कि सद्गुरु ने मेरी सेवा–भावना से प्रसन्न होकर मुझे ज्ञान की एक बात समझायी, जिसे सुनकर मेरे हृदय में ईश्वर के प्रति सच्चा प्रेम उत्पन्न हो गया। वह उपदेश मुझे ऐसा प्रतीत हुआ, मानो ईश्वर–प्रेमरूपी जल से भरे बादल बरसने लगे हों। उस ईश्वरीय प्रेम की वर्षा से मेरा अंग–अंग भीग गया। यहाँ कबीरदास जी के कहने का भाव यह है कि सद्गुरु के उपदेश से ही हृदय में ईश्वर के प्रति प्रेम उत्पन्न होता है और उसी से मन को शान्ति मिलती है। इस प्रकार जीवन में गुरु का अत्यधिक महत्त्व है।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) इस साखी में गुरु का महत्त्व बताया गया है। (2) सद्गुरु के उपदेश से ही ईश्वर के प्रति प्रेम उत्पन्न होता है। (3) **भाषा**—सधुक्कडी। (4) **शैली**—मुक्तक (5) **रस**—शान्त (6) **छन्द**— दोहा (7) **अलंकार**—'बरस्या बादल प्रेम का' में **रूपक**, बरस्या बादल में **अनुप्रास**। (8) **शब्द-शक्ति**—अभिधा तथा लक्षणा (9) **भाव साम्य**—कबीर ने अन्यत्र भी गुरु की महिमा का वर्णन करते हुए कहा है—

सतगुरु की महिमा अनँत, अनँत किया उपगार।
लोचन अनँत उघाडिया, अनँत दिखावणहार।।

(च) भगति भजन हरि नाँव है, दूजा दुक्ख अपार |
मनसा बाचा कर्मना, कबीर सुमिरण सार ||

सन्दर्भ—प्रस्तुत साखी हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में संकलित और 'सन्त कबीरदास' द्वारा रचित 'साखी' कवित शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग—सन्त कबीर ने इन काव्य–पंक्तियों में जगत् की असारता और परमात्मा की नित्यता बताते हुए अहंकार को नष्ट कर हरि–भक्ति की प्रेरणा दी है।

व्याख्या—कबीरदास का कथन है कि जीव के लिए परमात्मा की भक्ति और भजन करना एक नाव के समान उपयोगी है। इसके अतिरिक्त संसार में दु:ख ही दु:ख है। इसी भक्तिरूपी नाव से सांसारिक दु:खरूपी सागर को पार किया जा सकता है। इसलिए मन, वचन और कर्म से परमात्मा का स्मरण करना चाहिए, यही जीवन का परम तत्व है; सार है।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) ईश्वर का स्मरण ही इस दु:खभरे संसार से मुक्ति का एकमात्र उपाय है। (2) **भाषा**—सधुक्कडी। (3) **शैली**—उपदेशात्मक, मुक्तक (4) **छन्द**—दोहा (5) **रस**—शन्त (6) **अलंकार**—'भगति–भजन', 'दूजा–दुक्ख', 'सुमिरण सार' में **अनुप्रास** तथा 'हरि नाँव' में **रूपक**। (7) **शब्द-शक्ति**—अभिधा। (8) **भाव-साम्य**—गोस्वामी तुलसीदास ने भी ईश्वर के नाम–स्मरण के विषय में कहा है—

देह धरे कर यहु फलु भाई। भजिय
राम सब काम विहाई।

(छ) कबिरा चित्त चमंकिया, चहुँ दिसि लागी लाइ |
हरि सुमिरण हाथूँ घड़ा, बेगे लेहु बुझाइ ||

सन्दर्भ—प्रस्तुत साखी हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में संकलित और 'सन्त कबीरदास' द्वारा रचित 'साखी' कवित शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग—इस साखी में कबीरदास जी ने बताया है कि विषयरूपी अग्नि ईश्वर के नाम–स्मरण से ही शान्त हो सकती है।

व्याख्या—कबीरदास जी कहते हैं कि उनके हृदय में ज्ञान की ज्योति जग गयी है; अत: अब उन्हें संसार में चारों ओर विषयों की आग लगी हुई दिखाई दे रही है। अब ईश्वर का स्मरणरूपी घड़ा हाथ में आ गया है जिससे विषय–वासनाओं रूपी अग्नि को शीघ्र ही बुझा लेना चाहिए। आशय यह है कि जिस प्रकार घड़े का पानी उँडेलकर आग बुझाई जाती है, उसी प्रकार ईश्वर का स्मरण कर दैविक, दैहिक और भौतिक सन्तापों से छुटकारा पाया जा सकता है।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) ईश्वर के नाम–स्मरण से विषय–वासना नष्ट हो जाती है और मन को सुख–शान्ति मिलती है। (2) **भाषा**—सधुक्कडी (3) **शैली**—मुक्तक (4) **छन्द**—दोहा (5) **रस**—शान्त (6) **अलंकार**—'हरि सुमिरण हाथूँ घड़ा' में **रूपक,** 'चित्त चमंकिया चहुँ', 'लागी लाई' में **अनुप्रास**।

(ज) अंषड़ियाँ झाईं पड़ी, पंथ निहारि-निहारि |
जीभड़ियाँ छाला पड्या, राम पुकारि-पुकारि ||

सन्दर्भ—प्रस्तुत साखी हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में संकलित और 'सन्त कबीरदास' द्वारा रचित 'साखी' कवित शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग—इस दोहे में सन्त कबीर ने विरह से व्याकुल जीवात्मा के दु:ख को व्यक्त किया है।

व्याख्या—कबीरदास जी का कथन है कि जीवात्मा बड़ी व्याकुलता से परमात्मा की प्रतीक्षा में आँखें बिछाये हुए है। भगवान की बाट जोहते–जोहते उसकी आँखों में झाइयाँ पड़ गयी हैं अर्थात् उसकी आँखों के आगे अन्धकार छा गया है, पर फिर भी उसे ईश्वर के दर्शन नहीं होते। परमात्मा का नाम जपते–जपते थक गया, जीवात्मा की जीभ में छाले भी पड़ गये, परन्तु फिर भी परमात्मा ने उसकी पुकार नहीं सुनी; क्योंकि सच्ची लगन, सच्चे प्रेम तथा मन की पवित्रता के बिना इस प्रकार नाम जपना और बाट जोहना व्यर्थ है।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) यहाँ कवि ने ईश्वर के वियोग में व्याकुल जीवात्मा का मार्मिक चित्रण किया है। (2) इन पंक्तियों में कवि की रहस्यवादी भावना दृष्टिगोचर होती है। (3) **भाषा**—सधुक्कडी। (4) **शैली**—मुक्तक (5) **छन्द**—दोहा (6) **रस**—शान्त (7) **अलंकार**—'निहारि–निहारि', 'पुकारि–पुकारि' में **पुनरुक्तिप्रकाश** तथा **अनुप्रास** (8) **भाव-साम्य**—मीरा भी ईश्वर की प्रतीक्षा में आँखें बिछाये बैठी दिखाई देती हैं—

मैं बिरहीन बैठी जगूँ।
जगत सब सौवे री आली।।

(झ) झूठे सुख को सुख कहैं, मानत हैं मन मोद |
जगत चबैना काल का, कछु मुख में कछु गोद ||

सन्दर्भ—प्रस्तुत साखी हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में संकलित और 'सन्त कबीरदास' द्वारा रचित 'साखी' कवित शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग—इस दोहे में कबीर ने भौतिकवाद को सुख मानने वाली लोगों की प्रवृत्ति को गलत बताया है।

व्याख्या—कबीरदास जी कहते हैं कि लोग संसार की भौतिक वस्तुओं के उपभोग को सुख मानकर मन में प्रसन्न होते हैं, जबकि वास्तव में यह झूठा सुख है। सच्चा सुख तो ईश्वर की भक्ति में है। यह संसार और इसका भौतिकवाद तो क्षणभंगुर है, इसे तो काल चबैने के रूप में चबाकर समाप्त कर देगा। यह कुछ को अपने मुख में रखकर चबा रहा है और कुछ को चबाने के लिए अपनी गोद में समेटे बैठा है। आशय यह है कि इस संसार को विनष्ट करने का काल का यह क्रम लगातार चल रहा है।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) इस दोहे में मानव–शरीर की नश्वरता का मार्मिक चित्रण हुआ है। (2) ईश्वर–भक्ति ही व्यक्ति को काल के क्रूर चक्र

से बचा सकती है। (3) **भाषा**—सधुक्कडी (4) **शैली**—मुक्तक (5) **छन्द**—दोहा (6) **रस**—शान्त (7) **अलंकार**—'जगत चबैना काल का' में **रूपक** तथा 'मानत है मन मोद' में **अनुप्रास** (8) **भाव-साम्य**—सांसारिक वस्तुओं को क्षणभंगुर मानते हुए कबीरदास जी ने अन्यत्र भी कहा है—

यहु ऐसा संसार है, जैसा सैंबल फूल।
दिन दस के ब्यौहार को, झूठे रंगि न भूल ।।

(ञ) कबिरा कहा गरबियौ, ऊँचे देखि अवास ।
काल्हि पर्‌यूँ भ्वैं लोटणाँ, ऊपरि जामै घास ।।

सन्दर्भ—प्रस्तुत साखी हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में संकलित और 'सन्त कबीरदास' द्वारा रचित 'साखी' कवित शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग—इस दोहे में कबीरदास जी ने धन–दौलत पर गर्व न करने का उपदेश दिया है।

व्याख्या—कबीरदास जी कहते हैं कि संसार क्षणभंगुर है, इसलिए ऊँचे–ऊँचे महलों का तथा धन–दौलत का घमण्ड कभी नहीं करना चाहिए। ये सभी भौतिक वस्तुएँ नश्वर हैं, कुछ ही दिनों में ये धरती पर गिर जाएँगी और इन पर घास भी उग जाएगी।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) इस क्षणभंगुर जगत् के वैभव पर गर्व नहीं करना चाहिए। संसार की निस्सारता का वर्णन कबीरदास जी ने बड़े तर्कसंगत तरीके से समझाया है। (2) **भाषा**—सधुक्कडी, (3) **शैली**—मुक्तक (4) **रस**—शान्त (5) **छन्द**—दोहा (6) **अलंकार**—अनुप्रास (7) **शब्द-शक्ति**—लक्षणा एवं व्यंजना (8) **भाव-साम्य**—ऐसा ही वर्णन कबीर ने अन्यत्र भी किया है—

''यह संसार कागद की पुड़िया, बूँद पड़े घुल जाना है।'

(ट) इहि औसरि चेत्या नहीं, पसु ज्यूँ पाली देह ।
राम नाम जाया नहीं, अंति पड़ी मुख षेह ।।

सन्दर्भ—प्रस्तुत साखी हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में संकलित और 'सन्त कबीरदास' द्वारा रचित 'साखी' कवित शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग—कबीरदास द्वारा रचित प्रस्तुत साखी में बताया गया है कि मानव–शरीर को धारण कर व्यक्ति को ईश्वर के नाम का स्मरण करना चाहिए। यह जीवन प्रभु–भक्ति के लिए ही है।

व्याख्या—कबीर का कथन है कि मानव–जीवन बड़ी कठिनाई से मिलता है। इसकी प्राप्ति प्राणी के लिए लोक–परलोक सुधारने का एक अच्छा अवसर है। हमें इस जीवन का महत्त्व समझना चाहिए और मन को प्रभु–प्रेम में लगाना चाहिए। यदि हम अज्ञानी बने रहें और पशु की भाँति केवल भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति में ही लगे रहें तो प्रभु–भक्ति के बिना मुख अन्त में धूल से ही भरेगा। इसलिए परमात्मा का नाम स्मरण करना मनुष्य का प्रथम कर्तव्य है और इसी से उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) मानव जीवन मुक्ति के लिए एक सुअवसर है। इस अवसर को गँवाना नहीं चाहिए अपितु अपना मन भगवद्–भक्ति में लगाना चाहिए। (2) **भाषा**—सधुक्कडी (3) **शैली**—मुक्तक (4) **रस**—शान्त (5) **छन्द**—दोहा **(6) अलंकार**—'पशु ज्यौ पाली देह' में **उपमा** एवं **अनुप्रास** (7) **शब्द-शक्ति**—अभिधा एवं लक्षणा।

(ठ) राम नाम के पटतरे, देबे कौं कछु नाहिं ।
क्या ले गुर संतोषिये, हौंस रही मन माँहि ।।

सन्दर्भ—प्रस्तुत साखी हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में संकलित और 'सन्त कबीरदास' द्वारा रचित 'साखी' कवित शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग—इस साखी में कबीरदास जी ने सद्गुरु और राम–नाम की महत्ता पर प्रकाश डाला है।

व्याख्या—सन्त कबीर कहते हैं कि गुरु ने मुझे ज्ञान दिया है और 'राम' नाम का महत्त्व समझाया है। इस अमूल्य ज्ञान के बदले में मेरे पास कोई ऐसी वस्तु नहीं है, जिसे अपने गुरु को दक्षिणा–स्वरूप देकर मैं स्वयं को सन्तुष्ट कर सकूँ। गुरु को गुरु–दक्षिणा देकर सन्तुष्ट होने की मेरी अभिलाषा मेरे मन में ही रह गयी; क्योंकि ज्ञान ही सबसे बड़ा दान और बहुमूल्य वस्तु है और उसका मूल्य कोई नहीं चुका सकता।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) प्रस्तुत साखी में कबीरदास ने गुरु के दिये हुए ज्ञान के दान को अमूल्य बताते हुए गुरु के प्रति अपनी अप्रतिम श्रद्धा व्यक्त की है। (2) **भाषा**—सधुक्कडी (3) **शैली**—मुक्तक (4) **रस**—शान्त (5) **छन्द**—दोहा **(6) अलंकार**—अनुप्रास (7) **शब्द-शक्ति**—अभिधा (8) **भाव-साम्य**—मीराबाई ने भी गुरु के ज्ञान के सन्दर्भ में कहा है—

''वस्तु अमोलक दी मेरे सद्गुरु, किरपा करि अपनायो।।''

(ड) यह तन काचा कुंभ है, लियाँ फिरै था साथि ।
ढबका लागा फुटि गया, कछु न आया हाथि ।।

सन्दर्भ—प्रस्तुत साखी हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में संकलित और 'सन्त कबीरदास' द्वारा रचित 'साखी' कवित शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग—प्रस्तुत साखी में कबीर ने जीवन की क्षणभंगुरता पर प्रकाश डाला है।

व्याख्या—कबीरदास जी कहते हैं कि अरे जीव! तुम्हारा शरीर कच्चे घड़े के समान क्षणभगुंर है। तुम इसे अपना समझकर सदैव साथ लिये क्यों घूमते हो? जैसे मिट्टी का कच्चा घड़ा थोडा–सा धक्का लगने पर फूट जाता है, उसी प्रकार काल का छोटा–सा झटका लगने पर यह शरीर भी नष्ट हो जाएगा और तुम्हारे हाथ कुछ नहीं आएगा; अत: तुम इस शरीर का लगाव छोड़कर ईश्वर का ध्यान करो।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) शरीर नाशवान् है और काल के एक छोटे आघात से नष्ट हो जाता है। शरीर के लिए घडे की उपमा अत्यधिक सार्थक बन पड़ी है। (2) **भाषा**—सधुक्कडी (3) **शैली**—उपदेशात्मक, मुक्तक (4) **छन्द**—दोहा (5) **रस**—शान्त (6) **अलंकार**—'यह तन काचा कुम्भ है' में **रूपक** तथा 'काचा कुम्भ' में **अनुप्रास** (7) **शब्द- शक्ति**—अभिधा एवं लक्षणा। **(8) भाव-साम्य**—संसार की क्षणभंगुरता को कवि ने निम्नलिखित दोहे में भी व्यक्त किया है—

यहु ऐसा संसार है, जैसा सैंबल फूल ।
दिन दस के ब्यौहार को, झूठै रंग न भूल ।।

काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए–

उत्तर—

शब्द	तत्सम रूप	शब्द	तत्सम रूप
भगति	भक्ति	दुक्ख	दु:ख
सतगुर	सद्गुरु	ब्यौहार	व्यवहार
सीतल	शीतल	सोवन	स्वर्ण
कलस	कलश	पूत	पुत्र
काचा	कच्चा	सैंबल	सेमल

प्रश्न 2. निम्नलिखित पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार का नाम बताइए तथा उसकी सतर्क पुष्टि कीजिए–

माया दीपक नर पतंग, भ्रमि-भ्रमि इवै पड़ंत।

उत्तर—इस पंक्ति में 'माया' पर 'दीपक' तथा 'नर' पर 'पतंग' का अभेदारोप होने के कारण रूपक अलंकार है। साथ ही 'भ्रमि' शब्द की पुनरुक्ति के कारण पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार का प्रयोग भी हुआ है।

प्रश्न 3. 'हरि जननी मैं बालक तेरा' पद में कौन-सा रस है?

उत्तर—'हरि जननी मैं बालक तेरा' पद में शान्त रस है।

प्रश्न 4. कबीर की साखियों में किस छन्द का प्रयोग हुआ है? सतर्क उत्तर दीजिए।

उत्तर—कबीर की साखियों में दोहा छन्द का प्रयोग हुआ है, क्योंकि उसके चारों चरणों में क्रमश: 13-11, 13-11 मात्राएँ आयी हैं। ❑

2

पदावली

(मीराबाई)

परीक्षापयोगी प्रश्न

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. मीरा की हिन्दी में रचित किन्हीं दो रचनाओं के नाम लिखिए।

उत्तर—मीरा की दो रचनाओं के नाम हैं—(1) नरसी जी का मायरा और (2) गीत गोविन्द का टीका।

प्रश्न 2. कृष्ण-भक्ति शाखा की एकमात्र कवयित्री का नाम बताइए। क्या उसकी गणना अष्टछाप के कवियों में होती है?

उत्तर—मीराबाई कृष्ण-भक्ति शाखा की एकमात्र कावयित्री हैं। उनकी गणना अष्टछाप कवियों में नहीं होती है।

प्रश्न 3. मीरा और सूर दोनों ही कृष्ण के अनन्य भक्त हैं, किन्तु दोनों की भक्ति-भावना अलग-अलग है। इन दोनों की यह भक्ति-भावना किस-किस नाम से जानी जाती है?

उत्तर—मीराबाई की भक्ति 'प्रेम दीवानी मीरा' के नाम से जानी जाती हैं तथा सूरदास की भक्ति 'सखा' भाव की है।

प्रश्न 4. मीरा के काव्य में प्रयुक्त भक्तिकाल की किन्हीं दो प्रवृत्तियों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—मीरा के काव्य में प्रयुक्त भक्तिकाल की दो प्रवृत्तियाँ इस प्रकार हैं—(1) भक्ति-भावना (2) जीवन की नश्वरता और ईश्वर के नाम-स्मरण की महत्ता।

प्रश्न 5. मीरा किस भक्ति-शाखा की कवयित्री हैं?

उत्तर—मीरा सगुण भक्ति की कृष्ण काव्यधारा की कवयित्री थीं।

प्रश्न 6. मीरा की भाषा क्या है?

उत्तर—इनकी भाषा राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा है। इनकी भाषा में गुजराती एवं पंजाबी शब्द भी पाए जाते हैं।

प्रश्न 7. मीरा किसको ध्यान में रखकर रचना करती हैं?

उत्तर—मीरा कृष्णभक्ति और कृष्णप्रेम मे विभोर होकर गाया करती थीं।

प्रश्न 8. मीरा के काव्य का प्रमुख स्वर क्या है?

उत्तर—मीरा के सभी पद संगीत के स्वरों में बँधे हुए हैं।

प्रश्न 9. मीरा की मृत्यु किस प्रकार हुई?

उत्तर—सन् 1546 ई० में द्वारका में कृष्ण की मूर्ति के सम्मुख—हरि तुम हरौ जन की पीर' पद गाते हुए ये अपने आराध्य मे लीन हो गयीं।

प्रश्न 10. 'नरसीजी का मायरा' का विषय क्या है

उत्तर—कृष्ण के प्रति प्रेमभाव और कृष्णभक्ति 'नरसीजीजी का मायरा' का विषय है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. मीरा कृष्ण के किस रूप की उपासिका हैं?

उत्तर—मीरा भगवान श्रीकृष्ण के सगुण रूप की उपासिका थी। उनकी श्रीकृष्ण के प्रति माधुर्य भाव की भक्ति थी। ये कृष्ण को ही अपना पति कहती थीं और लोक-लाज खोकर कृष्ण के प्रेम में लीन रहती थीं।

प्रश्न 2. मीरा ने वस्तु अमोलक किसे कहा है?

उत्तर—मीरा ने वस्तु अमोलक राम-नाम के रत्न को कहा है। मीराबाई कहती हैं कि मैंने राम-नाम रूपी अमूल्य रत्न प्राप्त कर लिया हैं। सच्चे गुरु ने मुझ पर कृपा करके राम-नाम की यह अमूल्य वस्तु मुझे प्रदान की है।

प्रश्न 3. मीराबाई की भाषा-शैली कैसी थी?

उत्तर—मीरा की भाषा का उदय उनके हृदय पक्ष से हुआ। इसलिए इसमें सहजता एवं सरलता है। इनकी भाषा राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा है। इनकी भाषा में गुजराती एवं पंजाबी शब्द भी पाए जाते हैं। मीरा ने गीति काव्य की रचना की है और कृष्णभक्त कवियों की परम्परागत पद-शैली को भी अपनाया है।

प्रश्न 4. मीरा ने किसे मोल लिया है?

उत्तर—मीरा ने गोविन्द (श्रीकृष्ण) को मोल लिया है। मीराबाई कहती हैं कि मैंने पूर्ण निष्ठा के साथ, दृढ़ भक्ति से हृदय रूपी तुला पर तोलकर तथा अत्यधिक मूल्य चुकाकर अपने प्रभु श्रीकृष्ण का वरण किया है।

प्रश्न 5. मीरा ने अपना पति किसे स्वीकार किया है?

उत्तर—मीरा ने श्रीकृष्ण को अपना पति स्वीकार किया है। ये कृष्ण को ही अपना पति कहती थीं और लोक—लाज खोकर कृष्ण के प्रेम में लीन रहती थीं। मन्दिर में जाकर अपने आराध्य की प्रतिमा के समक्ष ये आनन्द—विह्वल होकर नृत्य भी किया करती थीं।

प्रश्न 6. मीरा को कौन-सा धन प्राप्त हो गया है और उसकी विशेषताएँ क्या हैं?

उत्तर—सतगुरु की कृपा से मीरा को राम के नाम का धन प्राप्त हुआ है। वह अमूल्य धन है। इसे न कोई चुरा सकता है, न ही यह खर्च होता है। यह धन दिन पर दिन सवाया होकर बढ़ता है। इस धन से संसार-सागर को पार करना सरल है।

प्रश्न 7. मीरा ने क्या और कैसे खरीदा है और उस खरीदारी के विषय में लोग क्या कहते हैं?

उत्तर—मीरा ने पूर्ण निष्ठा के साथ, दृढ़ भक्ति से हृदय रूपी तुला पर तोलकर तथा अत्यधिक मूल्य चुकाकर प्रभु श्रीकृष्ण को खरीदा है। मीरा के द्वारा कृष्ण को मोल लेने के सम्बन्ध में कुछ लोग कहते हैं कि मीरा ने श्रीकृष्ण को महँगा खरीदा है तो कुछ लोगों का यह भी कहना है कि उसने

बहुत सस्ते मे ही कृष्ण को खरीद लिया है। इसके अतिरिक्त कुछ लोगों का यह भी विचार है कि मीरा ने कृष्ण को चोरी से अर्थात् छिपाकर खरीदा है।

प्रश्न 8. क्या खोकर और किससे प्रेम की लता को मीरा ने सींचा है? उस लता से उनको क्या फल प्राप्त हुआ?

उत्तर—मीराबाई ने अपने गिरधर के प्रेम में कुल की सारी मर्यादाएँ त्याग दी हैं। मीराबाई कहती हैं कि साधु-सन्तों के साथ बैठकर मैंने झूठी बनावटी परम्पराओं की लोक-लज्जा को भी खो दिया है। मैंने प्रेम की बेल को बोकर, उसे कृष्ण-वियोग के आँसुओं से सींचा है और अब यह बेल चारों ओर फैल गयी है और इस पर आनन्दरूपी फल भी लग गये हैं।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. मीराबाई के जीवन-परिचय पर प्रकाश डालते हुए उनकी कृतियों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—कृष्ण की प्रेम दीवानी मीराबाई का जन्म सन् 1498 ई० (संवत 1555 विक्रमी) के आसपास राजस्थान में मेड़ता के पास चोकड़ी ग्राम में हुआ था। ये जोधपुर के राजा रत्नसिंह की पुत्री, जोधपुर के संस्थापक राव जोधाजी की प्रपौत्री एवं राव दूदाजी की पौत्री थीं। बाल्यकाल में ही इनकी माता का स्वर्गवास हो गया था। इसलिए इनका लालन-पालन इनके वैष्णव भक्त दादा राव दूदाजी ने किया।

मीरा का विवाह सन् 1516 ई० के लगभग राणा साँगा के पुत्र महाराणा भोजराज के साथ सम्पन्न हुआ था। विवाह के कुछ समय पश्चात् ही इनके पति का देहान्त हो गया। उसके पश्चात् इनके पिता और श्वसुर की भी मृत्यु हो गयी। अब मीरा कृष्ण के प्रति पूर्णतः समर्पित हो गयी। इन्होंने श्रीकृष्ण को ही अपना पति मान लिया और उनके प्रेम में दीवानी हो गयीं। पति की मृत्यु के बाद मीरा के इस आचरण को राज—मर्यादा के विरूद्ध मानकर इनके देवर ने इन्हें मारने की चेष्टा भी की, परन्तु वे मीरा का कुछ न बिगाड़ सके।

अन्तत: राणा के व्यवहार से दुखी होकर मीरा वृन्दावन चली गयीं। सन् 1546 ई० (संवत् 1603 विक्रमी) में द्वारका में कृष्ण की मूर्ति के सम्मुख 'हरि तुम हरौ जन की पीर' पद गाते हुए ये अपने आराध्य में लीन हो गयीं।

कृतियाँ—मीरा जिन संगीतमय पदों को भाव—विभोर होकर गाया करती थीं, वे ही उनकी रचनाएँ हैं। उनमें प्रमुख इस प्रकार हैं— (1) नरसी जी का मायरा, (2) रागगोविन्द (3) गीत गोविन्द की टीका (4) राग सोरठ के पद आदि में मीरा के पदों के संग्रह हैं।

साहित्य में स्थान—कृष्ण—भक्त कवियों में मीरा का स्थान महत्त्वपूर्ण है। सम्पूर्ण हिन्दी-साहित्य में वे 'दर्द दीवानी मीरा के नाम से विख्यात हैं। उनके पीड़ाभरे गीत अजर—अमर हैं।

प्रश्न 2. निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए तथा इनके काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए–

(क) बसो मेरे नैनन में नँदलाल|
मोर मुकुट मकराकृत कुंडल, अरुण तिलक दिये भाल||
मोहनि मूरति साँवरि सूरति, नैना बने बिसाल|
अधर-सुधा-रस मुरली राजत, उर बैजंती-माल ||
छुद्र घंटिका कटि-तट सोभित, नुपूर सबद रसाल |
मीरा प्रभु संतन सुखदाई, भगतबछल गोपाल ||

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्य हमारी पाठ्य—पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य-खण्ड' में संकलित श्रीकृष्ण की अनन्य उपासिका 'मीराबाई' के काव्य—ग्रन्थ 'मीरा—सुधा—सिन्धु' के अर्न्तगत 'पदावली' शीर्षक से अवतरित है।

संकेत—इस शीर्षक के अन्तर्गत आने वाली सभी व्याख्याओं के लिए यही सन्दर्भ प्रयुक्त होगा।

प्रसंग—प्रेम—दीवानी मीरा भगवान कृष्ण के रूप सौन्दर्य पर मुग्ध हैं और उनकी मोहिनी मूर्ति को अपने नेत्रों में बसाना चाहती हैं। इस पद में कृष्ण की मोहिनी मूर्ति का सजीव वर्णन किया गया है।

व्याख्या—कृष्ण के प्रेम में दीवानी मीरा कहती हैं कि नन्द जी को आनन्दित करने वाले हे श्रीकृष्ण! आप मेरे नेत्रों मे निवास कीजिए। आपका सौंन्दर्य अत्यन्त आकर्षक है। आपके सिर पर मोर के पंखों से निर्मित मुकुट एवं कानों में मछली की आकृति के कुण्डल सुशोभित हो रहे हैं। मस्तक पर लगे हुए लाल तिलक और सुन्दर विशाल नेत्रों से आपका श्यामवर्ण का शरीर अत्यन्त सुशोभित हो रहा है। अमृतरस से भरे आपके सुन्दर होठो पर बाँसुरी शोभायमान हो रही है। आप हृदय पर वन के पत्र—पुष्पों से निर्मित माला धारण किये हुए हैं। आपकी कमर में बँधी करघनी में छोटी—छोटी घण्टियाँ सुशोभित हो रही हैं। आपके चरणों में बँधे घुँघरुओं की मधुर ध्वनि बहुत रसीली प्रतीत होती है। हे प्रभु ! आप सज्जनों को सुख देने वाले, भक्तों से प्यार करने वाले और अनुपम सुन्दर हैं। आप मेरे नेत्रों में बस जाइए।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) यहाँ भगवान कृष्ण की मनमोहक छवि का परम्परागत रूप में वर्णन किया गया है। (2) मीराबाई की कृष्ण के प्रति अनन्य भक्ति—भावना प्रकट हुई है। (3) **भाषा**—सुमधुर ब्रज (4) **शैला**—मुक्तक काव्य की पद शैली (5) **छन्द**—संगीतात्मक गेय पद। (6) **रस**—भक्ति एवं शान्त। (7) **गुण**—माधुर्य (8) **शब्द-शक्ति**—अभिधा एवं प्रथम पंक्ति में लक्षणा। (9) **अलंकार**—'मोर मुकुट मकराकृति कुंडल' तथा 'मोहनि मूरति साँवरि सूरति' में **अनुप्रास** (10) **भाव-साम्य**—कविवर बिहारी भी मीरा की तरह कृष्ण के इस रूप को अपने मन में बसाना चाहतें हैं–

(ख) पायो जी म्हैं तो राम रतन धन पायो |
वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु, किरपा कर अपनायो ||
जनम-जनम की पूँजी पायी, जग में सभी खोवायो |
खरचै नहिं कोई चोर न लेवै, दिन-दिन बढ़त सवायो ||
सत की नाव खेवटिया सतगुरु, भव-सागर तर आयो |
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरख-हरख जस गायो।

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्य हमारी पाठ्य—पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य-खण्ड' में संकलित श्रीकृष्ण की अनन्य उपासिका 'मीराबाई' के काव्य—ग्रन्थ 'मीरा—सुधा—सिन्धु' के अर्न्तगत 'पदावली' शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग—इस पद मे कवयित्री ने सदगुरु की कृपा से प्राप्त राम-नाम का महत्त्व बताया है।

व्याख्या—मीराबाई कहती हैं कि मैंने राम—नाम रूपी अमूल्य रत्न प्राप्त कर लिया है। सच्चे गुरु ने मुझ पर कृपा करके राम-नाम की यह अमूल्य वस्तु मुझे प्रदान की है। राम-नाम के रत्न को पाकर मुझे ऐसा अनुभव हो रहा है कि मैंने जन्म-जन्मान्तरों से संचित खजाना प्राप्त कर लिया है। मैंने अब तक प्राप्त सभी सांसारिक भोग्य वस्तुओं को त्यागकर राम-नाम की वह अपूर्व निधि प्राप्त कर ली हैं, जो खर्च नहीं होती, इसे चोर नहीं चुरा सकते और खर्च करने पर दिन—प्रतिदिन इसमें सवा गुना वृद्धि होती है। मीरा कहती हैं कि मुझे ईश्वर—भक्ति-रूपी नाव मिल गयी है और उसका खेने वाला सच्चा गुरु है। कुशल सदगुरुरूपी मल्लाह मिल जाने से इस भक्तिरूपी नौका द्वारा मैं संसाररूपी सागर को पार कर सकूँगी और मोक्ष प्राप्त कर लूँगी। मीराबाई कहती हैं कि मेरे स्वामी गिरधर नागर हैं और मैं प्रसन्नतापूर्वक बार-बार उनका यशोगान करती हूँ।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) ज्ञानरूपी अमूल्य रत्न सदगुरु की कृपा से ही प्राप्त होता है। (2) राम–नाम ऐसी विचित्र निधि है, जो खर्च करने से बढ़ती है। (3) ईश्वर की भक्ति ही मुक्ति का साधन है।(4) राम शब्द को ईश्वर के अर्थ मे प्रयुक्त समझा जाना चाहिए। मीरा के आराध्य कृष्ण हैं। (5) **भाषा**—राजस्थानी मिश्रित ब्रज। (6) **शैली**—मुक्तक (7) **छन्द**—गेय पद। (8) **रस**—शान्त और भक्ति (9) **अलंकार**—रूपक, पुनरूक्तिप्रकाश तथा अनुप्रास की छटा दर्शनीय है। (10) **गुण**—प्रसाद (11) **शब्द-भक्ति**—अभिधा और लक्षणा। (12) **भाव-साम्य**—सन्त कबीर भी सद्गुरू की महिमा को इस प्रकार व्यक्त करते हैं—

सतगुरु की महिमा अनँत, अनँत किया उपगार।
लोचन अनँत उघाड़िया, अनँत दिखावणहार।।

(ग) माई री मैं तो लियो गोबिन्दो मोल |
कोई कहै छाने कोई कहै चुपके, लियो री बजन्ता ढोल ||
कोई कहै मुँहघो कोई कहै सुँहघो, लियो री तराजू तोल |
कोई कहै कारो कोई कहै गोरो, लियो री अमोलक मोल ||
याही कूँ सब जाणत हैं, लियो री आँखीं खोल |
मीरा कूँ प्रभु दरसण दीन्यौ, पूरब जनम कौ कौल |

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्य हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य-खण्ड' में संकलित श्रीकृष्ण की अनन्य उपासिका 'मीराबाई' के काव्य–ग्रन्थ 'मीरा–सुधा–सिन्धु' के अर्न्तगत 'पदावली' शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग—मीराबाई कृष्ण के प्रेम में दीवानी हो गयी थीं। इस पद में वे बताती हैं कि उन्होंने कृष्ण को पूरी तरह से अपना बना लेने का निर्णय भली–भाँति सोच–विचारकर ही किया है।

व्याख्या—मीराबाई कहती हैं—अरी माई, सुन! मैने तो कृष्ण को मोल ले लिया है, अर्थात कृष्ण पूरी तरह मेरे हो गये हैं, क्योंकि जो व्यक्ति मूल्य देकर वस्तु को खरीद लेता है, उस पर उसी का पूरा अधिकार हो जाता है। भले ही इस विषय में लोग तरह–तरह की बातें करते हैं, कोई किसी वस्तु को छिपाकर खरीदता है और कोई चुपचाप खरीद लेता है, किन्तु मैंने ऐसा नहीं किया है। मैंने तो उन्हें सरेआम ढोल बजाकर खरीदा है। कोई कहता है कि मैंने कृष्ण को महँगा खरीदा है, तो कोई कहता है सस्ता खरीदा है, लेकिन मैंने तो उन्हें भली–भाँति नाप–जोख करके यानि तराजू से तोल करके मोल लिया है। कोई उसे काला बताता है, कोई गोरा कहता है, परन्तु मैंने तो उन्हे अपना सबकुछ देकर अर्थात सारे संसार से विरक्त होकर पूर्ण समर्पण भाव से खरीदा है। माई सब यह जानते हैं कि मीरा ने आँखें खोलकर अर्थात बहुत समझ-बूझकर श्रीकृष्ण को अपनाया है। किसी को इस बात का क्या पता है कि प्रभु श्रीकृष्ण ने मीरा को पूर्व जन्म के वादे के अनुसार दर्शन दिये हैं।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) मीराबाई श्रीकृष्ण के प्रेम में पूर्णरूप से दीवानी हैं। कृष्ण के साथ अपना जन्म–जन्मान्तरों का साथ दिखाकर मीरा ने अपनी स्थायी प्रेम–भक्ति को प्रकट किया है। (2) इस पद्यांश में यह भी स्पष्ट किया गया है कि जो किसी के प्रेम में लीन हो जाता है, वह दुनिया की कोई परवाह नहीं करता। (3) **भाषा**—राजस्थानी पुट से युक्त ब्रजभाषा। (4) **शैली**—मुक्तक (5) **छन्द**—गेयपद (6) **रस**—शान्त और भक्ति। (7) **अलंकार**—सम्पूर्ण पद में रूपक और अनुप्रास (8) **गुण**—प्रसाद और माधुर्य। (9) **शब्द-शक्ति**—अभिधा एवं लक्षणा (10) **भाव-साम्य**—भवभूति ने अपनी 'उत्तररामचरितम्' शीर्षक रचना में इसी प्रकार के भाव व्यक्त किये हैं—'तत्तस्य किमपि द्रव्यं यो हियस्य प्रियो जन:।

(घ) मैं तो साँवरे के रंग राँची |
साजि सिंगार बाँधि पग घुँघरू, लोक-लाज तजि नाँची ||
गई कुमति लई साधु की संगति, भगत रूप भई साँची |
गाय-गाय हरि के गुण निसदिन, काल ब्याल सूँ बाँची ||
उण बिन सब जग खारो लागत, और बात सब काँची |
मीरा श्री गिरधरन लाल सूँ, भगति रसीली जाँची ||

प्रसंग—इस पद में मीरा भगवान कृष्ण के प्रेम में निमग्न होकर पूर्णरूप से उन्हीं के रंग में रंग गयी हैं, इसीलिए संसार की अन्य किसी वस्तु में उनका मन नहीं लगता।

व्याख्या—मीरा कहती हैं कि मैं तो साँवले कृष्ण के श्याम रंग में रंग गयी हूँ अर्थात् उनके प्रेम में आत्मविभोर हो गयी हूँ। मैंने तो लोक–लाज को छोड़कर अपना पूरा श्रृंगार किया है और पैरों में घुँघरू बाँधकर नाच भी रही हूँ। साधुओं की संगति से मेरे हृदय की सारी कालिमा मिट गयी है और मेरी दुर्बुद्धि भी सद्बुद्धि में बदल गयी है। मैं प्रभु श्रीकृष्ण का नित्य गुणगान करके कालरूपी सर्प के चुंगल से बच गयी हूँ अर्थात अब मैं जन्म–मरण के चक्र से छूट गयी हूँ। अब कृष्ण के बिना मुझे यह संसार निस्सार और सूना लगता है और उनकी बातों के अतिरिक्त अन्य सभी बातें व्यर्थ लगती हैं। मीराबाई को केवल श्रीकृष्ण की भक्ति में ही आनन्द मिलता है, संसार की किसी अन्य वस्तु में नहीं।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) श्रीकृष्ण के प्रति मीरा की एकनिष्ठ भक्ति का सुन्दर चित्रण हुआ है। (2) कृष्ण की दीवानी मीरा को उनके बिना यह संसार निस्सार और सूना लगता है। (3) **भाषा**—राजस्थानी मिश्रित ब्रज। (4) **शैली**—मुक्तक (5) **छन्द**—गेयपद (6) **रस**—भक्ति और शान्त (7) **गुण**—माधुर्य। (8) **अलंकार**—'साजि–सिंगार' और 'लोक–लाज' में **अनुप्रास**, 'गाय–गाय' में **पुनरुक्तिप्रकाश** 'काल–ब्याल' में **रूपक** (9) **शब्द- शक्ति**—अभिधा एवं लक्षणा।

(ङ) मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई |
जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई ||
तात मात भ्रात बन्धु, आपनो न कोई |
छाँड़ि दई कुल की कानि, कहा करिहै कोई ||
संतन ढिंग बैठि-बैठि, लोक लाज खोई |
अँसुवन जल सींचि-सींचि, प्रेम बेलि बोई ||
अब तो बेल फैल गयी, आणंद फल होई |
भगति देखि राजी हुई, जगत देखि रोई ||
दासी मीरा लाल गिरधर, तारो अब मोई |

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्य हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य-खण्ड' में संकलित श्रीकृष्ण की अनन्य उपासिका 'मीराबाई' के काव्य–ग्रन्थ 'मीरा–सुधा–सिन्धु' के अर्न्तगत 'पदावली' शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत पद में मीराबाई कहती हैं कि वे तो एकमात्र श्रीकृष्ण को प्राप्त करना चाहती हैं, किसी अन्य को नहीं।

व्याख्या—मीराबाई कहती हैं कि मेरे एकमात्र सम्बन्धी गिरधर गोपाल ही हैं, दूसरा कोई नहीं है। जो सिर पर मोर–मुकुट धारण किये हुए हैं, वे कृष्ण ही मेरे स्वामी है। माता–पिता, भाई–बन्धु कोई भी मेरा नहीं है। अपने गिरधर के प्रेम में मैंने अपने कुल की सारी मर्यादाएँ त्याग दी हैं। अब मेरा कोई क्या बिगाड़ेगा जब कृष्ण मेरे साथ हैं। साधु–सन्तो के पास बैठकर मैंने झूठी बनावटी परम्पराओं की लोक–लज्जा को भी खो दिया है। मैंने प्रेम की बेल को बोकर, उसे कृष्ण–वियोग के आँसुओं से सींचा है और अब तो यह बेल चारों और फैल गयी हैं और इस पर आनन्दरूपी फल भी लग गये हैं। मीरा को कृष्ण–भक्ति ही रुचिकर लगती है और इस नश्वर संसार को देखकर उन्हें रोना भी आता है। मीरा श्रीकृष्ण से विनती करती हैं कि हे गिरधरलाल ! मैं

आपके चरणों की दासी हूँ। अब आप मुझे संसाररूपी सागर से पार लगा दो, मेरा उद्धार कर दो और मुझे मोक्ष प्रदान करो।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) मीराबाई ने श्रीकृष्ण के प्रति अपनी अनन्य भक्ति–भावना प्रदर्शित की है। (2) **भाषा**—राजस्थानी मिश्रित ब्रज। (3) **शैली**—मुक्तक (4) **छन्द**—गेयपद (5) **रस**—भक्ति और शान्त (6) **अलंकार**—'गिरधर–गोपाल', 'मोर–मुकुट', में **अनुप्रास** 'असुँवन–जल', 'प्रेम–बेलि' , 'आणँद–फल' में **रूपक** और 'बैठि–बैठि', 'सीचि–सीचि' में **पुनरुक्ति प्रकाश**। (7) **गुण**—प्रसाद। (8) **शब्द-शक्ति**—अभिधा, लक्षणा एवं व्यंजना।

काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए–

उत्तर—

शब्द	तत्सम रूप	शब्द	तत्सम रूप
नैनन	नयन	सबद	शब्द
किरपा	कृपा	भगति	भक्ति
आणंद	आनन्द	बिसाल	विशाल
बिपत	विपत्ति	बस्तर	वस्त्र

प्रश्न 2. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार का नाम बताइए–

(क) मोर मुकुट मकराकृत कुंडल, अरुण तिलक दिये भाल।।

उत्तर—अनुप्रास अलंकार है।

(ख) भज मन चरण-कँवल अबिनासी।

उत्तर—रूपक अलंकार है।

प्रश्न 3. निम्नलिखित पदों में नाम सहित समास-विग्रह कीजिए–

उत्तर—

समस्त पद	समास-विग्रह	समास-नाम
गिरिधर	गिरि को धारण करने वाला	बहुव्रीहि समास
प्रतिदिन	हर दिन	अव्ययीभाव समास
नन्दलाल	नन्द का लाल	षष्ठी तत्पुरूष
चरण–कमल	चरण के समान कमल	कर्मधारय
अमोल	बिना मोल	नञ् तत्पुरूष
कुमति	कुत्सित मति	कर्मधारय
ब्रजवासी	ब्रज के वासी	षष्ठी पुरुष

❑

3

दोहा

(रहीम)

परीक्षापयोगी प्रश्न

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. रहीम के पिता का क्या नाम था?

उत्तर—इनके पिता का नाम बैरम खाँ था।

प्रश्न 2. अपने दोहों के लिए प्रसिद्ध अकबर के नवरत्न का नाम बताइए।

उत्तर—रहीम।

प्रश्न 3. रहीमदास हिन्दी-साहित्य के किस कालखण्ड (युग) के अन्तर्गत आते हैं?

उत्तर—रहीमदास हिन्दी–साहित्य के भक्तिकाल के अन्तर्गत आते है।

प्रश्न 4. रहीम की रचनाओं में भक्तिकाल की जो सामान्य प्रवृत्तियाँ पायी जाती हैं, उनका उल्लेख कीजिए।

उत्तर—रहीम की रचनाओं में भक्तिकाल की सामान्य प्रवृत्तियाँ इस प्रकार हैं—(1) भक्ति की भावना (2) गुरु की महिमा (3) सुधारवादी दृष्टिकोण एवं समन्वय की भावना, (4) रहस्य की भावना (5) अहंकार का त्याग और लोकमंगल की भावना (6) काव्य का उत्कर्ष (7) जीवन की नश्वरता और ईश्वर के नाम स्मरण की महत्ता।

प्रश्न 5. रहीम की प्रमुख रचनाओं के नामों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—रहीम की प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं—

1. रहीम सतसई—इसमें रहीम के नीति और उपदेश सम्बन्धी 300 दोहे संगृहीत हैं।

2. बरवै नायिका भेद वर्णन—इसमें 116 बरवै अवधी भाषा में हैं। यह शृंगार प्रधान रचना है।

3. शृंगार-सोरठा—इसमें शृंगार रसप्रधान 6 ही सोरठे उपलब्ध हैं।

इनके अतिरिक्त (4) मदनाष्टक (5) रासपंचाध्यायी (6) दीवाने फारसी (7) रहीम रत्नावली आदि रहीम की अन्य रचनाएँ भी हैं।

प्रश्न 6. रहीम का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उत्तर—रहीम का जन्म 1556 ई० के आस–पास लाहौर नगर में हुआ था।

प्रश्न 7. किस रचना के आधार पर रहीम को बरवै छन्द का जनक माना जाता है?

उत्तर—'बरवै नायिका भेद वर्णन' के आधार पर रहीम को बरवै छन्द का जनक माना जाता है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. कुसंग का प्रभाव किस प्रकार के व्यक्तियों पर नहीं होता? रहीम द्वारा दिये दृष्टान्तों द्वारा स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—कुसंग का प्रभाव साधारण प्रकृति वालो के ऊपर पड़ता है, जबकि उत्तम प्रकृति के व्यक्ति उसके प्रभाव से अछूते रहते हैं। अच्छी अर्थात् उत्तम प्रकृति वाले लोगों पर कुसंग का प्रभाव ठीक उसी प्रकार से नहीं पड़ता है, जिस प्रकार से चन्दन के वृक्ष पर असंख्य मात्रा में सर्प लिपटे रहते हैं, फिर भी चन्दन अपनी शीतलता नहीं छोड़ता है।

प्रश्न 2. रहीम किस प्रकार की प्रीति की सराहना करने को कहते हैं?

उत्तर—रहीम ऐसी प्रीति की सराहना करने को कहते हैं जिससे दोनों प्रेमी एक-दूसरे को आत्मसात कर लें और प्रेम का रंग द्विगुणित हो जाये। जैसे चूना और हल्दी दोनों मिलकर अपना रंग छोड़ देते हैं और एक सुन्दर ललिमापूर्ण रंग बन जाता है।

प्रश्न 3. किसको बार-बार मनाने की बात रहीमदास करते हैं? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—कवि रहीम कहते हैं कि यदि सज्जन मनुष्य रूठ भी जाएँ तो उन्हें शीघ्र मना लेना चाहिए। यदि वे सौ बार भी नाराज हों तो उन्हें सौ बार ही मना लेना चाहिए; क्योंकि वे जीवन के लिए बहुत उपयोगी होते हैं। जिस प्रकार सच्चे मोतियों का हार टूट जाने पर उसे बार—बार पिरोया जाता है, उसी प्रकार सज्जनों को भी मनाकर रखना चाहिए; क्योंकि वे मोतियों के समान ही मूल्यवान होते हैं।

प्रश्न 4. हमारे नेत्रों से आँसू निकलकर क्या करते हैं?

उत्तर—रहीमदास जी कहते है कि आँसू, आँखों से निकलते ही मन के सारे दु:ख को प्रकट कर देते हैं। तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार कोई व्यक्ति घर से निकाले जाने पर घर के सारे भेद दूसरों के सामने खोल देता है, उसी प्रकार आँखरूपी घर से निकाले जाने पर आँसू भी मन के सारे भेद प्रकट कर देता है; अर्थात् यह प्रकट कर देता है कि इस व्यक्ति के हृदय में दु:ख हैं।

प्रश्न 5. रहीम ने झूठे तथा सच्चे मित्र की क्या पहचान बतायी है?

उत्तर—कवि रहीम कहते हैं कि जब व्यक्ति के पास सम्पत्ति होती है तो अनेक लोग तरह—तरह से उनके सगे—सम्बन्धी बन जाते हैं, किन्तु जो विपत्ति के समय साथ छोड़ देते हैं अर्थात् वो सच्चे मित्र नहीं होते हैं, सच्चे मित्र वो होते हैं जो विपत्ति के समय भी साथ नहीं छोड़ते।

प्रश्न 6. देशप्रेम की भावना को रहीम ने किस दृष्टान्त द्वारा स्पष्ट किया है?

उत्तर—रहीम ने देशप्रेम की भावना को जल और मछली के दृष्टान्त द्वारा स्पष्ट किया है। जिस प्रकार जल के प्रति मछली का प्रेम एकांगी होता है, जल के बिना वह जीवित नहीं रह सकती। उसी प्रकार देशप्रेमी भी अपनी माटी से दूर रहकर उसके लिए तडपता रहता है। उसको प्राप्त करने के लिए वह मछली के समान अपने प्राणों को न्यौछावर कर देता है।

प्रश्न 7. कौन दीनबन्धु के समान होता है?

उत्तर—दीनों पर दया करने वाला तथा उनकी सहायता करने वाला दीनबन्धु के समान होता है। कवि रहीम कहते हैं कि जो मनुष्य दीनों की ओर देखता है अर्थात उनकी सहायता करता है, वह उनके लिए भगवान के समान होता है।

प्रश्न 8. संगति का व्यक्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—मनुष्य जैसी संगति में बैठता है उस पर संगति का वैसा ही प्रभाव पड़ता है जिस प्रकार स्वाति—बूँद केले के पत्ते पर गिरकर कपूर बन जाती है। सीप में पड़कर मोती का रूप धारण कर लेती है और सर्प के मुख में पड़कर विष बन जाती है उसी प्रकार अच्छी संगति में बैठने पर व्यक्ति सज्जन और दुर्जनों की संगति पाकर दुर्जन बन जाता है।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. रहीम के जीवन-वृत्त और कृतियों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—रहीम का पूरा नाम अब्दुर्रहीम खानखाना था। इनका जन्म लाहौर में (अब पाकिस्तान में) सन् 1556 ई० के लगभग हुआ था। इनके पिता बैरमखाँ, मुगल सम्राट अकबर के संरक्षक थे। किन्हीं कारणोंवश अकबर बैरम खाँ से रुष्ट हो गया था और उसने उन्हें हज पर भेज दिया था। रास्ते में बैरम खाँ के शत्रु ने उसकी हत्या कर दी। बालक रहीम और उनकी माँ की अकबर ने देखभाल की व रहीम की शिक्षा-दीक्षा की उचित व्यवस्था की।

रहीम संस्कृत, अरबी, फारसी, तुर्की और हिन्दी के ज्ञाता थे। ये अपनी दानशीलता और उदारता के लिए भी पर्याप्त प्रसिद्ध रहे। अकबर ने इन्हें 'खानखाना' की उपाधि से विभूषित किया था। अकबर की मृत्यु के बाद जहाँगीर ने इन्हें राजद्रोह के अभियोग में कैद कर इनकी जागीरें छीन लीं।

रहीम अपने 'नीति के दोहों' के लिए प्रसिद्ध हैं। इनके दोहों का सूक्ति रूप में प्रयोग होता है। सन् 1627 ई० में इनकी मृत्यु हो गयी।

कृतियाँ—हिन्दी में इनकी कृतियाँ निम्नलिखित हैं—

1. रहीम सतसई—इसमें रहीम के नीति और उपदेश सम्बन्धी 300 दोहे संगृहीत हैं।

2. बरवै नायिका भेद वर्णन—इसमें 116 बरवै अवधी भाषा में हैं। यह शृंगारप्रधान रचना है।

3. शृंगार-सोरठा—इसमें शृंगार रसप्रधान 6 ही सोरठे उपलब्ध हैं।

इनके अतिरिक्त (4) मदनाष्टक (5) रासपंचाध्यायी (6) दीवाने फारसी (7) रहीम रत्नावली आदि रहीम की अन्य रचनाएँ भी हैं।

साहित्य में स्थान—जनसाधारण में अपने दोहों के लिए प्रसिद्ध रहीम ने हिन्दी में नीति, भक्ति वैराग्य और शृंगार विषयों पर मार्मिक काव्य—रचना की है। निश्चय ही हिन्दी साहित्य में रहीम का विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित पद्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए और उनका काव्य-सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए-

(क) जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग |
चंदन बिष ब्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग ||

सन्दर्भ—प्रस्तुत दोहा रहीम द्वारा रचित 'रहीम रत्नावली' से हमारी पाठ्य—पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य—खण्ड' में संकलित 'दोहा' शीर्षक से अवतरित हैं।

संकेत—इस शीर्षक के अन्तर्गत आने वाले सभी पद्यांशों के लिए यही सन्दर्भ प्रयुक्त होगा।

प्रसंग—रहीम ने उच्चकोटि के नीति सम्बन्धी दोहों की रचना की है। प्रस्तुत दोहे में उत्तम प्रकृति तथा चरित्र की दृढ़ता पर प्रकाश डाला गया है।

व्याख्या—कवि रहीम का कहना है कि जो व्यक्ति उत्तम स्वभाव और दृढ़ चरित्र वाले होते हैं, बुरी संगति में रहने पर भी उनके चरित्र में विकार उत्पन्न नहीं होता। जिस प्रकार चन्दन के वृक्ष पर चाहे कितने ही विषैले सर्प क्यों न लिपटे रहें, परन्तु उस पर सर्पों के विष का प्रभाव नहीं पड़ता अर्थात् चन्दन का वृक्ष अपनी सुगन्ध और शीतलता के गुण को छोड़कर जहरीला नहीं हो जाता। इसी प्रकार सज्जन भी अपने सद्‌गुणों को कभी नहीं छोड़ते।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) कवि का मन्तव्य है कि दृढ़ चरित्र और उत्तम स्वभाव वाले व्यक्तियों के चरित्र पर बुरे चरित्र वाले व्यक्ति के आचरण का प्रभाव नहीं होता। (2) **भाषा**—ब्रज (3) **शैली**—उपदेशात्मक व मुक्तक। (4) **रस**—शान्त (5) **छन्द**—दोहा (6) **अलंकार**—दृष्टान्त और अनुप्रास। (7) **गुण**—प्रसाद (8) **शब्द-शक्ति**—अभिधा।

(ख) रहिमन प्रीति सराहिये, मिले होत रँग दून |

ज्यों जरदी हरदी तजै, तजै सफेदी चून ||

सन्दर्भ—प्रस्तुत दोहा रहीम द्वारा रचित 'रहीम रत्नावली' से हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में संकलित 'दोहा' शीर्षक से अवतरित हैं।

प्रसंग—प्रस्तुत दोहे में सच्ची प्रीति की विशेषता पर प्रकाश डाला गया है।

व्याख्या—कवि रहीम कहते हैं कि उसी प्रेम की प्रशंसा करनी चाहिए, जिसमें दोनों प्रेमियों का प्रेम मिलकर दुगना हो जाता है, अर्थात् दोनों प्रेमी अपना अलग–अलग अस्तित्व भूलकर एक–दूसरे में समाहित हो जाते हैं जैसे हल्दी पीली होती है और चूना सफेद, परन्तु दोनो मिलकर लाल रंग बना देते हैं। सच्चे प्रेम में भी ऐसा ही होता है।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) सच्चे प्रेम का स्वरूप, दोनों प्रेमियों का स्वयं का अस्तित्व भुलाकर एकरूप हो जाना है। (2) **भाषा**—ब्रज (3) **शैली**—मुक्तक (4) **रस**—शान्त (5) **छन्द**—दोहा (6) **अलंकार**—अनुप्रास एवं दृष्टान्त (7) **गुण**—प्रसाद (8) **भाव-साम्य**—कबीर के अनुसार प्रेम की सँकरी गली में 'मैं' और 'तू' दोनों एकाकार होकर ही आ सकते हैं—

प्रेम-गली अति साँकरी, ता में दो न समाहिं।

(ग) टूटे सुजन मनाइए, जौ टूटे सौ बार |
रहिमन फिरि-फिरि पोइये, टूटे मुक्ताहार ||

सन्दर्भ—प्रस्तुत दोहा रहीम द्वारा रचित 'रहीम रत्नावली' से हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में संकलित 'दोहा' शीर्षक से अवतरित हैं।

प्रसंग—प्रस्तुत दोहे में रहीम ने सज्जनों के महत्त्व पर विचार प्रकट किया है।

व्याख्या—कवि रहीम कहते हैं कि यदि सज्जन मनुष्य रूठ भी जाएँ तो उन्हें शीघ्र मना लेना चाहिए। यदि वे सौ बार भी नाराज हों तो उन्हे सौ बार ही मना लेना चाहिए, क्योंकि वे जीवन के लिए बहुत उपयोगी होते हैं। जिस प्रकार सच्चे मोतियों का हार टूट जाने पर उसे बार–बार पिरोया जाता है, उसी प्रकार सज्जनों को भी मनाकर रखना चाहिए; क्योंकि वे मोतियों के समान ही मूल्यवान होते हैं।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) यहाँ कवि ने सज्जन व्यक्तियों को मोती के समान बहुमूल्य माना है और उनका साथ बनाये रखने का परामर्श दिया है। (2) **भाषा**—ब्रज (3) **शैली**—मुक्तक (4) **रस**—शान्त (5) **छन्द**—दोहा (6) **अलंकार**—अनुप्रास, दृष्टान्त और पुनरुक्तिप्रकाश (7) **गुण**—प्रसाद (8) **भाव-साम्य**—गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी सज्जनों के महत्त्व पर विचार प्रकट करते हुए कहा है—

बिनु सतसंग बिबेक न होई, राम कृपा बिनु सुलभ न सोई॥

(घ) रहिमन अँसुआ नैन ढरि, जिय दुख प्रगट करेइ|
जाहि निकारो गेह तें, कस न भेद कहि देइ ||

सन्दर्भ—प्रस्तुत दोहा रहीम द्वारा रचित 'रहीम रत्नावली' से हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में संकलित 'दोहा' शीर्षक से अवतरित हैं।

प्रसंग—कवि रहीम का मत है कि घर से निकाला जाने वाला हर व्यक्ति घर का भेद खोल देता है।

व्याख्या—रहीमदास जी कहते हैं कि आँसू, आँखों से निकलते ही मन के सारे दु:ख को प्रकट कर देते हैं। कवि का कथन है कि जिस व्यक्ति को घर से निकाला जाएगा, वह घर के सारे भेद क्यों न कह देगा? तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार कोई व्यक्ति घर से निकाले जाने पर घर के सारे भेद दूसरों के सामने खोल देता है, उसी प्रकार आँखरूपी घर से निकाले जाने पर आँसू भी मन के सारे भेद प्रकट कर देते हैं; अर्थात यह प्रकट कर देता है कि इस व्यक्ति के हृदय में दु:ख है।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) यहाँ कवि ने जीवन का सच्चा अनुभव प्रकट किया है। वह कहना चाहता है कि घर–परिवार में एकता का होना आवश्यक है। (2) **भाषा**—ब्रज (3) **शैली**—मुक्तक (4) **रस**—शान्त (5) **अलंकार**—अनुप्रास, दृष्टान्त एवं मानवीकरण (6) **छन्द**—दोहा (7) **गुण**—प्रसाद (8) **शब्द-शक्ति**—अभिधा एवं लक्षणा।

(ङ) कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीति |
बिपति-कसौटी जे कसे, तेही साँचे मीत ||

सन्दर्भ—प्रस्तुत दोहा रहीम द्वारा रचित 'रहीम रत्नावली' से हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में संकलित 'दोहा' शीर्षक से अवतरित हैं।

प्रसंग—इस दोहे में कवि ने सच्चे मित्र की पहचान बतायी है।

व्याख्या—कवि रहीम कहते हैं कि जब व्यक्ति के पास सम्पत्ति होती है तो अनेक लोग तरह–तरह से उसके सगे–सम्बन्धी बन जाते हैं, किन्तु जो विपत्ति के समय भी मित्रता नहीं छोड़ते, वे ही सच्चे मित्र होते हैं। तात्पर्य यह है कि सच्चा मित्र ही विपत्ति की कसौटी पर सदैव खरा उतरता है।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) संकट में साथ देना ही मित्रता की वास्तविक परीक्षा है। (2) **भाषा**—ब्रज। (3) **शैली**—मुक्तक (4) **रस**—शान्त (5) **छन्द**—दोहा (6) **अलंकार**—अनुप्रास तथा रूपक (7) **गुण**—प्रसाद (8) **शब्द**–शक्ति—अभिधा एवं व्यंजना। (9) **भाव-साम्य**—गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी निम्नलिखित पंक्ति में यही भाव व्यक्त किया है—

धीरज धरम मित्र अरू नारी, आपति
काल परखिए चारी।

(च) जाल परे जल जात बहि, तजि मीनन को मोह |
रहिमन मछरी नीर को, तऊँ न छाँड़त छोह ||

सन्दर्भ—प्रस्तुत दोहा रहीम द्वारा रचित 'रहीम रत्नावली' से हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में संकलित 'दोहा' शीर्षक से अवतरित हैं।

प्रसंग—प्रस्तुत दोहे में मछली के माध्यम से सच्चे प्रेम का आदर्श बताया गया है।

व्याख्या—कवि रहीम कहते हैं कि जब मछली पकड़ने के लिए नदी में जाल डाला जाता है, तब मछली तो जाल में फँस जाती है और पानी अपनी सहेली मछली का मोह त्यागकर आगे निकल जाता है; परन्तु मछली को जल से इतना प्रेम है कि वह पानी के बिना तड़प–तड़पकर मर जाती है। तात्पर्य यह है कि सच्चा प्रेम करने वाला कभी अपने साथी का साथ नहीं छोड़ता।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) कवि ने मछली के प्रेम द्वारा सच्चे प्रेम के आदर्श स्वरूप; जिसमें आत्मत्याग की भावना होती है; को प्रस्तुत किया है। (2) **भाषा**—ब्रज (3) **शैली**—मुक्तक (4) **रस**—शान्त (5) **छन्द**—दोहा (6) **अलंकार**—अन्योक्ति और अनुप्रास (7) **गुण**—प्रसाद (8) **शब्द-शक्ति**—अभिधा एवं व्यंजना। (9) **भाव-साम्य**—श्री रामनरेश त्रिपाठी जी ने भी यही बात कही है—

त्याग बिना निष्प्राण प्रेम है, करो
प्रेम पर प्राण निछावर।

(छ) दीनन सबको लखत हैं, दीनहिं लखै न कोय |
जो रहीम दीनहिं लखै, दीनबन्धु सम होय ||

सन्दर्भ—प्रस्तुत दोहा रहीम द्वारा रचित 'रहीम रत्नावली' से हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में संकलित 'दोहा' शीर्षक से अवतरित हैं।

प्रसंग—प्रस्तुत दोहे में कवि द्वारा सामान्य जन को दीन–दु:खियों की सहायता करने के लिए प्रेरित किया गया है और कहा गया है कि ऐसा व्यक्ति ईश्वर–तुल्य होता है।

व्याख्या—रहीमदास जी कहते हैं कि दीन–हीन निर्धन लोग सभी लोगों की ओर इस आशा से देखते हैं कि वे हमारी कुछ सहायता करेंगे किन्तु विडम्बना यह है कि उन दीन–हीनों को कोई नहीं देखता अर्थात् उनकी सहायता कोई नहीं करता। कवि रहीम कहते हैं कि जो दीनों की ओर देखता है अर्थात् उनकी सहायता करता है, वह उनके लिए भगवान् के समान होता है।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) सभी को दीन–दु:खियों की सहायता करनी चाहिए, इस भाव को अभिव्यक्ति दी गयी है। (2) **भाषा** —ब्रज (3) **शैली**— मुक्तक (4) **छन्द**—दोहा (5) **रस**—शान्त (6) **अलंकार**—उपमा तथा अनुप्रास (7) **गुण**—प्रसाद (8) **शब्द-शक्ति**—अभिधा।

(ज) प्रीतम छबि नैननि बसी, पर छबि कहाँ समाय ।
भरी सराय रहीम लखि, पथिक आपु फिरि जाय ॥

सन्दर्भ—प्रस्तुत दोहा रहीम द्वारा रचित 'रहीम रत्नावली' से हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में संकलित 'दोहा' शीर्षक से अवतरित हैं।

प्रसंग—प्रस्तुत दोहे में कवि ने ईश्वर के प्रति अपने प्रेम की अनन्यता पर प्रकाश डाला है।

व्याख्या—कवि रहीम कहते हैं कि मेरे नेत्रों में परमात्मारूपी प्रियतम का सौन्दर्य समाया हुआ है; अत: दूसरों के सौन्दर्य के लिए मेरे नेत्रों में कोई स्थान नहीं है। यदि कोई सराय यात्रियों से भरी रहे तो पथिक उसमें स्थान न पाकर स्वयं लौटकर चला जाता है। तात्पर्य यह है कि हृदय में ईश्वर की भक्ति उत्पन्न हो जाने पर अन्य मोह स्वयं समाप्त हो जाते हैं।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) प्रेम एकनिष्ठ होना चाहिए–इस भाव की स्वाभाविक अभिव्यक्ति की गयी है। (2) **भाषा**—ब्रज (3) **शैली**—मुक्तक (4) **रस**—श्रृंगार या शान्त (5) **छन्द**—दोहा (6) **अलंकार**—अनुप्रास एवं दृष्टान्त (7) **गुण**—प्रसाद (8) **शब्द-शक्ति**—अभिधा (9) **भाव-साम्य**—सन्त कबीर भी यही कहते है कि—

जब लगि नाता जगत का, तब लगि भगति न होय।

(झ) रहिमन धागा प्रेम का, मत तोरेउ चटकाय ।
टूटे से फिरि ना जुरै, जुरै गाँठ परि जाय ॥

सन्दर्भ—प्रस्तुत दोहा रहीम द्वारा रचित 'रहीम रत्नावली' से हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में संकलित 'दोहा' शीर्षक से अवतरित हैं।

प्रसंग—प्रस्तुत दोहे में कवि ने कहा है कि प्रेम के सम्बन्धों को दुष्टता के व्यवहार से समाप्त नहीं करना चाहिए।

व्याख्या—कवि रहीम कहते हैं कि प्रेमरूपी धागे को कभी झटका देकर नहीं तोड़ना चाहिए। जिस प्रकार धागा एक बार टूट जाने पर फिर नहीं जुड़ता और यदि वह जुड़ भी जाता है तो उसमें गाँठ पड जाती है, उसी प्रकार प्रेम–सम्बन्ध यदि एक बार टूट जाए तो फिर उसका जुड़ना कठिन होता है। इसको जोड़ने की कोशिश करने पर उसमें दरार अवश्य पड जाती है, पहले जैसी बात नहीं रहती।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) धागे के माध्यम से प्रेम अथवा स्नेह की व्याख्या अत्यधिक औचित्यपूर्ण ढंग से की गयी है। (2) **भाषा**—ब्रज (3) **शैली**—मुक्तक (4) **गुण**—प्रसाद (5) **रस**—शान्त (6) **छन्द**—दोहा (7) **अलंकार**—रूपक तथा अनुप्रास। (8) **शब्द-शक्ति**—अभिधा, लक्षणा एवं व्यंजना।

(ञ) कदली सीप भुजंग-मुख, स्वाति एक गुन तीन ।
जैसी संगति बैठिए, तैसोई फल दीन ॥

सन्दर्भ—प्रस्तुत दोहा रहीम द्वारा रचित 'रहीम रत्नावली' से हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में संकलित 'दोहा' शीर्षक से अवतरित हैं।

प्रसंग—प्रस्तुत दोहे में सत्संगति के प्रभाव पर प्रकाश डाला गया है।

व्याख्या—कवि रहीम का कहना है कि स्वाति नक्षत्र की बूँदों में पानी एक–सा होता है, परन्तु उसका प्रभाव अलग–अलग वस्तु में अलग–अलग होता है। वह स्वाति–बूँद केले के पत्ते पर गिरकर कपूर बन जाती है अथवा कपूर के दाने के समान दिखाई देती है। सीप में पड़कर मोती का रूप धारण कर लेती है और सर्प के मुख में पड़कर विष बन जाती है। उसके ऊपर उस संगति का वैसा ही प्रभाव पड़ता है। तात्पर्य यह है कि अच्छी संगति में बैठने पर व्यक्ति सज्जन और दुर्जनों की संगति पाकर दुर्जन बन जाता है।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) संगति का प्रभाव अवश्य पड़ता है, व्यावहारिक दृष्टि से कवि का मत अनुकरणीय है। (2) **भाषा**—ब्रज। (3) **शैली**—मुक्तक। (4) **रस**—शान्त। (5) **छन्द**—दोहा। (6) **अलंकार** —दृष्टान्त और अनुप्रास। **(7) गुण**—प्रसाद। (8) **शब्द-शक्ति**—अभिधा। (9) **भाव-साम्य**—संगति के प्रभाव को अन्यत्र भी इस प्रकार दर्शाया गया है—

''संगति ही गुन ऊपजै, संगति ही गुन जाय।''

(ट) तरुवर फल नहिं खात हैं, सरवर पियहिं न पान ।
कहि रहीम पर काज हित, संपति सँचहिं सुजान ॥

सन्दर्भ—प्रस्तुत दोहा रहीम द्वारा रचित 'रहीम रत्नावली' से हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में संकलित 'दोहा' शीर्षक से अवतरित हैं।

प्रसंग—प्रस्तुत दोहे में कवि ने परोपकार की महत्ता का वर्णन किया है।

व्याख्या—कवि रहीम कहते हैं कि वृक्ष अपने फल स्वयं नहीं खाते हैं। तालाब भी अपने पानी को स्वयं नही पीता है। फल और जल का उपयोग तो दूसरे लोग ही करते हैं। इसी प्रकार सज्जनों की सम्पत्ति परोपकार के लिए ही होती है। आशय यह है कि वे अपनी सम्पत्ति को दूसरे के हित में लगा देते हैं।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) वृक्ष और तालाब के दृष्टान्त द्वारा कवि ने मानव को परोपकार की प्रेरणा प्रदान की है। (2) **भाषा–ब्रज** (3) **शैली**—मुक्तक (4) **रस**—शान्त (5) **छन्द**—दोहा (6) **अलंकार**—अनुप्रास और रूपक (7) **गुण**—प्रसाद (8) **शब्द-शक्ति**—अभिधा (9) **भाव-साम्य**—'परोपकाराय सतां विभूतय:' में यही सत्य प्रकट हुआ है।

(ठ) रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि ।
जहाँ काम आवै सुई, कहा करै तरवारि ॥

सन्दर्भ—प्रस्तुत दोहा रहीम द्वारा रचित 'रहीम रत्नावली' से हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में संकलित 'दोहा' शीर्षक से अवतरित हैं।

प्रसंग—प्रस्तुत दोहे में कवि ने समझाया है कि समय और आवश्यकता के अनुसार प्रत्येक वस्तु का महत्त्व होता है, चाहे वह बहुत मामूली क्यों न हो?

व्याख्या—कवि रहीम कहते हैं कि बड़े लोगों को देखकर छोटों का निरादर नहीं करना चाहिए, उनका साथ कभी नहीं छोड़ना चाहिए, क्योंकि जिस स्थान पर सुई काम आती है, उस स्थान पर तलवार काम नहीं कर सकती। इसलिए छोटी चीजें या छोटे लोग भी समय आने पर बड़े काम के होते हैं। कवि का आशय यह है कि छोटे और बड़े दोनो ही अपने–अपने स्थान पर उपयोगी और महत्त्वपूर्ण होते हैं।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) सुई और तलवार का दृष्टान्त देते हुए रहीम ने समाज में छोटे और बड़े व्यक्तियों के पृथक–पृथक महत्त्व पर प्रकाश डाला है। (2) **भाषा**—ब्रज (3) **शैली**—मुक्तक (4) **गुण**—प्रसाद (5) **रस**— शान्त (6) **छन्द**—दोहा (7) **अलंकार**—अनुप्रास और दृष्टान्त (8) **शब्द- शक्ति**—अभिधा और लक्षणा।

(ड) यों रहीम सुख होत है, बढ़त देख निज गोत |
ज्यों बड़री अँखियाँ निरखि, आँखिन को सुख होत ||

सन्दर्भ—प्रस्तुत दोहा रहीम द्वारा रचित 'रहीम रत्नावली' से हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में संकलित 'दोहा' शीर्षक से अवतरित हैं।

प्रसंग—प्रस्तुत दोहे में कवि रहीम ने कहा है कि प्रत्येक को अपने गोत्र अर्थात परिवार की वृद्धि देखकर बहुत प्रसन्नता होती है।

व्याख्या—कवि रहीम कहते हैं कि जिस प्रकार अपनी बड़ी–बड़ी आँखों को देखकर व्यक्ति की आँखों को सुख मिलता है, उसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति अपने परिवार को बढ़ता हुआ देखकर प्रसन्न होता है, और उसे समृद्ध देखकर अपार सुख का अनुभव करता है।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) मानव के इस स्वभाव का मनौवैज्ञानिक चित्रण अत्यधिक काव्यात्मक ढंग से किया गया है। **(2) भाषा**—ब्रज (3) **शैली**—मुक्तक (4) **गुण**—प्रसाद (5) **रस**—शान्त (6) **छन्द**—दोहा (7) **अलंकार**—दृष्टान्त और अनुप्रास। (8) **शब्द-शक्ति**—अभिधा एवं लक्षणा।

(ढ) रहिमन ओछे नरन ते, तजौ बैर अरु प्रीति |
काटे-चाटे स्वान के, दुहूँ भाँति बिपरीति ||

सन्दर्भ—प्रस्तुत दोहा रहीम द्वारा रचित 'रहीम रत्नावली' से हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में संकलित 'दोहा' शीर्षक से अवतरित हैं।

प्रसंग—प्रस्तुत दोहे में कवि ने नीच व्यक्तियों से दूर रहने का उपदेश दिया है।

व्याख्या—कवि रहीम कहते हैं कि तुच्छ विचार वाले अथवा नीच मनुष्य से प्रेम और द्वेष नहीं करना चाहिए अर्थात उससे किसी भी प्रकार का सम्बन्ध नहीं रखना चाहिए; क्योंकि उससे दोनो ही प्रकार से हानि होने की उसी प्रकार सम्भावना रहती हैं जिस प्रकार कुत्ते के काट लेने से पीड़ा होती हैं और विष फैलता है अथवा प्रेम से चाट लेने के कारण अपवित्रता। आशय यह है कि दोनों प्रकार से हानि ही होती है।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) यहाँ कवि ने नीच प्रकृति के व्यक्तियों को कुत्ते के समतुल्य बताते हुए उनकी मित्रता–शत्रुता दोनों को ही हानिकारक बताया है। (2) **भाषा**—ब्रज (3) **शैली**—मुक्तक (4) **रस**—शान्त (5) **छन्द**—दोहा (6) **अलंकार**—दृष्टान्त और अनुप्रास (7) **गुण**—प्रसाद (8) **शब्द-शक्ति**—अभिधा एवं लक्षणा (9) **भाव-साम्य**—ऐसे ही भाव किसी कवि ने अन्यत्र भी प्रकट किये हैं—

जे नर नीच अहैं जग में तिनके संग
प्रीति न रारि बढ़ावै।

काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

प्रश्न 1. 'गाँठ पड़ना' और 'मन लगाना' दो मुहावरे हैं। रहीम ने इन दोनों का बड़ा सुन्दर प्रयोग किया है। उन पंक्तियों को उद्धृत कीजिए, जिनमें इनका प्रयोग हुआ है।

उत्तर—**गाँठ पड़ना**—टूटे से फिरि ना जुरै, जुरै गाँठ परि जाय।

मन लगाना—रहिमन मनहिं लगाइ के, देखि लेहु किन कोय।

प्रश्न 2. निम्नलिखित में प्रयुक्त अलंकारों का लक्षण सहित नामोल्लेख कीजिए–

गुन ते लेत रहीम जन, सलिल कूप ते काढ़ि।
कृपहु से कहुँ होत है, मन काहू को बाढ़ि ॥

उत्तर—यहाँ 'गुण' शब्द एक से अधिक अर्थ (सद्गुण, रस्सी) होने के कारण श्लेष अलंकार है। श्लेष अलंकार का लक्षण निम्नवत् है—

जिस स्थान पर एक शब्द एक से अधिक अर्थों में प्रयुक्त होता है, वहाँ श्लेष अलंकार होता है।

प्रश्न 3. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त रस को बताइए–

प्रीतम छबि नैननि बसी, पर छबि कहाँ समाय।
भरी सराय रहीम लखि, पथिक आपु फिरि जाय॥

उत्तर—शान्त रस।

प्रश्न 4. निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए–

उत्तर—

शब्द	**पर्यायवाची**
आँख	दृग, लोचन, चक्षु आदि।
भुजंग	विषधर, सर्प, पन्नग आदि।
मछली	अण्डज, मीन, मत्स्य आदि।
फूल	पुष्प, कुसुम, सुमन आदि।

प्रश्न 5. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए–

उत्तर—**आँखों में धूल डालना**—(धोखा देना)—श्याम दुकानदार की आँखों में धूल डालकर अँगूठी चुराकर ले गया।

अपना उल्लू सीधा करना—(स्वार्थ सिद्ध करना)—आजकल के नेता केवल वोट के लिए जनता की खुशामद करते हैं और अपना उल्लू सीधा करते हैं।

आड़े हाथ लेना—(शर्मिन्दा करना)—मोहन बहुत बढ़–चढ़कर बातें कर रहा था, किन्तु जब श्याम ने उसे आड़े हाथ लिया तो उसकी बोलती बन्द हो गयी।

अँगुली उठाना—(आक्षेप लगाना)—शीला के खराब चरित्र के कारण मौहल्ले के लोग्यें ने उस पर अँगुली उठानी शुरू कर दी है।

टाँग अड़ाना—(दखल देना)—श्याम हमेशा दूसरों की बातों में टाँग अड़ाता रहता है।

❑

4

प्रेम-माधुरी
(भारतेन्दु हरिश्चन्द्र)

परीक्षापयोगी प्रश्न

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. खड़ीबोली गद्य के जनक किसे कहा जाता है?

उत्तर—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को खड़ीबोली गद्य का जनक कहा जाता है।

प्रश्न 2. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जन्म कब और कहाँ हुआ?

उत्तर—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जन्म 1850 ई० में काशी में हुआ था।

प्रश्न 3. भारतेन्दु जी के पिता का उपनाम क्या था?

उत्तर—भारतेन्दु जी के पिता का उपनाम 'गिरधरदास' था।

प्रश्न 4. 'प्रेम-माधुरी' भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की किस भाषा की रचना है?

उत्तर—'प्रेम—माधुरी' भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी की ब्रजभाषा की रचना है।

प्रश्न 5. रीतिकाव्य का अनुसरण करते हुए भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने किस कृति का प्रणयन किया?

उत्तर—रीतिकाव्य का अनुसरण करते हुए भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने सतसई श्रृंगार का प्रणयन किया?

प्रश्न 6. भारतेन्दु जी ने किन प्रमुख पत्रिकाओं का सम्पादन किया?

उत्तर—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 'कवि वचन सुधा', 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' और 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' का सम्पादन भी किया।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. भारतेन्दु जी ने वर्षा के वर्णन में किन बातों का उल्लेख किया है?

उत्तर—वर्षा—वर्णन में भारतेन्दु जी ने बताया है कि वर्षा ऋतु आने से कोयल कूकने लगी है, धुले पत्ते हवा से हिलने लगे हैं, मेढक बोलने लगे है, ठंडी हवा चलने लगी है जिससे संयोगी व्यक्तियों के हृदय हर्ष से भर गये हैं।

प्रश्न 2. वियोगिनी की आँखें स्वप्न में क्या देखना चाहती हैं और उन्हें सदैव क्या पश्चात्ताप रहेगा?

उत्तर—श्रीकृष्ण के दर्शन के लिए गोपिकाएँ लालायित हैं। यदि उनके दर्शन के बिना ही मृत्यु हो जायेगी तो आँखों में पश्चात्ताप रहेगा और वे दर्शनार्थ खुली रहेंगी क्योंकि जीते जी तो स्वप्न में दर्शन नहीं हो पा रहे हैं।

प्रश्न 3. बादल को निगोड़े क्यों कहा गया है?

उत्तर—बादल को निगोड़े इसलिए कहा गया है क्योंकि वह वियोगियों के हृदय की विरह—वेदना को और भी अधिक तीव्रता प्रदान करता है।

प्रश्न 4. गोपियाँ श्रीकृष्ण को भूलने में अपने को क्यों असमर्थ पाती हैं?

उत्तर—श्रीकृष्ण को भूलने में गोपियाँ स्वयं को असमर्थ इसलिए पाती हैं क्योंकि उनका मन श्रीकृष्ण के हृदय में जाकर बस गया है। गोपियाँ कहती हैं कि यदि कोई हमारे मन में निवास करता तो हम उसे भुला भी सकती थीं परन्तु मन दूसरों के हृदय में निवास करने लगा है इसलिए उसे भुला पाना असम्भव है।

प्रश्न 5. 'आग लगाकर पानी के लिए दौड़ने' का क्या तात्पर्य है?

उत्तर—श्रीकृष्ण के वियोग में दु:खी एक गोपी अपनी सखी से कहती है कि पहले तो श्रीकृष्ण से मिलाने का आश्वासन देकर मेरे हृदय में प्रेमरूपी अग्नि प्रज्वलित कर दी और अब मुझे समझाकर उसे बुझाने के लिए पानी लेने के लिए दौड़ रही हैं अर्थात प्रेम में दु:खी न होने का उपदेश दे रही हैं।

प्रश्न 6. गोपियाँ उद्धव से ज्ञान का उपदेश ले जाने के लिए क्यों कह रही हैं?

उत्तर—गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि हे उद्धव! यहाँ सभी गोपियाँ श्रीकृष्ण से प्रेम करती है। अत: यहाँ पर तुम्हारे इस ज्ञान का कोई भी ग्राहक नहीं हैं। इसलिए तुम उसे अपने साथ वापस ले जाओ।

प्रश्न 7. 'कूपहिं में यहाँ भाँग परी है' से कवि का क्या आशय है?

उत्तर—जैसे कुएँ में भाँग घोलकर उसका जल पिलाया जाये तो जितने भी व्यक्ति होंगे सभी महापान की मदमत्तता का अनुभव करेंगे। उसी प्रकार इन शब्दों को लेकर गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि यहाँ गोपियों की सम्पूर्ण मण्डली बिगड चुकी है, कोई भी ज्ञान नहीं सीखना चाहेगी, क्योंकि सभी श्रीकृष्ण को चाहती हैं।

प्रश्न 8. 'रितून को कंत' किसे कहा गया है? इसके आगमन पर वातावरण कैसा हो गया है और गोपी को इससे क्या पीड़ा है?

उत्तर—कवि ने 'रितून को कन्त' वसन्त को कहा है। वसन्त के आगमन पर चारों ओर का वातावरण बहुत ही सुन्दर हो गया है। चारों ओर सरसों फूल रही है तथा शीतल, मन्द, सुगन्धित वायु बह रही है।

प्रश्न 9. कृष्ण के रूप-सौन्दर्य को देखे बिना गोपियों के नेत्रों की क्या दशा हो रही है?

उत्तर—गोपियो के नेत्रों को स्वप्न में भी चैन प्राप्त नहीं है। श्रीकृष्ण के वियोग में गोपियों के प्राण निकलना चाहते हैं किन्तु नेत्र उनके साथ नहीं जाना चाहते। अपने नेत्रों की व्याकुलता का वर्णन करती हुई गोपियाँ कहती हैं कि श्रीकृष्ण के दर्शन के अभाव में मरने पर भी हमारी आँखें खुली रह जायेंगी।

प्रश्न 10. 'प्रेम-माधुरी' में प्रस्तुत वर्षा-वर्णन को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत कविता में कवि ने वर्षा ऋतु के आगमन का बहुत ही मनोहारी और चित्रात्मक वर्णन किया है। कवि कहता है कि वर्षा ऋतु का आगमन हो गया है। कोयल कदम्ब के वृक्षों पर बैठ—बैठकर अपनी सुमधुर वाणी में कूकने लगी है। धुले पत्ते हवा से हिलने लगे है, मेंढक अपनी भाषा में टर्र—टर्र करके वातावरण को ध्वनित कर रहे हैं तथा मोर मस्त होकर नाचने लगे हैं।

प्रश्न 11. बसंत ऋतु में गोपियाँ क्यों तरस रही हैं?

उत्तर—बसंत ऋतु के आगमन पर गोपियाँ श्रीकृष्ण के विरह में पीड़ित होकर श्रीकृष्ण से मिलने के लिए तरस रही हैं। कृष्ण—विरह से पीड़ित एक गोपी दूसरी गोपी से कहती है कि हे सखी ऋतुओं का स्वामी वसन्त आ गया है किन्तु वसन्त ऋतु का मादक वातावरण श्रीकृष्ण के बिना मुझे पूर्णरूप से कष्टदायक प्रतीत हो रहा है।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का संक्षिप्त जीवन-परिचय दीजिए तथा कृतियों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जन्म 1850 ई० में काशी में हुआ था। बाबू गोपालचन्द्र इनके पिता थे, जो 'गिरधरदास' उपनाम से ब्रजभाषा में कविता करते थे। दुर्भाग्य से 5 वर्ष की अवस्था में माता और 10 वर्ष की अवस्था में इनके पिता का स्वर्गवास हो गया। इन्होंने स्वाध्याय से ही उर्दू, फारसी, हिन्दी, संस्कृत और बाँग्ला भाषाओं का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया था।

भारतेन्दु जी पर लक्ष्मी और सरस्वती की समान कृपा थी। ये साहित्यकारों और कवियों का बड़ा आदर करते थे और उन्हें मुक्तहस्त से दान देते थे। हिन्दी के प्रति इनका अटूट प्रेम था। इन्होंने विभिन्न पत्र—पत्रिकाओं का सम्पादन किया और हिन्दी—साहित्य की समृद्धि के लिए धन को पानी की तरह बहा दिया। 35 वर्ष की अल्पायु में ही सन् 1885 ई० में ये दिवंगत हो गये।

कृतियाँ—भारतेन्दु जी की काव्य—कृतियों को निम्नलिखित वर्गों में विभाजित किया जा सकता है—

1. भक्तिभावना-प्रधान काव्य—'भक्त सर्वस्व', 'भक्तमाल' 'प्रेम मलिका', 'दानलीला', 'प्रेम—तरंग', 'प्रेम—माधुरी' 'कृष्णचरित' आदि भक्तिभावना से पूर्ण काव्य हैं।

2. श्रृंगारप्रधान काव्य—'सतसई श्रृंगार', 'प्रेम फुलवारी', 'प्रेमाश्रु वर्णन', ' प्रेम सरोवर' आदि श्रृंगार रस की रचनाएँ हैं।

3. देशप्रेम और राष्ट्र-चेतनाप्रधान काव्य—'विजय वैजयन्ती', 'भरत—वीरत्व', 'विजय वल्लरी', 'सुमनांजलि', 'विजयिनी', 'विजय पताका'।

4. हास्य-व्यंग्यप्रधान काव्य—'बन्दर सभा', 'बकरी विकल्प' आदि हास्य—व्यंग्यप्रधान रचनाएँ हैं।

5. अन्य काव्य रचनाएँ—'होली वर्षा विनोद', 'राजसंग्रह', 'मधुमुकुल', 'वसन्त', 'श्रीरामलीला प्रबोधिनी' आदि।

साहित्य में स्थान—पाश्चात्य साहित्यकार ग्रियर्सन ने लिखा है—''हरिश्चन्द्र ही एक मात्र ऐसे सर्वश्रेष्ठ कवि हैं, जिन्होंने अन्य किसी भी भारतीय लेखक की अपेक्षा देशी बोली में रचित साहित्य को लोकप्रिय बनाने में सर्वाधिक योगदान दिया।''

प्रश्न 2. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट करते हुए इनकी ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए–

(क) जिय पै जु होइ अधिकार तो बिचार कीजै
लोक-लाज, भलो-बुरो, भले निरधारिए।
नैन,श्रौन, कर, पग, सबै पर-बस भए
उतै चलि जात इन्हैं कैसे कै सम्हारिए ।।
'हरिचंद' भई सब भाँति सों पराई हम
इन्हें ज्ञान कहि कहो कैसे कै निबारिए ।
मन में रहै जो ताहि दीजिए बिसारि, मन
आपै बसै जामैं ताहि केसे कै बिसारिए ।।

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य-खण्ड' में संकलित तथा आधुनिक हिन्दी साहित्य के जनक 'भारतेन्दु हरिचन्द्र' द्वारा रचित 'प्रेम-माधुरी' कविता शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग—इस कवित्त में गोपियाँ निर्गुण ब्रह्म का उपदेश देने के लिए आये हुए उद्धव से अपनी विरह दशा का वर्णन करती हैं।

संकेत—इस शीर्षक के अन्तर्गत आने वाले सभी पद्यांशों के लिए यही सन्दर्भ प्रयुक्त किया जाएगा।

व्याख्या—हे उद्धव! यदि हमारा अपने मन अर्थात हृदय पर अधिकार होता तो हम तुम्हारी बातों पर विचार भी करतीं; लोक—लाज, भलाई अथवा बुराई का भी अच्छी तरह निश्चय करती; किन्तु हमारा अपने मन पर अधिकार नहीं है। हमारे नेत्र, कान, हाथ, पैर आदि अंग श्रीकृष्ण के वश में हो गये हैं, इन पर हमारा अधिकार नहीं रहा है। ये सब कृष्ण की ओर स्वयं ही चले जाते हैं। बताइए, इन्हें कैसे संभाला जा सकता है? यदि ये सब अंग हमारे अधीन होते तो हम तुम्हारे कथनानुसार कार्य कर लेतीं।

गोपियाँ पुन: कहती हैं कि हे उद्धव! हम गोपियाँ सभी प्रकार से परायेवश अर्थात् कृष्ण के वश में हो गयी हैं। इन्हें ज्ञान का उपदेश देकर प्रेम के मार्ग से कैसे रोका जा सकता है? यदि कोई हमारे मन में निवास करता हो तो उसे हम भुला भी सकती हैं, परन्तु जब अपना ही मन किसी दूसरे के हृदय में जाकर रहने लगा हो, तब बताओ उसे कैसे भुलाया जा सकता है? अत: हमारे लिए कृष्ण को भुलाना सम्भव नहीं है। आप हमें व्यर्थ ही ज्ञान का उपदेश दे रहे हैं।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) प्रस्तुत पद्यांश में कृष्ण के प्रति गोपियों का अनन्य प्रेम तथा वाक्—पटुता प्रदर्शित हुई है। (2) **भाषा**—ब्रज (3) **शैली**—मुक्तक (4) **गुण**—माधुर्य (5) **रस**—वियोग, श्रृंगार। (6) **छन्द**—मनहरण कवित्त। (7) **अलंकार**—अनुप्रास (8) **भाव-साम्य**—सूरदास जी ने भी ऐसे ही भाव व्यक्त किये हैं—

अखियाँ हरि दरसन की भूखी।
कैसे रहति रूप-रस राँची, ये बतियाँ सुनि रूखी।।

(ख) यह संग में लागियै डोलैं सदा,
बिन देखे न धीरज आनती हैं ।
छिनहू जो वियोग परै 'हरिचंद',
तो चाल प्रलै की सु ढानती हैं ।।
बरुनी में थिरैं न झपैं उझपैं,
पल मैं न समाइबो जानती हैं।
पिय प्यारे तिहारे निहारे बिना,
अँखियाँ, दुखियाँ नहिं मानती हैं।

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य-खण्ड' में संकलित तथा आधुनिक हिन्दी साहित्य के जनक 'भारतेन्दु हरिचन्द्र' द्वारा रचित 'प्रेम-माधुरी' कविता शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग—इस पद्यांश में कृष्ण के वियोग में गोपियों के नेत्रों की दयनीय दशा का वर्णन किया गया है।

व्याख्या—गोपियाँ कृष्ण के विरह में पीड़ित होकर अपने नेत्रों की व्यथा उद्धव को सुनाती हुई कहती हैं कि हे उद्धव! हमारे नेत्र कृष्ण के वियोग में तथा उनकी खोज में सदा इधर—उधर घूमते रहते हैं और उन्हें देखे बिना धैर्य धारण नहीं करते हैं। यदि क्षणभर के लिए भी इन नेत्रों को कृष्ण का वियोग मालूम पड़े तो ये प्रलयकाल का दृश्य उपस्थित कर देते हैं अर्थात् प्रलयकाल के बादलों के समान निरन्तर आँसुओं की वर्षा करते हैं। ये आँखें क्षणभर के लिए भी बरौनियों के बीच में स्थिर रहना नहीं जानतीं, कभी झपकती हैं तो कभी तत्काल खुल जाती हैं। पलकों में समाना तो ये

जानती ही नहीं। इसलिए हे उद्धव! तुम श्रीकृष्ण से यह कहना कि उन्हें (कृष्ण को) देखे बिना दुखियारी गोपियों की आँखें मानती ही नहीं हैं।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) प्रस्तुत सवैये में गोपियों के कृष्ण के दर्शनों की तीव्र लालसा व्यक्त हुई है। (2) **भाषा**—ब्रज (3) **शैली**—मुक्तक एवं वर्णनात्मक (5) **गुण**—माधुर्य (6) **रस**—वियोग शृंगार (7) **छन्द**—सवैया (8) **अलंकार**—अनुप्रास तथा अतिशयोक्ति (9) **शब्द-शक्ति**—अभिधा, लक्षणा एवं व्यंजना। (10) 'धीरज न आना', 'चाल प्रलै की ढानना' मुहावरों का सुन्दर प्रयोग।

(ग) पहिले बहु भाँति भरोसो दियो,
अब ही हम लाइ मिलावती हैं |
'हरिचंद' भरोसो रही उनके
सखियाँ जो हमारी कहावती हैं ||
अब वेई जुदा ह्वै रहीं, हम सौं,
उलटो मिलि कैं समुझावती हैं |
पहिले तो लगाइ कै आग अरी!
जल कों अब आपुहिं धावती हैं ||

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य-खण्ड' में संकलित तथा आधुनिक हिन्दी साहित्य के जनक 'भारतेन्दु हरिचन्द्र' द्वारा रचित 'प्रेम-माधुरी' कविता शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग—इस पद्यांश में श्रीकृष्ण के वियोग में व्याकुल एक गोपी अपनी सखियों के समझाने पर उन्हें उपालम्भ देती है।

व्याख्या—हे सखी! पहले तो तुम हमें तरह—तरह से आश्वासन दिलाती थीं कि हम अभी श्रीकृष्ण को लाकर तुमसे मिला देती हैं। जो मेरी अपनी सखियाँ कहलाती हैं, मैं उनके ही विश्वास पर बैठी रही, लेकिन अब वही मुझसे अलग हो गयी हैं। श्रीकृष्ण को मिलाने की अपेक्षा वे अब इकट्ठी होकर उल्टा मुझे ही समझाती हैं। अरी सखी! इन्होंने पहले तो मेरे हृदय में प्रेम की आग लगा दी और अब उसे बुझाने के लिए स्वयं ही जल लेने को दौड़ी जाती हैं।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) यहाँ कवि ने गोपी की खीझ का सुन्दर चित्रण किया है। (2) **भाषा**—ब्रज (3) **शैली**—मुक्तक (4) **गुण**—प्रसाद एवं माधुर्य। (5) **रस**—विप्रलम्भ शृंगार (6) **छन्द**—सवैया (7) **अलंकार**— अनुप्रास (8) **शब्द-शक्ति**—अभिधा, लक्षणा एवं व्यंजना। (9) 'भरोसा देना', 'आग लगाकर पानी को दौड़ना' आदि मुहावरों—कहावतों का सुन्दर प्रयोग किया गया है।

(घ) ऊधौ जू सूधो गहो वह मारग,
ज्ञान की तेरे जहाँ गुदरी है |
कोऊ नहीं सिख मानिहै ह्याँ,
इक स्याम की प्रीति प्रतीति खरी है ||
ये ब्रजबाला सबै इक सी,
हरिचंद जू मंडली ही बिगरी है |
एक जौ होय तो ज्ञान सिखाइये,
कूपहिं में यहाँ भाँग परी है ||

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य-खण्ड' में संकलित तथा आधुनिक हिन्दी साहित्य के जनक 'भारतेन्दु हरिचन्द्र' द्वारा रचित 'प्रेम-माधुरी' कविता शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग—इस पद्यांश में गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि वे किसी प्रकार भी उनके निराकार ब्रह्म के उपदेश को ग्रहण नहीं कर सकतीं।

व्याख्या—गोपियाँ कहती हैं कि हे उद्धव! तुम उस मार्ग पर सीधे चले जाओ, जहाँ तुम्हारे ज्ञान की गुदड़ी रखी हुई है। यहाँ पर तुम्हारे उपदेश को कोई गोपी ग्रहण नहीं करेगी; क्योंकि सभी गोपियाँ श्रीकृष्ण के प्रेम में विश्वास रखती हैं। हे उद्धव! ये सभी ब्रजबालाएँ एक—सी हैं, कोई भी भिन्न प्रकृति की नहीं है। इनकी तो पूरी मण्डली ही बिगडी हुई हैं। यदि किसी एक गोपी की बात होती तो तुम उसे ज्ञान का उपदेश भी देते, किन्तु यहाँ तो कुएँ में ही भाँग पड़ी हुई है अर्थात् सभी श्रीकृष्ण के प्रेम—रस में सराबोर हो गयी हैं। इसलिए तुम्हारा उपदेश देना व्यर्थ होगा।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) यहाँ कवि ने श्रीकृष्ण के प्रति गोपियों का अनन्य प्रेम प्रकट किया हैं। (2) **भाषा**—सरस ब्रज। 'कुएँ में भाँग पड़ना' मुहावरे का सुन्दर प्रयोग हुआ है। (3) **शैली**–मुक्तक (4) **गुण**—माधुर्य (5) **रस**—शृंगार एवं भक्ति। (6) **छन्द**—सवैया। (7) **अलंकार**—अनुप्रास, रूपक (8) **शब्द-शक्ति**—अभिधा एवं लक्षणा।

(ङ) सखि आयो बसंत रितून को कंत,
चहूँ दिसि फूलि रही सरसों |
बर सीतल मंद सुगंध समीर,
सतावन हार भयो गर सों ||
अब सुंदर साँवरो नंद किसोर,
कहै 'हरिचंद' गयो घर सों |
परसों को बिताय दियो बरसों तरसों,
कब पाँय पिया परसों ||

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य-खण्ड' में संकलित तथा आधुनिक हिन्दी साहित्य के जनक 'भारतेन्दु हरिचन्द्र' द्वारा रचित 'प्रेम-माधुरी' कविता शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग—इस पद्यांश में वसन्त ऋतु के आगमन पर गोपियों की विरह—व्यथा का चित्रण किया गया है।

व्याख्या—कृष्ण—विरह से पीड़ित एक गोपी दूसरी गोपी से अपनी मनोव्यथा को व्यक्त करती हुई कहती है कि हे सखी! ऋतुओं का स्वामी वसन्त आ गया है। चारों दिशाओं में पीली—पीली सरसों फूल रही है। अत्यन्त सुन्दर, शीतल, मन्द और सुगन्धित वायु बह रही है, किन्तु वसन्त ऋतु का मादक वातावरण श्रीकृष्ण के बिना मुझेपूर्ण रूप से कष्टदायक प्रतीत हो रहा है। नन्दनन्दन श्रीकृष्ण हमसे यह बताकर गये थे कि मैं परसों तक मथुरा से लौट आऊँगा, परन्तु उन्होंने परसों के स्थान पर न जाने कितने वर्ष व्यतीत कर दिये और अभी तक लौटकर नहीं आये। मैं तो अपने प्रियतम कृष्ण के चरणों का स्पर्श करने के लिए तरस रही हूँ, पता नहीं कब उनके दर्शन हो सकेंगे?

काव्यगत सौन्दर्य—(1) वसन्त ऋतु का सुहावना वातावरण गोपियों की विरह—व्यथा को और भी अधिक बढ़ा रहा है। (2) **भाषा**—ब्रज (3) **शैली**—वर्णनात्मक व मुक्तक। (4) **गुण**—माधुर्य (5) **रस**—वियोग शृंगार (6) **छन्द**—सवैया (7) **अलंकार**—यमक और अनुप्रास (8) **शब्द-शक्ति**—अभिधा, लक्षणा एवं व्यंजना।

(च) इन दुखियान को न चैन सपनेहूँ मिल्यो,
तासों सदा ब्याकुल बिकल अकुलायँगी ||
प्यारे हरिचंदजू की बीती जानि औधि, प्रान
चाहत चलै पै ये तो संग ना समायँगी ||
देखौ एक बारहू न नैन भरि तोहिं यातें
जौन-जौन लोक जैहैं तहाँ पछतायँगी ||
बिना प्रान-प्यारे भये दरस तुम्हारे हाय,
मरेहू पै आँखें ये खुली ही रहि जायँगी ||

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य-खण्ड' में संकलित तथा आधुनिक हिन्दी साहित्य के जनक 'भारतेन्दु हरिचन्द्र' द्वारा रचित 'प्रेम-माधुरी' कविता शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग—इस पद्यांश में श्रीकृष्ण के विरह में व्याकुल गोपियों के नेत्रों की व्यथा का मार्मिक चित्रण किया गया है।

व्याख्या—विरहिणी गोपी कहती है कि प्रियतम श्रीकृष्ण के विरह में आकुल इन नेत्रों को स्वप्न में भी शान्ति नहीं मिल पाती हैं, क्योंकि इन्होंने कभी स्वप्न में भी श्रीकृष्ण के दर्शन नहीं किये। इसलिए ये सदा प्रिय—दर्शन के लिए व्याकुल होती रहेंगी। प्रियतम के लौट आने की अवधि को बीतती हुई जानकर मेरे प्राण इस शरीर से निकल जाना चाहते हैं, परन्तु मेरे मरने पर भी ये नेत्र प्राणों के साथ नहीं जाना चाहते; क्योंकि इन्होंने अपने प्रियतम कृष्ण को जी भरकर देखा ही नहीं है। इसलिए जिस किसी भी लोक में ये नेत्र जाएँगे, वहाँ मृत्यु पश्चात भी तुम्हारे दर्शन की प्रतीक्षा में खुले रहेंगे।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) इस पद्यांश में श्रीकृष्ण के प्रति एकनिष्ठ प्रेम की उत्कृष्ट व्यंजना हुई है। (2) **भाषा**—ब्रज। 'सपने में भी चैन न मिलना', 'आँख भरकर देखना' मुहावरों का उत्कृष्ट प्रयोग हुआ है। (3) **शैली**—मुक्तक (4) **रस**—वियोग श्रृंगार (5) **छन्द**—मनहरण कवित्त (6) **अलंकार**— अनुप्रास, अतिशयोक्ति और पुनरुक्तिप्रकाश (8) **गुण**—माधुर्य (9) **शब्द-शक्ति**—अभिधा, लक्षणा एवं व्यंजना।

(छ) कूकै लगीं कोइलैं कदंबन पे बैठि फेरि
धोये-धोये पात हिलि-हिलि सरसै लगे।
बोलै लगे दादुर मयूर लगे नाचै फेरि
देखि के सँजोगी-जन हिय हरसै लगे।।
हरी भई भूमि सीरी पवन चलन लागी
लखि 'हरिचंद' फेरि प्रान तरसै लगे।
फेरि झूमि-झूमि बरषा की रितु आई फेरि
बादर निगोरे झुकि-झुकि बरसै लगे ।।

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य-खण्ड' में संकलित तथा आधुनिक हिन्दी साहित्य के जनक 'भारतेन्दु हरिचन्द्र' द्वारा रचित 'प्रेम-माधुरी' कविता शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग—इस पद्यांश में कवि ने वर्षा के आगमन का मोहक चित्रण किया है।

व्याख्या—कवि कहता है कि कदम्ब के वृक्षों पर बैठकर फिर से कोयलें कूकने लगी हैं। वर्षा के जल से धुले पत्ते हिल—हिलकर वृक्षों पर सरस प्रतीत होने लगे हैं। अब मेंढक फिर बोलने लगे हैं तथा मोर नाचने लगे हैं। यह सब देखकर अपने प्रिय के समीप होने के कारण संयोगीजन अपने हृदय में हर्षित होने लगे हैं और दूसरी ओर सारी धरती हरी—भरी हो गयी है। शीतल मन्द पवन चलने लगी है। इसे देखकर वियोगी व्यक्तियों के मन अपने प्रिय के दर्शनों को तरसने लगे हैं। लो यह वर्षा ऋतु झूम—झूमकर फिर से आ गयी है और ये निगोड़े बादल झुक—झुककर फिर से बरसने लगे हैं।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) यहाँ पर वर्षा ऋतु का सजीव और मनोहारी चित्रण हुआ हैं। (2) **भाषा**—ब्रज (3) **शैली**—मुक्तक (4) **गुण**—माधुर्य (5) **रस**—श्रृंगार (6) **छन्द**—मनहरण कवित्त (7) **अलंकार**—'कूकै लगीं कोइलैं कदम्बन' में अनुप्रास तथा 'धोये—धोये', 'हिलिन हिलि', 'झूमि—झूमि', 'झुकि—झुकि' में पुनरुक्तिप्रकाश। पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार का चमत्कार छन्द के नाद—सौन्दर्य और लय को बढ़ाने वाला है। (8) **शब्द -शक्ति**—अभिधा और लक्षणा।

काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

प्रश्न 1. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकारों के नामों का उल्लेख करते हुए स्पष्ट कीजिए कि उनमें वह अलंकार कहाँ और कैसे है?

(क) परसों को बिताय दियो बरसों तरसों कब पाँय पिया परसों।

उत्तर—यहाँ प्रथम 'परसों' का अर्थ कल के बाद आने वाला दिन तथा द्वितीय 'परसों' का अर्थ स्पर्श करना है; अत: इसमें यमक अलंकार है। 'स' वर्ण की पुनरावृत्ति के कारण अनुप्रास अलंकार भी है।

(ख) पिय प्यारे तिहारे निहारे बिना, अँखियाँ, दुखियाँ नहिं मानती हैं।

उत्तर—'प', 'र' के अतिरिक्त 'य' तथा 'न' वर्णों की पुनरावृत्ति के कारण अनुप्रास अलंकार है।

(ग) कूकै लगीं कोइलैं कदंबन पै बैठि फेरि।

उत्तर—'क' वर्ण की पुनरावृत्ति के कारण अनुप्रास अलंकार है।

(घ) सखि आयो बसंत रितून को कंत, चहुँ दिसि फूलि रही सरसों।

उत्तर—'त' वर्ण की पुनरावृत्ति के कारण अनुप्रास अलंकार है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए–

उत्तर—

शब्द	तत्सम रूप	शब्द	तत्सम रूप
हिय	हृदय	धीरज	धैर्य
प्रान	प्राण	प्रलै	प्रलय
नैन	नयन	आग	अग्नि
मारग	मार्ग	प्रवीन	नवीण
बरस	वर्ष	जदीप	यद्यपि
दरस	दर्शन	जुद्ध	युद्ध
जोग	योग्य	श्रौन	श्रवण

प्रश्न 3. 'प्रेम-माधुरी' में किन छन्दों का प्रयोग किया गया है?

उत्तर—'प्रेम—माधुरी' में कवित्त और सवैया छन्दों का प्रयोग किया गया है।

प्रश्न 4. इस पाठ में से श्रृंगार रस से युक्त एक पंक्ति लिखिए।

उत्तर—श्रृंगार रस से युक्त पंक्ति निम्नलिखित है—

''देखि के संजोगी-जन हिय हरसै लगे।''

प्रश्न 5. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने बादल को निगोड़ा कहकर जो उपालम्भ दिया है, उसे स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—लोक—व्यवहार में उस व्यक्ति को निगोडा कहकर उपालम्भ दिया जाता है, जो कि मन की पीड़ा को बढ़ाने वाला हो। बादलों के कारण गोपियों की विरह—पीड़ा बढ़ जाती हैं, अत: वे उसे निगोड़ा कहकर उपालम्भ दे रही हैं।

प्रश्न 6. भारतेन्दु जी ने 'प्रेम-माधुरी' कविता के अन्तर्गत 'प्रलय ढाना', 'पलकों में न समाना' मुहावरों और 'कुएँ में भाँग पड़ी होना' लोकोक्ति का सुन्दर प्रयोग किया है। उन पंक्तियों को लिखिए, जिनमें इनका प्रयोग हुआ है।

उत्तर—प्रलय ढाना—'छिनहू जो वियोग परै 'हरिचंद' तो चाल प्रलै की सु ढानती हैं।''

पलको में न समाना—'बरूनी में घिरैं न झपैं उझपैं, पल मैं न समाइबो जानती हैं।''

कुएँ में भाँग पड़ी होना—'एक जौ होय तो ज्ञान सिखाइए, कूप ही में यहाँ भाँग परी है।'

प्रश्न 7. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए–

उत्तर—मुहावरों के अर्थ और वाक्य–प्रयोग निम्नलिखित हैं—

प्रलय ढाना (नष्ट करना)—युद्ध के पश्चात् विजयी देश की सेना विजित देश पर प्रलय ढा देती है।

धीरज न आना (धैर्य न रखना)—मोहन की असमय मृत्यु हो जाने के कारण सम्बन्धियों के लाख समझाने पर भी उसके माता–पिता को धीरज न आ सका।

पलको में न समाना (अत्यधिक प्रसन्न या दु:खी होना)—सोहन के आई० ए० एस० की परीक्षा में सफलता मिलने की खबर उसकी पलकों में न समायी।

आग लगाना (क्रोध या ईर्ष्या भड़काना)—संकुचित मानसिकता वाले लोग आगे बढ़ने के लिए अपने से योग्य व्यक्ति के विरुद्ध सदैव आग लगाते रहते हैं।

प्रश्न 8. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए–

(क) पहिले तो लगाइ कै आग अरी! जल कों अब आपुहिं धावती हैं।

(ख) परसों को बिताय दियो बरसों! तरसों कब पाँय पिया परसों।

संकेत—पद संख्या 'क' और 'घ' का काव्यगत सौन्दर्य देखें। ❑

5

पंचवटी

(मैथिलीशरण गुप्त)

परीक्षापयोगी प्रश्न

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. किसे राष्ट्रकवि की संज्ञा दी जाती है?

उत्तर—मैथिलीशरण गुप्त जी को राष्ट्रकवि की संज्ञा दी जाती है।

प्रश्न 2. भारत-भारती किसकी कृति है?

उत्तर—'भारत–भारती' मैथिलीशरण गुप्त की कृति है।

प्रश्न 3. 'साकेत' और 'पंचवटी' के रचयिता का नाम बताइए।

उत्तर—'साकेत' और 'पंचवटी' के रचयिता मैथिलीशरण गुप्त है।

प्रश्न 4. मैथिलीशरण गुप्त की चार काव्य-रचनाओं के नाम बताइए।

उत्तर—मैथिलीशरण गुप्त की चार काव्य रचनाएँ हैं—वध, जयद्रथ, पंचवटी, साकेत।

प्रश्न 5. 'साकेत' किस तरह की रचना है और इस पर राष्ट्रकवि को कौन-सा पुरस्कार प्राप्त हुआ?

उत्तर—'साकेत' महाकाव्य के सृजन पर इनको 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' द्वारा 'मंगलाप्रसाद पारितोषिक' से सम्मानित किया गया।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. द्विवेदी युग के सर्वाधिक प्रसिद्ध कवि का क्या नाम है?

उत्तर—द्विवेदी युग के सर्वाधिक प्रसिद्ध कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। ये खड़ीबोली के उन्नायक रहे। इन्होंने खड़ीबोली को काव्य के अनुरूप बनाया और जन–रुचि को खड़ीबोली काव्य की ओर प्रवृत्त किया।

प्रश्न 2. गुप्त जी की कविता का मुख्य स्वर क्या है?

उत्तर—गुप्त जी खड़ीबोली के उन्नायकों में प्रधान हैं। इन्होंने खड़ीबोली को काव्य के अनुकूल भी बनाया और जनरुचि को भी उसकी ओर प्रवृत्त किया। अपनी रचनाओं में गुप्त जी ने खड़ीबोली के शुद्ध, परिष्कृत और तत्सम–बहुल रूप को ही अपनाया है।

प्रश्न 3. पंचवटी की प्रकृति का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर—'पंचवटी' की प्रकृति का वर्णन करते हुए कवि कहता है कि वातावरण में चारों और चन्द्रमा की निर्मल चाँदनी फैली हुई है। सभी दिशाओं में आनन्द छाया हुआ है। उस प्राकृतिक सौन्दर्य को देखकर लक्ष्मण मन ही मन सोचते हैं कि जब सम्पूर्ण संसार निद्रा में निमग्न हो जाता है, तो पृथ्वी ओसरूपी मोती फैला देती हैं। सूर्य उन मोतियों को बटोर लेता है और फिर उन्हें संध्या को दे देता है।

प्रश्न 4. 'भोगी कुसुमायुध योगी-सा' कौन दिखाई देता है? कवि ने उसको 'भोगी कुसुमायुध योगी' क्यों कहा है? या 'भोगी कुसुमायुध योगी-सा' किसके लिए प्रयुक्त है और क्यों?

उत्तर—'पंचवटी' कविता में गुप्त जी ने पर्णकुटी के द्वार पर बैठे लक्ष्मण को कुसुमायुध योगी के समान बताया है। वे योगी कुसुमायुध (कामदेव) जैसे परम सुन्दर हैं, परन्तु वनवास के समय उनकी वेशभूषा योगियों जैसी है। यही कारण है कि कवि ने लक्ष्मण को 'भोगी कुसुमायुध योगी–सा' कहा है।

प्रश्न 5. प्रहरी बना हुआ वीरव्रती लक्ष्मण किस धन की रक्षा कर रहा है और वह धन कैसा है? या 'प्रहरी बना हुआ वह' कुटीर के किस धन की रक्षा कर रहा है?

उत्तर—प्रहरी बनकर लक्ष्मण जी कुटीर में स्थित तीन लोकों की लक्ष्मी सीता माता रूपी अपार धन की रक्षा कर रहे हैं। वास्तव में इस कुटी के अन्दर ऐसा अनुपम धन है, जिसकी रक्षा एक वीर पुरुष ही कर सकता है, क्योंकि सीता माता वीरों के वंश रघुवंश की प्रतिष्ठा हैं।

प्रश्न 6. सन्ध्या को किसकी 'विरामदायिनी' कहा गया है? सूर्य के अतिरिक्त सन्ध्या और किसके लिए विरामदायिनी है?

उत्तर—संध्या को सूर्य की विरामदायिनी कवि ने इसलिए कहा है क्योंकि सूर्य प्रात:काल से लेकर सांयकाल तक चमकने के उपरान्त अथवा दिनभर यात्रा करने के बाद थक जाता है और संध्या के समय ही विश्राम करता है। इस प्रकार संध्या ही सूर्य की विरामदायिनी है। सूर्य के अतिरिक्त संध्या मनुष्यों, पशु–पक्षियों की भी विरामदायिनी है। उसका कारण यह है

कि ये सभी प्राणी भी दिनभर के कार्यों से थककर संध्या के समय ही विश्राम कर पाते हैं।

प्रश्न 7. राम के राज्य-भार सँभालने से लक्ष्मण को अपने किस अहित की आशंका हो रही है?

उत्तर—राम के राज–काज संभालने से लक्ष्मण को इस बात की आशंका हो रही है कि राम द्वारा राज्य–भार संभालने के उपरान्त उन्हें इतना समय नहीं मिल पायेगा कि वह उनसे अर्थात् परिवार वालों को अधिक समय दे सकें। भाव यह है कि लक्ष्मण उनके सामीप्य से वंचित हो जायेंगे और उन्हें श्रीराम की सेवा का अवसर भी प्राप्त नहीं हो सकेगा।

प्रश्न 8. लक्ष्मण संसार के लोगों से क्या करने की आशा करते हैं?

उत्तर—लक्ष्मण संसार के लोगों से यही आशा करते हैं कि सभी मनुष्यो को अपना हित स्वयं कर लेना चाहिए।

प्रश्न 9. गुप्त जी की दो अनूदित कविताओं के नाम लिखिए।

उत्तर—गुप्त जी की दो अनूदित कविताएँ हैं—1. गीत और 2. अयोध्या की नरसत्ता।

प्रश्न 10. मैथिलीशरण गुप्त की पंचवटी कविता में निहित मूलभाव को संक्षेप में लिखिए।

उत्तर—रात्रि के आगमन पर सुन्दर चन्द्रमा की चंचल किरणें थल और जल में क्रीडा करती हुई दृष्टिगोचर हो रही हैं। अम्बर से लेकर अवनि तक स्वच्छ चाँदनी का तनोवा तन गया है। चारो ओर निस्तब्धता है। सब सोये हैं, परन्तु एक युवक है जो अभी भी निडर भाव से धनुष धारण किये जग रहा है। जिस पर्णकुटी का यह प्रहरी बना हुआ है उसमें ऐसा कौन–सा धन है? वास्तव में ये लक्ष्मण हैं जो राम–सीता की रक्षा कर रहे हैं।

लक्ष्मण सोचते हैं कि जब सम्पूर्ण संसार निद्रा में निमग्न हो जाता है तो पृथ्वी ओसरूपी मोती फैला देती है। सूर्य उन मोतियों को बटोर लेता है और फिर उन्हें संध्या को दे देता है। लक्ष्मण आगे सोचते हैं कि वनवास की अवधि पूर्ण हो रही है। राम राज–काज में व्यस्त हो जायेंगे और हम लोगों को भूल जायेंगे। परन्तु इससे हमें दु:ख नहीं, यह लोक–हितकारी कार्य है।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का संक्षिप्त जीवन परिचय दीजिए तथा कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—**जीवन परिचय**—राष्ट्रकवि, भारत–भारती के अमर गायक मैथिलीशरण गुप्त का जन्म सन् 1886 ई० में झाँसी जिले के चिरगाँव नामक स्थान पर हुआ था। इनके पिता सेठ रामचरण गुप्त और छोटे भाई श्री सियारामशरण गुप्त हिन्दी के अच्छे कवि रहे। घर का वातावरण साहित्यिक होने के कारण इनके मन में भी कविता के प्रति रुचि जागृत हुई।

गुप्त जी का स्वभाव, वेशभूषा और रहन–सहन सादा और सरल था। काव्य में राष्ट्रप्रेम की अभिव्यक्ति होने के कारण इन्हें राष्ट्रकवि का सम्मान प्रदान किया गया। आगरा और प्रयाग विश्वविद्यालयों ने इन्हें डी० लिट्० की मानद उपाधि से सम्मानित किया। 'साकेत' नामक महाकाव्य पर 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' ने इनको 'मंगलाप्रसाद पारितोषिक' प्रदान किया था। ये 12 वर्ष तक भारत के उच्च सदन (राज्यसभा) के मनोनीत सदस्य भी रहे। 12 दिसम्बर, सन् 1964 ई० को इस महान् साहित्यकार की मृत्यु हो गयी।

रचनाएँ (कृतियाँ)—इन्होंने कुल मिलाकर 45 काव्य–ग्रन्थों की रचना की, जिनमें प्रमुख निम्नलिखित हैं—

1. साकेत—साकेत गुप्त जी का प्रबन्धात्मक गीतिकाव्य है।

2. यशोधरा—इसमें बुद्ध की पत्नी यशोधरा का मार्मिक चरित्र अंकित किया गया है।

3. भारत-भारती—इस काव्य–रचना के कारण इन्हें 'राष्ट्रकवि' होने का गौरव प्राप्त हुआ।

4. किसान—इसमें गुप्त जी ने किसानों के शोषण के विरुद्ध आवाज उठायी है।

5. जयद्रथ वध—यह वीर और करुण रस की रचना है। यह चक्रव्यूह–भेदन और अर्जुन द्वारा जयद्रथ के वध की घटना पर आधारित खण्डकाव्य है।

6. द्वापर—इसमें गुप्त जी ने कृष्ण के द्वापर युद्ध के साथ आधुनिक समस्याओं को उद्घाटित किया है।

7. **जयभारत**—इसमें महाभारत की घटना को नवीन परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया गया है।

इनके अतिरिक्त ' रंग में भंग', 'पृथ्वीपुत्र', 'हिन्दू', 'चन्द्रहास', 'विष्णुप्रिया', 'दिवोदास', 'मेघनाद वध', 'सिद्धराज', 'कुणाल गीत', 'गुरुकुल', अनघ, 'झंकार', 'मंगल घट', 'नहुष', 'विरहिणी–ब्रजांगना' आदि अन्य प्रमुख रचनाएँ हैं।

साहित्य में स्थान—आधुनिक युग की समस्त काव्यधाराओं को अपनाने वाले तथा द्विवेदी युग के प्रतिनिधि कवि श्री मैथिलीशरण गुप्त का हिन्दी साहित्य में मूर्धन्य स्थान है। देशभक्ति रचनाओं के कारण गाँधीजी ने इनको राष्ट्रकवि की उपाधि दी थी। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में, ''गुप्त जी निस्सन्देह हिन्दीभाषी जनता के प्रतिनिधि कवि कहे जा सकते हैं।''

प्रश्न 2. निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए और इनके काव्य-सौन्दर्य पर भी प्रकाश डालिए–

(क) चारु चन्द्र की चंचल किरणें, खेल रही हैं जल-थल में,
स्वच्छ चाँदनी बिछी हुई है, अवनि और अम्बर-तल में |
पुलक प्रकट करती है धरती, हरित तृणों की नोकों से,
मानो झींम रहे हैं तरु भी, मन्द पवन के झोकों से ||

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में 'पंचवटी' शीर्षक के अन्तर्गत संकलित तथा राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'पंचवटी' खण्डकाव्य से उद्धृत है।

संकेत—इस शीर्षक के अन्तर्गत आने वाले सभी पद्यांशों के लिए यही सन्दर्भ प्रयुक्त किया जाएगा।

प्रसंग—इन पंक्तियों में कवि ने चाँदनी रात में पंचवटी की प्राकृतिक सुन्दरता का वर्णन किया है।

व्याख्या—कवि कहता है कि सुन्दर चन्द्रमा की चंचल किरणें जल और थल सभी स्थानों पर क्रीडा कर रही हैं। पृथ्वी से आकाश तक सभी जगह चन्द्रमा की स्वच्छ चाँदनी फैली हुई है जिसे देखकर ऐसा मालूम पड़ता है कि धरती और आकाश में कोई धुली हुई सफेद चादर बिछी हुई हो। पृथ्वी हरे घास के तिनकों की नोंक के माध्यम से अपनी प्रसन्नता को व्यक्त कर रही है। तिनकों के रूप में उसका रोमांचित होना दिखाई देता है; अर्थात् तिनकों की नोंक चाँदनी में चमकती है और उसी चमक से पृथ्वी की प्रसन्नता व्यक्त हो रही है। मन्द सुगन्धित वायु बह रही है, जिसके कारण वृक्ष धीरे–धीरे हिल रहे हैं, तब ऐसा मालूम पड़ता है मानो सुन्दर वातावरण

को पाकर वृक्ष भी मस्ती में झूम रहे हों। तात्पर्य यह है कि सारी प्रकृति प्रसन्न दिखाई दे रही है।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) पंचवटी के सुरम्य वातावरण का मनोहारी चित्रण हुआ है। (2) प्रकृति का चित्रण आलम्बन रूप में करते हुए उसका मानवीकरण किया गया है। (3) **भाषा**—साहित्यिक खड़ीबोली। (4) **शैली**—चित्रात्मक और भावात्मक (5) **रस**—शृंगार व शान्त (6) **गुण**—माधुर्य एवं प्रसाद (7) **छन्द**—तांटक (8) **अलंकार**—अनुप्रास, उत्प्रेक्षा तथा मानवीकरण (9) **शब्द-शक्ति**—अभिधा एवं व्यंजना।

(ख) पंचवटी की छाया में है, सुन्दर पर्ण-कुटीर बना,
उसके सम्मुख स्वच्छ शिला पर, धीर वीर निर्भीक मना |
जाग रहा यह कौन धनुर्धर, जब कि भुवन-भर सोता है?
भोगी कुसुमायुध योगी-सा, बना दृष्टिगत होता है ||

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में 'पंचवटी' शीर्षक के अन्तर्गत संकलित तथा राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'पंचवटी' खण्डकाव्य से उद्धृत है।

प्रसंग—प्रस्तुत पद्यांश में कर्तव्यपालन के प्रति लक्ष्मण के व्यक्तित्व, निष्ठा एवं सतर्कता का सुन्दर चित्रण हुआ है।

व्याख्या—पंचवटी में बनी हुई पर्णकुटी पर लक्ष्मण को पहरा देते हुए देखकर गुप्त जी कहते हैं कि पंचवटी की छाया में पत्तों की एक सुन्दर कुटिया बनी हुई है। इस कुटिया के सामने एक साफ–सुथरी शिला पर यह धैर्यवान, वीर और निर्भय पुरुष कौन है, जो धनुष–बाण लिये बैठा है? सारा संसार सो रहा है, पर यह कौन धनुर्धारी वीर है, जो इतनी रात गये भी जाग रहा है? उसके सुन्दर रूप–सौन्दर्य और तन्मयता को देखकर ऐसा लगता है कि मानो भोगी कामदेव स्वयं योगी के रूप में यहाँ आकर बैठ गया हो।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) इन पंक्तियों में कवि ने लक्ष्मण के धैर्य, वीरता, निर्भयता और कामदेव जैसी सुन्दरता को अंकित किया है। (2) **भाषा**—शुद्ध साहित्यिक खड़ीबोली (3) **शैली**—भावात्मक और प्रबन्ध (4) **रस**—शान्त (5) **छन्द**—तांटक (6) **गुण**—प्रसाद (7) **अलंकार**—'भोगी कुसुमायुध योगी–सा बना दृष्टिगत होता हैं' में उपमा तथा अनुप्रास। (8) **शब्द -शक्ति**—अभिधा।

(ग) किस व्रत में है व्रती वीर यह, निद्रा का यों त्याग किये,
राजभोग्य के योग्य विपिन में, बैठा आज विराग लिये |
बना हुआ है प्रहरी जिसका, उस कुटीर में क्या धन है?
जिसकी रक्षा में रत इसका तन है, मन है, जीवन है ||

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में 'पंचवटी' शीर्षक के अन्तर्गत संकलित तथा राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'पंचवटी' खण्डकाव्य से उद्धृत है।

प्रसंग—इस पद्य में उस समय का वर्णन है, जब वनवास के दिनों में श्रीराम और सीताजी पंचवटी की कुटिया में सोए हुए हैं और लक्ष्मण रात को कुटिया के बाहर एक शिला पर बैठकर पहरा दे रहे हैं।

व्याख्या—लक्ष्मण को पहरा देते हुए देखकर कवि कहता है कि वीर व्रत धारण करने वाला यह युवक अपनी नींद त्यागकर किस व्रत की साधना में लीन है? देखने से तो लगता है कि यह किसी राज्य का सुख भोगने के योग्य है, पर यह तो वैराग्य धारण कर जंगल में बैठा है। आखिर इस कुटिया में ऐसा कौन–सा धन है, जिसका यह युवक बडी तन्मयता से पहरा दे रहा है। यह इस कुटी की रक्षा के लिए शरीर की परवाह नहीं कर रहा है अर्थात् अपने शरीर को भी विश्राम नहीं दे रहा है और सब प्रकार से अपने मन को इस कुटी की रक्षा में लगाये हुए है। अवश्य ही इस कुटी में ऐसा कोई अमूल्य और अनुपम धन होना चाहिए, जिसकी रक्षा में यह वीर अपने तन, मन और जीवन को ही समर्पित किये हुए है।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) इन पंक्तियों में कवि ने लक्ष्मण की लगन, त्याग, कर्तव्यनिष्ठा, एकाग्रता आदि गुणों पर प्रकाश डाला है। (2) **भाषा**—शुद्ध साहित्यिक खड़ीबोली। (3) **शैली**—भावात्मक और प्रबन्ध (4) **रस**–शान्त (5) **छन्द**—तांटक **(6) गुण**—प्रसाद (7) **अलंकार**—अनुप्रास (8) **शब्द-शक्ति**—अभिधा, लक्षणा और व्यंजना।

(घ) मर्त्यलोक-मालिन्य मेटने, स्वामि-संग जो आयी है,
तीन लोक की लक्ष्मी ने यह, कुटी आज अपनायी है |
वीर वंश की लाज यही है, फिर क्यों वीर न हो प्रहरी?
विजन देश है, निशा शेष है, निशाचरी माया ठहरी ||

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में 'पंचवटी' शीर्षक के अन्तर्गत संकलित तथा राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'पंचवटी' खण्डकाव्य से उद्धृत है।

प्रसंग—इस पद्य में कवि ने उस अनुपम धन की महानता का वर्णन किया है, जिसकी रक्षा में वीरव्रती लक्ष्मण एकाग्र मन से संलग्न हैं।

व्याख्या—वास्तव में इस कुटी के अन्दर ऐसा अनुपम धन है, जिसकी रक्षा एक वीर पुरुष ही कर सकता है। तीनों लोकों की साक्षात् लक्ष्मी सीता जी इस कुटी के अन्दर अपने पति राम के साथ रह रही हैं। मनुष्यलोक की बुराइयों को दूर करने के लिए वे अपने पति राम के साथ आयी हैं। वे वीरों के वंश रघुवंश की प्रतिष्ठा हैं। यदि सीता जी की प्रतिष्ठा में कोई आँच आती है तो रघुकुल की प्रतिष्ठा पर भी धब्बा लगता है। इसीलिए लक्ष्मण जैसे प्रहरी को यहाँ नियुक्त किया गया है। यह वन निर्जन है और रात भी अभी बहुत शेष है। यहाँ पर राक्षस लोग चारों ओर घूम रहे हैं। वे अपनी माया का जाल फैलाकर कोई भी विपत्ति खड़ी कर सकते हैं, अत: रात्रि के समय निर्जन प्रदेश में मायावी राक्षसों से बचने के लिए लक्ष्मण जैसा वीर ही उपयुक्त पहरेदार है।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) यहाँ कवि ने वीर लक्ष्मण को उपयुक्त पहरेदार के रूप में चित्रित किया है। **(2) भाषा**—साहित्यिक खड़ीबोली (4) **शैली**—चित्रात्मक एवं प्रबन्ध (5) **रस**—शान्त (6) **छन्द**—तांटक (7) **गुण**—प्रसाद (8) **अलंकार**—अनुप्रास व रूपक (9) **शब्द-शक्ति**—अभिधा, लक्षणा और व्यंजना (10) **भाव-साम्य**—नारी के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए किसी कवि ने कहा है—

गृहलक्ष्मी तुम लाज वंश की, तुम अमूल्य निधि अति पावन।
तुम जननी तुम सृष्टिधारिणी, विश्वहर्ष तुम मनभावन॥

(ङ) क्या ही स्वच्छ चाँदनी है यह, है क्या ही निस्तब्ध निशा,
है स्वच्छन्द-सुमन्द, गन्धवह, निरानन्द है कौन दिशा?
बन्ध नहीं, अब भी चलते हैं, नियति-नटी के कार्य-कलाप,
पर कितने एकान्त भाव से, कितने शान्त और चुपचाप ||

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में 'पंचवटी' शीर्षक के अन्तर्गत संकलित तथा राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'पंचवटी' खण्डकाव्य से उद्धृत है।

प्रसंग—प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने प्रकृति के सौन्दर्य, क्रियाशीलता, शान्ति और सात्विकता का सुन्दर वर्णन किया है।

व्याख्या—पंचवटी के प्राकृतिक सौन्दर्य को निहारते हुए लक्ष्मण अपने मन में सोचते हैं कि यहाँ कितनी स्वच्छ और चमकीली चाँदनी है और रात्रि भी बहुत शान्त है। स्वच्छ, सुगन्धित वायु मन्द–मन्द बह रही हैं। पंचवटी में किस ओर आनन्द नहीं है? इस समय चारों ओर पूर्ण शान्ति है

तथा सभी लोग सो रहे हैं, फिर भी नियतिरूपी नटी अपने कार्य–कलापों को बहुत ही शान्ति से सम्पन्न कर रही है और वह अकेले ही अपने कर्तव्यों का निर्वाह किये जा रही है।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) यहाँ कवि ने पंचवटी के शान्त–प्राकृतिक सौन्दर्य का हृदयग्राही वर्णन किया है। (2) **भाषा**—शुद्ध साहित्यिक खड़ीबोली। (3) **शैली**—भावात्मक और चित्रात्मक (4) **रस**—शान्त (5) **गुण** —प्रसाद (6) **छन्द**—तांटक **(7) अलंकार**—अनुप्रास व रूपक (8) **शब्द-शक्ति**—अभिधा एवं व्यंजना।

(च) है बिखेर देती वसुन्धरा, मोती सबके सोने पर,
रवि बटोर लेता है उनको, सदा सवेरा होने पर |
और विरामदायिनी अपनी, सन्ध्या को दे जाता है,
शून्य श्याम तनु जिससे उसका, नया रूप झलकाता है ||

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में 'पंचवटी' शीर्षक के अन्तर्गत संकलित तथा राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'पंचवटी' खण्डकाव्य से उद्धृत है।

प्रसंग—प्रस्तुत पद्य–पंक्तियों में कवि ने पंचवटी के प्राकृतिक सौन्दर्य का मनोहारी वर्णन लक्ष्मण के माध्यम से कराया है।

व्याख्या—लक्ष्मण पंचवटी में पर्णकुटी के बाहर एक स्वच्छ शिला पर बैठकर प्रकृतिरूपी नटी के कार्य–कलापों के विषय में सोच रहे हैं कि जब संसार के समस्त प्राणी रात में सो जाते है, उस समय यह रत्नगर्भा पृथ्वी प्रसन्न होकर छोटे–छोटे ओस कणों के रूप में सर्वत्र मोतियों का खजाना बिखेर देती है। तात्पर्य यह है कि ये ओस के कण मोतियों के समान दिखाई देते हैं। प्रात:काल हो जाने पर सूर्य अपने किरणरूपी हाथों से उन मोतियों को समेट लेता है। सूर्य दिनभर आकाश के विस्तृत मार्ग में गमन करता हुआ थक जाता है और सन्ध्या समय उसे विश्राम मिलता है। अत: सूर्य प्रात:काल के समय बटोरे गये ओस–कणरूपी मोतियों को, विश्राम देने वाली सन्ध्यारूपी नायिका को उपहार रूप में देकर अस्त हो जाता है। सन्ध्या काल में अन्धकार छा जाने के कारण सन्ध्या का शरीर श्याम–वर्ण का होता है। सन्ध्या सुन्दरी उन मोतियों से अपना रूप–शृंगार करती है, जिससे उसके साँवले शरीर में एक नया सौन्दर्य उत्पन्न हो जाता है।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) यहाँ प्रात:कालीन धरती और सांयकालीन आकाश का मनोरम व आलंकारिक चित्रण किया गया है। (2) प्रकृति का मानवीकरण किया गया है। (3) **भाषा**—शुद्ध साहित्यिक खड़ीबोली (4) **शैली**—प्रबन्ध, चित्रात्मक और भावात्मक। (5) **रस**—शृंगार (6) **गुण**— माधुर्य (7) **छन्द**—तांटक (8) **अलंकार**—मानवीकरण, अनुप्रास तथा रूपक (9) **शब्द-शक्ति**—अभिधा, लक्षणा एवं व्यंजना।

(छ) सरल तरल जिन तुहिन कणों से, हँसती हर्षित होती है,
अति आत्मीया प्रकृति हमारे, साथ उन्हीं से रोती है |
अनजानी भूलों पर भी वह, अदय दण्ड तो देती है,
पर बूढ़ों को भी बच्चों-सा, सदय भाव से सेती है ||

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में 'पंचवटी' शीर्षक के अन्तर्गत संकलित तथा राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'पंचवटी' खण्डकाव्य से उद्धृत है।

प्रसंग—प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने लक्ष्मण के मन में उठ रहे विचारों का सुन्दर चित्रण किया है। लक्ष्मण को प्रकृति एक ओर हर्ष और उल्लास प्रकट करती हुई प्रतीत होती है तो दूसरी ओर अपने शोक–भावों को भी व्यक्त करती है।

व्याख्या—लक्ष्मण अपने मन में विचार करते हैं कि जो सुन्दर और चंचल ओस की बूँदें प्रकृति की प्रसन्नता और शोभा की प्रतीक हैं, उन्हीं ओस की बूँदों से वह आत्मीय प्रकृति दु:ख की घड़ी में हमारे साथ रोती हुई–सी प्रतीत होती है, जबकि सुख के क्षणों में इन्हीं ओस की बूँदों के माध्यम से वह अपना हर्ष प्रकट करती है। यह प्रकृति हमारी अनजाने में की गयी भूलों पर कठोरतापूर्वक दण्ड देती है, किन्तु कभी–कभी बड़ी दयालु होकर बूढ़ो की भी बच्चों के समान सेवा करती है। इस प्रकार प्रकृति के कठोर और कोमल दोनों रूप हमारे सम्मुख प्रकट होते हैं। यहाँ प्रकृति में आत्मीयता और संरक्षण का भाव व्यक्त हुआ है।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) सुखी व्यक्ति ओस–कणों के रूप में प्रकृति को अपने साथ हँसता हुआ प्रसन्न मुद्रा में देखता है, जबकि दु:खी व्यक्ति उन्हीं ओस–कणों को प्रकृति के आँसू जानकर उसे अपने साथ रोता हुआ अनुभव करता है। (2) सुखी व्यक्ति प्रकृति के प्रत्येक क्रिया-कलाप में सुख का अनुभव करता है और दु:खी अवस्था में वह उन्हीं क्रिया–कलापों में दु:ख का अनुभव करता है। इस बात की सार्थक अभिव्यक्ति की गयी है (3) **भाषा**—संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली (4) **शैली**—प्रबन्ध तथा भावात्मक (5) **रस**—शान्त एवं शृंगार (6) **गुण**—प्रसाद एवं माधुर्य (7) **छन्द** —तांटक (8) **अलंकार**—रूपक, उत्प्रेक्षा अनुप्रास और मानवीकरण (9) **शब्द- शक्ति**—लक्षणा।

(ज) तेरह वर्ष व्यतीत हो चुके, पर है मानो कल की बात,
वन को आते देख हमें जब, आर्त अचेत हुए थे तात |
अब वह समय निकट ही है जब, अवधि पूर्ण होगी वन की,
किन्तु प्राप्ति होगी इस जन को, इससे बढ़कर किस धन की ||

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में 'पंचवटी' शीर्षक के अन्तर्गत संकलित तथा राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'पंचवटी' खण्डकाव्य से उद्धृत है।

प्रसंग—पंचवटी पर पहरा देते हुए लक्ष्मण अपने अतीत का स्मरण कर रहे हैं। प्रस्तुत अंश में इसी का वर्णन किया गया है।

व्याख्या—पंचवटी पर पहरा देते हुए लक्ष्मण सोच रहे हैं कि हमें वन में निवास करते हुए तेरह वर्ष बीत चुके हैं, परन्तु यह बात वैसी प्रतीत होती है, जैसे कल की बात हो, जबकि हमारे पिताजी हमें वन में आते देखकर व्याकुल और अचेत हो गये थे। अब वह समय बहुत निकट है, जब वनवास की अवधि पूरी हो जाएगी और हम अयोध्या लौट जाएँगे, किन्तु मुझे श्रीराम और सीता जी की सेवा करने से जो आनन्द यहाँ मिल रहा है, वह अयोध्या के समृद्ध राज्य में कहाँ मिल पाएगा? तात्पर्य यह है कि मुझे भ्रातृ–भक्तिरूपी जो यह सर्वश्रेष्ठ और महान् धन यहाँ प्राप्त हो रहा है, अयोध्या में वह दुर्लभ है।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) लक्ष्मण की पवित्र भ्रातृ–भक्ति की भावना को अभिव्यक्त करने में कवि पूर्णरूपेण सफल हुए हैं। (2) समय बीतते देर नहीं लगती, इस बात को बड़े ही मनौवैज्ञानिक रूप में दर्शाया गया है। (3) **भाषा**—शुद्ध साहित्यिक खड़ीबोली (4) **शैली**—प्रबन्ध तथा भावात्मक (5) **रस**—शान्त (6) **गुण**—प्रसाद (7) **छन्द**—तांटक (8) **अलंकार**—उत्प्रेक्षा, स्वभावोक्ति तथा रूपक। (9) **शब्द-शक्ति**—अभिधा, लक्षणा एवं व्यंजना।

(झ) और आर्य को? राज्य-भार तो, वे प्रजार्थ ही धरेंगे,
व्यस्त रहेंगे, हम सबको भी, मानो विवश बिसारेंगे |
कर विचार लोकोपकार का, हमें न इससे होगा शोक,
पर अपना हित आप नहीं क्या, कर सकता है यह नरलोक?

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में 'पंचवटी' शीर्षक के अन्तर्गत संकलित तथा राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'पंचवटी' खण्डकाव्य से उद्धृत है।

प्रसंग—पंचवटी में स्थित कुटिया का प्रहरी बने लक्ष्मण सोच रहे हैं कि एक वर्ष पश्चात् जब हम लोग अयोध्या लौट जाएँगे, तब रामचन्द्र प्रजा

के हित के लिए राज्य–भार को धारण करेंगे। प्रस्तुत पद्य में इसी का वर्णन किया गया है।

व्याख्या—वनवास की अवधि पूरी करके जब हम लोग अयोध्या लौटेंगे तो बड़े भाई राम को क्या मिलेगा? लक्ष्मण स्वयं उत्तर देते हुए कहते हैं कि वे राज्यभार सँभाल लेंगे, किन्तु यह भार तो वह प्रजा के हित के लिए ही धारण करेंगे। तब वे राज्य के कार्य में इतने व्यस्त रहेंगे कि विवश होकर हम लोगों को भी भूल जाएँगे, किन्तु यह सोचकर कि वे लोगों के उपकार में लगे हैं, हमें दु:ख नहीं होगा। लक्ष्मण के मन में यह प्रश्न उठता है कि इस दुनिया के लोग अपना हित स्वयं क्यों नहीं कर सकते? वे अपनी सुख–सुविधा के लिए राजा पर ही निर्भर क्यों रहते हैं? यदि लोग अपना तथा दूसरों का भला स्वंय ही करने लगें और इसके लिए दूसरों का मुँह न देखें तो यह संसार कितना सुन्दर और सुखद हो जाएगा।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) यहाँ कवि ने इस तथ्य को दर्शाया है कि राजा का कर्तव्य निरन्तर प्रजाहित में निरत रहना ही है। (2) **भाषा**—शुद्ध साहित्यिक खड़ीबोली। (3) **शैली**—भावात्मक (4) **गुण**—प्रसाद (5) **रस**— शान्त (6) **छन्द**—तांटक **(8) अलंकार**—अनुप्रास तथा उत्प्रेक्षा (9) **शब्द- शक्ति**—अभिधा, लक्षणा एवं व्यंजना।

काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

प्रश्न 1. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकारों का नाम सहित स्पष्टीकरण दीजिए–

(क) चारु चन्द्र की चंचल किरणें, खेल रही हैं जल-थल में।

उत्तर—'च' तथ 'ल' वर्णों की पुनरावृत्ति के कारण अनुप्रास, किरणों के खेलने में मानव–व्यापार के आरोपित होने के कारण मानवीकरण अलंकार है।

(ख) मानो झूम रहे हैं तरु भी, मन्द पवन के झोकों से।

उत्तर—तरुओ के झूमने की सम्भावना के कारण उत्प्रेक्षा अलंकार है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए–

उत्तर—	शब्द	पर्यायवाची
	कुटीर	कुटिया, झोंपडी, कुटी
	सागर	समुद्र, सिन्धु, रत्नाकर, जलधि
	चन्द्र	निशाकर, हिमांशु, राकेश, निशिपति
	तरंग	लहर, ऊर्मि, वीचि, हिलोर

प्रश्न 3. निम्नलिखित समस्त पदों में सविग्रह समास-नाम लिखिए–

उत्तर—	समस्तपद	समास-विग्रह	समास-नाम
	सभय	भय के साथ	अव्ययीभाव
	कुसुमायुध	कुसुम का आयुध	षष्ठी तत्पुरुष
	अदय	बिना दया का	नञ् तत्पुरुष
	राम-जानकी	राम और जानकी	द्वन्द्व
	पंचवटी	पाँच वृक्षों का समाहार	द्विगु
	वसुन्धरा	वसुओं को धारण करने वाली	बहुव्रीहि

प्रश्न 4. निम्नलिखित शब्दों में नियम-निर्देशपूर्वक सन्धि-विच्छेद कीजिए–

उत्तर—	शब्द	सन्धि-विच्छेद	नियम
	धनुर्धर	धनु: + धर	: + ध = र्ध
	कुसुमायुध	कुसुम + आयुध	अ + आ = आ
	निरानन्द	निर + आनन्द	र + आ = रा
	लोकोपकार	लोक + उपकार	अ + उ = ओ

❐

6

पुनर्मिलन
(जयशंकर प्रसाद)

परीक्षापयोगी प्रश्न

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. छायावाद के चार स्तम्भ कहे जाने वाले कवियों में से किन्हीं दो के नाम लिखिए।

उत्तर—(1) जयशंकर प्रसाद तथा (2) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' छायावाद के स्तम्भ कहे जाते हैं।

प्रश्न 2. जयशंकर प्रसाद का जन्म कब और कहाँ हुआ?

उत्तर—जयशंकर प्रसाद का जन्म वाराणसी में सुँघनी साहू के नाम से प्रसिद्ध एक प्रतिष्ठित वैरय परिवार में 30 जनवरी सन् 1889 ई० में हुआ था।

प्रश्न 3. जयशंकर प्रसाद को किन-किन भाषाओं का ज्ञान था?

उत्तर—जयशंकर प्रसाद को अंग्रेजी, उर्दू, संस्कृत और बाँग्ला भाषाओं का ज्ञान था।

प्रश्न 4. जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित किन्हीं दो कृतियों के नाम लिखिए।

उत्तर—जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित प्रसिद्ध दो कृतियाँ हैं (1) आँसू और (2) कामायनी।

प्रश्न 5. 'कामायनी' किस कवि और काल की रचना है?

उत्तर—'कामायनी' जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित छायावाद काल की रचना है।

प्रश्न 6. जयशंकर प्रसाद किस युग के कवि हैं?

उत्तर—जयशंकर प्रसाद छायावादी युग के कवि हैं।

प्रश्न 7. 'प्रसाद' की काव्य-कृतियों का नामोल्लेख कीजिए।

उत्तर—कामायनी, झरना, लहर, प्रेम पथिक, महाराणा का महत्त्व, 'उर्वशी, 'चित्राधार', 'कानन-कुसम' आदि।

प्रश्न 8. 'प्रसाद' की काव्यगत विशेषताओं पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

उत्तर—जयशंकर प्रसाद ने संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली में रचनाए कीं। पूर्णत: परिमार्जित और साहित्यिक भाषा होते हुए भी उसमें ओज और माधुर्य सर्वत्र विद्यमान है। इनकी शैली काव्यात्मक चमत्कारों से परिपूर्ण है।

प्रश्न 9. 'प्रसाद' की कविताएँ प्राय: किस पत्रिका में प्रकाशित होती थीं?

उत्तर—'प्रसाद' की कविताएँ प्राय: 'इन्दु' पत्रिका में प्रकाशित होती थीं?

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. इड़ा को कामायनी धुँधली छाया क्यों लग रही थी?

उत्तर—इड़ा को कामायनी रात्रि के घने अंधकार में इसलिए धुँधली छाया प्रतीत हो रही थी क्योंकि मनु के वियोग में उसका शरीर अत्यधिक दुबला हो गया था। उसका रंग भी श्याम-वर्ण सा हो गया था। उसके कपड़े भी अस्त-व्यस्त थे तथा उसके बालों की वेणी भी खुली हुई थी। ऐसी दीन-हीन अवस्था में वह अपने प्रियतम को, ढूँढ़ती हुई रात्रि के गहन अंधकार में धीरे—धीरे चली आ रही थी।

प्रश्न 2. 'कामायनी' को अपनी कौन-सी भूल बार-बार हृदय में चुभती प्रतीत हो रही है?

उत्तर—मनु कामायनी से रूठकर चले गये थे। रूढ़ जाने पर वह उन्हें न मना सकी थी। इसी भूल की कसक बार-बार उसे हृदय में चुभती-सी प्रतीत होती है।

प्रश्न 3. विरहिणी के रूप में कामायनी का चित्रण कवि ने किस प्रकार किया है?

उत्तर—मनु के विरह में व्यथित कामायनी का शरीर दुर्बल होकर अशक्त हो गया है। उसे अपने शरीर, वस्त्र आदि का भी ध्यान नहीं है, क्योंकि उसका सर्वस्व लुट चुका है। उसे पाने के लिए वह पूर्ण अधीरता से खोज रही है। अब उससे विरह की व्यथा नहीं सही जाती। उसका शरीर एक ऐसी कली के समान दिख रहा है जो खिलने के पूर्व ही रसहीन, गंधहीन और छिन्न-भिन्न हो गई हो।

प्रश्न 4. कामायनी का पुत्र किस प्रकार चल रहा था और क्यों?

उत्तर—कामायनी का पुत्र माँ का सहारा लिये हुए उसकी एक उँगली पकड़े हुए साथ—साथ चल रहा था। अबोध बालक अपनी माँ का सहारा था। यदि वह शान्त अवस्था में न होता तो शायद वह और व्यथा की चरम स्थिति से व्यथित हो जाती।

प्रश्न 5. मनु को श्रद्धा का स्पर्श कैसा लग रहा था?

उत्तर—श्रृद्धा का सुखद एवं मधुर स्पर्श पाकर शब्दहीन, चुपचाप मूर्च्छित पड़े मनु के शरीर में हल्की—सी कम्पन उत्पन्न हो गयी। श्रद्धा का स्पर्श मरहम के समान कोमल एवं कष्ट हरने वाला था।

प्रश्न 6. कामायनी तथा उनके पुत्र के मनु से पुनर्मिलन का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर—श्रद्धा अपने पति मनु को घायल और मूर्च्छित देखकर 'प्राणप्रिय' कहकर उनके पास बैठ गयी और उनको सहलाने लगी। श्रृद्धा का सुखद एवं मधुर स्पर्श पाकर मनु ने आँखें खोलीं और वे दोनों एक—दूसरे को प्रेम—पूर्वक देखते रहे, तब दोनों की आँखों से पश्चात्राप के आँसू बहने लगे। मनु के होश में आने पर श्रद्धा ने अपने पुत्र से कहा कि तू भी आकर अपने पिता के दर्शन कर ले। माँ का कथन सुनते ही उसने पिता के पास आकर कहा—''पिताजी देखो मैं आपके पास आ गया।'' श्रद्धा, मनु और कुमार के मिलन से वहाँ एक छोटा—सा परिवार बन गया।

प्रश्न 7. 'पुनर्मिलन' में किस रस का परिपाक हुआ है?

उत्तर—श्रद्धा, मनु और कुमार के मिलन में श्रृंगार एवं वात्सत्य रस का परिपाक हुआ है।

प्रश्न 8. हिन्दी साहित्य में जयशंकर प्रसाद के योगदान का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर—हिन्दी साहित्य में जयशंकर प्रसाद का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इन्होंने काव्य, नाटक, कहानी, उपन्यास तथा निबन्ध सभी प्रकार की साहित्यिक रचनाएँ कीं। हिन्दी में नवीन युग का द्वार प्रसाद जी ने ही खोला है। कविता को सौन्दर्य, माधुर्य एवं रमणीयता से मण्डित कर नवयुग का सूत्रपात करने वाले प्रसाद जी का हिन्दी साहित्य में अति सम्मानित एवं मूर्धन्य स्थान है।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. जयशंकर प्रसाद का जीवन-परिचय देते हुए उनकी प्रमुख कृतियों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—प्रसाद जी सरस्वती के अमर पुत्र थे। उनका जन्म 30 जनवरी, सन् 1889 ई० में काशी के प्रसिद्ध सुँघनी साहू नामक वैश्य परिवार में हुआ था। उनके पूर्वज मूलत: जौनपुर के निवासी थे। इनके पिता देवीप्रसाद तम्बाकू के प्रसिद्ध व्यापारी थे। बचपन में ही पिता की मृत्यु हो जाने के कारण आठवीं कक्षा के बाद इनकी स्कूली शिक्षा न चल सकी। तत्पश्चात् इन्होंने घर पर ही हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, उर्दू व फारसी की अच्छी योग्यता प्राप्त कर ली। संस्कृत—साहित्य के प्रति इनका गहरा अनुराग था। इन्होंने वेद, उपनिषद, इतिहास और दर्शन का गम्भीर अध्ययन किया। कवियों का सत्संग मिल जाने के कारण कविता की ओर बाल्यकाल से ही इनकी रुचि हो गयी थी। पहले ये ब्रजभाषा में कविता लिखते थे, किन्तु बाद में खड़ीबोली में कविता लिखकर उसका गौरव बढ़ाया। ये बहुमुखी प्रतिभा के धनी और शिव के उपासक थे। इनका जीवन बहुत सरल था। सभा—सम्मेलनों की भीड़ से ये दूर ही रहा करते थे। इनकी 'कामायनी' नामक कृति पर इनको 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' ने 'मंगलाप्रसाद पारितोषिक' प्रदान किया। इनका जीवन बड़ा ही संघर्षपूर्ण रहा। परिवारजनों की मृत्यु, अर्थ—संकट, पत्नी—वियोग आदि संघर्षों को झेलते हुए भी यह प्रतिभा—सम्पन्न कवि सरस्वती के मन्दिर में रचना—सुमन अर्पित करता रहा। अन्त में क्षय रोग से पीड़ित होकर सन् 1937 ई० में यह महाविभूति पंचतत्व में विलीन हो गई।

रचनाएँ (कृतियाँ)—जयशंकर प्रसाद जी ने काव्य, नाटक, कहानी, उपन्यास तथा निबन्ध सभी प्रकार की साहित्यिक रचनाएँ की, किन्तु ये मूलत: कवि थे। प्रसाद जी की प्रमुख काव्य—कृतियाँ निम्नलिखित हैं—

1. कामायनी—यह काव्य-कृति हिन्दी साहित्य की ही नहीं, अपितु विश्व—साहित्य की अमूल्य निधि है। 'कामायनी' को 'मंगलाप्रसाद' पारितोषिक से सम्मानित किया गया।

2. आँसू—यह प्रसाद जी का विशुद्ध विरह—काव्य है। इसमें सौन्दर्य और प्रेम का सुन्दर चित्रण देखने को मिलता है।

3. झरना—यह प्रसाद जी की छायावादी कविताओं का संग्रह है।

4. लहर—यह मुक्तक रचना है। इसमें छायावाद का प्रौढ़तम रूप पल्लवित हुआ है।

5. कानन-कुसुम—यह प्रसाद जी की फुटकर रचनाओं का संकलन है।

6. चित्राधार—इस काव्य—संग्रह में प्रसाद जी की ब्रजभाषा की कविताएँ संकलित हैं।

इसके अतिरिक्त प्रसाद जी ने 'करुणालय', 'कानन—कुसुम', 'प्रेम—पथिक' आदि काव्यों की भी रचना की।

नाटककार के रूप में प्रसाद जी ने 'चन्द्रगुप्त', 'स्कन्दगुप्त', ध्रुवस्वामिनी, 'जनमेजय का नागयज्ञ', 'कामना', 'एक घूँट', 'विशाख',

'राज्यश्री', 'कल्याणी', 'अजातशत्रु' नाटकों की रचना की है। 'कंकाल', 'तितली' और 'इरावती' (अपूर्ण) इनके द्वारा रचित उपन्यास हैं। 'प्रतिध्वनि', 'छाया', 'आकाशदीप' आदि इनकी कहानियों के प्रसिद्ध संग्रह हैं।

साहित्य में स्थान—जयशंकर प्रसाद आधुनिक हिन्दी साहित्याकाश के जगमगाते नक्षत्र हैं। प्रसाद जी छायावाद के जनक है। उन्होंने हिन्दी कविता को नव–जीवन प्रदान किया था। उनकी लेखनी से जो कुछ निकला उसमें जीवन के पूर्ण आनन्द की झलक है। हिन्दी साहित्य में प्रसाद जी का अति सम्मानित्त एवं मूर्धन्य स्थान है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित पद्य-खण्डों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए और इनके काव्य-सौन्दर्य को भी स्पष्ट कीजिए–

(क) चौंक उठी अपने विचार से, कुछ दूरागत ध्वनि सुनती,
इस निस्तब्ध निशा में कोई, चली आ रही है कहती–
''अरे बता दो मुझे दया कर, कहाँ प्रवासी है मेरा?
उसी बावले से मिलने को, डाल रही हूँ मैं फेरा।
रूठ गया था अपनेपन से, अपना सकी न उसको मैं,
वह तो मेरा अपना ही था, भला मनाती किसको मैं!
यही भूल अब शूल सदृश हो, साल रही उर में मेरे,
कैसे पाऊँगी उसको मैं, कोई आकर कह दे रे!''

सन्दर्भ—प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में 'पुनर्मिलन' कविता शीर्षक के अन्तर्गत संकलित तथा 'श्री जयशंकर प्रसाद' द्वारा रचित 'कामायनी' महाकाव्य के 'निर्वेद' सर्ग से अवतरित है।

संकेत–इस शीर्षक के अन्तर्गत आने वाले सभी पद्यांशो के लिए यही सन्दर्भ प्रयुक्त किया जाएगा।

प्रसंग—इन पंक्तियों में रानी इड़ा के चौंकने तथा मनु को खोजती हुई श्रद्धा की दीन दशा का चित्रण किया गया है। मनु अपनी पत्नी श्रद्धा से रूठकर चले गये हैं। उनकी पत्नी श्रद्धा किस प्रकार उनके विरह में व्याकुल है, उसी के विषय में कवि इड़ा के माध्यम से बता रहे हैं।

व्याख्या—जयशंकर प्रसाद जी कहते हैं कि सारस्वत नगर की रानी इड़ा अपने विचारों में खोयी हुई थी। सहसा कुछ दूर से आती हुई आवाज को सुनकर वह चौंक उठी। उसने सुना कि दूर से इस शान्त रात्रि में कोई महिला यह कहती हुई चली आ रही है–अरे! कोई दया करके मुझे यह बता दो कि मेरा वह परदेशी प्रियतम कहाँ है? मैं अपने उसी बावले प्रियतम की खोज में भटकती फिर रही हूँ।

श्रद्धा आगे कहती है कि ''मेरा प्रियतम मनु मुझसे रूठ क्या गया है, मानो अपने आपसे ही रूठ गया है। उसमें और मुझमें कोई अन्तर तो है नहीं; यह सोचकर ही मैं रूठे हुए प्रियतम को मना भी नहीं सकी थी। भला कोई स्वयं को मनाता थोड़े ही है। उसे न मनाकर मैंने बहुत बड़ी भूल की। यही भूल अब काँटे की तरह मेरे हृदय को दु:ख पहुँचा रही है। मैं अब उसे कैसे प्राप्त कर सकूँगी, कोई तो आकर मुझे बता दे।''

काव्यगत सौन्दर्य—(1) यहाँ पर श्रद्धा का मनु के प्रति अगाध प्रेम व्यक्त हुआ है। (2) 'बावले' शब्द में अपनापन और स्नेह झलकता है। (3) **भाषा**—शुद्ध साहित्यिक खड़ीबोली (4) **रस**—शृंगार (5) **शब्द-शक्ति**—व्यंजना (6) **गुण**—प्रसाद (7) **छन्द**—एक प्रकार का मात्रिक छन्द (8) **अलंकार**—उपमा तथा अनुप्रास।

(ख) इड़ा आज कुछ द्रवित हो रही, दु:खियों को देखा उसने,
पहुँची पास और फिर पूछा, ''तुमको बिसराया किसने?
इस रजनी में कहाँ भटकती, जाओगी तुम बोलो तो,
बैठो आज अधिक चंचल हूँ, व्यथा-गाँठ निज खोलो तो।
जीवन की लम्बी यात्रा में, खोये भी हैं मिल जाते,
जीवन है तो कभी मिलन है, कट जातीं दु:ख की रातें।''

सन्दर्भ—प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में 'पुनर्मिलन' कविता शीर्षक के अन्तर्गत संकलित तथा 'श्री जयशंकर प्रसाद' द्वारा रचित 'कामायनी' महाकाव्य के 'निर्वेद' सर्ग से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियों में इड़ा, पति–वियोग से दु:खी श्रद्धा को धीरज बँधाती हुई उससे अपने पास रुक जाने का आग्रह करती है।

व्याख्या—माँ–बेटे के दु:ख को देखकर इड़ा का हृदय करुणा से भर गया। उनके पास पहुँचकर इड़ा ने कहा कि तुमको किसने भुला दिया है? तुम इस अँधेरी रात में भटकती हुई कहाँ जाओगी? तुम मेरे निकट आकर बैठ जाओ। तुम्हारी अस्त–व्यस्त दशा को देखकर मेरा हृदय व्यथित हो गया है। तुम अपने हृदय में जो पीड़ा छिपाये घूम रही हो, उसको मुझे बताओ। हो सकता है मैं तुम्हारा कष्ट दूर करने में तुम्हारी कुछ सहायता कर सकूँ।

इड़ा उसे धैर्य प्रदान करती हुई आगे कहती है कि जीवन की यात्रा बहुत लम्बी है। इस जीवनरूपी यात्रा में कुछ साथी हमसे बिछुड़कर भटक जाते हैं, लेकिन प्रयास करने पर वे मिल भी जाते हैं। यदि जीवन है तो मिलन भी अवश्य होगा; अत: किसी के बिछुडने से तुम्हें चिन्तित नहीं होना चाहिए। धीरे–धीरे दु:ख स्वत: ही समाप्त हो जाते हैं।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) इन पंक्तियों में जीवन के शाश्वत सत्य पर प्रकाश डाला गया है कि सुख–दु:ख तो आते–जाते रहते हैं। (2) **भाषा**—साहित्यिक खड़ी बोली (3) **शैली**—भावात्मक और प्रबन्ध (4) **रस**—करुण और शान्त (5) **शब्द- शक्ति**—व्यंजना (6) **गुण**—प्रसाद (7) **छन्द**—एक प्रकार का मात्रिक छन्द (8) **अलंकार**—रूपक (9) **भाव-साम्य**—ऐसे ही भाव अन्यत्र भी व्यक्त हुए हैं—

कौन बचा है काल बली से, कौन
नहीं दु:ख-सुख सहता।।

(ग) श्रद्धा रुकी कुमार श्रान्त था, मिलता है विश्राम यहीं,
चली इड़ा के साथ जहाँ पर, वह्नि-शिखा प्रज्वलित रही।
सहसा धधकी वेदी-ज्वाला, मंडप आलोकित करती,
कामायनी देख पायी कुछ, पहुँची उस तक डग भरती।
और वही मनु! घायल सचमुच, तो क्या सच्चा स्वप्न रहा?
''आह प्राण प्रिय! क्या यह? तुम यों?'' घुला हृदय, बन नीर बहा।
इड़ा चकित, श्रद्धा आ बैठी, वह थी मनु को सहलाती,
अनुलेपन-सा मधुर स्पर्श था, व्यथा भला क्यों रह जाती?

सन्दर्भ—प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में 'पुनर्मिलन' कविता शीर्षक के अन्तर्गत संकलित तथा 'श्री जयशंकर प्रसाद' द्वारा रचित 'कामायनी' महाकाव्य के 'निर्वेद' सर्ग से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियों में मूर्च्छित मनु को देखकर श्रद्धा के हृदय में उत्पन्न भावों को व्यक्त किया गया है।

व्याख्या—इड़ा की सहानुभूतिपूर्ण बातों को सुनकर श्रद्धा वहीं रुक गयी। उसका बेटा भी बहुत थक गया था और उसे वहाँ आश्रय भी मिल रहा था। श्रद्धा तब इड़ा के साथ उस स्थान की ओर चल दी, जहाँ पर आग की लपटें उठ रही थीं।

अचानक यज्ञवेदी की अग्नि धधक उठी, जिससे मण्डप में प्रकाश फैल गया। श्रद्धा ने वहाँ कुछ देखा और कदम बढ़ाती हुई वहाँ तक जा पहुँची।

उसने वहाँ मनु को घायल अवस्था में देखा। श्रद्धा सोचने लगी कि निश्चित ही मेरा स्वप्न सच्चा निकला। वह चीख उठी—''आह प्राणप्रिय! यह क्या हो गया? तुम इस दशा में क्यों हो?'' आशय यह है कि तुम इस प्रकार घायल होकर कैसे पड़े हुए हो? ऐसा कहते हुए उसका मन भर आया और नेत्रों से आँसू बहने लगे। यह देखकर इड़ा चकित रह गयी। श्रद्धा अपने पति मनु के पास बैठकर उनके शरीर पर हाथ फेरने लगी। उसका वह स्पर्श मरहम के समान कोमल एवं कष्ट हरने वाला था; तब मनु के हृदय में पीड़ा भला कैसे शेष रह जाती?

काव्यगत सौन्दर्य—(1) यहाँ कवि ने श्रद्धा और मनु के मिलन का मार्मिक और हृदयस्पर्शी चित्रण किया है। (2) **भाषा**—साहित्यिक खड़ीबोली (3) **शैली**—भावात्मक एवं चित्रात्मक (4) **रस**—शृंगार (5) **छन्द**—मात्रिक छन्द (6) **अलंकार**—उपमा तथा रूपक (7) **गुण**—माधुर्य (8) **शब्द-शक्ति**—व्यंजना (9) **भाव-स्पष्टीकरण**—ऐसे ही भाव निम्नलिखित दोहे में भी व्यक्त हुए हैं—

मिलत द्रवय हिय बहि चलत, अँखियन नीर पनार।
ताप-दाप बहि जात है, तन-मन निरमल सार॥

(घ) उस मूर्च्छित नीरवता में कुछ, हलक से स्पन्दन आये,
आँखें खुलीं चार कोनों में, चार बिन्दु आकर छाये।
उधर कुमार देखता ऊँचे, मन्दिर, मण्डप, वेदी को,
यह सब क्या है नया मनोहर, कैसे यह लगते जी को?

सन्दर्भ—प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में 'पुनर्मिलन' कविता शीर्षक के अन्तर्गत संकलित तथा 'श्री जयशंकर प्रसाद' द्वारा रचित 'कामायनी' महाकाव्य के 'निर्वेद' सर्ग से अवतरित है।

प्रसंग—इन पद्य–पंक्तियों में प्रसाद जी ने श्रद्धा और मनु के मिलन का मार्मिक चित्रण किया है।

व्याख्या—श्रद्धा अपने पति मनु को घायल और मूर्च्छित देखकर 'प्राणप्रिय' कहकर उनके पास बैठ गयी और उनको सहलाने लगी। श्रद्धा का सुखद एवं मधुर स्पर्श पाकर शब्दहीन, चुपचाप मूर्च्छित पड़े मनु के शरीर में हल्की–सी कम्पन उत्पन्न हो गयी। मनु ने आँखें खोलीं और वे दोनों एक–दूसरे को प्रेम–पूर्वक देखते रहे, तब दोनों की आँखों से पश्चत्ताप के आँसू बहने लगे।

उधर श्रद्धा–मनु का पुत्र मानव यज्ञभूमि के ऊँचे मन्दिर, यज्ञ–मण्डप और यज्ञ की वेदी को देख रहा था। वह सोचने लगा कि सब कितना मोहक, सुन्दर और नवीन है, जो मेरे मन को आकर्षित कर रहा है।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) यहाँ कवि ने पतिपरायणा स्त्री के सहज प्रेम और सेवाभाव का चित्रण किया है। (2) **भाषा**— साहित्यिक खड़ीबोली। (3) **शैली**—भावात्मक और चित्रात्मक (4) **रस**—शृंगार (5) **गुण**—माधुर्य (6) **छन्द**—मात्रिक छन्द (7) **अलंकार**—अनुप्रास और मानवीकरण (8) **शब्द-शक्ति**—लक्षणा एवं व्यंजना (9) **भाव-साम्य**—ऐसे ही भाव कवि बिहारी ने निम्नलिखित पंक्तियों में व्यक्त किये हैं—

दोनों के दोनों नयन, मिल खिलत बहुभात।
अस्तु सुधारस सींचितन, अमित हरस उपजात॥

(ङ) मुखर हो गया सूना मंडप, यह सजीवता रही कहाँ?
आत्मीयता घुली उस घर में, छोटा-सा परिवार बना,
छाया एक मधुर स्वर उस पर, श्रद्धा का संगीत बना।

सन्दर्भ—प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में 'पुनर्मिलन' कविता शीर्षक के अन्तर्गत संकलित तथा 'श्री जयशंकर प्रसाद' द्वारा रचित 'कामायनी' महाकाव्य के 'निर्वेद' सर्ग से अवतरित है।

प्रसंग—इन पंक्तियों में श्रद्धा अपने पुत्र को मनु से मिलवाती है और सबके मिलने पर छोटे–से परिवार में आत्मीयता का भाव भर जाता है।

व्याख्या—बालक की मधुर ध्वनि से मण्डप में ऐसी सजीवता छा गयी, जो पहले नहीं थी। इस प्रकार उस घर में पुन: अपनेपन का भाव भर गया। श्रद्धा, मनु और कुमार के मिलन से वहाँ एक छोटा–सा परिवार बन गया। उस परिवार में श्रद्धा का मधुर स्वर संगीत बनकर छा गया। आशय यह है कि अब उनके मध्य आनन्द ही आनन्द का भाव विद्यमान रह गया था।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) प्रस्तुत पंक्तियों में श्रद्धा, कुमार और बिछडे हुए मनु के मिलन का मर्मस्पर्शी चित्रण हुआ है। (2) **भाषा**—शुद्ध साहित्यिक खड़ीबोली। (3) **शैली**—भावात्मक, चित्रात्मक और संलाप (4) **रस**—शृंगार तथा वात्सल्य (5) **गुण**—माधुर्य (6) **छन्द**—मात्रिक छन्द (7) **अलंकार**—अनुप्रास एवं मानवीकरण (8) **शब्द-शक्ति**—लक्षणा एवं व्यंजना।

काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

प्रश्न 1. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकारों को पहचानकर उनका नाम लिखिए–

(क) यही भूल अब शूल सदृश हो, साल रही उर में मेरे।

उत्तर—उपमा अलंकार।

(ख) छिन्न-पत्र मकरन्द लुटी-सी, ज्यों मुरझायी हुई कली।

उत्तर—उपमा और रूपक अलंकार।

प्रश्न 2. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त रस का नाम बताइए–

(क) शिथिल शरीर वसन विशृंखल, कबरी अधिक अधीर खुली।

उत्तर—शृंगार रस।

(ख) इड़ा आज कुछ द्रवित हो रही, दु:खियों को देखा उसने।

उत्तर—करुण रस।

प्रश्न 3. निम्नलिखित शब्दों का सन्धि-विच्छेद कीजिए–

उत्तर—

गणेश	—	गण + ईश।
विद्यालय	—	विद्या + आलय।
परोपकार	—	पर + उपकार।

प्रश्न 4. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची लिखिए–

उत्तर—

शब्द	**पर्यायवासी**
शृंग	शिखर, कंगूरा
भारती	वाणी, वाक्–शक्ति।
पथ	मार्ग, रास्ता।
सिन्धु	जलधि, जलनिधि।

प्रश्न 6. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

उत्तर—

शब्द	**विलोम**
कोमल	कठोर
स्वतन्त्रता	परतन्त्रता

पुण्य	पाप	निस्तब्ध	सचेष्ट
आर्द्र	शुष्क	सपूत	कपूत
अमर्त्य	मर्त्य	प्रवासी	निवासी
कीर्ति	अपकीर्ति	अनुराग	विराग

❑

7

दान

(सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला)

परीक्षापयोगी प्रश्न

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. 'निराला' का जन्म कब और कहाँ हुआ?

उत्तर—सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का जन्म सन् 1897 ई० में पश्चिमी बंगाल के मेदिनीपुर जिले में हुआ था।

प्रश्न 2. छायावादी व स्वभाव से क्रांतिकारी कहे जाने वाले कवि का नाम बताइए।

उत्तर—'सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला' छायावादी व स्वभाव से क्रान्तिकारी कहे जाने वाले कवि हैं।

प्रश्न 3. अनामिका के रचयिता का नाम लिखिए।

उत्तर—अनामिका के रचयिता सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला हैं।

प्रश्न 4. 'निराला' जी की प्रमुख काव्य-कृतियों के नाम लिखिए।

उत्तर—'तुलसीदास', 'अनामिका', 'परिमल', 'गीतिका', 'कुकुरमुत्ता' और 'नये पत्ते' आदि 'निराला' जी की प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं।

प्रश्न 5. 'निराला' का जीवन-परिचय संक्षेप में लिखिए।

उत्तर—'निराला' का जन्म सन् 1897 ई० में पश्चिमी बंगाल के मेदिनीपुर जिले में हुआ था। इनके पिता पं० रामसहाय त्रिपाठी उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के गढ़कोला ग्राम के निवासी थे। जीवन की विषमताओं को झेलते हुए 15 अक्टूबर सन् 1961 ई० को हिन्दी का यह महान् साहित्यकार सदा के लिए चला गया।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. प्रकृति ने मनुष्य को क्या-क्या दिया है?

उत्तर—मनुष्य को प्रकृति से सौन्दर्य बोध, गीत (संगीतात्मकता), बहुवर्णप्रियता (रंग-बिरंगापन), गन्ध (सुगन्धि), भाषा, भावानुभाव, जीवनदायिनी शक्ति और विलास की सामग्री प्राप्त हुई है।

प्रश्न 2. किस घटना से मानव के संबंध में 'निराला' की धारणा में क्या परिवर्तन हुआ?

उत्तर—श्यामवर्ण के कंकाल मात्र, मरणासन्न भिक्षुक तथा पूजा में तल्लीन ब्राह्मण की क्रियाओं को देखकर कवि के हृदय में कुण्ठा उत्पन्न हुई। फलस्वरूप मनुष्य के सम्बन्ध में संचित पूर्व की धारणाओं में परिवर्तन हुआ क्योंकि अपने को उदार चेता तथा धार्मिक कहने वाले व्यक्ति के द्वारा मानव की अवहेलना कर मानवता की भावना को दलित किया गया।

प्रश्न 3. पुल पर खड़ा कवि मनुष्य और प्रकृति के दान के विषय में क्या-क्या सोचता है?

उत्तर—**1.** विश्व में 'जैसे को तैसे' का नियम सदा से चलता रहा है।

2. कर्तव्यानुसार मनुष्य को फल की प्राप्ति होती रही है।

3. प्रकृति में विलास की वस्तुएँ भी हैं। वह मनुष्य को प्रयत्न से अथवा अनायास सुलभ होती हैं।

4. प्रकृति द्वारा निर्मित सभी जीवों में मनुष्य श्रेष्ठ है, क्योंकि उसमें बुद्धि, विवेक, बल भी सबसे अधिक है तथा ग्रहणशीलता भी।

इन्हीं शाश्वत सत्यों के सम्बन्ध में कवि पुल पर खड़ा होकर सोच रहा था।

प्रश्न 4. 'सबमें है श्रेष्ठ, धन्य मानव'' की कवि-धारणा में क्या परिवर्तन हुआ और क्यों?

उत्तर—कवि कहता है कि मैंने झुककर पुल के नीचे देखा तो वहाँ एक ब्राह्मण स्नान करके शिवजी पर जल चढ़ाकर और दूब, चावल, तिल आदि भेंट करके अपनी झोली लिए हुए ऊपर आया। इन्होंने पुल के ऊपर पहुँचकर अपनी झोली से पुए निकाल लिये और हाथ बढ़ाते हुए बन्दरों के हाथ में पुए रख दिये। कवि को यह देखकर दु:ख हुआ कि उन्होंने बन्दरों को तो बड़े चाव से पुए खिलाये, परन्तु उधर घूमकर भी नहीं देखा, जिधर वह भिखारी कातर दृष्टि से देखता हुआ बैठा था। जब उस भिखारी ने अपनी क्षीण आवाज में उनसे पुआ माँगा तो उन्होंने उसे 'दानव! दूर ही रहो' कहकर झिड़क दिया। पृथ्वी पर मनुष्य को ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना समझने वाले निराला जी को मानव की ऐसी निन्दनीय उपेक्षा देखकर अत्यधिक दु:ख हुआ और अत्यधिक विषादमय स्वर में वे बोल उठे—'तू धन्य है श्रेष्ठ मानव' तात्पर्य यह है कि मनुष्य होकर मनुष्य पर दया न दिखाने वाले मनुष्य! न तो तुम श्रेष्ठ हो और न ही धन्य हो।

प्रश्न 5. 'दान' कविता में वर्णित प्रात:काल के चित्रण को अपनी भाषा में लिखिए।

उत्तर—प्रकृति के रहस्यमय सुन्दर शृंगार को देखने के लिए पौ फटते ही पहला कमल खिल गया अथवा प्रकृति के रहस्यों को निर्दोष भाव से देखने के लिए आज ज्ञान का प्रतीक सूर्य निकल आया है। सुगन्धिरूपी वस्त्र धारणकर वायु मन्द—मन्द बह रही है, गोमती नदी में कहीं—कहीं पानी कम होने से वह एक पतली कमर वाली नवेली नायिका—सी जान पड़ती है।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. 'निराला' जी का जीवन-परिचय देते हुए उनकी कृतियों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का जन्म सन् 1897 ई० में पश्चिमी बंगाल के मेदिनीपुर जिले में हुआ था। इनके पिता पं० रामसहाय त्रिपाठी उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के गढ़कोला ग्राम के निवासी थे, किन्तु

आजीविका के लिए बंगाल चले गये थे। 'निराला' की प्रारम्भिक शिक्षा महिषादल में हुई। संस्कृत, बँग्ला और अंग्रेजी का अध्ययन इन्होंने घर पर ही किया। प्रारम्भ में परिवार के भरण–पोषण के लिए इन्होंने महिषादल राज्य में नौकरी की। कुछ समय बाद पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी के सहयोग से इन्होंने रामकृष्ण मिशन के पत्र 'समन्वय' का भार सँभाला। उसके बाद 'मतवाला' के सम्पादक मण्डल में भी सम्मिलित हुए। इनका सम्पूर्ण जीवन अत्यधिक संघर्ष में व्यतीत हुआ। युवा होने पर इनका विवाह साहित्यिक अभिरुचि की कन्या मनोहरा देवी से हुआ लेकिन वह भी एक पुत्र और एक पुत्री का भार इन पर सौंपकर, जब ये केवल 22 वर्ष के थे, संसार से विदा ले गयी। पत्नी के विरह के समय में ही इनका परिचय आचार्य हजारी प्रासद द्विवेदी से हुआ। अन्ततः ये इलाहाबाद में रहने लगे। जीवन के उत्तरार्द्ध में इनकी आर्थिक स्थिति बहुत विषम हो गयी थी। यह महान् साहित्यकार 15 अक्टूबर सन् 1961 ई० को इस संसार से महाप्रयाण कर गया।

रचनाएँ (कृतियाँ)—निराला जी बहुमुखी प्रतिभा वाले साहित्यकार थे। काव्य के अतिरिक्त इन्होंने उपन्यास, कहानियाँ, निबन्ध, आलोचना और संस्मरण भी लिखे, परन्तु ये मूलतः कवि थे। निराला जी की प्रमुख काव्य रचनाएँ निम्नलिखित हैं—

1. तुलसीदास—यह गोस्वामी तुलसीदास के जीवन पर आधारित छायावादी शैली में लिखा हुआ खण्डकाव्य है।

2. अनामिका—यह निराला जी की छायावादी कविताओं का श्रेष्ठ संग्रह है।

3. परिमल—इस कविता–संग्रह में 'बादल राग', 'भिक्षुक', 'विधवा' आदि प्रगतिशील कविताएँ संगृहीत हैं।

4. गीतिका—यह एक सौ एक लघु गीतों का संग्रह है। इसमें प्रेम, प्रकृति और राष्ट्रीय भावना से परिपूर्ण तथा दार्शनिक गीत संगृहीत हैं।

इनके अतिरिक्त 'अणिमा', 'अपरा', 'बेला', 'आराधना', 'अर्चना' आदि निराला जी के प्रमुख काव्य–ग्रन्थ हैं।

साहित्य में स्थान—सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' युग प्रवर्त्तक कवि थे। उन्होंने अपने निराले व्यक्तित्व से हिन्दी–साहित्य जगत को निराला पथ दिखाया, निराला रूप दिया, निराला भाव दिया और निराली वाणी दी। अपने विलक्षण व्यक्तित्व एवं निराले कवित्व के कारण निराला जी हिन्दी काव्य–जगत के सम्राट माने जाते हैं।

प्रश्न 2. निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए और इनके काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए–

(क) मैं प्रातः पर्यटनार्थ चला
लौटा, आ पुल पर खड़ा हुआ,
सोचा–''विश्व का नियमनिश्चल,
जो जैसा, उसको वैसा फल।
देती यह प्रकृति स्वयं सदया,
सोचने को न रहा कुछ नया,
सौन्दर्य, गीत, बहु वर्ण, गन्ध,
भाषा, भावों के छन्द-बन्ध,
और भी उच्चतर जो विलास,
प्राकृतिक दान वे, सप्रयास
या अनायास आते हैं सब,
सब में है श्रेष्ठ, धन्य मानव।'

उत्तर—सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्य–पंक्तियाँ हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के '**काव्य-खण्ड**' में '**दान**' शीर्षक के अन्तर्गत संकलित तथा सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित 'अपरा' नामक काव्य–ग्रन्थ से ली गयी हैं।

संकेत—इस शीर्षक के अर्न्तगत आने वाले सभी पद्यांशों के लिए यही सन्दर्भ प्रयुक्त किया जाएगा।

प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियों में प्रातः भ्रमण के लिए निकले हुए निराला जी ने प्रकृति के विविध साधनों को देखा और उनमें मनुष्य को ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति बताया है।

व्याख्या—कवि निराला जी कहते हैं कि मैं एक दिन सवेरे गोमती नदी के तट पर घूमने के लिए गया और लौटकर पुल के समीप आकर खड़ा हो गया। वहाँ मैं विचार करने लगा कि इस संसार के सभी नियम अटल हैं। जो जैसा करता है उसको फल भी वैसा ही मिलता है। प्रकृति दयाभाव से सभी मनुष्यों को उनके कर्मों का फल प्रदान करती है। इस प्रकार उनके सोचने के लिए कुछ भी नवीन नहीं होता।

निराला जी पुनः विचार करते है कि इस संसार में एक से बढ़कर एक सुन्दर चीजें हैं जिनमें सुन्दरता है, गीत हैं, अनेक रंग और सुगन्धियाँ हैं, भाषा है, भाव है और सुन्दर छन्द भी हैं। ये सब हमारा मन मोह लेते हैं। प्रकृति की दी हुई या मनुष्य द्वारा निर्मित और भी अधिक सुन्दर चीजें और क्रियाकलाप हो सकते हैं जो हमें सुन्दर लगते हैं और जो मनुष्य के पास प्रयत्न करने पर या अनायास ही चले आते हैं। इसलिए इस जड़ चेतन सेंसार में मनुष्य सबमें श्रेष्ठ है, इसलिए वह धन्य है।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) अपने उपयोग की समस्त वस्तुएँ मनुष्य प्रकृति से ही प्राप्त करता है, इसीलिए प्रकृति को दयालु कहा गया है। (2) **भाषा**—शुद्ध संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली (3) **शैली**—वर्णनात्मक (4) **रस**— शान्त (5) **छन्द**—मात्रिक छन्द (6) **गुण**—प्रसाद (7) **अलंकार**—अनुप्रास (8) **शब्द-शक्ति**—अभिधा।

(ख) मैंने झुक नीचे को देखा,
तो झलकी आशा की रेखा–
विप्रवर स्नानकर चढ़ा सलिल
शिव पर दूर्वादल, तण्डुल, तिल,
लेकर झोली आये ऊपर,
देखकर चले तत्पर वानर।
द्विज-राम-भक्त, भक्ति की आस,
भजते शिव को बारहों मास,
कर रामायण का पारायण
जपते हैं श्रीमन्नारायण,
दुःख पाते जब होते अनाथ,
कहते कपियों के जोड़ हाथ,
मेरे पड़ोस के वे सज्जन
करते प्रतिदिन सरिता-मज्जन,
झोली से पुए, निकाल लिये,
बढ़ते कपियों के हाथ दिये,
देखा भी नहीं उधर फिर कर
जिस ओर रहा वह भिक्षु इतर,
चिल्लाया किया दूर दानव,
बोला मैं–''धन्य, श्रेष्ठ मानव।''

उत्तर—सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्य–पंक्तियाँ हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के '**काव्य-खण्ड**' में '**दान**' शीर्षक के अन्तर्गत संकलित तथा सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित 'अपरा' नामक काव्य–ग्रन्थ से ली गयी हैं।

प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियों में सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला ने ढोंग करने वाले कट्टरपन्थी धार्मिक लोगों की प्रवृत्ति पर तीखा व्यंग्य किया है।

व्याख्या—कवि कहता है कि मैंने झुककर पुल के नीचे देखा तो मेरे मन में कुछ आशा जगी। वहाँ एक ब्राह्मण स्नान करके शिवजी पर जल चढ़ाकर और दूब, चावल, तिल आदि भेंट करके अपनी झोली लिये हुए ऊपर आया। उनको देखकर बन्दर शीघ्रता से दौड़े। ये ब्राह्मण राम के भक्त थे। उन्हें भक्ति करने से कुछ मनोकामना पूरी होने की आशा थी। वह बारह महीने भगवान् शिव की आराधना किया करते थे। वे ब्राह्मण महाशय प्रतिदिन प्रात:काल रामायण का पाठ करने के बाद 'श्रीमन्नारायण' मन्त्र का जाप करते थे। कभी दु:खी होते या असहाय दशा का अनुभव करते, तब हाथ जोड़कर बन्दरों से कहते कि वे उनका दु:ख दूर कर दें। कवि इस ब्राह्मण का परिचय देते हुए कहते हैं कि ये सज्जन मेरे पड़ोस में रहते थे और प्रतिदिन गोमती नदी में स्नान करते थे। इन्होंने पुल के ऊपर पहुँचकर अपनी झोली से पुए निकाल लिये और हाथ बढ़ाते हुए बन्दरों के हाथ में पुए रख दिये।

कवि को यह देखकर दु:ख हुआ कि उन्होंने बन्दरों को तो बडे चाव से पुए खिलाये, परन्तु उधर घूमकर भी नहीं देखा, जिधर वह भिखारी कातर दृष्टि से देखता हुआ बैठा था। जब उस भिखारी ने अपनी क्षीण आवाज में उनसे पुआ माँगा तो उन्होंने उसे 'दानव! दूर ही रहो' कहकर झिड़क दिया। पृथ्वी पर मनुष्य को ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना समझने वाले निराला जी को मानव की ऐसी निन्दनीय उपेक्षा देखकर अत्यधिक दु:ख हुआ और अत्यधिक विषादमय स्वर में वे बोल उठे—'तू धन्य है श्रेष्ठ मानव'।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) कवि ने अन्धविश्वासी मानवों के धार्मिक ढोंग पर तीव्र व्यंग्य किया है। (2) **भाषा**—शुद्ध साहित्यिक खड़ीबोली (3)**शैली**—वर्णनात्मक एवं व्यंग्यात्मक (4) **रस**—शान्त एवं करुण (5) **गुण**—प्रसाद (6) **छन्द**—मात्रिक छन्द (7) **अलंकार**—अनुप्रास, उत्प्रेक्षा तथा वक्रोक्ति (8) **शब्द-शक्ति**—विपरीत लक्षणा एवं व्यंजना (9) **भाव- शक्ति**—दीन—दु:खियों की सेवा ही सच्ची ईश्वर—भक्ति है और बाह्य आडम्बर केवल छलावा।

(ग) फिर देखा, उस पुल के ऊपर
बहु संख्यक बैठे हैं वानर।
एक ओर पंथ के, कृष्णकाय
कंकाल शेष नर मृत्युप्राय
बैठा सशरीर दैन्य दुर्बल,
भिक्षा को उठी दृष्टि निश्चल
अति क्षीण कण्ठ है, तीव्र श्वास,
जीता ज्यों जीवन से उदास।
ढोता जो वह, कौन-सा शाप?
भोगता कठिन, कौन-सा पाप?
यह प्रश्न सदा ही है पथ पर,
पर सदा मौन इसका उत्तर!
जो बड़ी दया का उदाहरण,
वह पैसा एक, उपायकरण।

उत्तर—**सन्दर्भ**—प्रस्तुत पद्य—पंक्तियाँ हमारी पाठ्य—पुस्तक 'हिन्दी' के '**काव्य-खण्ड**' में '**दान**' शीर्षक के अन्तर्गत संकलित तथा सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित 'अपरा' नामक काव्य—ग्रन्थ से ली गयी हैं।

उत्तर—**प्रसंग**—प्रस्तुत पंक्तियों में निराला जी ने दान करने का ढोंग करने वाले व्यक्तियों से सम्बन्धित एक घटना का वर्णन करते हुए मानव की मानव के प्रति संवेदनहीनता का वर्णन किया है।

व्याख्या—निराला जी ने देखा कि गोमती के पुल पर बहुत बड़ी संख्या में बन्दर इकट्ठे होकर बैठे हुए हैं तथा सड़क के एक ओर दुबला—पतला काले रंग का एक भिखारी बैठा हुआ था। वह हड्डियों का ढाँचा मात्र दिखाई दे रहा था और ऐसा लग रहा था कि जैसे उसकी मृत्यु निकट आ गयी हो अथवा जैसे गरीबी स्वयं दुर्बल शरीर धारण कर वहाँ बैठी हो। वह भिक्षा पाने के लिए अपलक नेत्रों से ऊपर की ओर देख रहा था। उसका कण्ठ भूख के कारण बहुत कमजोर पड़ गया था और श्वास भी तीव्र गति से चल रही थी। ऐसा लग रहा था मानो वह जीवन से बिल्कुल उदास होकर शेष घड़ियाँ व्यतीत कर रहा हो। न जाने जीवन के इस रूप में वह कौन—सा शाप ढो रहा था और किन पापों का फल भोग रहा था? मार्ग से गुजरने वाले सभी लोग यही सोचते थे, किन्तु कोई भी इसका उत्तर नहीं दे पाता था। कोई अधिक दया दिखाता तो एक पैसा उसकी ओर फेंक देता जैसे कि एक पैसे से उसकी दरिद्रता दूर हो जाएगी।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना मानव की दुर्दशा तथा उसके प्रति लोगों के उपेक्षाभाव का कवि ने बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया है। (2) **भाषा**—शुद्ध संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली (3) **शैली**—वर्णनात्मक एवं संवेदनहीनता का उदाहरण है। (4) **रस**—शान्त एवं करुण (5) **छन्द**—मात्रिक छन्द (6) **गुण**—प्रसाद (7) **अलंकार**—अनुप्रास तथा उत्प्रेक्षा।

(घ) निकला पहिला अरविन्द आज,
देखता अनिन्द्य रहस्य-साज,
सौरभ-वसना समीर बहती,
कानों में प्राणों की कहती,
गोमती क्षीण-कटि नटी नवल,
नृत्य पर-मधुर आवेश-चपल।

उत्तर—**सन्दर्भ**—प्रस्तुत पद्य—पंक्तियाँ हमारी पाठ्य—पुस्तक 'हिन्दी' के '**काव्य-खण्ड**' में '**दान**' शीर्षक के अन्तर्गत संकलित तथा सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित 'अपरा' नामक काव्य—ग्रन्थ से ली गयी हैं।

प्रसंग—इन पंक्तियों में कवि ने प्रात:कालीन प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन किया है। पौष मास के प्रात:काल की यह सुन्दरता उसे प्रकृति का रहस्यमय श्रृंगार लगती है।

व्याख्या—कविवर निराला जी का कहना है कि प्रकृति के रहस्यमय सुन्दर श्रृंगार को देखने के लिए पौं फटते ही पहला कमल खिल गया अथवा प्रकृति के रहस्यों को निर्दोष भाव से देखने के लिए आज ज्ञान का प्रतीक सूर्य निकल आया है। सुगन्धिरूपी वस्त्र धारण कर वायु मन्द—मन्द बह रही है। वह जब कानों के निकट से गुजरती है तो ऐसा मालूम पड़ता है कि वह प्राणों को पुलकित करने वाली गतिशीलता का सन्देश दे रही हो। गोमती नदीं में कहीं—कहीं पानी कम होने से वह एक पतली कमर वाली नवेली नायिका—सी जान पड़ती है। उसमें उठती—गिरती लहरों के कारण वह धारा मधुर उमंग से भरकर नृत्य करती हुई—सी जान पड़ती है।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) कवि ने गोमती के तट पर प्रात:कालीन प्राकृतिक सौन्दर्य का सजीव वर्णन किया है। (2) **भाषा**—संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली। (3) **शैली**—प्रतीकात्मक, वर्णनात्मक। (4) **रस**—शान्त, श्रृंगार (5) **शब्द-शक्ति**—अभिधा और लक्षणा (6) **गुण**—माधुर्य (7) **छन्द** —मात्रिक छन्द (8) **अलंकार**—रूपक, मानवीकरण तथा अनुप्रास।

काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

प्रश्न 1. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकारों का सकारण नाम बताइए–

(क) गोमती क्षीण-कटि नटी नवल।

उत्तर—क्षीण पर कटि का अभेद आरोप होने के कारण रूपक अलंकार है।

(ख) विप्रवर स्नान कर चढ़ा सलिलु,
शिव पर दूर्वादल, ताण्डुल, तिल।

उत्तर—छात्र स्वयं करें।

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों में सनियम सन्धि-विच्छेद कीजिए–

उत्तर—	शब्द	सन्धि-विच्छेद	नियम
	सज्जन	सत् + जन	त + ज = ज्ज
	गर्जितोर्मि	गर्जित + उर्मि	अ + ऊ = ओ
	पर्यटनार्थ	पर्यटन + अर्थ	अ + अ = आ
	निश्चल	निस् + चल	स् + च = श्च
	श्रीमन्नारायण	श्रीमत् + नारायण	त् + न = न्न
	अनादर	अन + आदर	अ + आ = आ

प्रश्न 3. निम्नलिखित काव्य पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए–

(क) कानों में प्राणों की कहती।

(ख) बैठा सशरीर दैन्य दुर्बल।

(ग) देती यह प्रकृति स्वयं सदया।

(घ) कंकाल शेष नर मृत्युप्राय।

उत्तर—**(क)** प्रस्तुत काव्य पंक्ति का भाव है कि जब वायु कानों के निकट से गुजरती है तो ऐसा मालूम पड़ता है कि वह प्राणों को पुलकित करने वाली गतिशीलता का सन्देश दे रही हो।

(ख) प्रस्तुत काव्य पंक्ति का भाव यह है कि उस भिखारी को देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे गरीबी स्वयं दुर्बल शरीर धारण कर वहाँ बैठी हो।

(ग) प्रस्तुत काव्य पंक्ति का भाव यह है कि प्रकृति दयाभाव से सभी मनुष्यों को उनके कर्मों का फल प्रदान करती है।

(घ) प्रस्तुत पंक्ति का भाव है कि वह भिखारी हड्डियों का ढाँचा मात्र दिखाई दे रहा था और ऐसा लग रहा था कि जैसे उसकी मृत्यु निकट आ गई हो।

प्रश्न 4. निम्नलिखित शब्दों में सनाम समास-विग्रह कीजिए–

उत्तर—	समस्तपद	समास-विग्रह	समास-नाम
	अनायास	बिना प्रयास के	नञ् तत्पुरूष
	अनिन्द्य	निन्दा से रहित	नञ् तत्पुरूष
	छन्द—बन्ध	छन्द का बन्ध	षष्ठी तत्पुरूष
	कृष्णकाय	कृष्ण शरीर	कर्मधारय
	दूर्वादल	दूर्वा का दल	षष्ठी तत्पुरूष
	राम—भक्ति	राम का भक्त	षष्ठी तत्पुरूष
	सरिता—मज्जन	सरिता में मज्जन	सप्तमी तत्पुरूष

प्रश्न 5. निम्नलिखित प्रत्येक शब्द के दो-दो पर्यायवायी शब्द लिखिए–

उत्तर—	शब्द	पर्यायवाची
	सागर	पारावार, अम्बुधि
	कमल	पंकज, जलज
	कनक	कंचन, सुवर्ण
	वानर	कपि, बन्दर
	भिक्षु	याचक, भिक्षुक
	वसन	वस्त्र, चीर
	सुमन	पुष्प, कुसुम

प्रश्न 6. नीचे दिये गये शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

उत्तर—	शब्द	विलोम
	मूक	वाचाल
	आशा	निराशा
	दिवा	रात्रि
	गुरु	शिष्य
	जय	पराजय
	शुचि	अशुचि
	क्षीण	स्थूल
	निश्चल	चलायमान
	पाप	पुण्य
	अनायास	सायास

❑

8

उन्हें प्रणाम

(सोहनलाल द्विवेदी)

परीक्षापयोगी प्रश्न

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. राष्ट्रकवि के नाम से प्रसिद्ध सोहनलाल द्विवेदी का जन्म कब और कहाँ हुआ?

उत्तर—सोहनलाल द्विवेदी का जन्म सन् 1906 ई० में फतेहपुर जिले के बिन्दकी कस्बे के एक धनाढ्य परिवार में हुआ था।

प्रश्न 2. द्विवेदी जी द्वारा रचित प्रेमगीत संग्रह का नाम लिखिए।

उत्तर—'वासन्ती' में प्रेम और सौन्दर्य की कविताएँ हैं।

प्रश्न 3. सोहनलाल द्विवेदी की प्रथम रचना 'भैरवी' में किन भावों की प्रधानता है?

उत्तर—इनकी प्रथम कृति 'भैरवी' में स्वदेश–प्रेम के भावों की प्रधानता है।

प्रश्न 4. द्विवेदी जी ने अपनी उच्चशिक्षा कहाँ से प्राप्त की?

उत्तर—द्विवेदी जी ने अपनी उच्चशिक्षा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से प्राप्त की।

प्रश्न 5. सोहनलाल द्विवेदी के दो प्रसिद्ध कविता-संग्रहों के नाम लिखिए।

उत्तर—(1) भैरवी और (2) पूजागीत दो प्रसिद्ध कविता संग्रह हैं।

प्रश्न 6. द्विवेदी जी की कविता के मुख्य विषय क्या हैं?

उत्तर—द्विवेदी जी की कविता के मुख्य विषय देशप्रेम और देशोद्धार हैं।

प्रश्न 7. सोहनलाल द्विवेदी का जीवन-परिचय संक्षेप में लिखिए।

उत्तर—द्विवेदी जी का जन्म सन् 1906 ई० में फतेहपुर जिले के बिन्दकी कस्बे के एक धनाढ्य परिवार में हुआ था। इनके पिता पं० वृन्दावन द्विवेदी एक सत्कर्मनिष्ठ कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। इन्होंने काव्य–रचना के साथ–साथ स्वाधीनता आन्दोलन में भी बढ़ चढ़कर भाग लिया। 29 फरवरी सन् 1988 ई० में इनका देहावसान हो गया।

प्रश्न 8. द्विवेदी जी की भाषा की प्रमुख विशेषताएँ निरूपित कीजिए।

उत्तर—इनकी भाषा सरल, सुबोध, स्वाभाविक, आडम्बरहीन और मधुर है। स्पष्टता और स्वाभाविकता उनकी भाषा के प्राण हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. 'उन्हें प्रणाम' कविता में सोहनलाल द्विवेदी ने वन्दनीय पुरुष किस-किसको माना है?

उत्तर—'उन्हें प्रणाम' कविता में कवि ने निर्धन वर्ग के साथ कन्धा से कन्धे मिलाकर चलते हुए उन्हें उत्थान के मार्ग पर अग्रसर कराने वाले, समाज के विशेष शोषित और पीड़ित समुदाय को पूर्णरूप से सहयोग प्रदान करके, सहारा देते हुए उन्हें अभिशापित की यातना से मुक्ति दिलाने के निमित्त सचेष्ट, इस समाज के कर्मठ व्यक्ति वन्दनीय हैं।

प्रश्न 2. सोहनलाल द्विवेदी ने स्वदेश का स्वाभिमान किसे कहा है?

उत्तर—जो महापुरुष देश का सोया गौरव जगाने में तल्लीन रहते हैं, जो अपने देश की सुन्दर संस्कृति का ज्ञान कराते है, वे सत्पुरूष देश का स्वाभिमान हैं। सोहनलाल द्विवेदी जी कहते हैं कि देश को उन पर गर्व है और वे वन्दनीय है; अभिनन्दनीय हैं।

प्रश्न 3. कविता 'उन्हें प्रणाम' में कवि की आशा का क्या स्वरूप है?

उत्तर—'उन्हें प्रणाम' कविता में कवि की आशा का स्वरूप है कि देश के सभी व्यक्ति स्वतन्त्र और सुखी हों तथा देश में सर्वोदय–भाव का विकास हो, वह समृद्धिशाली बने।

प्रश्न 4. कवि किस मंगलमय दिन को अपना प्रणाम अर्पित करता है?

उत्तर—जिस दिन स्वतन्त्रता का सुप्रभात देश में आये वह दिन सबसे मंगलमय होगा। जिस दिन देश के सभी व्यक्ति स्वतन्त्र हो जायेंगे उस दिन, उस तिथि को कवि अपना प्रणाम अर्पित करता है।

प्रश्न 5. कविता 'उन्हें प्रणाम' का मूलभाव अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर—कवि कहता है कि उन अनाम वीरों को मेरा सौ–सौ बार प्रणाम है जिन्होंने निर्धनों के आँसू पोंछकर उनके हृदय को जीत लिया तथा जिन्होंने आजीवन गरीबों की मदद की है, जिन्होंने नि:स्वार्थ भाव से जन–जन की सेवा की तथा शोषण एवं उत्पीड़न के विरुद्ध आवाज उठाकर महामानव का स्थान प्राप्त किया। उन सच्चे राष्ट्र–भक्तों की मैं वन्दना करता हूँ जिन्होंने इस समूचे राष्ट्र को परतन्त्रता की बेड़ियो से मुक्त कराया और जिन्होंने जेलयात्रा में अनेक यातनायें सहते हुए अन्त में हँसते–हँसते फाँसी के फँदे को चूम लिया।

इन राष्ट्रभक्तों के बलिदान व्यर्थ नहीं जायेंगे। इससे ही स्वतन्त्रता का नवयुग स्थापित होगा। उस समय सभी प्रसन्न होंगे तथा स्वाधीनतारूपी सूर्य की मनोहर रश्मियाँ इसके आँगन को आलोकित करेंगी। खुशी के दिन का मैं करोड़ो बार अभिनन्दन करता हूँ।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. राष्ट्रकवि सोहनलाल द्विवेदी का जीवन-परिचय दीजिए तथा उनकी कृतियों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—राष्ट्रकवि सोहनलाल द्विवेदी का जन्म 4 मार्च सन् 1906 ई० को फतेहपुर जिले के बिन्दकी कस्बे के एक धनाढ्य परिवार में हुआ था। इनके पिता पं० वृन्दावन द्विवेदी एक सत्कर्मनिष्ठ कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। इनकी हाईस्कूल तक की शिक्षा फतेहपुर में हुई तथा बी० एच० यू० बनारस से इन्होंने एम० ए०, एल० एल० बी० की उच्च शिक्षा प्राप्त की। यहाँ महामना मालवीय जी के सम्पर्क से तथा गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन से इनमें देश–प्रेम की भावना पुष्ट हुई। इन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लिया और कई बार जेल–यात्राएँ की। इन्होंने देश–प्रेम और देशोद्धार की ओजपूर्ण कविताएँ लिखकर युवकों को प्रेरित किया। इन्होंने 'बाल–सखा' और 'अधिकार' नामक पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया। ये गाँधीजी की विचारधारा से अत्यधिक प्रभावित रहे। इन्होंने सत्य, अहिंसा, प्रेम और देश–प्रेम की भावना से पूर्ण काव्य–रचना की। इन्होंने 'साहित्य–वारिधि' और 'डी० लिट० की उपाधियाँ भी प्राप्त कीं।

दूरदर्शन द्वारा इनके ऊपर एक वृत्तचित्र का निर्माण भी किया गया है। निरन्तर साहित्य–सेवा में रत यह सरस्वती पुत्र 82 वर्ष की अवस्था में 29 फरवरी, 1988 ई० को इस असार संसार से विदा हो गया।

काव्य-कृतियाँ—द्विवेदी जी ने समाज–सुधार, देशप्रेम और बाल–साहित्य पर अपनी लेखनी चलायी है। इनकी कृतियों का परिचय निम्नलिखित है—

1. कविता-संग्रह—(1) भैरवी, (2) पूजागीत, (3) प्रभाती, (4) चेतना, (5) युगाधार।

2. प्रेम-गीतों का संग्रह—'वासन्ती' में प्रेम और सौन्दर्य की कविताएँ हैं।

3. बाल-कविता-संग्रह—(1) शिशु भारती, (2) दूध बताशा, (3) बाल भारती, (4) बच्चों के बापू, (5) बिगुल, (6) बाँसुरी और (7) झरना आदि।

4. आख्यान-काव्य—(1) कुणाल (खण्डकाव्य), (2) वासवदत्ता तथा (3) विषपान।

इनके अतिरिक्त द्विवेदी जी ने 'गाँधी अभिनन्दन ग्रन्थ' का सम्पादन भी किया है।

साहित्य में स्थान—राष्ट्रीय जागरण और समाज–सुधार के कार्यों में संलग्न द्विवेदी जी की साहित्य–साधना ही उनके जीवन का पथ बन गयी है। अपनी ओजपूर्ण राष्ट्रीय कविताओं के माध्यम से सुप्त भारतीय जनता को

जागरण का सन्देश देने वाले कवियों में सोहनलाल द्विवेदी का विशिष्ट स्थान है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित पद्यांशों का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट करते हुए इनकी ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए–

(क) भेद गया है दीन-अश्रु से जिनका मर्म,
मुहताजों के साथ न जिनको आती शर्म,
किसी देश में किसी वेश में करते कर्म,
मानवता का संस्थापन ही है जिनका धर्म!
ज्ञात नहीं हैं जिनके नाम!
उन्हें प्रणाम! सतत प्रणाम!

उत्तर—**सन्दर्भ**—प्रस्तुत पद्य पंक्तियाँ हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के '**काव्य-खण्ड**' में संकलित तथा सोहन लाल द्विवेदी द्वारा रचित '**उन्हें प्रणाम**' शीर्षक कविता से अवतरित हैं। यह कविता कवि के काव्य–संग्रह 'जय भारत जय' से पाठ्य–पुस्तक में ली गयी है।

संकेत—इस शीर्षक के अन्तर्गत आने वाले सभी पद्यांशों के लिए यही सन्दर्भ प्रयुक्त किया जाएगा।

प्रसंग—इन पंक्तियों में कवि उन अज्ञात देशभक्तों की वन्दना करता है, जिन्होंने मातृभूमि के कल्याण और दीन–दु:खियों की सेवा के लिए अपने समस्त सुखों को न्योछावर कर दिया है।

व्याख्या—कवि कहता है कि मैं उन महापुरुषों को प्रणाम करता हूँ जिनका हृदय दीन–दु:खियों के नेत्रों में आँसू देखकर दु:खी हो जाता है। जो लोग असहायों और दीनों के बीच बैठकर सेवा करने में तनिक भी लज्जा का अनुभव नहीं करते, उन लोगों को चाहे किसी भी स्थान में किसी भी ढंग से रहना पडे, वे हर परिस्थिति में दीन–हीनों की सेवा में जुटे रहते हैं। दया, प्रेम, सहानुभूति आदि मानवीय गुणों की स्थापना करना उनका लक्ष्य रहता है। ऐसे अनेक महापुरुष हो चुके हैं, जिनके नामों का भी पता नहीं है, क्योंकि वे प्रसिद्धि और यश–प्राप्ति से दूर रहकर मानव–सेवा में लगे रहते है। ऐसे महापुरुषों को मैं प्रणाम करता हूँ, उन्हें बार–बार प्रणाम करता हूँ।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) मानवता की सेवा करने वालों में प्रसिद्धि की चाह नहीं होती। इस भाव की सार्थक अभिव्यक्ति की गयी है। (2) **भाषा**–सरल, सुबोध खडीबोली। (3) **शैली**—भावात्मक (4) **रस**—शान्त (5) **गुण**—प्रसाद (6) **छन्द**—तुकान्त, मुक्त (7) **अलंकार**—अनुप्रास (8) **शब्द-शक्ति**—अभिधा।

(ख) कोटि-कोटि नंगों, भिखमंगों के जो साथ,
खड़े हुए हैं कंधा जोड़े, उन्नत माथ,
शोषित जन के, पीड़ित जन के, कर को थाम,
बढ़े जा रहे उधर जिधर है मुक्ति प्रकाम!
ज्ञात और अज्ञात मात्र ही जिनके नाम!
वन्दनीय उन सत्पुरुषों को सतत प्रणाम!

उत्तर—**सन्दर्भ**—प्रस्तुत पद्य पंक्तियाँ हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के '**काव्य-खण्ड**' में संकलित तथा सोहन लाल द्विवेदी द्वारा रचित '**उन्हें प्रणाम**' शीर्षक कविता से अवतरित हैं। यह कविता कवि के काव्य–संग्रह 'जय भारत जय' से पाठ्य–पुस्तक में ली गयी है।

प्रसंग—इन पंक्तियों में कवि ने दीन–दलितों की सहायता करने वाले सत्पुरूषों के प्रति श्रद्धा व्यक्त की है।

व्याख्या—कवि उन लोगों की वन्दना करता है, जो संसार के करोड़ों नंगे–भूखों को सहारा देते हैं और जिनके साथ कन्धे–से–कन्धा मिलाकर चलने में उन्हें गौरव की अनुभूति होती है। वे लोग समाज के शोषित और दीन–दु:खी लोगो का हाथ पकड़कर उस मार्ग पर अग्रसर होते हैं जहाँ पहुँचकर उन्हें दु:खों से पूर्ण छुटकारा मिल जाता है। ऐसे कुछ सत्पुरुषों के नाम लोगों को ज्ञात हो जाते हैं और कुछ लोगों के नाम ज्ञात भी नहीं हो पाते हैं। वे ज्ञात और अज्ञात सभी सत्पुरुष वन्दना के योग्य है। कवि उन्हें श्रद्धाभाव से प्रणाम करता है, बारम्बार प्रणाम करता हैं।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) जो लोग दीन–दु:खियों के बीच में रहकर उनकी सेवा करते हैं, वे वन्दनीय हैं। (2) महात्मा गाँधी जैसे सत्पुरुषों; जिन्होंने पद–दलितों और शोषितों का बिना किसी लज्जा के साथ दिया; के प्रति आदरभाव व्यक्त किया है। (3) **भाषा**—साहित्यिक खड़ीबोली। **(4) शैली**—ओजपूर्ण (5) **रस**—वीर (6) **गुण**—ओज (7) **छन्द**—तुकान्त, मुक्त (8) **अलंकार**—अनुप्रास और पुनरुक्तिप्रकाश (9) **शब्द-शक्ति**—अभिधा।

(ग) जिनके गीतों के पढ़ने से मिलती शान्ति,
जिनकी तानों के सुनने से झिलती भ्रान्ति,
छा जाती मुखमण्डल पर यौवन की कान्ति,
जिनकी टेकों पर टिकने से टिकती क्रान्ति!

उत्तर—**सन्दर्भ**—प्रस्तुत पद्य पंक्तियाँ हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के '**काव्य-खण्ड**' में संकलित तथा सोहन लाल द्विवेदी द्वारा रचित '**उन्हें प्रणाम**' शीर्षक कविता से अवतरित हैं। यह कविता कवि के काव्य–संग्रह 'जय भारत जय' से पाठ्य–पुस्तक में ली गयी है।

प्रसंग—इन पंक्तियों में कवि ने उन गीतकारों और संगीतकारों को नमन किया है, जो देश को ऊपर उठाने में सदैव तत्पर रहते हैं।

व्याख्या—द्विवेदी जी का कहना है कि जिन श्रेष्ठ पुरुषों के जीवन के गीतों को पढ़ने से मन को अपार शान्ति प्राप्त होती है और जिनके गीतों की मधुर तानों को सुनने से मन के अन्दर फैला हुआ भ्रम दूर होता है तथा जिससे हमारे मुख पर जवानी की चमक दिखायी देने लगती है और जिनके संकल्पों पर दृढ़तापूर्वक टिके रहने से बड़ी–बड़ी क्रान्तियाँ सम्भव होती हैं। जिनकी सत्प्रेरणा से देश के युवक मृत्यु को अभिशाप न समझकर वरदान मान लेते हैं और देश के लिए हँसते–हँसते अपने प्राण भी न्योछावर कर देते हैं। वे सभी सत्पुरुष वन्दनीय हैं, जो अन्याय को मिटाने हेतु अपने प्राणों तक का बलिदान करने के लिए तत्पर रहते हैं और दूसरों के दु:खरूपी घावों पर अपनी सान्त्वना और सहानुभूति का मरहम लगाकर उन्हें पीड़ा–मुक्त करते हैं। उन सभी सहृदय व्यक्तियों को मैं करोड़ों बार प्रणाम करता हूँ।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) यहाँ कवि ने वीर सत्पुरुषों के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त की है। (2) श्रेष्ठ पुरुषों के गुणों पर प्रकाश डाला गया है। (3) **भाषा**—साहित्यिक खड़ीबोली (4) **शैली**—ओजपूर्ण (5) **रस**—वीर (6) **गुण**—ओज (7) **छन्द**—तुकान्त, मुक्त (8) **शब्द-शक्ति**—लक्षणा एवं व्यंजना (9) **अलंकार**—अनुप्रास एवं श्लेष।

(घ) उन्हें जिन्हें है नहीं जगत् में अपना काम,
राजा से बन गये भिखारी तज आराम,
दर-दर भीख माँगते सहते वर्षा घाम,
दो सूखी मधुकरियाँ दे देतीं विश्राम!
जिनकी आत्मा सदा सत्य का करती शोध,
जिनको है अपनी गौरव गरिमा का बोध,
जिन्हें दु:खी पर दया, क्रूर पर आता क्रोध
अत्याचारों का अभीष्ट जिनको प्रतिशोध!
उन्हें प्रणाम! सतत प्रणाम!

जो निर्धन के धन निर्बल के बल अविराम!
उन नेताओं के चरणों में कोटि प्रणाम!

उत्तर—**सन्दर्भ**—प्रस्तुत पद्य पंक्तियाँ हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के **'काव्य-खण्ड'** में संकलित तथा सोहन लाल द्विवेदी द्वारा रचित **'उन्हें प्रणाम'** शीर्षक कविता से अवतरित हैं। यह कविता कवि के काव्य–संग्रह 'जय भारत जय' से पाठ्य–पुस्तक में ली गयी है।

प्रसंग—कवि ने उन राष्ट्रप्रेमी लोगो के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त की है जिन्होंने अपने समस्त सुखों को न्योछावर कर, अनेक कष्ट सहकर अत्याचारों का विरोध कर मातृभूमि की सेवा की है।

व्याख्या—द्विवेदी जी का कहना है कि जो सत्पुरूष अपना स्वार्थ सिद्ध नहीं करते अपितु दीन–दु:खियों की पीड़ा हरने के लिए राज्य का सुख–वैभव छोड़कर भिखारी तक बन जाते हैं, दो रूखी–सूखी रोटियाँ खाकर जीवित रहते हैं और वर्षा तथा धूप में घूमते–फिरते, दर–दर की ठोकरें खाते हैं, वे सभी सज्जन वन्दनीय हैं। जिनकी आत्मा सत्य की खोज में जुटी रहती है, जिनको अपनी गौरव–गरिमा का ज्ञान रहता है, जिन्हें दु:खी पर दया और क्रूर पर क्रोध करना आता है और जो अत्याचारों का बदला लेना जानते हैं, ऐसे सत्पुरुष वन्दनीय हैं। जो निर्धनों के काम आते हैं और निर्बलों के निरन्तर बल स्वरूप हैं, उन नेताओ के चरणों में कवि प्रणाम करता है। कवि उन्हें अपनी कविता के माध्यम से कोटि–कोटि प्रणाम अर्पित करता है।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) कवि अत्याचारों के प्रतिरोध का समर्थन करता है। (2) कवि ने देश के महान् नेताओं का प्रकारान्तर से स्मरण किया है। (3) **भाषा**—साहित्यिक खड़ीबोली (4) **शैली**—ओजपूर्ण (5) **रस**—शान्त (6) **गुण**—प्रसाद (7) **शब्द-शक्ति**—व्यंजना (8) **छन्द**—तुकान्त, मुक्त (9) **अलंकार**—अनुप्रास व पुनरुक्तिप्रकाश।

(ङ) मातृभूमि का जगा जिन्हें ऐसा अनुराग!
यौवन में ही लिया जिन्होंने है वैराग,
नगर-नगर की ग्राम-ग्राम की छानी धूल
समझे जिससे सोई जनता अपनी भूल!

जिनको रोटी नमक न होता कभी नसीब,
जिनको युग ने बना रखा है सदा गरीब,
उन मूर्खों को विद्वानों को जो दिन-रात,
इन्हें जगाने को फेरी देते हैं प्रात,

जगा रहे जो सोये गौरव को अभिराम!
उस स्वदेश के स्वाभिमान को कोटि प्रणाम!

उत्तर—**सन्दर्भ**—प्रस्तुत पद्य पंक्तियाँ हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के **'काव्य-खण्ड'** में संकलित तथा सोहन लाल द्विवेदी द्वारा रचित **'उन्हें प्रणाम'** शीर्षक कविता से अवतरित हैं। यह कविता कवि के काव्य–संग्रह 'जय भारत जय' से पाठ्य–पुस्तक में ली गयी है।

प्रसंग—इन पंक्तियों में कवि उन लोगों के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करता है, जिन्होंने अपने समस्त सुखों को न्योछावर कर मातृभूमि की सेवा की है।

व्याख्या—द्विवेदी जी उन लोगों को प्रणाम करते हैं जिन महापुरुषों के हृदय में मातृभूमि के प्रति ऐसा असीम प्रेम उत्पन्न हुआ, जिसके कारण सभी सुखों को त्यागकर उन्होंने अपनी युवावस्था में ही वैराग्य ले लिया था। उन्होंने नगर–नगर और ग्राम–ग्राम में घूमकर जनता में मातृभूमि के प्रति प्रेम जगाया, जिससे जनता अपनी भूल को समझ सके और मातृभूमि के उद्धार के लिए कदम उठा सके। जिन लोगों को समाज ने इतना गरीब बना दिया है कि उन्हें पेट भरने के लिये नमक और रोटी तक नसीब नहीं होती, वे अज्ञानी और मूर्ख ही बने रहते हैं, जो विद्वान, ऐसे मूर्खों की अज्ञानता दूर कर उनमें ज्ञान और जागरूकता भरने के लिए रात और दिन, सुबह और शाम चक्कर लगाते रहते हैं, निश्चय ही वे सत्पुरुष वन्दनीय हैं। जो महापुरुष देश का सोया गौरव जगाने में तल्लीन रहते हैं, जो अपने देश की सुन्दर संस्कृति का ज्ञान कराते हैं, वे सत्पुरुष देश का स्वाभिमान हैं। देश को उन पर गर्व है। कवि उन्हें करोड़ो बार प्रणाम करता है।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) कवि ने जन–जागृति उत्पन्न करने वाले महापुरुषों की वन्दना की है। (2) **भाषा**—साहित्यिक खड़ीबोली (3) **शैली**—ओजपूर्ण (4) **रस**—शान्त तथा वीर (5) **गुण**—प्रसाद (6) **शब्द- शक्ति**—लक्षणा एवं व्यंजना **(7) छन्द**—तुकान्त और मुक्त (8) **अलंकार** —अनुप्रास और पुनरुक्तिप्रकाश।

काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्द-युग्मों से विशेषण-विशेष्य अलग-अलग करके लिखिए–

उत्तर—

शब्द-युग्म	विशेषण	विशेष्य
दृढ़ दीवार	दृढ़	दीवार
बन्द सींखचे	बन्द	सींखचे
दुर्भेध मनस्वी	दुर्भेध	मनस्वी
नव–युग	नव	युग
मधुर मरण	मधुर	मरण
मादक मुस्कान	मादक	मुस्कान

प्रश्न 2. इन शब्दों का अर्थ स्पष्ट कीजिए–'भेद गया', 'प्रतियाम' और 'शान्ति प्रकाम'।

उत्तर—

शब्द	अर्थ
भेद गया	अत्यधिक दु:खी हो गया।
प्रतियाम	बार–बार।
शान्ति प्रकाम	पूर्ण शान्ति।

प्रश्न 3. 'मरण मधुर बन जाता है जैसे वरदान'' में प्रयुक्त अलंकार बताइए।

उत्तर—उपमा अंलकार।

प्रश्न 4. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए–

उत्तर—

शब्द	पर्यायवाची
जन	मनुष्य, व्यक्ति
दीन	दरिद्र, विपन्न
मुख	मुँह, आनन
जगत	भव, भुवन

प्रश्न 5. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

उत्तर—

शब्द	विलोम
जय	पराजय
सबल	निर्बल
दुर्भेध	भेद्य
अक्षय	क्षय

निर्भय	भयभीत
उन्नत	अवनत
ज्ञात	अज्ञात
शान्ति	अशान्ति
क्रूर	दयावान
दृढ़	अदृढ़
स्वतन्त्र	परतंत्रता

प्रश्न 6. निम्नलिखित शब्दों के सन्धि-विच्छेद कीजिए–

उत्तर—

शब्द	सन्धि-विच्छेद
अरुणोदय	अरुण + उदय
अत्याचारी	अति + आचारी
स्वाभिमान	स्व + अभिमान
अनागत	अन + आगत
सर्वोदय	सर्व + उदय

9

परीक्षापयोगी प्रश्न

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. बच्चन जी का जन्म कब और कहाँ हुआ?

उत्तर—बच्चन जी का जन्म एक सम्मानित कायस्थ परिवार में प्रयाग में सन् 1907 में हुआ।

प्रश्न 2. हरिवंश राय बच्चन किस काल के कवि हैं?

उत्तर—हरिवंशराय बच्चन उत्तर छायावाद काल के कवि हैं।

प्रश्न 3. उस छायावादी कवि का नाम लिखिए, जिसे छायावाद का आस्थावादी कवि कहा जाता है?

उत्तर—हरिवंशराय बच्चन।

प्रश्न 4. 'बच्चन' जी की अत्यधिक प्रसिद्ध दो कृतियों के नाम लिखिए।

उत्तर—(1) 'निशा–निमन्त्रण' और (2) 'एकान्त संगीत' बच्चन जी की अत्यधिक प्रसिद्ध कृतियाँ हैं।

प्रश्न 5. 'बच्चन' जी की भाषा-शैली की प्रमुख विशेषताओं का संक्षेप में उल्लेख कीजिए।

उत्तर—बच्चन जी ने मुक्तक गीति शैली में अपनी रचनाओं का सृजन किया। सरलता, स्वाभाविकता, मार्मिकता, संगीतात्मकता और प्रवाहमयता इनकी शैली की मुख्य विशेषताएँ हैं।

प्रश्न 6. मधुशाला किस काव्यकृति पर आधारित है?

उत्तर—'मधुशाला' हालावाद की रचनाएँ काव्यकृति पर आधारित हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. प्रस्तुत कविता में कवि ने जीवन की बाधाओं और कठिनाइयों के लिए किन-किन प्रतीकों का प्रयोग किया है?

उत्तर—प्रस्तुत कविता में कवि जीवन की बाधाओं और कठिनाइयों के बारे में कहता है कि हे जीवन–पथ के पथिक! यह पहले से ही निश्चित नहीं किया जा सकता है कि तेरे मार्ग में किस स्थान पर नदी, पर्वत और गुफाएँ मिलेंगी; अर्थात् तेरे मार्ग में कब कठिनाइयाँ और बाधाएँ आएँगी, यह नहीं कहा जा सकता, यह सब कुछ अनिश्चित है। कवि ने नदी, पर्वत और गुफाओं के माध्यम से जीवन यात्रा में आने वाले दु:ख और बाधाओं का वर्णन किया है।

प्रश्न 2. पुस्तकों में किसकी कहानी नहीं छापी गयी है? 'पथ की पहचान' कविता के आधार पर लिखिए।

उत्तर—कवि कहता है कि हमारे जीवन–पथ की कहानी पुस्तकों में नहीं छपी होती, वह तो स्वयं ही बनानी पड़ती है। दूसरों लोगों के कथन के अनुसार भी हम अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित नहीं कर सकते। इसका निर्धारण हमें स्वयं ही करना पड़ेगा इसलिए जो कुछ भी करना है वो सोच–विचारकर ही करना चाहिए।

प्रश्न 3. 'बच्चन' जी का हिन्दी साहित्य में क्या योगदान है?

उत्तर—'बच्चन' जी ने 'मधुशाला', 'मधुबाला', 'तेरा हार', निशा–निमन्त्रण जैसी महत्त्वपूर्ण रचनाएँ करके हिन्दी साहित्य में विशेष योगदान दिया है। मानवीय भावनाओं के सहज चितेरे बच्चन जी का साहित्य में श्रेष्ठ स्थान है। डॉ० हरिवंशराय 'बच्चन' अपनी अनूठी काव्य शैली, मानवीय संवेदना एवं प्रेरणात्मक अभिव्यक्ति के लिए सदैव स्मरण किये जाते रहेंगे।

प्रश्न 4. 'यह निशानी मूक होकर भी बहुत कुछ बोलती है' में किस निशानी की बात कही गयी है और वह क्या बोलती है?

उत्तर—कवि कहता है कि कुछ कर्मवीर भी इस जीवन मार्ग से गुजरे हैं, जिनके कर्मरूपी पदचिन्ह आज भी आने वाले पथिकों का मार्गदर्शन करते हैं, उनसे प्रेरणा ग्रहण करते है, अर्थात् इस संसार में अनेक लोग जन्मे हैं, जिनके पदचिन्ह मौन भाषा में उनके महान् कार्यों का लेखा–जोखा प्रस्तुत

प्रश्न 7. नीचे लिखी पंक्तियों में प्रयुक्त रस का नाम बताइए तथा लक्षण लिखिए–

'जो फाँसी के तख्तों पर जाते हैं झूम,
जो हँसते-हँसते शूली को लेते चूम।'

उत्तर—इन पंक्तियों में वीर रस है। **लक्षण**—दया, दान और वीरता आदि को प्रकट करने में प्रसन्नता का भाव।

प्रश्न 8. काव्य में जहाँ एक ही शब्द की लगातार आवृत्ति होती है, वहाँ पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार होता है। पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार के कुछ उदाहरण पाठ की कविताओं से छाँटकर लिखिए।

उत्तर—1. जय–जय निर्भय हे! जय जय जय जय हे।
2. युग–युग अक्षय हे!
3. कोटि–कोटि नंगो, भिखमंगों के जो साथ।
4. नगर–नगर की ग्राम–ग्राम की छानी धूल।
5. जो हँसते–हँसते शूली को लेते चूम।

❑

पथ की पहचान

(हरिवंशराय 'बच्चन')

करते हैं। उनके पदचिन्हों की मूक भाषा में सफलता के अनेक रहस्य छिपे हैं।

प्रश्न 5. 'पथ की पहचान' कविता के द्वारा कवि क्या सन्देश देना चाहता है?

उत्तर—'पथ की पहचान' कविता के द्वारा कवि सन्देश देना चाहता है कि हमें कोई भी कार्य सोच–विचारकर करना चाहिए। लक्ष्य चुन लेने के बाद उस काम की कठिनाइयों से घबराना नहीं चाहिए, तभी हमें गन्तव्य पर पहुँचने में कोई परेशानी नहीं होगी, अर्थात् लक्ष्य को पहचाने बिना जीना व्यर्थ है।

प्रश्न 6. 'आँख में हो स्वर्ग लेकिन पाँव पृथ्वी पर टिके हों' पंक्ति के द्वारा कवि बच्चन क्या कहना चाहते हैं?

उत्तर—कवि बच्चन कहना चाहते हैं कि जीवन में कोमल कल्पना और कठोर यथार्थ के बीच समन्वय होना आवश्यक है, तभी जीवन का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। इसलिए आँखों में स्वर्ग के सुख की कल्पना तो अवश्य करो, परन्तु अपने पैर यथार्थ के धरातल पर ही जमाये रखो, अर्थात कल्पना और यथार्थ में सामंजस्य बनाये रखो।

प्रश्न 7. 'पथ की पहचान' कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर—कवि कहता है कि अपनी यात्रा आरम्भ करने से पहले यदि तुम सही मार्ग की पहचान कर लोगे तो गन्तव्य पर पहुँचने में तुम्हे कोई परेशानी नहीं होगी। हमारे जीवन की कहानी पुस्तकों में नहीं छपी होती, वह तो स्वयं ही बनानी पड़ती है। इस संसार पथ पर अनेक लोग आये और चले गये अर्थात पैदा हुए और मृत्यु को प्राप्त हो गये; परन्तु कुछ कर्मवीर ऐसे भी इस जीवन–मार्ग से गुजरे हैं, जिनके कर्मरूपी पदचिन्ह आज भी आने वाले पथिकों का मार्गदर्शन करते हैं। कवि कहता है कि हे पथिक! यह पहले से ही निश्चित नहीं किया जा सकता है कि तेरे मार्ग में किस स्थान पर नदी, पर्वत और गुफाएँ मिलेंगी; अर्थात् तेरे मार्ग में कब कठिनाइयाँ और बाधाएँ आएँगी, यह नहीं कहा जा सकता, यह सब कुछ अनिश्चित है। कवि आगे कहता है कि हे पथिक! स्वप्न देखना अर्थात् कल्पना करना मानव का स्वभाव है। तुमसे यह किसने कहा है कि जीवन में सुनहरे स्वप्न देखना मना है, पर सुख के स्वप्नो में ही नहीं डूब जाना चाहिए। आँखों में स्वर्ग के सुख की कल्पना तो अवश्य करो, परन्तु अपने पैर यथार्थ के धरातल पर ही जमाये रखो, अर्थात् कल्पना और यथार्थ में सामंजस्य बनाये रखो। पथ के काँटे हमें यही सन्देश देते हैं कि जीवन कष्टों से भरा पड़ा है, और हमें उन्हीं के माध्यम से सपनों की दुनिया बसानी है। एक बार काम शुरू कर देने पर विघ्न–बाधाओं से मत घबराओ।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. हरिवंशराय 'बच्चन' के जीवन-परिचय और काव्य-कृतियों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—हरिवंशराय 'बच्चन' का जन्म प्रयाग में सन् 1907 ई० में एक सम्पन्न कायस्थ परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री प्रतापनारायण था। इन्होंने काशी और प्रयाग में शिक्षा प्राप्त की तथा **कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय** से अंग्रेजी साहित्य में पी–एच० डी० की उपाधि प्राप्त की। कुछ वर्षों तक ये प्रयाग विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के अध्यापक रहे। आप 1955 ई० में विदेश मन्त्रालय में हिन्दी–विशेषज्ञ होकर आये, यहीं से इन्होंने अवकाश ग्रहण किया। सन् 1966 ई० में इन्हें राज्यसभा का सदस्य मनोनीत किया गया। कुछ समय तक बच्चन जी आकाशवाणी के साहित्यिक कार्यक्रमों से भी जुड़े रहे तथा कुछ वर्षों पश्चात् अपने पुत्र प्रसिद्ध अभिनेता अमिताभ के पास मुम्बई चले आये और जीवन के अन्तिम समय तक साहित्य की सेवा करते हुए यहीं रहे। 18 जनवरी, 2003 ई० को 96 वर्ष की आयु में आपका यह स्थूल शरीर पंचतत्व में विलीन हो गया।

कृतियाँ—श्री हरिवंशराय बच्चन जी की कुछ प्रमुख कृतियाँ निम्नलिखित हैं—

1. 'मधुशाला', 'मधुबाला', 'मधुकलश'—ये तीनों कृतियाँ एक के बाद एक 1935 ई०, 1936 ई० व 1937 ई० में प्रकाश में आयीं। हिन्दी में इन्हें हालावाद की रचनाएँ कहकर सम्बोधित किया जाता है। बच्चन जी की प्रथम कृति सन् 1932 ई० में 'तेरा हार' नाम से प्रकाशित हुई थी।

2. 'सतरंगिणी', मिलनयामिनी'—इनमें शृंगार रस के गीतों के संग्रह है। इनके अतिरिक्त बच्चन जी के गीत–संग्रह प्रमुख हैं— 'आकुल अन्तर', 'बंगाल का आकाल', 'हलचल', 'सुत की माला', 'खादी के फूल', 'आरती और अंगारे', 'दो चट्टानें' आदि।

3. 'निशा-निमन्त्रण', 'एकान्त-संगीत'—इन दो संग्रह में कवि के हृदय की पीड़ा साकार हो उठी है। ये कृतियाँ इनकी सबसे उत्कृष्ट काव्य–उपलब्धि कही जा सकती हैं।

साहित्य में स्थान—मानवीय भावनाओं के सहज चितेरे बच्चन जी का साहित्य में श्रेष्ठ स्थान है। छायावाद के परवर्ती कवियों में वे प्रसिद्ध हैं। कोमल कल्पनाओं भावनाओं का यह कवि हिन्दी काव्य साहित्य में अमर हो गया है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित पद्य-खण्डों की सन्दर्भ सहित व्याख्या लिखते हुए इनके काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए–

(क) पूर्व चलने के,
बटोही, बाट की पहचान कर ले।
पुस्तकों में है नहीं
छापी गयी इसकी कहानी,
हाल इसका ज्ञात होता
है न औरों की जबानी,
अनगिनत राही गये इस
राह से, उनका पता क्या,
पर गये कुछ लोग इस पर
छोड़ पैरों की निशानी;
यह निशानी मूक होकर
भी बहुत कुछ बोलती है,
खोल इसका अर्थ, पंथी,
पंथ का अनुमान कर ले।
पूर्व चलने के बटोही,
बाट की पहचान कर ले।

उत्तर–सन्दर्भ—यह पद्यांश हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में संकलित 'श्री हरिवंशराय बच्चन' की कविता 'पथ की पहचान' से उद्धृत है। यह बच्चन जी के संकलन 'सतरंगिणी' से संकलित है।

संकेत—इस शीर्षक के अन्तर्गत सभी पद्यांशों के लिए यही सन्दर्भ प्रयुक्त किया जाएगा।

प्रसंग—इस पद्यांश में कवि कहता है कि हमें कोई भी कार्य सोच–विचारकर करना चाहिए। लक्ष्य चुन लेने के बाद उस काम की कठिनाइयों से घबराना नहीं चाहिए।

व्याख्या—कवि कहता है कि हे पथिक! अपनी यात्रा आरम्भ करने से पहले यदि तुम अपने सही मार्ग की पहचान कर लोगे तो गन्तव्य पर पहुँचने में तुम्हे कोई परेशानी नहीं होगी, अर्थात् लक्ष्य को पहचाने बिना जीवन जीना व्यर्थ है।

कवि आगे कहता है कि हमारे जीवन–पथ की कहानी पुस्तकों में नहीं छपी, वह तो स्वयं ही बनानी पड़ती है। दूसरे लोगों के कथन के अनुसार भी हम अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित नहीं कर सकते। इस संसार–पथ पर अनेक लोग आए और चले गये अर्थात् पैदा हुए और मृत्यु को प्राप्त हो गये; उन सबकी गणना नहीं की जा सकती, परन्तु कुछ ऐसे कर्मवीर भी इस जीवन–मार्ग से गुजरे हैं, जिनके कर्मरूपी पदचिन्ह आज भी आने वाले पथिकों का मार्गदर्शन करते हैं। इस संसार में अनेक लोग जन्मे हैं, जिनके पदचिन्ह मौन भाषा में अनेक महान् कार्यों का लेखा–जोखा प्रस्तुत करते हैं। उनके पदचिन्हो की मूक भाषा में जीवन की सफलता के अनेक रहस्य छिपे हैं। हे पथिक! तू उस मूक भाषा के उन रहस्यमयी अर्थों को समझकर अपने लक्ष्यरूपी गन्तव्य और उस तक जाने के मार्ग का पूर्व निर्धारण कर लें। उन सभी कर्मठ महापुरुषों ने काम करने से पहले खूब सोच–विचार किया और फिर मन–प्राण से अपने कार्य में जुटकर सफलता प्राप्त की। हे पथिक! चलने से पहले अवश्य ही अपने मार्ग को भली प्रकार से पहचान ले।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) कार्य करने से पहले सोच–विचार करने की प्रेरणा दी गयी है। (2) सच्चा कर्मवीर बनने हेतु उत्साहित किया गया है। (3) **भाषा**—सरल तथा सरस खड़ीबोली। (4) **शैली**—गीति (5) **रस**—वीर (6) **गुण**—ओज (7) **छन्द**—तुकान्त, मुक्त (8) **अलंकार**—विरोधाभास तथा अनुप्रास (9) **शब्द-शक्ति**—लक्षणा और व्यंजना।

(ख) यह बुरा है या कि अच्छा,
व्यर्थ दिन इस पर बिताना,
अब असंभव, छोड़ यह पथ
दूसरे पर पग बढ़ाना,
तू इसे अच्छा समझ,
यात्रा सरल इससे बनेगी,
सोच मत केवल तुझे ही
यह पड़ा मन में बिठाना,
हर सफल पंथी, यही
विश्वास ले इस पर बढ़ा है,
तू इसी पर आज अपने
चित्त का अवधान कर ले।
पूर्व चलने के बटोही,
बाट की पहचान कर ले।

उत्तर—**सन्दर्भ**—यह पद्यांश हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में संकलित 'श्री हरिवंशराय बच्चन' की कविता 'पथ की पहचान' से उद्धृत है। यह बच्चन जी के संकलन 'सतरंगिणी' से संकलित है।

प्रसंग—यहाँ कवि कहता है कि विवेकपूर्ण किसी मार्ग को चुन लेने के बाद उसमें आने वाली कठिनाइयों या अन्य कारणों से उसे छोड़ देना ठीक नहीं है। उस पर ही आगे बढ़ते रहना चाहिए।

व्याख्या—कवि कहता है कि हे पथिक! विवेकपूर्ण मार्ग का चुनाव करने के पश्चात् उसकी अच्छाई–बुराई को लेकर शंकित होना व्यर्थ है, क्योंकि उसको छोड़कर दूसरे पर चलना भी अब सम्भव न हो सकेगा। तुम्हें अपने मार्ग को ही सर्वश्रेष्ठ समझकर दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ना चाहिए, तभी तुम्हारी लक्ष्य तक पहुँचने की यात्रा आसान रहेगी। ऐसा नहीं सोचना चाहिए कि कठिनाइयाँ केवल मुझे ही उठानी पड़ रही है। वास्तविकता यह है कि जीवन–पथ में, जिसने भी मार्ग को श्रेष्ठ समझा है उसे ही सफलता की प्राप्ति हुई है। यही सफलता का सिद्धान्त है। इसलिए तुम भी अपने मन को उचित और निश्चित मार्ग पर एकाग्र कर लो। हे पथिक! जीवन–पथ पर चलने से पूर्व उचित मार्ग की पहचान कर ले।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) कवि व्यक्ति को चुने हुए मार्ग पर दृढ़ निश्चय से चलने की प्रेरणा देता है। (2) **भाषा**—सरल सुबोध खड़ीबोली (3) **शैली**—प्रवाहपूर्ण गीति (4) **रस**—वीर (5) **गुण**—ओज (6) **छन्द**—तुकान्त–मुक्त (7) **शब्द-शक्ति**—व्यंजना (8) **अलंकार**—सर्वत्र अनुप्रास।

(ग) कौन कहता है कि स्वप्नों
को न आने दे हृदय में,
देखते सब हैं इन्हें
अपनी उमर, अपने समय में,
और तू कर यत्न भी तो
मिल नहीं सकती सफलता।
ये उदय होते, लिये कुछ
ध्येय नयनों के निलय में,
किन्तु जग के पंथ पर यदि
स्वप्न दो तो सत्य दो सौ,
स्वप्न पर ही मुग्ध मत हो,
सत्य का भी ज्ञान कर ले।
पूर्व चलने के बटोही,
बाट की पहचान कर ले।

उत्तर—**सन्दर्भ**—यह पद्यांश हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में संकलित 'श्री हरिवंशराय बच्चन' की कविता 'पथ की पहचान' से उद्धृत है। यह बच्चन जी के संकलन 'सतरंगिणी' से संकलित है।

प्रसंग—इस पद्य में कवि कहता है कि मानव द्वारा कल्पना करना स्वाभाविक है, किन्तु इसके साथ सत्य का भी आभास होना आवश्यक है।

व्याख्या—हे पथिक! तुमसे यह किसने कहा है कि जीवन में सुनहरे स्वप्न देखना मना है। सभी अपनी–अपनी इच्छाओं एवं आयु के अनुरूप कल्पना करते हैं। इसलिए मनुष्य भी कल्पना अवश्य करेगा, प्रयत्न करने पर भी इन्हें कल्पना करने से रोका नहीं जा सकता। जिस प्रकार नील–गगन में तारे उदित होते हैं, ऐसे ही मन में सुन्दर–सुन्दर कल्पनाएँ भी झिलमिलाती हैं। ये स्वप्न अर्थात् कल्पनाएँ तभी सार्थक हैं, जब इनका कोई उद्देश्य हो, परन्तु इस संसार में कुछ ही कल्पनाएँ पूरी होती हैं, जबकि यथार्थ अनगिनत हैं। इसलिए केवल कल्पना लोक में ही मत जाओ, सत्य को भी अवश्य देखो। जो कुछ सोच–विचार करना है, अपना पथ निर्धारित करने से पहले कर लेना चाहिए।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) जीवन में कल्पना के साथ–साथ सत्य को भी देखना समझना चाहिए। (2) **भाषा**—सरल खड़ीबोली (3) **शैली**–गीति (4) **रस**—शान्त (5) **गुण**—प्रसाद (6) **छन्द**—तुकान्त–मुक्त (7) **शब्द-शक्ति**—व्यंजना (8) **अलंकार**—रूपक और अनुप्रास।

(घ) स्वप्न आता स्वर्ग का, दृग
कोरकों में दीप्ति आती,

पंख लग जाते पगों को,
ललकती उन्मुक्त छाती,
रास्ते का एक काँटा
पाँव का दिल चीर देता,
की दो बूँद गिरती,
एक दुनिया डूब जाती,
आँख में हो स्वर्ग लेकिन
पाँव पृथ्वी पर टिके हों,
कंटकों की इस अनोखी
सीख का सम्मान कर ले।
पूर्व चलने के बटोही,
बाट की पहचान कर ले।

उत्तर—सन्दर्भ—यह पद्यांश हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में संकलित 'श्री हरिवंशराय बच्चन' की कविता 'पथ की पहचान' से उद्धृत है। यह बच्चन जी के संकलन 'सतरंगिणी' से संकलित है।

प्रसंग—इन पंक्तियों में कवि ने पथिक को आदर्श और यथार्थ का उचित समन्वय करके ही जीवन–पथ पर बढ़ने के लिए सचेत किया है।

व्याख्या—हे पथिक! कल्पना का आनन्द स्वर्ग जैसा प्रतीत होता है। जब मनुष्य स्वर्ग के सुखों की कल्पना करता है तो उसकी आँखों में प्रसन्नता का प्रकाश भर जाता है। उसके चरण उस रंगीन कल्पना तक पहुँचने के लिए बड़ी तीव्रता से बढ़ने लगते हैं। उसका हृदय उस सुन्दर कल्पना को गले लगाने के लिए उत्कण्ठित रहता है, परन्तु कर्मपथ पर कोई एक ही कठिनाई जब किसी काँटे की तरह उसके पैर में चुभती है तो उससे जो रक्त निकलता है, उसी में कल्पना का सारा संसार डूब जाता है। आँखों में स्वर्ग के सुख की कल्पना तो अवश्य करो, परन्तु अपने पैर यथार्थ के धरातल पर ही जमाये रखो, अर्थात् कल्पना और यथार्थ में सामंजस्य बनाये रखो। पथ के काँटे हमें यही सन्देश देते हैं कि जीवन कष्टों से भरा पड़ा है और हमें उन्हीं के मध्य अपने सपनों की दुनिया बसानी है। जो कार्य करना है वह सोच-विचार के बाद ही करना चाहिए।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) पथ की बाधाएँ व्यक्ति को बहुत कुछ सिखाती हैं। (2) **भाषा**—सरल सुबोध खड़ीबोली (3) **शैली**—गीति (4) **रस**—शान्त (5) **गुण**—प्रसाद (6) **छन्द**—तुकान्त–मुक्त (7) **शब्द-शक्ति**—व्यंजना (8) **अलंकार**—अनुप्रास और रूपक।

काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

प्रश्न 1. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकारों के नाम लिखिए तथा उनका स्पष्टीकरण भी दीजिए–

(क) पंख लग जाते पगों को, ललकती उन्मुक्त छाती।

उत्तर—अतिशयोक्ति, अनुप्रास।

कदमों को पंख लग जाने के कारण अतिशयोक्ति है।

(ख) यह निशानी मूक होकर, भी बहुत कुछ बोलती है।

उत्तर—विरोधाभास, अनुप्रास।

मूक होकर भी बोलने का गुण होने के कारण विरोधाभास अलंकार है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित पदों से उपसर्ग और प्रत्ययों को पृथक्-पृथक् करके मूलशब्द के साथ लिखिए–

उत्तर—

शब्द	मूलशब्द	उपसर्ग	प्रत्यय
अनिश्चित	निश्चित	अ	—
अवधान	धान	अव	—
पंथी	पंथ	—	ई
अनुमान	मान	अनु	—
सफलता	सफल	—	ता
असम्भव	सम्भव	अ	—

प्रश्न 3. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त रसों को पहचानकर उनके स्थायी भाव लिखिए–

(क) आ पड़े कुछ भी, रुकेगा
तू न, ऐसी आन कर ले।
पूर्व चलने के बटोही,
बाट की पहचान कर ले।

उत्तर—**रस**—वीर रस, **स्थायी भाव**—उत्साह।

(ख) किन्तु जग के पंथ पर यदि
स्वप्न दो तो सत्य दो सौ,
स्वप्न पर ही मुग्ध मत हो,
सत्य का भी ज्ञान कर ले।

उत्तर—**रस**—शान्त, **स्थायी भाव**—निर्वेद।

❑

10 बादल को घिरते देखा है

(नागार्जुन)

परीक्षापयोगी प्रश्न

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. नागार्जुन का जन्म कहाँ तथा कब हुआ?

उत्तर—नागार्जुन का जन्म 30 जून, 1911 ई० को दरभंगा जिले के सतलखा नामक ग्राम में हुआ था।

प्रश्न 2. कवि नागार्जुन का जीवन-परिचय संक्षेप में लिखिए।

उत्तर—श्री नागार्जुन का जन्म दरभंगा जिले के सतलखा ग्राम में 30 जून, 1911 ई० को हुआ। पहले ये 'यात्री' उपनाम से लिखा करते थे। बाद में इन्होंने बुद्ध के प्रसिद्ध शिष्य के नाम पर अपना नाम नागार्जुन रख लिया। 87 वर्ष की आयु में 5 नवम्बर, 1998 ई० को दरभंगा के ही लहरियासराय में इनका देहान्त हो गया।

प्रश्न 3. नागार्जुन की प्रमुख रचनाओं का नामोल्लेख कीजिए।

उत्तर—'युगधारा', 'सतरंगे पंखों वाली', 'प्यासी पथरायी आँखें', 'खून और शोले', 'प्रेत का बयान', 'तालाब की मछलियाँ', भस्मांकुर आदि इनके प्रमुख काव्य संग्रह हैं।

प्रश्न 4. नागार्जुन की भाषा-शैली की प्रमुख विशेषताओं का संक्षेप में उल्लेख कीजिए।

उत्तर—नागार्जुन की भाषा—शैली सरल, स्पष्ट तथा मार्मिक प्रभाव डालने वाली है। इनकी शैली चित्रात्मक, स्वाभाविक और संगीतात्मक है।

प्रश्न 5. नागार्जुन की भस्मांकुर कृति का परिचय लिखिए।

उत्तर—भस्मांकुर कवि नागार्जुन द्वारा रचित एक प्रसिद्ध खण्डकाव्य है।

प्रश्न 6. नागार्जुन की कविता के प्रमुख स्वर लिखिए।

उत्तर—नागार्जुन अपनी कविताओं में अत्याचार—पीड़ित और त्रस्त व्यक्तियों के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करके उनको अनीति और अन्याय का विरोध करने की प्रेरणा देते हैं। नागार्जुन श्रम के गीत गाने वाले कवि हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. पाठ में दी गई कविता- ''बादल को घिरते देखा है'' में कवि नागार्जुन ने किस पर्वत के किस स्थान का वर्णन किया है?

उत्तर—कवि कहता है कि मैंने निर्मल और चाँदी के समान श्वेत बर्फ से आच्छादित हिमालय की ऊँची चोटियों पर घुमड़ते हुए बादलों के मनोरम दृश्य को देखा है। कवि नागार्जुन ने हिमालय पर्वत की ऊँची चोटियों पर घुमड़ते हुए बादलों का वर्णन किया है।

प्रश्न 2. कविता में किन्नर-किन्नरियों का जो चित्र खींचा गया है, उसे अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर—कवि कहता है कि देवदारू के वनों में अनेक प्रकार के रंगो वाले सुगन्धित फूलो से अपने बालों को सजाये किन्नर और किन्नरियों के जोड़े अपने गले में इन्द्रनीलमणि की बनी माला डाले रखते हैं। उनकी चोटियों में सौ पंखुडियों वाले लाल कमल के फूल गुँथे रहते हैं। वे कोमल, दागरहित, स्वच्छ बालों वाली कस्तूरी मृग की छाला को बिछाकर पालथी मारकर बैठ जाते हैं और मदिरा पान करते हैं। इसके बाद मदिरा से मदमस्त होकर अपनी सुन्दर अँगुलियों को बाँसुरी पर फिराते हुए मधुर संगीत की तान छेड देते हैं।

प्रश्न 3. चकवा-चकवी के माध्यम से कवि ने क्या स्पष्ट किया है?

उत्तर—कवि ने हिमालय पर स्थित सरोवर के किनारे रहने वाले चकवा—चकवी के वियोग और मिलन के माध्यम से समय के प्रभाव अर्थात् सुख—दु:ख के शाश्वत् क्रम को दर्शाया हैं। कवि का तात्पर्य है कि जिस प्रकार चकवा—चकवी रात्रि में अलग रहने पर विरह में व्याकुल होकर विलाप करते है और प्रात: काल में पुनर्मिलन होने पर प्रेम—क्रीडा करते है उसी प्रकार जीवन में सुख—दु:ख तो आते रहते है, इनसे कभी घबराना नहीं चाहिए।

प्रश्न 4. कस्तूरी मृग को स्वयं पर चिढ़ता हुआ क्यों दिखाया गया है?

उत्तर—कस्तूरी मृग अपनी नाभि में स्थित अदृश्य कस्तूरी की मनमोहक सुगन्ध से उन्मत्त होकर इधर—उधर दौड़ता रहता है। निरन्तर भाग—दौड़ करने पर जब वह चंचल और युवा मृग उस कस्तूरी को प्राप्त नहीं कर पाता तो वह अपने—आप पर झुँझलाता है।

प्रश्न 5. किन्नर-किन्नरी किस वातावरण एवं मुद्रा में वंशी बजाते वर्णित किये गये हैं?

उत्तर—आकाश में बादलों के छा जाने से उस किन्नर प्रदेश की शोभा अपूर्व हो जाती है। उस समय सैकडों छोटे—बड़े झरने अपनी कल—कल ध्वनि से देवदारू के वनों को गुंजित कर देते हैं। उस समय उन वनो में किन्नर और किन्नरी मदिरा से मदमस्त होकर अपनी कोमल और सुन्दर अँगुलियों को बाँसुरी पर फिराते हुए मधुर संगीत की तान छेड़ देते हैं।

प्रश्न 6. 'बादल' को घिरते देखा है' कविता के आधार पर बादलों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—'बादल' को घिरते देखा है' कविता में कवि ने हिमालय के वर्षाकालीन सौन्दर्य का सुन्दर चित्रण किया है। कवि कहता है कि मैंने निर्मल और चाँदी के समान श्वेत बर्फ से आच्छादित हिमालय की ऊँची चोटियों पर घुमड़ते हुए बादलों के सुन्दर दृश्य को देखा है।

प्रश्न 7. 'बादल को घिरते देखा है' शीर्षक कविता का सारांश लिखिए।

उत्तर—कवि कहता है कि मैंने निर्मल और चाँदी के समान श्वेत बर्फ से आच्छादित हिमालय की ऊँची चोटियों पर घुमड़ते हुए बादलों के मनोरम दृश्य को देखा है। वास्तव में यह बहुत मोहक दृश्य है। कवि ने हिमालय पर स्थित सरोवर के किनारे रहने वाले चकवा—चकवी के वियोग और मिलन के माध्यम से समय के प्रभाव अर्थात् दु:ख—सुख के शाश्वत क्रम को दर्शाया है। कवि कहता है कि जिस प्रकार चकवा—चकवी रात्रि में एक-दूसरे से अलग रहने के कारण विलाप करते है और प्रात:काल में पुनर्मिलन होने पर प्रेम-क्रीडा करने लगते है उसी प्रकार जीवन में सुख—दु:ख तो आते रहते हैं, उनसे घबराना नहीं चाहिए।

कविवर नागार्जुन का कहना है कि कस्तूरी मृग अपनी नाभि में स्थित अदृश्य कस्तूरी की मनमोहक सुगन्ध को ढूढ़ने के लिए इधर—उधर दौड़ता है और निरन्तर भाग—दौड़ करने पर भी उस कस्तूरी को वह प्राप्त नहीं कर पाता तो खुद पर झुँझलाता है। मैंने उसकी चिढ़ को सदेह वहाँ उपस्थित होकर अनुभव किया है।

कविवर नागार्जुन कहते है कि आकाश में बादलों के छा जाने पर उस किन्नर प्रदेश की शोभा अपूर्व हो जाती है। गिरते हुए झरने का स्वर देवदारू के जंगलों में गूँजता रहता है। इन वनों में मदिरा से मदमस्त होकर किन्नर और किन्नरी की विलासमयी क्रीडाओं को मैंने प्रत्यक्ष देखा है।

प्रश्न 8. वर्षाकालीन हिमालय के सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—कवि कहता है कि मैने वहाँ मानसरोवर झील में खिले सुनहले कमलों पर मोती के समान झिलमिलाती शीतल वर्षा की बूँदों को गिरते देखा है। उस पर्वतीय प्रदेश में हिमालय के ऊँचे—ऊँचे शिखररूपी कन्धों पर अनेक छोटी—बड़ी झीलें स्थित हैं। मैदानी प्रदेश की वर्षाकालीन उमस से व्याकुल होकर हंस इन झीलो में आ जाते है। वे कसैले और मीठे कमलनाल के कोमल रेशों को खोजते हुए इन झीलों के शीतल जल में तैरते हुए बहुत सुन्दर लगते हैं।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. कवि नागार्जुन का संक्षिप्त जीवन-परिचय देते हुए उनकी काव्य-कृतियों (रचनाओं) पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—श्री नागार्जुन का जन्म दरभंगा (बिहार) जिले के सतलखा नामक ग्राम में 30 जून, 1911 में हुआ था। नागार्जुन का वास्तविक नाम वैद्यनाथ मिश्र था, परन्तु पहले ये 'यात्री' के नाम से लिखा करते थे। इनकी आरम्भिक शिक्षा संस्कृत पाठशाला से शुरू हुई किन्तु आगे तक जारी न रह

सकी। इनका आरम्भिक जीवन अभावो में बीता था। जीवन के इन्हीं अभावों ने इन्हें शोषण के प्रति विद्रोह की भावनाओं से भर दिया, साथ ही जीवन में घटित दु:खद घटनाओ ने इन्हें मानवमात्र का दु:ख समझने की क्षमता प्रदान की। ये घुमक्कड प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। अत: देश–विदेश में घूमते हुए ये सन् 1936 ई० में श्रीलंका जा पहुँचे और वहाँ संस्कृत के आचार्य बन गये। स्वाध्याय से ही इन्होंने अनेक भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया। श्रीलंका प्रवास में ही इन्होंने बौद्ध–धर्म की दीक्षा ले ली। सन् 1941 ई० में भारत लौट आये। स्वतन्त्र भारत में भी इन्हे अपनी विद्रोही प्रवृत्ति के कारण जेल जाना पड़ा।

नागार्जुन जी के हृदय में सदैव शोषित और दलित वर्ग के प्रति संवेदना रही है। अपनी कविताओं में ये अत्याचार–पीड़ित और त्रस्त व्यक्तियों के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करके ही सन्तुष्ट नहीं हो जाते, वरन् उनको अनीति और अन्याय का विरोध करने की प्रेरणा भी देते हैं।

कृतियाँ—नागार्जुन मानवतावादी कवि रहे हैं। इनकी प्रमुख कृतियाँ निम्नलिखित है—

उपन्यास—'रतिनाथ की चाची', 'बलचनमा', 'नयी पौध', 'बाबा बटेसरनाथ', 'दु:खमोचन', 'वरूण के बेटे', 'कुम्भीपाक' तथा 'उग्रतारा'।

काव्य—'खून और शोले', 'हजार–हजार बाँहों वाली', 'युगधारा', 'सतरंगे पंखों वाली', 'प्यासी पथरायी आँखें', 'तुमने कहा था।' 'भस्मांकुर' इनके द्वारा रचित खण्डकाव्य है। इनकी रचनाओ पर इन्हें उत्तर प्रदेश का 'भारत–भारती', मध्य प्रदेश का 'कबीर' तथा बिहार का 'राजेन्द्र प्रसाद' सम्मान प्राप्त हुआ।

साहित्य में स्थान—नागार्जुन ऐसे कवि थे जिनकी रचनाओं को किसी वाद की सीमा में नहीं बाँधा जा सकता। प्रगतिवादी कवियों में इनका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। अपनी निर्भीक स्पष्टवादिता और तीव्र गहन व्यंग्यात्मकता के कारण नागार्जुन हिन्दी साहित्य में चिरस्मरणीय रहेंगे।

प्रश्न 2. निम्नलिखित पद्य-खण्डों की सन्दर्भ सहित व्याख्या लिखते हुए इनके काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए–

(क) अमल-धवल गिरि के शिखरों पर, बादल को घिरते देखा है।
छोटे-छोटे मोती जैसे, अतिशय शीतल वारि कणों को–
मानसरोवर के उन स्वर्णिम-कमलों पर गिरते देखा है।
तुंग हिमाचल के कंधों पर छोटी बड़ी कई झीलों के
श्यामल शीतल अमल सलिल में
समतल देशों से आ-आकर
पावस की ऊमस से आकुल
तिक्त मधुर बिसतंतु खोजते, हंसों को तिरते देखा है।

उत्तर—**सन्दर्भ**—प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में संकलित नयी काव्य–धारा के समर्थ कवि नागार्जुन द्वारा रचित 'बादल को घिरते देखा है' शीर्षक कविता से अवतरित है।

संकेत—इस शीर्षक के अन्तर्गत आने वाले सभी पद्यांशों के लिए यही सन्दर्भ प्रयुक्त किया जाएगा।

प्रसंग—इन पंक्तियों में कवि ने हिमालय के वर्षाकालीन सौन्दर्य का सुन्दर चित्रण किया है।

व्याख्या—कवि कहता है कि मैंने निर्मल और चाँदी के समान श्वेत बर्फ से आच्छादित हिमालय की ऊँची चोटियों पर घुमड़ते हुए बादलों के मनोरम दृश्य को देखा है। मैंने वहाँ मानसरोवर झील में खिले सुनहले कमलों पर मोती के समान झिलमिलाती शीतल वर्षा की बूँदों को गिरते हुए भी देखा है। वास्तव में यह बहुत मोहक दृश्य है।

कवि हिमालय की प्राकृतिक सुषमा के विषय में कहता है कि उस पर्वतीय प्रदेश में हिमालय के ऊँचे–ऊँचे शिखररूपी कन्धों पर अनेक छोटी–बड़ी झीलें स्थित हैं। इनका गहरा नीला–नीला–सा निर्मल जल बहुत ही शीतल है। मैदानी प्रदेश की वर्षाकालीन उमस से व्याकुल होकर हंस इन झीलों में आ जाते हैं। वे कसैले और मीठे कमलनाल के कोमल रेशों को खोजते हुए इन झीलों के शीतल जल में तैरते हुए बहुत सुन्दर लगते हैं। यह दृश्य मैंने अपनी आँखों से देखा है।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) हिमालय की सुन्दरता का मोहक दृश्य प्रस्तुत करके कवि ने अपनी कुशल प्रकृतिचित्रण–कला का परिचय दिया है। (2) **भाषा**—तत्सम शब्दावली प्रधान सरल खड़ीबोली। (3) **शैली**—लयात्मकतायुक्त प्रवाहपूर्ण (4) **रस**—शृंगार (5) **शब्द-शक्ति**—व्यंजना। (6) **गुण**—माधुर्य (7) **अलंकार**—अनुप्रास, पुनरुक्तिप्रकाश, उपमा तथा रूपक।

(ख) एक-दूसरे से वियुक्त हो
अलग-अलग रहकर ही जिनको
सारी रात बितानी होती
निशा काल के चिर अभिशापित
बेबस उन चकवा-चकई का,
बन्द हुआ क्रन्दन फिर उनमें
उस महान् सरवर के तीरे
शैवालों की हरी दरी पर, प्रणय-कलह छिड़ते देखा है।

उत्तर—**सन्दर्भ**—प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' में संकलित नयी काव्य–धारा के समर्थ कवि नागार्जुन द्वारा रचित 'बादल को घिरते देखा है' शीर्षक कविता से अवतरित है।

प्रसंग—इन पंक्तियों में कवि ने चकवा–चकवी के वियोग और मिलन के माध्यम से समय के प्रभाव अर्थात् सुख–दु:ख के शाश्वत क्रम को दर्शाया है।

व्याख्या—कवि कहता है कि चकवा–चकवी आपस में एक–दूसरे से अलग रहकर सारी रात बिता देते हैं। किसी पूर्वकालीन शाप के कारण वे रात्रि में मिल नहीं पाते हैं, अत: विरह में व्याकुल होकर वे करुण विलाप करने लगते हैं। प्रात:काल में पुनर्मिलन होने पर उनका क्रन्दन बन्द हो जाता है और वे मानसरोवर की काईरूपी हरी दरी के ऊपर प्रेम–क्रीडा करने लगते हैं। इस प्रेम–क्रीडा में कभी–कभी वे झगडते भी हैं। उस महान् मानसरोवर के तट पर खड़े होकर मैंने उस रम्य प्रेम की लड़ाई को देखा है। रात्रि में वे दोनों जहाँ वियोग के कारण क्रन्दन कर रहे थे वही प्रात: होने पर प्रेम से किल्लोल कर रहे हैं। तात्पर्य यह है कि जीवन में सुख–दु:ख तो आते रहते हैं, इनसे कभी घबराना नहीं चाहिए।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) यहाँ चकवा–चकवी मानवीय सुख–दु:ख के प्रतीक हैं। जीवन के यथार्थ को प्रतीकात्मकता प्रदान कर काव्य–गुण की वृद्धि की गयी है। (2) **भाषा**—सरल खड़ीबोली। (3) **शैली**—प्रतीकात्मक और प्रवाहपूर्ण (4) **रस**— शृंगार एवं शान्त (5) **गुण**—माधुर्य एवं प्रसाद (6) **अलंकार**—पुनरुक्तिप्रकाश, अनुप्रास एवं रूपक (7) **छन्द**—तुकान्त–मुक्त।

(ग) कहाँ गया धनपति कुबेर वह,
कहाँ गयी उसकी वह अलका?
ठिकाना कालिदास का!
व्योम-वाहिनी गंगाजल का!
ढूँढ़ा बहुत परन्तु लगा क्या मेघदूत का पता कहीं पर!

कौन बताये वह यायावर, बरस पड़ा होगा न यहीं पर।
जाने दो वह कवि-कल्पित था,
मैंने तो भीषण जाड़ों में, नभचुम्बी कैलाश शीर्ष पर
महामेघ को झंझानल से, गरज-गरज भिड़ते देखा है।

उत्तर—**सन्दर्भ**—प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य—पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य—खण्ड' में संकलित नयी काव्य—धारा के समर्थ कवि नागार्जुन द्वारा रचित 'बादल को घिरते देखा है' शीर्षक कविता से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने यह बताया है कि सुख—दु:ख, वैभव—विपन्नता जीवन में निरन्तर आने—जाने वाली परिस्थितियाँ हैं। जीव इनके समक्ष असमर्थ और विवश है।

व्याख्या—कवि नागार्जुन कहते हैं कि कालिदास के 'मेघदूत' में वर्णित वह धनाढ्य कुबेर कहाँ गया, जिसके अभिशाप से यक्ष अपनी प्रिया से अलग हो गया था। समस्त वैभव और विलास के साधनों से युक्त कुबेर की वह अलका नामक नगरी भी दिखाई नहीं पड़ती। कालिदास द्वारा वर्णित आकाश—मार्ग से जाती हुई उस पवित्र गंगा का जल कहाँ चला गया? कवि पुन: कहता है कि बहुत ढूँढ़ने पर भी मुझे मेघरूपी उस दूत के दर्शन नहीं हो सके। ऐसा भी हो सकता है कि इधर—उधर घूमते रहने वाला वह मेघ यक्ष का सन्देश ही न पहुँचा पाया हो और लज्जित होकर पर्वत पर यहीं कहीं बरस पड़ा हो, इस बात को बताने वाला भी कोई नहीं है। छोड़ो, रहने दो, यह तो कवि कालिदास की कल्पना थी। मैंने तो गगनचुम्बी कैलाश पर्वत के शिखर पर भयंकर शीत में, विशाल आकार वाले बादलों को तूफानी हवाओं से गरज—बरसकर संघर्ष करते हुए देखा है।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) बादल और झंझावात के संघर्ष से स्पष्ट है कि अस्तित्व की रक्षा के लिए असमर्थ भी समर्थ से संघर्षरत हो सकता है। (2) **भाषा**—सहज खड़ीबोली। (3) **शैली**—प्रतीकात्मक और प्रवाहपूर्ण (5) **रस**—शान्त (6) **गुण**—प्रसाद (7) **छन्द**—तुकान्त, मुक्त (8) **शब्द-शक्ति**—लक्षणा एवं व्यंजना (9) **अलंकार**—अनुप्रास एवं पुनरुक्तिप्रकाश।

(घ) दुर्गम बर्फानी घाटी में,
शत सहस्त्र फुट उच्च-शिखर पर
अलख नाभि से उठने वाले
अपने ही उन्मादक परिमल
के ऊपर धावित हो-होकर
तरल तरुण कस्तूरी मृग को अपने पर चिढ़ते देखा है।

उत्तर—**सन्दर्भ**—प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य—पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य—खण्ड' में संकलित नयी काव्य—धारा के समर्थ कवि नागार्जुन द्वारा रचित 'बादल को घिरते देखा है' शीर्षक कविता से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने व्यक्ति की विशेषताओं को रेखांकित किया है।

व्याख्या—कवि नागार्जुन का कहना है कि हजारों फुट ऊँचे पर्वत—शिखर पर स्थित बर्फानी घाटियों में जहाँ पहुँचना ही बहुत कठिन होता है, वहाँ कस्तूरी मृग अपनी नाभि में स्थित अदृश्य कस्तूरी की मनमोहक सुगन्ध से उन्मत्त होकर इधर—उधर दौड़ता रहता है। निरन्तर भाग—दौड़ करने पर भी जब वह चंचल और युवा मृग उस कस्तूरी को प्राप्त नहीं कर पाता तो वह अपने—आप पर झुँझलाता है। मैंने उसकी झुँझलाहट और चिढ़ को सदेह वहाँ उपस्थित होकर अनुभव किया है।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) हिरण के माध्यम से कवि ने यहाँ यह स्पष्ट किया है कि मनुष्य अपनी ही सामर्थ्य को नहीं पहचान पाता तथा असफल होकर दु:खी होता है। (2) **भाषा**—तत्समप्रधान खड़ीबोली। (3) **शैली**—प्रतीकात्मक और प्रवाहपूर्ण (4) **रस**—शान्त (5) **छन्द**—तुकान्त—मुक्त (6) **शब्द-शक्ति**—लक्षणा एवं व्यंजना। (7) **गुण**—माधुर्य (8) **अलंकार**—अनुप्रास और पुनरुक्तिप्रकाश।

(ङ) शत-शत निर्झर निर्झरिणी कल
मुखरित देवदारु कानन में
शोणित धवल भोजपत्रों से छाई हुई कुटी के भीतर
रंग-बिरंगे और सुगन्धित फूलों से कुन्तल को साजे
इन्द्रनील की माला डाले शंख सरीखे सुघर गले में,
कानों में कुवलय लटकाये, शतदल रक्त कमल वेणी में,
रजत-रचित मणि खचित कलामय
पान-पात्र द्राक्षासव पूरित
रखे सामने अपने-अपने
लोहित चन्दन की त्रिपदी पर
नरम निदाग बाल कस्तूरी-
मृग छालों पर पल्थी मारे
मदिरारुण आँखों वाले उन
उन्मद किन्नर किन्नरियों की
मृदुल मनोरम अंगुलियों को वंशी पर फिरते देखा है।

उत्तर—**सन्दर्भ**—प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य—पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य—खण्ड' में संकलित नयी काव्य—धारा के समर्थ कवि नागार्जुन द्वारा रचित 'बादल को घिरते देखा है' शीर्षक कविता से अवतरित है।

प्रसंग—इन पंक्तियों में कवि ने किन्नर—किन्नरियों पर पड़ने वाले बादलों के मादक प्रभाव का वर्णन करते हुए आज के सम्पन्न वर्ग की विलासिता पर व्यंग्य किया है।

व्याख्या—कवि का कहना है कि आकाश में बादलों के छा जाने से उस किन्नर प्रदेश की शोभा अपूर्व हो जाती है। उस समय सैकडों छोटे—बड़े झरने अपनी कल—कल ध्वनि से देवदारू के वनों को गुंजित कर देते हैं। इन देवदारू के वनों में लाल और श्वेत भोज—पत्रों से छायी हुई कुटी के अन्दर किन्नर और किन्नरियों के जोड़े विलासमय क्रीडा में मग्न हो जाते हैं। वे (किन्नरों के जोडे) अनेक प्रकार के रंगों वाले सुगन्धित फूलों से अपने बालों को सजाये रखते हैं। वे अपने शंख के समान सुन्दर और सुडौल गले में इन्द्रनीलमणि की बनी माला डाले रखते हैं। उनके कानों में नीलकमलों के कर्णफूल सुशोभित रहते हैं। उनकी चोटियों में सौ पंखुडियों वाले लाल कमल के फूल गुँथे रहते हैं।

किन्नर—किन्नरियों में मदिरापान करने के पात्र चाँदी के बने हुए होते हैं तथा उनमें कलात्मक ढंग से मणियाँ जुड़ी रहती हैं। वे मदिरापान के पात्रों को अंगूरों से बनी शराब से भरकर अपने—अपने सामने लाल चन्दन से बनी तिपाई पर रख लेते हैं। वे कोमल, दागरहित, स्वच्छ बालों वाली कस्तूरी मृग की छाला को बिछाकर पालथी मारकर बैठ जाते हैं। तत्पश्चात् वे मदिरापान करते हैं। मदिरापान के कारण उनकी आँखें लाल हो जाती हैं। इसके बाद मदिरा से मदमस्त होकर वे अपनी कोमल और सुन्दर अंगुलियों को बाँसुरी पर फिराते हुए मधुर संगीत की तान छेड़ देते हैं। बादलों के घिरने पर किन्नर—किन्नरियों की इन विलासमयी क्रीडाओं को मैंने प्रत्यक्ष देखा है।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) कवि ने अमीरी की विलासिता का यथार्थ चित्र अंकित किया है। (2) **भाषा**—संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली (3) **शैली**—वर्णनात्मक और विचारात्मक (4) **रस**—शृंगार (5) **छन्द**—तुकान्त—मुक्त (6) **गुण**—माधुर्य (7) **शब्द- शक्ति**—लक्षणा और व्यंजना (8) **अलंकार**—उपमा, पुनरुक्तिप्रकाश तथा अनुप्रास।

काव्य सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

प्रश्न 1. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए–

(क) छोटे-छोटे मोती जैसे अतिशय शीतल वारि कणों को,
मानसरोवर के उन स्वर्णिम कमलों पर गिरते देखा है।

उत्तर—(1) हिमालय की सुन्दरता का मोहक दृश्य प्रस्तुत किया गया है। (2) **भाषा**—तत्सम शब्दावली प्रधान सरल खड़ीबोली। (3) **शैली**—लयात्मकतायुक्त प्रवाहपूर्ण (4) **रस**—श्रृंगार (5) **शब्द-शक्ति**—व्यंजना (6) **गुण**—माधुर्य (7) **अलंकार**—'छोटे–छोटे', आ–आकर में पुनरुक्तिप्रकाश, 'छोटे–छोटे मोती जैसे' में उपमा तथा 'स्वर्णिम–कमलों' में रूपक अलंकार है।

(ख) महामेघ को झंझानिल से गरज-गरज भिड़ते देखा है।

उत्तर—(1) बादल और झंझावत के संघर्ष से स्पष्ट है कि अस्तित्व की रक्षा के लिए असमर्थ भी समर्थ से संघर्षरत हो सकता है। (2) **भाषा**—सरल–सहज खड़ीबोली। (3) **शैली**—प्रतीकात्मक और प्रवाहपूर्ण (4) **रस**—शान्त (5) **गुण**—प्रसाद (6) **छन्द**—तुकान्त–मुक्त (7) **शब्द- शक्ति**—लक्षणा एवं व्यंजना (8) **अलंकार**—अनुप्रास एवं पुनरुक्तिप्रकाश।

(ग) रजत-रचित मणि-खचित कलामय
पान-पात्र द्राक्षासन पूरित।

उत्तर—(1) कवि ने अमीरों की विलासिता का यथार्थ चित्र अंकित किया है। (2) **भाषा**—संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली **(3) शैली**—वर्णनात्मक और विचारात्मक (4) **रस**—श्रृंगार (5) **छन्द**—तुकान्त–मुक्त (6) **गुण**—माधुर्य (7) **शब्द-शक्ति** लक्षणा और व्यंजना (8) **अलंकार**—अनुप्रास।

प्रश्न 2. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकारों के नाम लिखिए तथा उनका स्पष्टीकरण भी दीजिए–

शोणित धवल भोजपत्रों से छाई हुई कुटी के भीतर
रंग-बिरंगे और सुगन्धित फूलों से कुन्तल को साजे
इन्द्रनील की माला डाले शंख सरीखे सुघर गले में

उत्तर—शंख सरीखे सुधर गले में उपमा तथा अनुप्रास का मोहक प्रयोग।

प्रश्न 3. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त रसों को पहचानकर उनके स्थायी भाव लिखिए–

(क) शैवालों की हरी दरी पर, प्रणय-कलह छिड़ते देखा है।

उत्तर—**रस**–श्रृंगार, **स्थायी भाव**–रति।

(ख) नरम नदाग बाल कस्तूरी–
मृगछालों पर पल्थी मारे
मदिरारूण आँखों वाले उन,
उन्मद किन्नर किन्नरियों की
मृदुल मनोरम अंगुलियों को वंशी पर फिरते देखा है।

उत्तर—**रस**–श्रृंगार, **स्थायी भाव**–रति।

प्रश्न 4. निम्नलिखित शब्दों में सविग्रह समास-नाम लिखिए–

उत्तर—

शब्द	समास-विग्रह	समास-नाम
महामेघ	महान मेघ	कर्मधारय
शतदल	सौ पंखुडियों का समूह	द्विगु
प्रणय–कलह	प्रणय की क्रीडा	षष्ठी तत्पुरूष
धनपति	धन का पति अर्थात् स्वामी	षष्ठी तत्पुरूष
त्रिपदी	तीन पदों का समाहार	द्विगु

प्रश्न 5. निम्नलिखित पदों से उपसर्ग और प्रत्ययों को अलग-अलग करके मूलशब्द के साथ लिखिए–

उत्तर—

शब्द	मूलशब्द	उपसर्ग	प्रत्यय
अभिशापित	शापित	अभि	—
मुखरित	मुख	—	रित
उन्मुक्त	मुक्त	उन	—
स्वर्णिम	स्वर्ण	—	णिम
वियुक्त	युक्त	वि	—

❑

11

अच्छा होता

(केदारनाथ अग्रवाल)

परीक्षापयोगी प्रश्न

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. कवि केदारनाथ अग्रवाल का जीवन-परिचय संक्षेप में लिखिए।

उत्तर—कवि केदारनाथ अग्रवाल का जन्म 1 अप्रैल, 1911 को कमासिन जनपद बाँदा, उत्तर प्रदेश में हुआ था। इन्होंने निबन्ध, उपन्यास, यात्रा–वृत्तान्त, पत्र–साहित्य आदि विधाओं में रचना की। इनका देहावसान 22 जून 2000 ई० को हुआ।

प्रश्न 2. श्री अग्रवाल जी की प्रमुख रचनाओं का नामोल्लेख कीजिए।

उत्तर—'हे मेरी तुम', 'युग की गंगा', 'नींद के बादल', 'लोक और आलोक', 'फूल नहीं रंग बोलते हैं', 'पंख और पतवार', 'और मार प्यार की थापें', 'अपूर्वा', बोले बोल अबोल', 'अनहारी हरियाली', 'पुष्पदीप' इनकी प्रमुख कृतिया हैं।

प्रश्न 3. श्री केदारनाथ अग्रवाल की काव्यगत विशेषताओं का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

उत्तर—केदारनाथ अग्रवाल जी की कविताएँ व्यापक जीवन संदर्भों के साथ ही मनुष्य की सौन्दर्य चेतना से जुड़ती हैं। अपने रचनात्मक विस्तार में जगह–जगह प्रगतिवाद के प्रचलित मुहावरो का निषेध करते हुए केदारनाथ अग्रवाल जी नये ढंग की प्रगतिशील कविताएँ गढ़ते हैं।

प्रश्न 4. केदारनाथ अग्रवाल किस काल के कवि हैं?

उत्तर—केदारनाथ अग्रवाल आधुनिक (समकालीन) काल के कवि हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. कवि किन गुणों वाले आदमी को अच्छा मानता है? संक्षेप में लिखिए।

उत्तर—कवि का कहना है कि यदि आदमी स्वार्थी न होकर परमार्थ की भावना लिए हुए होता और बिना स्वार्थ के दूसरों के लिए कार्य करता तो कितना अच्छा होता। कवि कहता है कि जो व्यक्ति उदार होते हैं, आवश्यकता पड़ने पर दूसरो की मदद करते हैं, वो बहुत ही अच्छे होते हैं। कवि का मानना है कि जो व्यक्ति किसी की धरोहर की रक्षा करते हैं, किसी को धोखा नहीं देते हैं, ईमानदार होते है और आतंकवाद तथा अभिमान से दूर रहते हैं, वे मनुष्य अच्छे होते हैं।

प्रश्न 2. 'स्वार्थ का चहबच्चा' का भाव क्या है?

उत्तर—'स्वार्थ का चहबच्चा' का भाव है कि स्वार्थ का खजाना। एक मुनष्य ही है जो सब कुछ जानते—समझते हुए भी परार्थी नहीं होना चाहता। परार्थी होने के लिए व्यक्ति को ईमानदार और ईरादों का पक्का होना चाहिए। यदि ऐसा नहीं है तो हम परार्थी हो ही नहीं सकते अर्थात् मुनष्य में स्वार्थ का चहबच्चा नहीं होना चाहिए।

प्रश्न 3. आग के ओठ कैसे बोल बोलते हैं?

उत्तर—कवि का कहना है कि आग के ओठ सितार के बोल बोलते हैं, जिससे शहद की पंखुडियाँ खुलती चली जाती हैं। कवि का आशय है कि आजकल लोगों के मन में दूसरों के प्रति अनेक प्रकार की कटुता भरी हुई है, लेकिन जब वे बोलते हैं तो उसके मुख से मधुर स्वर—लहरियाँ ही निकलती हैं।

प्रश्न 4. रात्रि में आयोजित संगीत-समारोहों में क्या होता है?

उत्तर—रात्रि में आयोजित संगीत—समारोहों में एक—के—बाद एक राग उत्पन्न हो रहे हैं। चारों ओर चन्द्रमा की श्वेत चाँदनी फैली हुई है और युवाओं के मन में एक—के—बाद एक इच्छाएँ उत्पन्न होती जा रही हैं। संगीत के इस समारोह में चतुर्दिक युवा और उनका यौवन ही दृष्टिगोचर हो रहा है। युवाओं का मन—मयूर चन्द्रमा की धवल चन्द्रिका में नृत्य करता दीख रहा है।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. कवि केदारनाथ अग्रवाल का जीवन-परिचय लिखिए तथा इनके कृतित्व (रचनाओं) पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—हिन्दी काव्य के प्रमुख हस्ताक्षर तथा बहुमुखी प्रतिभा के धनी केदारनाथ अग्रवाल का जन्म 1 अप्रैल 1911 को कमासिन जनपद बाँदा, उत्तर प्रदेश में हुआ था। इन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातक तथा डी० ए० वी० कॉलेज कानपुर से एल० एल० बी० की उपाधि प्राप्त की। इन्होंने सन् 1930 से ही लेखन—कार्य प्रारम्भ कर दिया था। सन् 1989 में इन्हें हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वारा 'साहित्य वाचस्पति' तथा सन् 1995 में बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय द्वारा डी० लिट्० की मानद उपाधि प्रदान की गयी। इनकी साहित्यिक उपलब्धियों का सम्मान करते हुए इन्हें विभिन्न संस्थाओं द्वारा विभिन्न पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया। इनमें सन् 1986 में 'साहित्य अकादमी' सम्मान, मध्यप्रदेश साहित्य परिषद, भोपाल का सन् 1986 में 'तुलसी' सम्मान तथा सन् 1990 में 'मैथिलीशरण गुप्त' सम्मान प्रमुख हैं। इनका देहावसान 22 जून, 2000 ई० को हुआ।

काव्य-कृतियाँ—इन्होंने निबन्ध, उपन्यास, यात्रा—वृत्तान्त, पत्र—साहित्य आदि विधाओं में रचना की। इनके कुल 24 काव्य—संग्रह हैं, जिनमें प्रमुख हैं—'युग की गंगा', 'नींद के बादल', 'लोक और आलोक', 'आग का आईना', 'देश—देश की कविताएँ', 'अनुवाद', 'गुल मेंहदी', 'कहे केदार खरी—खरी', 'बम्बई का रक्त स्नान', 'जो शिलाएँ तोड़ते हैं', 'जमुन जल—तुम', 'आत्मगन्ध', 'वसन्त में हुई प्रसन्न पृथ्वी', 'चेता नैया खेता', फूल नहीं रंग बोलते हैं', 'पंख और पतवार', 'हे मेरी तुम', 'अपूर्वा', 'पुष्पदीप' आदि। इनके अतिरिक्त इनके द्वारा रचित तीन निबन्ध—संग्रह, दो यात्रा—वृत्तान्त, एक पत्र-साहित्य तथा एक अनूदित ग्रन्थ भी है।

साहित्य में स्थान—केदारनाथ अग्रवाल जी सदैव संघर्ष चेतना के चितेरे रहे हैं। अपने रचनात्मक विस्तार में जगह—जगह प्रगतिवाद के प्रचलित मुहावरों का निषेध करते हुए केदारनाथ अग्रवाल जी नये ढंग की प्रगतिशीलता गढ़ते हैं, जिसकी आस्था मनुष्य और जीवन में है। जनता के श्रम, सौन्दर्य एवं जीवन की विविधता का वर्णन करने वाले श्री अग्रवाल जी हिन्दी प्रगतिवादी कविता का एक अलग ही चेहरा हैं।

प्रश्न 2. निम्नलिखित पद्य-खण्डों की सन्दर्भ सहित व्याख्या लिखते हुए इनके काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए–

अच्छा होता

(क) अच्छा होता
अगर आदमी
आदमी के लिए
परार्थी–
पक्का–
और नियति का सच्चा होता
न स्वार्थ का चहबच्चा–
न दगैल–दागी–
न चरित्र का कच्चा होता।

उत्तर—**सन्दर्भ**—प्रस्तुत काव्य—पंक्तियाँ हमारी पाठ्य—पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य—खण्ड' के 'अच्छा होता' शीर्षक कविता से उद्धृत हैं। इसके रचयिता श्री केदारनाथ अग्रवाल जी हैं।

प्रसंग—प्रस्तुत कविता—पंक्तियों में कवि 'मनुष्य को मनुष्य के लिए कैसा होना चाहिए' इस पर प्रकाश डाल रहे हैं।

व्याख्या—श्री केदारनाथ अग्रवाल जी का कहना है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और वह समाज में रहता भी है। कितना अच्छा होता कि वह स्वार्थी न होकर परमार्थ की भावना लिये हुए होता और परमार्थ के लिए कार्य करता, स्वार्थ उसे छूता तक नहीं। लेकिन वह स्वार्थी है। वृक्ष, नदी, सूर्य आदि को देखिए, दूसरों को सुख प्रदान करना ही इनका उद्देश्य है। परार्थी होने के लिए व्यक्ति को ईमानदार और इरादों का पक्का होना चाहिए। यदि ऐसा नहीं है तो हम परार्थी हो ही नहीं सकते। परार्थ के अभाव में हमारे अन्त:करण में स्वार्थ की भावना जन्म लेने लगेगी। यदि हम स्वार्थ में आकण्ठ डूब जाएँगे तो समाज हमें कुत्सित दृष्टि से देखेगा, हमें अपराधी समझेगा और हमारी ओर अँगुली उठाएगा। अत: व्यक्ति को परार्थी होना चाहिए और प्रत्येक कार्य परमार्थ की भावना से करना चाहिए।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) स्वार्थ का परित्याग कर मानवता की भावना से कार्य करने की प्रेरणा दी गयी है। (2) **भाषा**—खड़ीबोली (3) **रस** —शान्त (4) **छन्द**—मुक्त (5) **अलंकार**—अनुप्रास (6) **शैली** —विवेचनात्मक (7) **गुण** —प्रसाद (8) **शब्द-शक्ति**—अभिधा एवं लक्षणा।

(ख) अच्छा होता

अगर आदमी
आदमी के लिए
दिलदार–
दिलेर–
और हृदय की थाती होता,
न ईमान का घाती–
ठगैत ठाकुर
न मौत का बराती होता।

सन्दर्भ व प्रसंग—पूर्ववत्।

उत्तर—**व्याख्या**—कवि श्री केदारनाथ अग्रवाल जी कहते हैं कि कितना अच्छा होता यदि व्यक्ति स्वार्थी न होकर परार्थी होता। यदि व्यक्ति उदार होता; अर्थात आवश्यकता पड़ने पर दूसरों की मदद करने वाला होता; हिम्मती होता तो बहुत ही अच्छा होता। बहुत अच्छा होता यदि वह किसी की धरोहर की रक्षा करने वाला होता, किसी के साथ धोखा न करने वाला होता। पुन: कवि कहता है कि व्यक्ति यदि किसी की ईमानदारी पर चोट करने वाला, ठग, जातिवाद के मिथ्या अभिमान से ग्रसित, आतंकवादी न होता तो बहुत अच्छा होता।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) कवि चाहता है कि सभी व्यक्ति स्वयं में मानवीय गुण को विकसित करें। (2) **भाषा**—लोकभाषा के शब्दो से युक्त खड़ीबोली। (3) **शैली**—विवेचनात्मक (4) **रस**—शान्त (5) **छन्द**—मुक्त (6) **अलंकार**—अनुप्रास (7) **गुण**—प्रसाद (8) **शब्द-शक्ति**—अभिधा एवं लक्षणा।

सितार-संगीत की रात

(क) आग के ओठ बोलते हैं
सितार के बोल,
खुलती चली जाती हैं
शहद की पंखुरियाँ,
चूमती अँगुलियों के नृत्य पर,
राग-पर-राग करते हैं किलोल।

उत्तर—**सन्दर्भ**—प्रस्तुत काव्य–पंक्तियाँ हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी' के 'काव्य–खण्ड' के 'सितार–संगीत की रात' शीर्षक कविता से उद्धृत है। इसके रचयिता श्री केदारनाथ अग्रवाल जी हैं।

प्रसंग—प्रस्तुत कविता–पंक्तियों में कवि व्यक्तियों के विभिन्न मनोभावों का वर्णन कर रहा है।

व्याख्या—श्री केदारनाथ अग्रवाल जी कहते हैं कि आग के ओठ सितार के बोल बोलते है, जिससे शहद की पंखुड़ियाँ खुलती चली जाती हैं। कवि का आशय है कि आजकल लोगों के मन में दूसरों के प्रति अनेक प्रकार की कटुता भरी हुई है, लेकिन जब वे बोलते हैं तो उसके मुख से मधुर स्वर–लहरियाँ ही निकलती है। इससे सम्मुख व्यक्ति को यह आभास ही नहीं हो पाता कि इसके मन में कितनी कटुता भरी है। वह विभिन्न प्रकार के हाव–भाव प्रदर्शित करता हुआ अपने मन के भावों को हर्ष से प्रकट करता रहता है। कवि का आशय है कि व्यक्ति प्रकट रूप में जो दिखता है, वास्तविक रूप में वैसा नहीं होता।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) कवि ने व्यक्तियों के प्रत्यक्ष और आन्तरिक भावों के अन्तर को सहजता से प्रकट किया है। (2) **भाषा**—तद्भव शब्दों से युक्त खड़ीबोली (3) **शैली**—विवेचनात्मक (4) **रस**—शान्त (5) **छन्द**— मुक्त (6) **अलंकार**—अनुप्रास और विरोधाभास (7) **शब्द-शक्ति**—लक्षणा और व्यंजना।

(ख) रात के खुले वक्ष पर,
चन्द्रमा के साथ,
शताब्दियाँ झाँकती हैं
अनंत की खिड़कियों से,
संगीत के समारोह में कौमार्य बरसता है,
हर्ष का हंस दूध पर तैरता है,
जिस पर सवार भूमि की सरस्वती
काव्य-लोक में विचरण करती है।

उत्तर—**सन्दर्भ एवं प्रसंग**—पूर्ववत्।

व्याख्या—श्री केदारनाथ अग्रवाल जी का कहना है कि सितार का स्पर्श करती अँगुलियाँ नृत्य करती प्रतीत हो रही हैं और उनके इस क्रियाकलाप से एक के बाद एक राग उत्पन्न हो रहे हैं। चारों ओर चन्द्रमा की श्वेत चाँदनी फैली हुई है और युवाओं के मन में एक–के–बाद एक इच्छाएँ उत्पन्न होती जा रही हैं, जिनका अन्त कहीं भी दिखाई नहीं दे रहा है। संगीत के इस समारोह में चतुर्दिक युवा और उनका यौवन ही दृष्टिगोचर हो रहा है। चारों ओर प्रसन्नता का वातावरण है। युवाओं का मन मयूर चन्द्रमा की धवल चन्द्रिका में नृत्य करता दीख रहा है। इस सम्पूर्ण दृश्य को देखती हुई कवि की वाणीरूपी सरस्वती काव्य–लोक में विचरण करने लगती हैं।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) संगीत समारोहों में युवाओं की भागीदारी को अंकित किया गया है। (2) **भाषा**—तत्सम शब्दों से युक्त खड़ीबोली (3) **शैली**—विवेचनात्मक (4) **रस**—शृंगार (5) **छन्द**—मुक्त (6) **अलंकार** —अनुप्रास (7) **गुण**—प्रसाद (8) **शब्द-शक्ति**—लक्षणा और व्यंजना।

काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

प्रश्न 1. निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकारों के नाम लिखिए तथा उनका स्पष्टीकरण देते हुए रसों को पहचानकर उनके स्थायी भाव भी लिखिए–

(क) न स्वार्थ का चहबच्चा–
न दगैल-दागी–
न चरित्र का कच्चा होता।

उत्तर—'दगैल–दागी' और 'चरित्र का कच्चा' में क्रमश: 'द' और 'च' वर्षों की आवृत्ति के कारण अनुप्रास अलंकार है।

रस—शान्त, **स्थायी भाव**—निर्वेद।

(ख) शताब्दियाँ झाँकती हैं
अनंत की खिड़कियों से,
संगीत के समारोह में कौमार्य बरसता है।

उत्तर—प्रथम पंक्ति में 'त' वर्ण, द्वितीय पंक्ति में 'क' वर्ण और तृतीय पंक्ति में 'स', 'त', 'क' और 'म' वर्णों की आवृत्ति के कारण अनुप्रास अलंकार है।

रस—शृंगार, **स्थायी भाव**—रति।

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों के अर्थों को स्पष्ट रूप से लिखिए और स्वनिर्मित वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

उत्तर—स्वार्थ का चहबच्चा (स्वार्थ का खजाना)—स्वार्थी व्यक्ति सदैव स्वार्थ के चहबच्चे को प्राप्त करने के लिए तत्पर रहते हैं।

दगैल-दागी (अपराधी प्रवृत्तियों वाले व्यक्ति)—समाज में कभी भी दगैल—दागी व्यक्तियों को सम्मान प्राप्त नहीं होता।

हृदय की थाती (हृदय की धरोहर)—सत्यनिष्ठा, कर्तव्यनिष्ठा और ईमानदारी को सदैव हृदय की थाती मान संजोकर रखना चाहिए।

मौत का बाराती (मृत्यु पर प्रसन्न होने वाला, आतंकवादी)—भारत में आजकल मौत के बारातियों की संख्या बढ़ती जा रही है।

❑

12

युगवाणी

(शिवमंगल सिंह 'सुमन')

परीक्षापयोगी प्रश्न

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. कवि शिवमंगल सिंह 'सुमन' का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उत्तर—कवि शिवमंगल सिंह 'सुमन' का जन्म 5 अगस्त, 1995 में बसन्तपंचमी के दिन उत्तर प्रदेश के जिला उन्नाव के झगरपुर नामक गाँव में हुआ था।

प्रश्न 2. शिवमंगल सिंह 'सुमन' की कृतियों का उल्लेख करते हुए उनके साहित्यिक अवदान पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—कवि शिवमंगल सिंह की कृतियों में हिल्लोल इनके प्रेमगीतों का प्रथम काव्य-संग्रह है। इसमें हृदय की कोमल भावनाओं का चित्रण किया गया है। जीवन के गान, युग का मोल, प्रलय सृजन, विश्वास बढ़ता ही गया, विन्ध्य हिमालय, मिट्टी की बारात, वाणी की व्यथा एवं कटे अँगूठों की वदनवारें इनके अन्य काव्य-संग्रह की कृतियाँ हैं। इनकी संकलित कविता युगवाणी में जीवन की वास्तविकताओं का चित्रण किया गया है।

प्रश्न 3. कवि शिवमंगल सिंह 'सुमन' की भाषा एवं भाव-सौन्दर्य का परिचय दीजिए।

उत्तर—कवि शिवमंगल सिंह सुमन की भाषा प्रांजलता, कोमलता और लालित्य से परिपूर्ण है। इनके गीतों में मस्ती, उल्लास और संगीतात्मकता की प्रचुरता है।

प्रश्न 4. पठित पाठ के आधार पर कवि शिवमंगल सिंह 'सुमन' के काव्य की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर—कवि शिवमंगल सिंह 'सुमन' की काव्य की विशेषताएँ इस प्रकार हैं। कवि शिवमंगल सिंह 'सुमन' ने महादेवी की काव्य-साधना, गीति काव्य उद्‌गम का विकास आदि काव्य-रचनाएँ की। इन्होंने प्रकृति पुरुष कालिदास नामक एक नाटक की भी रचना की है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. 'युगवाणी' कविता किस काव्य-संग्रह से उद्‌धृत है?

उत्तर—युगवाणी हिल्लोल काव्य-संग्रह से उदधृत है।

प्रश्न 2. कवि 'युगवाणी' कविता में क्या सन्देश देना चाहता है?

उत्तर—युगवाणी कविता का मुख्य विषय प्रेम रहा, किन्तु देश की तत्कालीन परिस्थितियों के अनुरूप स्वतन्त्र्य की भावना, मानवीय कर्त्तव्यों देशप्रेम एव शोषण से कराहती मानवता ने इनके मन को तथा प्रेम की कविता के स्थान पर राष्ट्र प्रेम इनकी कविता का सन्देश है।

प्रश्न 3. 'युगवाणी' में 'इनको भूलूँ तो मेरी मिट्‌टी मिट्‌टी है', इस पंक्ति से कवि ने किसे भूलने की बात कही है और अपने को क्यों धिक्कारा है?

उत्तर—युगवाणी में इनकी 'भूँलू तो मेरी मिट्‌टी है' इस पंक्ति से कवि ने देश प्रेम को भूलने की बात कही और अपने को धिक्कारा है।

प्रश्न 4. 'युगवाणी' शीर्षक कविता में कवि ने जीवन की जिन वास्तविकताओं का वर्णन किया है और जो चेतावनियाँ दी हैं, उन्हें लिखिए।

उत्तर—युगवाणी शीर्षक कविता में कवि ने कहा है कि इतिहास भी तुमकों माफ नहीं करेगा याद रखना तुम्हारी गलतियों से नयी पीढ़ियाँ पछताएगी। उन्होंने कहा जो तुमहारी चेहरे की चमक है। इस पर कालिख पुत जाएगी। शिवमंगल सिंह सुमन ने चेतावनी देकर कहा सदियों में क्या ऐसी घड़िया आएँगी।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. कवि शिवमंगल सिंह 'सुमन' का जीवन-परिचय देते हुए उनकी काव्य-कृतियों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—प्रश्न **1. कवि शिवमंगल सिंह 'सुमन' का जीवन-परिचय देते हुए उनकी काव्य-कृतियों पर प्रकाश डालिए।**

उत्तर—डॉ० शिवमंगल सिंह 'सुमन' का जन्म उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले में 5 अगस्त, 1915 ई० को हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा भी वहीं हुई। ग्वालियर के विक्टोरिया कॉलेज से बी०ए० और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से एम०ए० तथा डी० लिट्० की उपाधियाँ प्राप्त कर ग्वालियर, इन्दौर और उज्जैन में उन्होंने अध्यापन कार्य किया।

शिवमंगल सिंह 'सुमन' का कार्यक्षेत्र अधिकांशत: शिक्षा जगत से सम्बद्ध रहा। वे ग्वालियर के विक्टोरिया कॉलेज में हिन्दी के व्याख्याता, माधव महाविद्यालय उज्जैन के प्राचार्य और फिर कुलपति रहे। अध्यापन के अतिरिक्त विभिन्न महत्त्वपूर्ण संस्थाओं और प्रतिष्ठानों से जुड़कर उन्होंने हिन्दी साहित्य में श्रीवृद्धि की। सुमन जी प्रिय अध्यापक, कुशल प्रशासक, प्रखर चिन्तक और विचारक भी थे। वे साहित्य को बोझ नहीं बनाते, अपनी सहजता में गम्भीरता को छिपाए रखते। वह साहित्य प्रेमियों में ही नहीं अपितु सामान्य लोगों में भी बहुत लोकप्रिय थे। शहर में किसी अज्ञात-अजनबी व्यक्ति के लिए रिक्शे वाले को यह बताना काफी था कि सुमन जी के घर जाना है। रिक्शा वाला बिना किसी पूछताछ किए आगंतुक को उनके घर तक छोड़ आता। एक बार सुमन जी कानपुर के एक महाविद्यालय में किसी कार्यक्रम में आए। कार्यक्रम की समाप्ति पर कुछ पत्रकारों ने उन्हें घर बुला लिया। आयोजकों में से किसी ने कहा—सुमन जी थके हैं। इस पर सुमन जी तपाक से बोले, ''नहीं मैं थका नहीं हूँ। पत्रकार तत्कालिक साहित्य के निर्माता हैं। उनसे दो चार पल बात करना अच्छा लगता है। डॉ० शिवमंगल

सिंह 'सुमन' के जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण क्षण वह था जब उनकी आँखों पर पट्टी बाँधकर उन्हें एक अज्ञात स्थान पर ले जाया गया। जब आँख की पट्टी खोली गई तो वे हतप्रभ थे। उनके समक्ष स्वतन्त्रता संग्राम के महायोद्धा चन्द्रशेखर आजाद खड़े थे। आजाद ने उनसे प्रश्न किया था, ''क्या वह रिवाल्वर दिल्ली ले जा सकते हो।'' सुमन जी ने बेहिचक प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। आजादी के दीवानों के लिए काम करने के आरोप में उनके विरुद्ध वारण्ट जारी हुआ। सरल स्वभाव के सुमन जी सदैव अपने प्रशंसकों से कहा करते थे, ''मैं विद्वान नहीं बन पाया। विद्वता की देहरी भर छू पाया हूँ। प्राध्यापक होने के साथ प्रशासनिक कार्यों के दबाव ने मुझे विद्वान बनने से रोक दिया।''

जिन्होंने सुमनजी को सुना है वे जानते हैं कि 'सरस्वती' कैसे बहती है। सरस्वती की गुप्त धारा का वाणी में दिग्दर्शन कैसा होता है। जब वे बोलते थे तो तथ्य, उदाहरण, परम्परा, इतिहास, साहित्य, वर्तमान का इतना जीवन्त चित्रण होता था कि श्रोता अपने अन्दर आनन्द की अनुभूति करते हुए 'ज्ञान' और ज्ञान की 'विमलता' से भरापूरा महसूस करता था। वह अंदर ही अंदर गूँजता रहता था और अनेकानेक अर्थों की 'पोटली' खोलता था। सुमनजी जैसा समृद्ध वक्ता मिलना कठिन है। सुमनजी जितने ऊँचे, पूरे, भव्य व्यक्तित्व के धनी थे, ज्ञान और कविकर्म में भी वे शिखर पुरुष थे। उनकी ऊँचाई स्वयं की ही नहीं वे अपने आसपास के हर व्यक्ति में ऊँचाइयों, अच्छेपन का, रचनात्मकता का अहसास जगाते थे। उनकी विद्वता आक्रांत नहीं करती थी। उनकी विद्वता, प्रशिक्षित करते हुए दूसरों में छुपी ज्ञान, रचना, गुणों की खदान से सोने की सिल्लियाँ भी निकालकर बताते थे कि 'भई खजाना तो तुम्हारे पास भरा पड़ा है'। कभी-कभी उनके बारे में कहा जाता था कि सुमनजी तारीफ करने में अति कर जाते थे। जबकि वे तारीफ की अति नहीं वरन् उस छुपी हुई रचना समृद्धि की तरफ इशारा करते थे जो आँखों में छुपी होती थी। वे किसी को 'बौना' सिद्ध नहीं करते, उन्होंने सदा सकारात्मकता के हर व्यक्ति, स्थान, लोगों, रचना को देखा। वे मूलत: इंसानी प्रेम, सौहार्द के रचनाकर्मी रहे। वे छोटी-छोटी ईंटों से भव्य इमारत बनाते थे। भव्य इमारत के टुकड़े नहीं करते थे। सामाजिक निर्माण की उनकी गति सकारात्मक, सृजनात्मक ही रही। फिर एक बात है तारीफ या प्रशंसा करने के लिए बेहद बड़ा दिल चाहिए, वह सुमनजी में था। वे प्रगतिशील कवि थे। वे वामपंथी थे। लेकिन 'वाद' को 'गठरी' लिए बोझ नहीं बनने दिया। उसे ढोया नहीं, वरन् अपनी जनवादी, जनकल्याण, प्रेम, इंसानी जुड़ाव, रचनात्मक विद्रोह, सृजन से 'वाद' को खंगालते रहे, इसीलिए वे 'जनकवि' हुए वर्ना 'वाद' की बहस और स्थापनाओं में कविकर्म, उनका मानस, कर्म कहीं क्षतिग्रस्त हो गया होता।

हिन्दी कविता की वाचिक परम्परा आपकी लोकप्रियता की साक्षी है। देशभर के काव्य-प्रेमियों को अपने गीतों की रवानी से अचम्भित कर देने वाले सुमनजी 27 नवम्बर, 2002 को मौन हो गए। 'सुमन' चाहे कितना ही भौतिक हो, चाक्षुक आनन्द देता है लेकिन वह निरन्तर गन्ध में परिवर्तित होते हुए स्मृतियों में समाता है। सुमन अब 'गद्य' में है, स्मृतियों में जीवित है। सुमनजी को जिसने भी देखा, सुना है वो अपनी चर्चाओं में, उदाहरण में कभी भी अपनी रचना नहीं सुनाते थे। वे हर अच्छी रचना और हर अच्छे प्रयास के प्रशंसक रहे। अन्य कवियों, लेखकों की रचनाओं की अद्‌भुत स्मृतियाँ उनमें जैसे ठसाठस भरी थीं।

प्रस्तुत कविता 'युगवाणी' के माध्यम से कवि शिवमंगल सिंह 'सुमन' जी हमें यह सन्देश दे रहे हैं कि यह सम्पूर्ण सृष्टि, जो हमारे जीवन को सुख-शान्ति और आँखों को शीतलता प्रदान कर रही है, हमारे महापुरुषों के अमिट त्याग की गाथा का गौरव गान कर रही है। इसे हम कभी नहीं भुला सकते। अब, हमें आगे बढ़ना होगा और समय के साथ ताल-से-ताल मिलाकर प्रगति के पथ पर चलना होगा। क्योंकि जीवन के इस नवल विहान में धरती और स्वर्ग को एक करने के लिए साक्षात् गायत्री का आह्वान हुआ है।

प्रश्न 1. निम्नलिखित पद्य-खण्डों की सन्दर्भ-सहित व्याख्या लिखते हुए इनके काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए–

(क) हर क्यारी में पद-चिह्न तुम्हारे देखे हैं
हर डाली में मुस्कान तुम्हारी पाई है,
काँटे में दुख-दर्द किसी का कसका है
शबनम ने जीवन की प्यास जगाई है।
हर सरिता की लचकीली लहरें डसती हैं
हर अंकुर की आँखों में कोर समाती है,
हर किसलय में अधरों की आभा खिलती है
हर कली हवा में मचल-मचल इठलाती है।

शब्दार्थ—[कसका है = पीड़ा व्यक्त हुई है। **शबनम** = ओस। **किसलय** = नई फूटी लाल-लाल पत्तियाँ। **अधरों** = निचले होंठों। **आभा** = चमक, तेज।**]**

सन्दर्भ—प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक के **काव्य-खण्ड** में छायावादी एवं प्रगतिवादी कवित **शिवमंगल सिंह 'सुमन'** द्वारा रचित **'विन्ध्य हिमालय'** काव्य-संग्रह से संकलित **'युगवाणी'** कविता से उद्‌धृत है।

प्रसंग—कवि सामान्य रूप से श्रमिक एवं कृषकवर्ग को सम्बोधित करते हुए जीवन में इनकी महत्ता को व्यक्त कर रहा है।

व्याख्या—कवि श्रमिक एवं कृषकवर्ग को सम्बोधित करते हुए कहता है कि मैंने क्यारी-क्यारी में तुम्हारे ही पद-चिह्नों के दर्शन किए हैं। तुमने परिश्रमपूर्वक जो क्यारियाँ बोई थीं, उन पर बढ़ती हुई फसल में आज भी तुम्हारे श्रमशील कदम झाँकते दिखाई दे रहे हैं। ये डालियाँ, जो नए-नए पल्लवों से भर गई हैं, लगता है उन्हें तुम्हारी मुसकान मिल गई है। विकास का यही नियम है, जगह-जगह मुसकान बिखर जाती है। प्रत्येक काँटे का व्यक्तित्व भी बड़ा विचित्र होता है। इसमें किसी-न-किसी का दु:ख-दर्द कसकता ही है। जब मैं ओस की बूँदों को देखता हूँ, तो जीवन में एक प्यास जग जाती है, ओस की एक बूँद भी पानी की याद दिला देती है।

नदी की उठती-बहती लचकदार प्रत्येक लहर मन को डस लेती है, अर्थात् मन पर अपना प्रभाव छोड़ती है। जो भी नया अंकुर फूटता है, वह भविष्य में आनेवाली अपनी कलियों को अपने में समाहित किए रखता है। अंकुर की आँख विकास का ही प्रारूप है। प्रत्येक किसलय में, प्रत्येक पल्लव में जो लाली दिखाई देती है, वह और कुछ नहीं, तुम्हारे अधरों की लाली ही प्रतीत होती है। कलियों की अपनी आदत है, हवा बहती है और वे इठला-इठला उठती हैं।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) कवि ने समाज की प्रगतिशीलता में श्रमिक-कृषकवर्ग के योगदान के महत्त्व को रेखांकित करते हुए यह भी स्पष्ट किया है कि इस वर्ग की मुसकान और खुशहाली में सम्पूर्ण समाज और देश की खुशहाली निहित है। (2) **भाषा**—सरल खड़ीबोली। (3) **शैली** —प्रतीकात्मक, गीत। (4) **शब्दशक्ति**—लक्षणा। (5) **अलंकार –** पुनरुक्तिप्रकाश। **(6) रस**—शान्त।

(ख) अम्बर में उगतीं सोने-चाँदी की फसलें
ज्वार-बाजरे की मस्ती लहराती है
अन्तर में इसका बिम्ब उभरता आता है,
चाँदनी सिन्धु में सौ-सौ ज्वार जगाती है।
मैं कैसे इनकी मोहकता से मुख मोड़ूँ,
मैं कैसे जीवन के सौ-सौ धन्धे छोड़ूँ,
दोनों को साथ लिए चलना क्या संभव है?
तन मा मन का पावन नाता कैसे तोड़ूँ?
क्या उम्र ढलेगी तो यह सब जाएगा
सूरज चन्दा का पानी गल जल जाएगा,

जिनके बल पर जीने-मरने का स्वर साधा
उनका आकर्षण साँसों को छल जाएगा।
जिस दिन सपनों के मोल-भाव पर उतरूँगा
जिस दिन संघर्षों पर जाली चढ़ जाएगी,
जिस दिन लाचारी मुझ पर तरस दिखाएगी,
उस दिन जीवन से मौत कहीं बढ़ जाएगी।

शब्दार्थ—[अन्तर = हृदय। बिम्ब = चित्र, दृश्य। **सिन्धु** = समुद्र। **पानी** = आभा।**]**

प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियों में श्रमिक एवं कृषकवर्ग के परिश्रम से समाज में आई सम्पन्नता का आलंकारिक वर्णन किया गया है।

व्याख्या—कवि कहता है कि आकाश में उदित होते सूरज, चाँद, सितारे ऐसे लगते हैं, जैसे सोने और चाँदी की फसलें उग रहीं हों। पृथ्वी पर ज्वार और बाजरे के खेत मस्ती में भरे लहरा-लहरा जाते हैं। ये सब दृश्य किसी-न-किसी प्रकार मन को प्रभावित करते हैं। ये अन्त:करण को नए-नए बिम्ब प्रदान करते हैं। चाँद के उदय होने पर चाँदनी समुद्र में सैकड़ों-सैकड़ों ज्वार उठा देती है।

कवि कहता है कि मैं उक्त प्राकृतिक दृश्यों से अपना मन नहीं हटा सकता। ये इतने मोहक हैं कि मेरे मन को बाँध लेते हैं, फिर भी जीवन में सैकड़ों क्रियाकलाप करने पड़ते हैं। इन क्रियाकलापों से भी दूर नहीं हुआ जा सकता। कवि प्रश्न करता है कि क्या प्राकृतिक सौन्दर्य और जीवन के धन्धे दोनों को साथ-साथ लेकर चला जा सकता है। शरीर और मन का सम्बन्ध बहुत ही पवित्र होता है। यह पवित्र सम्बन्ध कैसे टूट सकता है? प्रकृति मन को सुख देती है, जीवन के धन्धे शरीर के लिए आवश्यक हैं। अत: दोनों ही से सम्बन्ध बना रहना ठीक है।

कवि कुछ गम्भीर हो उठता है और पूछता है—क्या जब उम्र ढलने लगेगी तो यह सबकुछ, जो आज इतना लुभावना लग रहा है, चला जाएगा? क्या उम्र के साथ-साथ सूरज और चाँद की कान्ति निष्प्राण हो जाएगी? जिन मनोहर दृश्यों को सँजोए मैंने जीवन-मरण का स्वर साध लिया है, क्या उनका आकर्षण साँसों को धोखा दे देगा?

कवि पुन: कहता है कि मैं जिस दिवा स्वप्नों, अपनी परिकल्पनाओं का मोलभाव करने बैठूँगा; उस दिन मेरे संघर्षों पर जाला चढ़ जाएगा, मेरा संघर्ष थक जाएगा और जिस दिन विवशता मुझ पर तरस दिखाएगी अर्थात् जिस दिन मैं विवशता का दास बन जाऊँगा, उस दिन जीवन की अपेक्षा मृत्यु का पलड़ा भारी होगा। उस दिन मृत्यु मुझे थाम लेगी।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) कवि ने जीवन और मृत्यु की यथार्थता को रेखांकित करने का प्रयास किया है। (2) **भाषा** —खड़ीबोली। (3) **शब्दशक्ति**—लक्षणा। (4) **अलंकार**—'जीवन' में **श्लेष**— 1. पानी, 2. जिन्दगी; **अनुप्रास**। (5) **शैली**—गीत। (6) **रस**—शान्त।

(ग) इन सबसे बढ़कर भूख बिलखती मिट्टी की
पथ पर पथराई आँखें पास बुलाती हैं,
भगवान भूल में रचकर जिनको भूल गया
जिनकी हड्डी पर धर्म-ध्वजा फहराती है।
इनको भूलूँ तो मेरी मिट्टी मिट्टी है
मेरी आँखों का पानी केवल पानी है,
इनको भूलूँ तो मेरा जन्म अकारथ है
मेरा, जीना मरने की मूक कहानी है।

शब्दार्थ—[बिलखती मिट्टी = दु:ख से तड़पते लोग। **मेरी मिट्टी मिट्टी है** = मेरा शरीर धारण करना निरर्थक है। **अकारथ** = व्यर्थ। **मूक** = चुपचाप।**]**

सन्दर्भ—पूर्ववत्

प्रसंग—यहाँ कवि ने असहाय व्यक्तियों के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित की है।

व्याख्या—सुमन जी कहते हैं कि मेरा हृदय प्राकृतिक सुन्दरता हो निहारने में नहीं लगा रह सकता। मैं दु:ख से तड़पते हुए उन व्यक्तियों को अधिक महत्त्व देता हूँ, जो कि अन्न के अभाव में भूख से व्याकुल होकर पथरा गए हैं। उनकी पथराई हुई आँखें आने-जाने वाले प्रत्येक व्यक्ति को अपने पास बुलाती हैं। वही आँखें आज मुझे भी अपने पास बुला रही हैं। ये वे लोग हैं, जिनकी चिन्ता भगवान् को भी नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि इन्हें बनाने के बाद ईश्वर इन्हें उसी प्रकार भूल गया है, जैसे कि उसने इन्हें बनाया ही नहीं था। वास्तव में धर्म की ध्वजा इन दीन-हीन प्राणियों की हड्डियों पर ही फहराती है, क्योंकि ये लोग अन्याय और अनीति के विरुद्ध आवाज तक नहीं उठा पाते हैं।

कवि का कथन है कि यदि मैं इन व्यक्तियों को भुला देता हूँ, तो मेरा मानव-शरीर धारण करना व्यर्थ है। ऐसी स्थिति में मेरा शरीर मिट्टी का लोथड़ा-मात्र होगा। यदि मेरे नेत्र इन लोगों के अपार कष्टों को देखकर सहानुभूति से द्रवित नहीं हो उठते हैं, तो इन नेत्रों का कोई मूल्य नहीं है। आँसू तो करुणा और दया के प्रतीक हैं, इसिलए जब तक इन आँखों से करुणा का जल नहीं बहता है, तब तक इनका होना-न-होना बराबर है। यदि मैं इस दलित-वर्ग को भुला देता हूँ तो मेरा जन्म लेना व्यर्थ है और मेरा जीवित रहना भी मरने की एक मूक कहानी के समान ही है। तात्पर्य यह है कि मानव को मानव के प्रति सहानुभूति, दया, करुणा जैसी मानवीय भावनाओं को अपने हृदय में रखना ही चाहिए, अन्यथा उसका मानव-शरीर धारण करना व्यर्थ है।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) यहाँ असहाय व्यक्तियों का सजीव चित्रण हुआ है। (2) सुमन जी ने यहाँ मानव के प्रति सहानुभूति, करुणा और प्रेम की भावना व्यक्त की है। (3) **भाषा**—साहित्यिक खड़ीबोली। (4) **शैली**—भावात्मक, गीत। (5) **रस**—करुणा। (6) **अलंकार**—रूपक और अनुप्रास। (7) **शब्द शक्ति**—लक्षण। (8) **गुण**—प्रसाद।

(घ) मैं देख रहा हूँ तुम इनको फिर भूल चले
बातों-बातों में हमें बहुत बहलाते हो,
बेबसी चीखती जब बच्चों की लाशों पर
उसको आजादी की प्रतिध्वनि बतलाते हो।
यों खेल करोगे तुम कब तक असहायों से
कब तक अफीम आशा की हमें खिलाओगे,
बरबाद हो गई फसल कहीं जोती बोई
क्या बैठ अकेले ही मरघट पर गाओगे?
विश्वास सर्वहारा का तुमने खोया तो
आसन्न मौत की गहन गोंस गढ़ जाएगी,
यदि बाँध बाँधने के पहले जल सूख गया
धरती की छाती में दरार पड़ जाएगी।
सदियों की कुर्बानी यदि यों बेमोल बिकी
जमुहाई लेने में खो गया सबेरा यदि,
जनता पूर्णिमा मनाने की जब तक सोचे
घिर गया अमावस का अम्बर में घेरा यदि।

शब्दार्थ—[प्रतिध्वनि = उत्पन्न ध्वनि के पश्चात् फिर से सुनाई देने वाली दूसरी वही ध्वनि। **सर्वहारा** = जिसके पास कुछ भी न हो, निर्धन। **आसन्न** = निकटस्थ। **गोंस** = फाँस, कील।**]**

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—इन पंक्तियों में कवि ने दीन-दु:खियों के प्रति शासन की उपेक्षा पर प्रहार किया है।

व्याख्या—कवि कहता है कि मैं यह स्पष्ट रूप से देख रहा हूँ कि तुम श्रमिकवर्ग की उपेक्षा कर रहे हो। अब बातें बना-बनाकर उन्हें बहलाना छोड़ दो। तुम्हारा यह दर्शन अब चल नहीं पाएगा। निर्धन श्रमिक के मृतप्राय बच्चों पर विवशता चीख सुननी पड़ती है और तुम इसे स्वतन्त्रता की प्रतिध्वनि के रूप में परिभाषित कर उधर से अपना ध्यान हटाना चाहते हो। तुम्हारी यह सोच ठीक नहीं है।

कवि शासक एवं पूँजीपतिवर्ग को चेतावनी देता है कि यदि तुम असहायों की मूल समस्या का समाधान करने की अपेक्षा इसके साथ खिलवाड़ करोगे तो ठीक नहीं होगा। बहुत समय बीत गया, निर्धन को आशारूपी अफीम खिला-खिलाकर अब भी सुला देना चाहते हो। याद रखना, मानवीय संवेदनाओं की जो फसल हमने जोती है और बोई है, यदि वह नष्ट हो गई, तो तुम अकेले रह जाओगे और यदि संसार श्मशान बन गया तो तुम उसमें रहकर क्या अकेले गीत गाओगे?

कवि आगे चेतावनी देता है कि यदि तुमने सर्वहारा अर्थात् गरीब-निर्धनजन का विश्वास खो दिया तो निकट आती मृत्यु की गहरी साँस तुम्हारे जीवन में गड़ जाएगी। बड़े प्रयत्नों के बाद गरीब जागा है, इसकी जागृति का अभिनन्दन करना चाहिए। अगर बाँध बाँधने से पहले ही पानी सूख जाए, तब तो धरती की छाती में दरार पड़ जाएगी अर्थात् बाँध इसलिए बाँधा जाता है, ताकि पानी इकट्ठा रहे। पानी सूख गया, तब बाँध का क्या औचित्य रहेगा? अत: समय रहते चेत जाओ और निर्धन को सँभालों, उसे उसके अधिकार सौंपों।

कवि पुन: चेनावनी देता है—यदि श्रमिकवर्ग के अभ्युत्थान के लिए सदियों से चले आ रहे विचार-आन्दोलन का सम्मान न हुआ, उनकी कुर्बानी व्यर्थ चली गई तो ठीक नहीं होगा। सवेरे के जागरण को जमुहाई ले-लेकर खो देना कहाँ की बुद्धिमानी है? पूर्णिमा का उत्सव मनाने की बात सोचते-सोचते ही यदि आकाश में अमावस्या का अँधेरा छा गया, तो इतिहास तुम्हें क्षमा नहीं करेगा। अत: अँधेरे दूरकर श्रमिक के जीवन में प्रकाश का उत्सव मनाने का उपक्रम करो।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) श्रमिक के अभ्युत्थान के लिए कवि ने चेतावनी दी है। (2) **भाषा**—खड़ीबोली। (3) **शब्दशक्ति** —लक्षणा। (4) **अलंकार**—आशा की अफीम' में रूपक, रूपकातिशयोक्ति, अनुप्रास। (5) **शैली**—भावात्मक, गीत। (6) **रस**—रौद्र।

(ङ) इतिहास न तुमको माफ करेगा याद रहे
पीढ़ियाँ तुम्हारी करनी पर पछताएँगी,
पूरब की लाली में कालिख पुत जाएँगी
सदियों में फिर क्या ऐसी घड़ियाँ आएँगी?
इसलिए समय के सैलाबों को मत रोको
खुशहाल हवाओं में न खिड़कियाँ बन्द करो,
हर किरण जिन्दगी की आँगन तक आने दो
नव-निर्माणों की लपटों को मत मन्द करो।

शब्दार्थ—[सैलाब = बाढ़ प्रवाह, जल-प्लावन।**]**

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—इन पंक्तियों में कवि ने मानव-समाज के कर्णधारों को समाज-कल्याण के लिए प्रोत्साहित किया है।

व्याख्या—कवि का कथन है कि समय परिवर्तनशील है। अब: हमें जो शुभ अवसर प्राप्त हुआ है, उसका सदुपयोग किया जाना चाहिए अन्यथा यश के स्थान पर अपयश मिलेगा। यदि हमने समय का सदुपयोग न किया, तो आनेवाला समाज हमारी अकर्मण्यता और कर्त्तव्यहीनता पर हमें धिक्कारेगा। इस समय का जो इतिहास लिखा जाएगा, उसमें किसी भी व्यक्ति को उसकी अकर्मण्यता के लिए क्षमा नहीं किया जाएगा। सत्ताधारियों को सम्बोधित करते हुए कवि कहता है कि तुम्हारी अकर्मण्यता से पूरब में उगने वाले सूरज की अरुणिमा पर भी कालिख पुत जाएगी, उसकी महत्ता समाप्त हो जाएगी और फिर शताब्दियों तक इस प्रकार की उन्नतिशील घड़ियाँ आएँ अथवा न आएँ, हमें यह भी ज्ञात नहीं है। अत: हमें अपने समय का उचित उपयोग करना चाहिए।

समय की परिवर्तनशीलता को देखते हुए प्रगति के प्रवाह को रोकने का प्रयास मत करो। क्या पता कि फिर इस प्रकार की सुखद वायु में साँस लेने का अवसर मिले या न मिले? इसलिए तुम समस्त खिड़कियों तथा दरवाजों को खोल दो। जीवन की आनन्ददायक किरणों का प्रकाश प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचने दो। इन आनन्दमयी घड़ियों का उपयोग मात्र धनीवर्ग तक ही सीमित न रह जाए। तुम ऐसा प्रयास करो, ताकि उन किरणों का प्रकाश साधारण जनता के आँगन तक पहुँच सके। वन-निर्माणरूपी महान् यज्ञ की ज्वालाओं को धीमा करने का प्रयत्न मत करो, अपितु उसको और अधिक प्रज्वलित होने दो।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) यहाँ कवि की प्रगतिवादी भावना व्यक्त हुई है। (2) वह साधनों के समान बँटवारे का पक्षपाती है। (3) देश के प्रत्येक नागरिक को विकास के समान अवसर मिलने चाहिए। समय व्यतीत होने पर पुन: लौटकर नहीं आता है। (4) उत्साह स्थायी भाव। (5) **रस**—वीर। (6) **भाषा**—ओजपूर्ण खड़ीबोली। (7) **शैली**—भावात्मक, गीत। (8) **शब्दशक्ति**—लक्षणा तथा व्यंजना।

(च) इस नए सबेरे की लाली को देखो तो
इसकी अपनी कितनी पहचान पुरानी है,
भू, भुव:, स्वर्ग को एक बनाने आई जो
युग की गायत्री सब छन्दों की रानी है।

शब्दार्थ—[भू = भूलोक। **भुव:** = भुवलोक। **गायत्री** = एक वैदिक छन्द।**]**

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—इन पंक्तियों में कवि ने आमन्त्रण दिया है कि श्रमिकवर्ग के अभ्युत्थान के सवेरे का खुलकर स्वागत करो।

व्याख्या—कवि कहता है आज चेतना का जो प्रभात हुआ है, इसके लिए बहुत पुराने समय से संघर्ष होता रहा है। इस नए सवेरे की अरुणाई की पहचान बहुत पुरानी है। आज नवयुग की चेतना-गायत्री भूलोक, भुवलोक और स्वर्गलोक की समता की प्रतिष्ठा करने का आह्वान कर रही है, इसका स्वागत करो।

काव्यगत सौन्दर्य—(1) नवीन चेतना के स्वागत के लिए जन-जन का आह्वान। (2) **भाषा**—खड़ीबोली। (3) **शैली** —प्रतीकात्मक, गीत। (4) **अलंकार**—अनुप्रास। (5) **शब्दशक्ति**—लक्षणा। (6) **रस**—अद्‌भुत।

काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

प्रश्न 1. निम्नलिखित में समास-विग्रह करके समास का नाम भी लिखिए–

दु:ख-दर्द, सोने-चाँदी, धर्म-ध्वजा, मरणासन्न, मरघट।

उत्तर

दु:ख-दर्द	—	दु:ख और दर्द — द्वंद्व समास
सोना-चाँदी	—	सोना और चाँदी— द्वंद्व समास
धर्म-ध्वजा	—	धर्म की ध्वजा — तत्पुरुष समास
मरणासन्न	—	मरण की आसन्न— कर्म तत्पुरुष
मरघट	—	मृत-घट— कर्म तत्पुरुष ामास

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों से मूलशब्द, उपसर्ग एवं प्रत्यय अलग करके लिखिए–

लचकीली, मोहकता, लाचारी, बेबसी, प्रतिध्वनि, असहाय।

उत्तर–शब्द	मूल-शब्द	उपसर्ग	प्रत्यय
लचकीली	लचक	—	ईली
मोहकता	मोहक	—	ता
लाचारी	चारी	ला	—
बेबसी	बसी	बे	—
प्रतिध्वनि	ध्वनि	प्रति	—
असहायसहाय	अ	—	

❑

13 प्रभुजी तुम चंदन हम पानी

(सन्त रैदास)

परीक्षापयोगी प्रश्न

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. मध्ययुगीन साधकों में किसका विशिष्ट स्थान है?

उत्तर—सन्त रैदास का।

प्रश्न 2. रैदास किसमें बिल्कुल विश्वास नहीं रखते थे?

उत्तर—मूर्तिपूजा, तीर्थयात्रा जैसे दिखावों में।

प्रश्न 3. रैदास किसके गुरु थे?

उत्तर—मीराबाई के।

प्रश्न 4. रैदास ने अपनी काव्य-रचनाओं में किस भाषा का प्रयोग किया?

उत्तर—रैदास ने अपनी काव्य रचनाओं में अवधी, राजस्थानी, खड़ीबोली और उर्दू फारसी मिश्रित शब्दों का।

प्रश्न 5. रैदास का उपनाम (दूसरा नाम) क्या था?

उत्तर—रविदास, रामदास।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. रैदास की जीवन-परिचय देते हुए उनकी कृतियों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—जीवन-परिचय—वैसे तो महान सन्त गुरु रविदास; जिन्हें रैदास के नाम से भी जाना जाता है; के जन्म से जुड़ी जानकारी नहीं मिलती है लेकिन साक्ष्यों और तथ्यों के आधार पर महान सन्त गुरु रविदास का जन्म 1377 ई० के आसपास माना जाता है। हिन्दू धर्म के महीने के अनुसार महान सन्त गुरु रविदास का जन्म माघ महीने की पूर्णिमा के दिन माना जाता है और इसी दिन हमारे देश में महान सन्त गुरु रविदास की जयन्ती को बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है।

महान सन्त गुरु रविदास जी का जन्म उत्तर प्रदेश के वाराणसी शहर के गोबर्धनपुर गाँव में हुआ था। इनके पिता सन्तोख दास जी जूते बनाने का काम करते थे। इनकी माता का नाम कलसा देवी था। रविदास जी को बचपन से ही साधु-सन्तों के प्रभाव में रहना अच्छा लगता था जिसके कारण इनके व्यवहार में भक्ति की भावना बचपन से ही कूटकूट कर भरी हुई थी, लेकिन रविदास जी भक्ति के साथ अपने काम पर विश्वास करते थे जिनके कारण इन्हें जूते बनाने का काम अपने पिता से प्राप्त हुआ था और रविदास जी अपने कामों को बहुत ही मेहनत से पूरी निष्ठा के साथ करते थे और जब भी किसी को किसी सहायता की जरूरत पड़ती थी, रविदास जी अपने कामों का बिना मूल्य लिए ही लोगों को जूते ऐसे ही दान में दे देते थे।

रविदास जी हमेशा से ही जातिपाँति के भेदभाव के खिलाफ थे और जब भी मौका मिलता, वे हमेशा सामाजिक कुरूतियों के खिलाफ आवाज उठाते रहते थे। रविदास जी के गुरु रामानन्द जी थे जिनके सन्त और भक्ति का प्रभाव रविदास जी के ऊपर पड़ा था।

इसी कारण रविदास जी को जब भी मौका मिलता वे भक्ति में तल्लीन हो जाते थे। इसके कारण रविदास जी को बहुत सुनना पड़ता था और शादी के बाद तो जब रविदास जी अपने बनाए हुए जूते को किसी जरूरतमन्द को बिना मूल्य में ही दान दे देते थे, जिसके कारण इनका घर चलाना मुश्किल हो जाता था। इसलिए रविदास जी के पिता ने इन्हें अपने परिवार से अलग कर दिया था, फिर भी रविदास जी ने कभी भी भक्तिमार्ग को नहीं छोड़ा।

रविदास जी जाति व्यवस्था के सबसे बड़े विरोधी थे। उनका मानना था कि मनुष्यों द्वारा जातिपाति के चलते मनुष्य से दूर होता जा रहा है और जिस जाति से मनुष्य-मनुष्य में बँटवारा हो जाए तो फिर जाति का क्या लाभ?

जाति-जाति में जाति हैं, जो केतन के पात।
रैदास मनुष ना जुड़ सके, जब तक जाति न जात॥

रविदास जी की महानता और भक्ति-भावना की शक्ति के प्रमाण इनके जीवन की अनेक घटनाओं में मिलते हैं जिसके कारण उस समय का सबसे शक्तिशाली राजा मुगल सम्राट बाबर भी रविदास जी के सामने नतमस्तक था और जब वह रविदास जी से मिलता है तो रविदास जी बाबर को दण्डित कर देते हैं जिसके कारण बाबर का हृदय परिवर्तन हो जाता है और वह फिर सामाजिक कार्यों में लग जाता है। रविदास जी के जीवन में ऐसी अनेक घटनाएँ हैं जो आज भी हमें जातिपाति की भावना से ऊपर उठकर सच्चे मार्ग पर चलते हुए समाज-कल्याण का मार्ग दिखाती हैं। रविदास जी की मृत्यु 1540 ई० में वाराणसी में हुई थी।

प्रश्न 2. निम्नलिखित काव्य अवतरणों की सन्दर्भ एवं प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए–

(क) प्रभु जी तुम चंदन ..... चतवत चंद चकोरा।

उत्तर—सन्दर्भ—प्रस्तुत पद संत रविदास द्वारा रचित 'प्रभुजी तुम चन्दन हम पानी' शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने भगवान को चन्द्र के समान शीतल व सुन्दर बताया है और कहा है कि—

व्याख्या—कवि कहते हैं कि प्रभु जी आप तो चन्द्रमा के समान शीतल आवरण वाले हैं और मैं जल के समान साधारण आपकी अनुभूति मात्र से मेरा अंग-अंग महक गया है। कवि आगे कहते हैं कि प्रभु आप तो वर्षा हैं और मैं उसका आनन्द लेने वाला मोर (मयूर) हूँ, जो उसका आनन्द लेते हुए परम सत्य की अनुभूति करता है।

(ख) प्रभुज जी तुम मोती ..... भक्ति करै रैदासा।

उत्तर—सन्दर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने प्रभु की तुलना मोती से की है और उसकी उपयोगिता बताते हुए कहा है कि—

व्याख्या—कवि कहते हैं कि हे, प्रभु आप तो सुन्दर व आकर्षक मोती के समान हैं, जो एक सुन्दर माला को सुशोभित करता है और मैं उस माला के धागे के समान हूँ। कवि आगे कहते हैं कि आप तो मेरे गुरु, मेरे पिता हैं और मैं रैदास आपका दास हूँ, और पूरी तन्मयता व श्रद्धा के साथ आपका अभिनन्दन करता हूँ।

काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

प्रश्न 1. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार का नाम बताइए–

(क) प्रभु जी तुम दीपक हम बाती। जाकी जोति बरै दिन राती।।

(ख) प्रभु जी तुम स्वामी हम दासा। ऐसी भक्ति करै रैदासा।।

उत्तर—(क) उपमा, अनुप्रास अलंकार।

स्पष्टीकरण—भगवान की उपमा दीपक से तथा भक्त की उपमा बाती से दी जाने के कारण **उपमा अलंकार** तथा 'जाकी ज्योति' शब्दों में 'ज' शब्द की पुनरावृत्ति होने के कारण **अनुप्रास अलंकार।**

(ख) उपमा अलंकार।

स्पष्टीकरण—भगवान की स्वामी से तथा भक्त की सेवक (दास) से उपमा दी गयी है, इसलिए **उपमा अलंकार** होगा।

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए

प्रभुजी, बास, चकोर, बरै, समानी।

उत्तर—प्रभुजी—ईश्वर, **बास**—सुगन्ध, **चकोर**—पपीहा, **बरै**—जले **समानी**—समाया हुआ है।

प्रश्न 3. निम्नलिखित के तत्सम रूप लिखिए

सती, सोनहिं, मोती, दासा।

उत्तर—	**तद्भव रूप**	**तत्सम रूप**
	सती	शती
	सोनहि	सोना
	मोती	मुक्तक
	दासा	दास

❑

संस्कृत खण्ड

1 वन्दना

परीक्षापयोगी प्रश्न

तथ्यात्मक

प्रश्न 1. निम्नलिखित श्लोकों का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

(क) तेजोऽसि तेजो मयि धेहि।
वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि।
बलमसि बलं मयि धेहि।
ओजोऽसि ओजो मयि धेहि॥

सन्दर्भ—प्रस्तुत श्लोक '**संस्कृत परिचायिका**' के '**वन्दना**' पाठ से उद्धृत है। इसमें ईश की वन्दना की गई हैं।

हिन्दी अनुवाद—हे ईश्वर! तुम प्रकाश स्वरूप हो, मुझे भी प्रकाश दो। तुम पराक्रम स्वरूप हो, मुझे भी पराक्रम दो। तुम बल स्वरूप हो, मुझे भी बल दो। तुम सामर्थ्यवान् हो, मुझे भी सामर्थ्य प्रदान करो।

[**शब्दार्थ**—**तेजोऽसि** = प्रकाश हो, **मयि** = मुझको, **वीर्यम्** = पराक्रम।]

(ख) असतो मा सद् गमय,
तमसो मा ज्योतिर्गमय,
मृत्योर्माऽमृतं गमय॥

सन्दर्भ—प्रस्तुत श्लोक '**संस्कृत परिचायिका**' के '**वन्दना**' पाठ से उद्धृत है। इसमें ईश की वन्दना की गई है।

हिन्दी अनुवाद—हे ईश्वर, आप मुझे असत्य (बुराई) से सत्य (भलाई) की ओर ले जाओ। अन्धकार (अज्ञान) से प्रकाश (ज्ञान) की ओर ले चलो। मृत्यु से अमरत्व की ओर ले चलो।

[**शब्दार्थ**—**असतो** = असत्य से या बुराई से, **सद्** = सत्य या भलाई, **तमसो** = अन्धकार से।]

(ग) यतो यतः समीहसे,
ततो नोऽभयं कुरु।
शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽ,
भयं नः पशुभ्यः॥

सन्दर्भ—प्रस्तुत श्लोक '**संस्कृत परिचायिका**' के '**वन्दना**' पाठ से उद्धृत है। इसमें ईश की वन्दना की गई है।

हिन्दी अनुवाद—हे ईश्वर, आपकी जिस-जिससे इच्छा हो उनसे हमें अभयदान दो। हमारी प्रजाओं या सन्तानों का कल्याण करो। हमारे पशुओं को भय रहित करो।

(घ) नमो ब्रह्मणे त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि।
त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि।
ऋतं वदिष्यामि, सत्यं वदिष्यामि।
तन्मामवतु तद् वक्तारमवतु।
अवतु माम् अवतु वक्तारम्॥

सन्दर्भ—प्रस्तुत श्लोक '**संस्कृत परिचायिका**' के '**वन्दना**' पाठ से उद्धृत है। इसमें ईश की वन्दना की गई है।

हिन्दी अनुवाद—हे ब्रह्म। तुम्हें मेरा नमस्कार है, तुम ही प्रत्यक्ष हो। तुम्हें ही मैं प्रत्यक्ष रूप से ब्रह्म कहूँगा। तुम्हें यथास्थिति कहूँगा, सत्य कहूँगा। वह (ब्रह्म) मेरी रक्षा करें। बोलने वाली की रक्षा करें। मेरी रक्षा करें। वक्ता की रक्षा करें।

[**शब्दार्थ**—**त्वमेव** =तुम ही, **ब्रह्मासि** = ब्रह्म + असि, **वदिष्यामि** = कहूँगा, **ऋतम्** = यथास्थिति, **तन्मामवतु** = वह मेरी रक्षा करे।]

(ङ) सत्यव्रतं सत्यपरं त्रिसत्यं,
सत्यस्य योनिं निहितं च सत्ये।
सत्यस्य सत्यं ऋतसत्यनेत्रं,
सत्यात्मकं त्वां शरणं प्रपन्नाः॥

सन्दर्भ—प्रस्तुत श्लोक '**संस्कृत परिचायिका**' के '**वन्दना**' पाठ से उद्धृत है। इसमें ईश की वन्दना की गई है।

हिन्दी अनुवाद—हे ईश्वर। आप सत्यव्रती तथा सत्यनिष्ठ है। आप भूत, भविष्य तथा वर्तमान में भी सत्य हैं। आप सत्य के जन्मदाता और सत्य में ही स्थित रहने वाले हैं। आप सत्य के भी सत्य अर्थात् परम सत्य हैं। हे ईश्वर। आप सत्य के प्रवर्तक हैं। आप सत्य स्वरूप हैं। आपके सत्यात्मक स्वरूप को हम शरणागत जाते हैं।

[**सत्यव्रत** = सत्यव्रती। **त्रिसत्यम्** = त्रिकाल में सत्य। **योनि** = उत्पन्न करने वाला। **सत्यस्थ सत्यम** = भौतिक जगत् के नष्ट होने पर भी सत्य]

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

(क) ईश्वरः कीदृशः अस्ति?

उत्तर—ईश्वरः सत्यात्मकः अस्ति।

(ख) ईश्वरस्य के नेत्रे स्तः?

उत्तर—ईश्वरस्य ऋतं सत्यनेत्रे स्तः।

(ग) भक्तः कां प्रतिज्ञां करोति?

उत्तर—भक्तः प्रतिज्ञां करोति 'अहम् ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि।'

(घ) ईश्वरस्य कः स्वरूपः अस्ति?

उत्तर—ईश्वरस्य सत्यस्वरूपः अस्ति?

(ङ) भक्तः ईश्वरं किं याचते?

उत्तर—भक्तः ईश्वरं तेजः, वीर्य, बलम्, ओजः च याचते?

(च) भक्तः कुत्र गन्तुम् इच्छति?

उत्तर—भक्तः असतः सत् प्रति, तमसः ज्योतिः प्रति, मृत्योः अमरत्व प्रति गन्तुम् इच्छति।

अनुवादात्मक

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) तुम सत्य स्वरूप हो। त्वं सद् मसि।

(ख) तुम वीर्यवान् हो। त्वं वीर्यवान असि।

(ग) तुम असत्य नहीं बोलोगे। त्वंम असत्यं न वदिष्यसि।

(घ) मुझमें बल धारण कराओ। बलं महि देहि।

(ङ) मैं सत्य कहूँगा। अहं सत्यं कथयिष्यामि।

व्याकरणात्मक

1. निम्नलिखित शब्दों के विभक्ति एवं वचन लिखिए-
तमसः, असतः, ब्रह्मणेः, त्वाम्ः।
उत्तर—

तमसः	पंचमी/षष्ठी	एकवचन
असतः	पंचमी/षष्ठी	एकवचन
ब्रह्मणेः	चतुर्थी	एकवचन
त्वाम्ः	द्वितीय	एकवचन

2. निम्नलिखित धातु रूप किस धातु, लकार, वचन और पुरुष के हैं?
असि, कुरु, वदिष्यामि, अवतु।
उत्तर—

	धातु	लकार	वचन	पुरुष
असि	अस्	लट् लकार	एकवचन	मध्यम पुरुष
कुरु	कृ	लोट् लकार	एकवचन	मध्यम पुरुष
वदिष्यामि	वद	लृट् लकार	एकवचन	उत्तम पुरुष
अवतु	अव्	लोट् लकार	एकवचन	प्रथम पुरुष

3. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए-
तेजोऽसि, ज्योतिर्गमय, माऽमृम्, शन्नः, त्वमेव, ब्रह्मसि
उत्तर—

तेजोऽसि	=	तेजस्	+	असि
ज्योतिर्गमय	=	ज्योति	+	अगमय
माऽमृम्	=	मा	+	अमृतम
शन्नः	=	शन्	+	नः
त्वमेव	=	त्वम	+	एव
ब्रह्मसि	=	ब्रह्म	+	असि

❑

2

सदाचार

परीक्षापयोगी प्रश्न

तथ्यात्मक

प्रश्न 1. निम्नलिखित श्लोंको का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए-

(क) सतां सज्जनानाम् आचारः सदाचारः। ये जनाः सद् एव विचारयन्ति, सद् एव वदन्ति, सद् एव आचरिन्त च, ते एव सज्जनाः भवन्ति। सज्जनाः यथा आचरन्ति तथैवाचरणं सदाचारः भवति। सदाचारेणैव सज्जनाः स्वकीयानि इन्द्रियाणि वशे कृत्वा सर्वैः सह शिष्टं व्यवहारं कुर्वन्ति।

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यांश '**संस्कृत परिचायिका**' के '**सदाचारः**' पाठ से उद्धृत है। इसमें लेखक ने सदाचार के महत्त्व और गुणों का वर्णन किया है।

हिन्दी अनुवाद—सज्जनों का व्यवहार (आचार) ही सदाचार है। जो लोग सत्य (उत्तम) ही विचार करते हैं, सत्य ही बोलते हैं और सत्य ही आचरण करते हैं, वे ही सज्जन होते हैं। सज्जन किस प्रकार का आचार करते हैं, वही आचरण सदाचार होता है। सदाचार के द्वारा ही सज्जन अपनी इन्द्रियों को वश में करके सबके साथ सभ्यतापूर्ण व्यवहार करते हैं।

[**शब्दार्थ**—**सतां सज्जनानाम्** =सज्जनों का, **सद्** = सत्य (उत्तम), **तथैवाचरणं** = वैसा ही व्यवहार, **स्वकीयानि** = अपनी, **सर्वैः सह** = सबके साथ, **शिष्टं** = सभ्यतापूर्ण।]

(ख) विनयः हि मनुष्याणां भूषणम्। विनयशीलः जनः सर्वेषां जनानां प्रियः भवति। विनयः सदाचारात् उद्भवति। सदाचारात् न केवलं विनयः अपितु विविधाः अन्येऽपि सद्गुणाः विकसन्ति; यथा-धैर्यम्, दाक्षिण्यम्, संयमः, आत्मविश्वासः, निर्भीकता। अस्माकं भारतभूमेः, प्रतिष्ठा जगति सदाचारादेव आसीत्। पृथिव्यां सर्वमानवाः स्वं स्वं चरित्रं भारतस्य सदाचारपरायणात् जनात् शिक्षेरन्। भारतभूमिः अनेकेषां सदाचारिणां पुरुषाणां जननी। एतेषां महापुरुषाणाम् आचारः अनुकरणीयः।

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यांश '**संस्कृत परिचायिका**' के '**सदाचारः**' पाठ से उद्धृत है। इसमें लेखक ने सदाचार के महत्त्व और गुणों का वर्णन किया है।

हिन्दी अनुवाद—विनम्रता मनुष्य का आभूषण है। विनयशील मनुष्य सभी लोगों का प्रिय होता है। विनम्रता सदाचार से उत्पन्न होती है। सदाचार से केवल विनम्रता ही नहीं अपितु अनेक सद् या सुन्दर गुण भी विकसित होते हैं, जैसे–धैर्य, चतुरता, इन्द्रियों को वश में रखने की शक्ति (संयम) अपने आप पर विश्वास (आत्म-विश्वास) तथा निडरता। हमारी भारत भूमि की प्रतिष्ठा संसार में सदाचार से ही थी। पृथ्वी पर सभी मनुष्य भारत के सदाचारी लोगों से ही अपने-अपने चरित्र की शिक्षा पाते हैं। भारत-भूमि अनेक सदाचारी पुरुषों की मातृभूमि है। इन महापुरुषों का आचरण अनुकरण के योग्य है।

[**शब्दार्थ**—**उद्भवति** = उत्पन्न होती है, **अन्यऽपि** = और भी, **दाक्षिण्यम्** = चतुरता, **संयमः** = इन्द्रियों को वश में रखना।]

(ग) सदाचारः नाम नियमसंयमयोः पालनम्। इन्द्रियसंयमः सदाचारस्य मूले तिष्ठति। इन्द्रियसंयमः युक्ताहारविहारेण युक्तस्वप्नावबोधेन च सम्भवति। किं युक्तं किम् अयुक्तम् इति सदाचारेण निर्णेतुं शक्यते।

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यांश '**संस्कृत परिचायिका**' के '**सदाचारः**' पाठ से उद्धृत है। इसमें लेखक ने सदाचार के महत्त्व और गुणों का वर्णन किया है।

हिन्दी अनुवाद—नियम और संयम का पालन करना ही सदाचार है। इन्द्रियों को वश में रखना ही सदाचार का मूल सिद्धान्त है। इन्द्रियों का संयम

समुचित भोजन, भ्रमण और ठीक समय पर सोने और जागने से सम्भव होता है। क्या उचित है और क्या अनुचित है, इसका निर्णय सदाचार से ही हो सकता है।

[**शब्दार्थ—इन्द्रियसंयमः** = इन्द्रियों को वश में रखना, **युक्ताहार** = उचित भोजन, **अवबोधन** = जागने से, **युक्तम्** = उचित, **अयुक्तम** = अनुचित।]

(घ) ये केऽपि पुरुषाः महान्तः अभवन् ते संयमेन सदाचारेणैव उन्नतिं गताः। यः जनः नियमेन अधीते, यथासमयं शेते, जागर्ति, खादति, पिबति च स निश्चयेन अभ्युदयं गच्छति। सदाचारस्य महिमा शास्त्रेषु अपि वर्णितः।

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यांश '**संस्कृत परिचायिका**' के '**सदाचारः**' पाठ से उद्धृत है। इसमें लेखक ने सदाचार के महत्त्व और गुणों का वर्णन किया है।

हिन्दी अनुवाद—जो कोई भी पुरुष महान् हुए हैं, वे संयम एवं सदाचार से ही उन्नति को प्राप्त हुए हैं। जो मनुष्य नियमपूर्वक अध्ययन करता है, ठीक समय पर सोता है, खाता है व पीता है, निश्चय ही उन्नति को प्राप्त होता है। सदाचार की महिमा का वर्णन शास्त्रों में भी किया गया है।

[**शब्दार्थ—अभवन्** =हुए, **गताः** = प्राप्त हुए, **अधीते** = अध्ययन करता है, **शेते** = सोता है, **जागर्ति** = जागता है।]

(ङ) सर्वलक्षणहीनोऽपि यः सदाचारवान् नरः ।
श्रद्धालुरनसूयश्च शतं वर्षाणि जीवति ।।

सन्दर्भ—प्रस्तुत श्लोक '**संस्कृत परिचायिका**' के '**सदाचारः**' पाठ से उद्धृत है। इसमें लेखक ने सदाचार के महत्त्व और गुणों का वर्णन किया है।

हिन्दी अनुवाद—सभी गुणों से रहित होने पर भी जो मनुष्य सदाचारी है; श्रद्धा रखने वाला और दूसरों के दोष न देखने वाला है, वह सौ वर्षों तक जीवित रहता है।

[**शब्दार्थ—सर्वलक्षणहीनोऽपि** = सब गुणों से रहित होने पर भी, **अनसूय** = द्वेष रहित, **शतं** = सौ।]

(च) आचाराल्लभते ह्यायुराचाराल्लभते श्रियम् ।
आचाराल्लभते कीर्तिम् आचारः परमं धनम् ।।

सन्दर्भ—प्रस्तुत श्लोक '**संस्कृत परिचायिका**' के '**सदाचारः**' पाठ से उद्धृत है। इसमें लेखक ने सदाचार के महत्त्व और गुणों का वर्णन किया है।

हिन्दी अनुवाद—सदाचार से दीर्घायु की प्राप्ति होती है। सदाचार से धन की प्राप्ति होती है। सदाचार से यश की प्राप्ति होती है। सदाचार सबसे उत्तम धन है।

[**शब्दार्थ—आचाराल्लभते** = सदाचार से प्राप्त होता है, **ह्यायुः** = दीर्घ आयु, **श्रियम्** =धन-सम्पत्ति, **परमं** = उत्तम।]

(छ) अतएव सदाचारः सर्वथा रक्षणीयः। महाभारते अपि सत्यम् एव उक्तम् यत् अस्माभिः सदा चरित्रस्य रक्षा कार्या, धनं तु आयाति याति च, चरित्रं यदि नष्टं तर्हि सर्वं विनष्टं भवति।

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यांश '**संस्कृत परिचायिका**' के '**सदाचारः**' पाठ से उद्धृत है। इसमें लेखक ने सदाचार के महत्व और गुणों का वर्णन किया है।

हिन्दी अनुवाद—इसलिये सदाचार की सब प्रकार से रक्षा करनी चाहिये। महाभारत में भी सत्य ही कहा है कि हमें सदा अपने चरित्र की रक्षा करनी चाहिये। धन तो आता है और चला जाता है। चरित्र यदि नष्ट हो गया तो सभी नष्ट हो जाता है।

[**शब्दार्थ—रक्षणीयः** = रक्षा करनी चाहिए, **अस्माभिः** = हमारे द्वारा, **याति** = चला जाता है, **वृत्तं** = चरित्र।]

प्रश्न 2.निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

(क) सदाचारस्य कोऽर्थः?

उत्तर—सतां सज्जनानाम् आचारः सदाचारः अस्ति।

(ख) सज्जनाः के भवन्ति?

उत्तर—ये जनाः सद् विचारयन्ति, सद् वदन्ति, सद् एव आचाररिक्त च ते एव सज्जनाः भवन्ति।

(ग) मनुष्याणां भूषणं किमस्ति?

उत्तर—मनुष्याणां भूषणं विनयः अस्ति।

(घ) सर्वेषां जनानां प्रियः को भवति?

उत्तर—सर्वेषां जनानां प्रियः विनयशीलः जनः भवति।

(ङ) विनयः कस्मात् उद्भवति?

उत्तर—विनयः सदाचारात् उद्भवति।

(च) जगति भारतभूमेः प्रतिष्ठा कस्मात् आसीत्?

उत्तर—जगति भारतभूमेः प्रतिष्ठां सदाचारात् आसीत्।

(छ) केषाम् आचारः अनुकरणीयः?

उत्तर—महापुरुषाणाम् आचारः अनुकरणीयः।

(ज) आचारात् किं लभते?

उत्तर—आचारात् कीर्तिम् लभते।

(झ) कः जनः निश्चयेन अभ्युदयं गच्छति?

उत्तर—यः जनः नियमेन अधीते, यथा समयं शेते, जागर्ति, खादति, पिबति च स निश्चयेन अभ्युदयं गच्छति।

(ञ) शतं वर्षाणि कः जीवति?

उत्तर—श्रद्धालुश्नसूयश्च शतं वर्षाणि जीवति।

(ट) केषाम् आचारः सदाचारः भवति?

उत्तर—सज्जनाः आचारः सदाचारः भवति।

(ठ) सदाचारस्य मूले किं तिष्ठति?

उत्तर—सदाचारस्य मूले इन्द्रियसंयमः तिष्ठति।

(ड) मनुष्याणां परमं धनं किमस्ति?

उत्तर—मनुष्याणां परमं धनं आचारः अस्ति।

(ढ) सदाचारेण कः अभिप्रायः?

उत्तर—सज्जनानां आचारः सदाचारः भवति।

(ण) शास्त्रेषु सदाचारस्य महिमा कथं वर्णितः?

उत्तर—शास्त्रेषु सदाचारस्य महिमा महाभारतं वर्णितः।।

(त) इन्द्रियसंयमः कथं सम्भवति?

उत्तर—इन्द्रियसंयमः युक्ताहारविहारेण, युक्तस्वप्नावबोधेन च सम्भवति।

अनुवादात्मक

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) दूसरों के दोष न ढूँढ़ने वाले को क्या कहते हैं?

उत्तर—अनसूय किं कथ्यते?

(ख) सज्जनों का आचार ही सदाचार होता है।

उत्तर— सज्जनानाम् आचारः सदाचारः भवति।

(ग) सज्जन सत् कहते हैं और सत् ही करते हैं।

उत्तर—सज्जनाः सद् एव कथयन्ति, सद् एव च कुर्वन्ति।

(घ) विनय मनुष्यों का भूषण है।

उत्तर—विनयः हि मनुष्याणां भूषणम् अस्ति।

(ङ) विनय सदाचार से ही उत्पन्न होता है।

उत्तर—विनयः सदाचाराद् उद्भवति।

(च) संयम से लोग महान् हो जाते हैं।

उत्तर—संयमेन जनाः महान्तः भवन्ति।

(छ) इन्द्रिय-संयम कैसे सम्भव है?

उत्तर—इन्द्रिय-संयमः कथं सम्भवः अस्ति?

(ज) किनका आचरण अनुकरणीय है?

उत्तर—केषाम् आचरणः अनुकरणीय अस्ति?

व्याकरणात्मक

1. निम्नलिखित वाक्यों में मोटे छपे शब्दों में प्रयुक्त कारक/विभक्ति का नाम बताइए–

(क) स **निश्चयेन** अभ्युदयं गच्छति।

(ख) सदा **चरित्रस्य** रक्षां कुर्यात्।

(ग) **सज्जनाः** यथा आचरन्ति, तथैवाचरणं सदाचारः भवति।

(घ) पुरुषाः सदाचारेणैव **उन्नतिं** गताः।

उत्तर—	कारक	विभक्ति
(क)	करण	तृतीया
(ख)	सम्बन्ध	षष्ठी
(ग)	कर्ता	प्रथमा
(घ)	कर्म	द्वितीया

2. निम्नलिखित शब्द-रूप किस विभक्ति और वचन के हैं?

पुरुषाः, कीर्तिम्, सज्जनानाम्, वशे, सर्वैः, पृथिव्याम्।

उत्तर—	विभक्ति	वचन
पुरुषाः	प्रथम	बहुवचन
कीर्तिम्	द्वितीय	एकवचन
सज्जनानाम्	षष्ठी	बहुवचन
वशे	सप्तमी	एकवचन
सर्वैः	तृतीया	द्विवचन
पृथिव्याम्	सप्तमी	एकवचन

3. निम्नलिखित शब्दों का सन्धि-विच्छेद कीजिए–

सज्जनः तथैव, सदाचारः, अभ्युदयम्, आचाराल्लभते।

उत्तर—					
	सज्जनः	=	सत्	+	जनः
	तथैव	=	तथा	+	एवः
	सदाचारः	=	सत्	+	आचारः
	अभ्युदयम्	=	अभि	+	उदयम्
	आचाराल्लभते	=	आचारात्	+	लभते

4. भवति में अनु, प्र, परा, सम् उपसर्ग लगाकर एक-एक शब्द बनाइए।

उत्तर—अनुभवति, प्रभवति, पराभवति, सम्भवति।

5. 'आचार': शब्द में 'सद्' के अतिरिक्त अन्य शब्दांश मिलाकर नये शब्द बनाइए।

उत्तर—अत्याचार, समाचार, विचार, विचार।

❑

3

पुरुषोत्तमः रामः

परीक्षापयोगी प्रश्न

तथ्यात्मक

प्रश्न 1. निम्नलिखित का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

(क) बृद्धिमान् नीतिमान् वाग्मी श्रीमाञ्छत्रुनिवर्हणः ।
विपुलांसो महाबाहुः कम्बुग्रीवो महाहनुः ॥

सन्दर्भ—प्रस्तुत श्लोक **'संस्कृत परिचायिका'** के **'पुरुषोत्तमः रामः'** पाठ से उद्धृत है। इसे 'वाल्मीकि' प्रणीत 'श्रीरामायण' से संकलित किया गया है। इसमें राम के रूप अनेक गुणों और चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन किया गया है।

हिन्दी अनुवाद—(वे राम) बुद्धिमान, नीति को जानने वाले, बोलने में चतुर, धन सम्पत्ति वाले, शत्रुओं का नाश करने वाले, चौड़े कन्धों वाले, लम्बी भुजाओं वाले, शंख के समान सुन्दर गर्दन वाले तथा लम्बी ठोड़ी वाले हैं।

[**शब्दार्थ**—**वाग्मी** = बोलने में चतुर, **श्रीमाञ्छत्रुनिवर्हणः (श्रीमान + शत्रु + निवर्हण)** = धन सम्पत्ति वाले तथा शत्रुओ का नाश करने वाले, **विपुलांस (विपुल + अंस)** = चौड़े कन्धे वाले, **कम्बुग्रीवः** = शंख के समान गला है जिनका, **महाहनुः** = बड़ी ठोडी वाले।]

(ख) इक्ष्वाकुवंशप्रभवो रामो नाम जनैः श्रुतः ।
नियतात्मा महावीर्यो द्युतिमान् धृतिमान् वशी ॥

सन्दर्भ—प्रस्तुत श्लोक **'संस्कृत परिचायिका'** के **'पुरुषोत्तमः रामः'** पाठ से उद्धृत है। इसे 'वाल्मीकि' प्रणीत 'श्रीरामायण' से संकलित किया गया है। इसमें राम के रूप, अनेक गुणों और चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन किया गया है।

हिन्दी अनुवाद—इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न हुए रामचन्द्र का नाम लोगों के द्वारा सुना गया है। जिनकी (राम) अपनी आत्मा वश में है। वे महापराक्रमशील, क्रान्तिवान, धैर्यशील तथा इन्द्रियों को वश में करने वाले हैं।

[**शब्दार्थ**—**प्रभवः** = उत्पन्न = **जनैः** = लोगों के द्वारा, **श्रुतः** = सुना गया है, **नियंतात्मा (नियत + आत्मा)** = अपनी आत्मा को वश में रखने वाले, **द्युतिमान्** =कातियुक्त, **धृतिमान** = धैर्यशील।]

(ग) महोरस्को महेष्वासो गूढजत्रुररिन्दमः ।
आजानुबाहुः सुशिराः सुललाटः सुविक्रमः ॥

सन्दर्भ—प्रस्तुत श्लोक **'संस्कृत परिचायिका'** के **'पुरुषोत्तमः रामः'** पाठ से उद्धृत है। इसे 'वाल्मीकि' प्रणीत 'श्रीरामायण' से संकलित किया गया है। इसमें राम के रूप, अनेक गुणों और चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन किया गया है।

हिन्दी अनुवाद—वे राम चौड़ी छाती वाले, विशाल धनुष वाले, मांस में छिपी है हँसली की हड्डी जिनकी, शत्रुओं का दमन करने वाले, घुटनों लम्बी भुजाओं वाले, सुन्दर सिर व सुन्दर ललाट वाले और अत्यन्त पराक्रम वाले हैं।

[**शब्दार्थ—महोरस्को (महा + उरस्कः)** = चौड़ी छाती वाले, **महेष्वासो** = विशाल धनुष वाले, **जत्रु** = हँसली की हड्डी, **अरिन्दमः** = शत्रुओं का नाश करने वाले, **आजानुबाहुः** = घुटनों के नीचे तक लम्बी हैं भुजाएँ जिनकी।]

(घ) समः समविभक्ताङ्गः स्निग्धवर्णः प्रतापवान् ।
पीनवक्षा विशालाक्षो लक्ष्मीवाञ्छुभलक्षणः ।।

सन्दर्भ—प्रस्तुत श्लोक **'संस्कृत परिचायिका'** के **'पुरुषोत्तमः रामः'** पाठ से उद्धृत है। इसे 'वाल्मीकि' प्रणीत 'श्रीरामायण' से संकलित किया गया है। इसमें राम के रूप, अनेक गुणों और चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन किया गया है।

हिन्दी अनुवाद—(वे राम) सबको समान रूप से देखने वाले, सुन्दर व सुसंगठित शरीर वाले, कोमल व आर्कषक रंग वाले, प्रतापी, विशाल वक्षस्थल वाले, बड़ी-बड़ी आँखों वाले, धन-सम्पत्ति वाले तथा सम्पूर्ण शुभ गुणोंं से युक्त हैं।

[**शब्दार्थ—समः** = समान, **विभक्तांग (विभक्त + अंग)** = सुसंगठित शरीर, **स्निग्धः** = कोमल, **पनीवक्ष** = चौड़ी छाती वाले, **विशालाक्षः** = (विशाल + अक्ष) बड़ी आँखों वाले, **लक्ष्मीवाञ्छुभलक्षः** = धन सम्पत्ति तथा शुभ गुणों वाले।]

(ङ) धर्मज्ञः सत्यसन्धश्च प्रजानां च हिते रतः ।
यशस्वी ज्ञानसम्पन्नः शुचिर्वश्यः समाधिमान् ।।

सन्दर्भ—प्रस्तुत श्लोक **'संस्कृत परिचायिका'** के **'पुरुषोत्तमः रामः'** पाठ से उद्धृत है। इसे 'वाल्मीकि' प्रणीत 'श्रीरामायण' से संकलित किया गया है। इसमें राम के रूप, अनेक गुणों और चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन किया गया है।

हिन्दी अनुवाद—(वे राम) धर्म को जानने वाले, सत्य में दृढ़ रहने वाले, अपनी प्रजा के हित में लगे रहने वाले, यश से सम्पन्न, ज्ञान से पूर्ण, पवित्र, अपनी इन्द्रियों को वश में रखने वाले तथा तपस्या में लगे रहने वाले हैं।

[**शब्दार्थ—धर्मज्ञः** = धर्म को जानने वाले, **सत्यसन्धश्च** = सत्य में दृढ़ रहने वाले, **रतः** = लगे रहने वाला। **शुचि** = पवित्र। **वश्यः** = इद्रियों को वश में रखने वाले, **समाधिमान** = तपस्या में लगे रहने वाले।]

(च) प्रजापति समः श्रीमान् धाता रिपुनिषूदनः ।
रक्षिता जीवलोकस्य धर्मस्य परिरक्षिता ।।

सन्दर्भ—प्रस्तुत श्लोक **'संस्कृत परिचायिका'** के **'पुरुषोत्तमः रामः'** पाठ से उद्धृत है। इसे 'वाल्मीकि' प्रनीत 'श्री रामायण' से संकलित किया गया है। इसमें राम के रूप, अनेक गुणों और चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन किया गया है।

हिन्दी अनुवाद—(वे राम) प्रजापति के समान धन सम्पत्ति वाले, ब्रह्मा के समान शत्रुओं का नाश करने वाले, जीवलोक के रक्षक और धर्म की रक्षा करने वाले हैं।

[**शब्दार्थ—रिपु** = शत्रु, **निषूदनः** = नाश करने वाले, **परिरक्षिता** = विशेष रूप से रक्षा करने वाले]

(छ) रक्षिता स्वस्य धर्मस्य स्वजनस्य च रक्षिता ।
वेदवेदाङ्गतत्त्वज्ञो धनुर्वेदे च निष्ठितः ।।

सन्दर्भ—प्रस्तुत श्लोक **'संस्कृत परिचायिका'** के **'पुरुषोत्तमः रामः'** पाठ से उद्धृत है। इसे 'वाल्मीकि' प्रणीत 'श्रीरामायण' से संकलित किया गया है। इसमें राम के रूप, अनेक गुणों और चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन किया गया है।

हिन्दी अनुवाद—(वे राम) अपने धर्म की रक्षा करने वाले और अपने भक्तों की रक्षा करने वाले, वेद तथा वेद के अंगों के तत्व को जानने वाले तथा धनुर्वेद में अत्यन्त ही निपुण हैं।

[**शब्दार्थ—स्वस्थ** = अपने, **स्वजनस्य** = अपने भक्त की, **निष्ठितः** = निपुण।

(ज) सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञः स्मृतिमान् प्रतिभावान् ।
सर्वलोकप्रियः साधुरदीनात्मा विचक्षणः ।।

सन्दर्भ—प्रस्तुत श्लोक **'संस्कृत परिचायिका'** के **'पुरुषोत्तमः रामः'** पाठ से उद्धृत है। इसे 'वाल्मीकि' प्रणीत 'श्रीरामायण' से संकलित किया गया है। इसमें राम के रूप, अनेक गुणों और चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन किया गया है।

हिन्दी अनुवाद—(वे राम) सभी शास्त्रों के अर्थ के तत्वों को जानने वाले, अच्छी स्मरण शक्ति से युक्त, प्रतिभा से सम्पन्न, समस्त संसार के प्रिय, सज्जन, उदार विचारों वाले तथा अत्यधिक अनोखे विद्वान् हैं।

[**शब्दार्थ—तत्त्वज्ञः** = सार को समझने वाले, **स्मृतिमान्** =स्मरण शक्ति-सम्पन्न, **प्रतिभानवान** = प्रतिभा से सम्पन्न, **साधु** = सज्जन, **अदानात्मा** = उदार विचारों वाले, **विचक्षण** = अनोखे विद्वान्।

(झ) स च नित्यं प्रशान्तात्मा मृदुपूर्वं च भाषते ।
उच्चमानोऽपि परुषं नोत्तरं प्रतिपद्यते ।।

सन्दर्भ—प्रस्तुत श्लोक **'संस्कृत परिचायिका'** के **'पुरुषोत्तमः रामः'** पाठ से उद्धृत है। इसे 'वाल्मीकि' प्रणीत 'श्रीरामायण' से संकलित किया गया है। इसमें राम के रूप, अनेक गुणों और चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन किया गया है।

हिन्दी अनुवाद—(वे राम) सदैव शान्त चित्त वाले, मधुरवाणी वाले, मान प्रतिष्ठा में भी सर्वोपरि तथा सबसे श्रेष्ठ होने पर भी कठोर वचन नहीं कहते हैं अर्थात् दूसरो के कठोर वचन कहे जाने पर भी उत्तर नहीं देते हैं।

[**शब्दार्थ—नित्य** = हमेशा, **प्रशान्तात्मा** = शान्तचित वाले, **मृदु** = मधुर, **भाषते** = बोलते हैं;, **उच्चमानोऽपि** = स्वाभिमान होने पर भी, **परुषं** = कठोर, **नोत्तरं** = उत्तर नहीं, **प्रतिपद्यते** = कहने वाले।]

(ञ) सर्वविद्याव्रतस्नातो यथावत् साङ्गवेदवित् ।
अमोघक्रोधहर्षश्च त्यागसंयमकालवित् ।।

सन्दर्भ—प्रस्तुत श्लोक **'संस्कृत परिचायिका'** के **'पुरुषोत्तमः रामः'** पाठ से उद्धृत है। इसे 'वाल्मीकि' प्रणीत 'श्रीरामायण' से संकलित किया गया है। इसमें राम के रूप अनेक गुणों और चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन किया गया है।

हिन्दी अनुवाद—श्री राम जैसे सभी विद्याओं और व्रत संकल्पों में निपुण हैं, वैसे ही सभी अंगों सहित वेदों के भी जानकार हैं। वे क्रोध और हर्ष से रहित, त्यागशील, संयम रखने वाले तथा तीनों कालों (वर्तमान, भूत तथा भविष्य) को जानने वाले हैं।

[**शब्दार्थ—सर्व** = सभी, **स्नातः** = निपुण, **यथावत्** = उसी प्रकार, **वेदविता** = वेदों को जानने वाला, **अमोघ** = अचूक, **हर्ष** = प्रसन्नता, **कालवित्** = तीनों कालो के ज्ञाता।

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

(क) रामः कस्मिन् वंशे उत्पन्नः आसीत्?
उत्तर—रामः इक्ष्वाकुवंशे उत्पन्नः आसीत्।

(ख) कः प्रजापतिः समः श्रीमान् आसीत?
उत्तर—रामः प्रजापतिः समः श्रीमान् आसीत्।

(ग) रामः कीदृशं भाषते?
उत्तर—रामः सदैव प्रशान्तात्मा मृदुपूर्व च भाषते।

(घ) कः साङ्गवेदविद् आसीत्?
उत्तर—पुरुषोत्तम्: रामः साङ्गवेदविद् आसीत्।

(ङ) रामो वीर्ये कीदृशाः आसीत्?
उत्तर—रामो वीर्ये विष्णुनाः आसीत्।

(च) रामस्य के विशिष्टाय गुणाः आसन्?
उत्तर—नियतात्मा, नीतिमान्, द्युतिमान, घृतिमान् वशी आद्य विशिष्टाय गुणाः आसन्।

(छ) रामः कस्या विद्यायां निपुणः आसीत्?
उत्तर—रामः सर्व विद्याव्रतस्नातों निपुणः आसीत्।

अनुवादात्मक

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) राम के छोटे भाई का नाम लक्ष्मण है।
उत्तर—रामस्य अनुजः नामः लक्ष्मण अस्ति।

(ख) राम बड़े धैर्यवान् और कान्तिमान् थे।
उत्तर—रामः धृतिमान् द्युतिमान च आसीत।

(ग) वे नीतिज्ञ और बुद्धिमान् थे।
उत्तर—सः नीतिज्ञः बुद्धिमान च आसीत्।

(घ) वे लोकों के रक्षक थे।
उत्तर—सः लोकानां परिरक्षिताः आसीत्।

(ङ) वे दूसरों का कल्याण करते थे।
उत्तर—सः परेषां कल्याणं करोति् स्म।

(च) वे धनुर्विद्या में निपुण थे।
उत्तर—सः धनुर्विद्यायां निपुणः आसीत्।

(छ) राम सर्वगुण सम्पन्न थे।
उत्तर—राम सर्वलक्षणहीनोऽपिः आसीत्।

(ज) धर्म की रक्षा करो।
उत्तर—रक्षिता धर्मस्यः।

व्याकरणात्मक

1. निम्नलिखित शब्दों में समास-विग्रह कीजिए-
महाबाहुः, महोरस्कः, सुललाटः, महाहनुः, सुशिराः, क्रोधहर्षश्च।

उत्तर—	**शब्द**	**समास-विग्रह**
	महाबाहुः	महान् चासौ बाहुः
	महोरस्कः	महान् चासौ उरस्कः
	सुललाटः	सुन्दरः ललाटः
	महाहनुः	महान् चासौ हनुः
	सुशिराः	सुन्दराः शिराः
	क्रोधहर्षश्च।	क्रोधः च हर्षः च

2. जिस प्रकार से 'वान्' लगाकर 'प्रतापवान्' शब्द बना है, उसी प्रकार से कुछ अन्य शब्द बनाइए।
उत्तर—शक्तिवान्, धैर्यवान्, पहलवान, मूल्यवान्, खुशवान्, निष्ठावान्, रूपवान्।

3. निम्नलिखित शब्दों का सन्धि-विच्छेद कीजिए–
नियतात्मा, विशालाक्षो, साधुरदीनात्मा, नोत्तरम्, श्रीमाञ्छत्रु, विपुलांसो, धनुर्वेदे, कृतेनैकेन।

उत्तर—	**शब्द**		**सन्धि विच्छेद**		
नियतात्मा	=	नियत	+	आत्मा
विशालाक्षो	=	विशाल	+	अक्षो
साधुरदीनात्मा	=	साधुः	+	अदीन + आत्मा
नोत्तरम्	=	न	+	उत्तरम्
श्रीमाञ्छत्रु	=	श्रीमान्	+	शत्रु
विपुलांसो	=	विपुल	+	अंसो
धनुर्वेदे	=	धनुः	+	वेदे
कृतेनैकेन	=	कृतेन	+	एकेन

4. 'राम' शब्द के पञ्चमी और सप्तमी विभक्तियों के सभी रूप लिखिए।

उत्तर—	**विभक्ति**	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
	पंचमी	रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
	सप्तमी	रामे	रामयोः	रामेषु

5. 'बाहु' से पूर्व 'महा' जोड़कर 'महाबाहु' शब्द की रचना की गयी है। ऐसे ही 'महा' जोड़कर हिन्दी के पाँच शब्दों की रचना कीजिए।
उत्तर—महाराज, महान, महावीर, महाराष्ट्र, महामाया।

❑

4

सिद्धिमन्त्रः

(क) अत्रैव ग्रामे पैतृकधनेन धनवान् धर्मदासः निवसति। तस्य सकलं कार्यं सेवकाः सम्पादयन्ति। सेवकानाम् उपेक्षया तस्य पशवः दुर्बलाः, क्षेत्रेषु च बीजमात्रमपि अन्नं नोत्पद्यते। क्रमशः तस्य पैतृकं धनं समाप्तम् अभवत्। तस्य जीवनम् अभावग्रस्तं जातम्।

अध्याय के लिए प्रश्न

तथ्यात्मक

प्रश्न 1. निम्नलिखित का सन्दर्भसहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यांश '**संस्कृत परिचायिका**' के '**सिद्धिमन्त्रः**' नामक पाठ से उद्धृत है। यहाँ लेखक ने कठोर परिश्रम की महत्ता पर प्रकाश डाला है। परिश्रम से ही सफलता मिलती है, यही सिद्धिमन्त्र है।

हिन्दी अनुवाद—इसी गाँव में पिता के धन से धनवान् धर्मदास निवास करता है। उसके सम्पूर्ण कार्य को उसके नौकर ही करते हैं। नौकरों की उदासीनता से उसके पशु दुर्बल हो गये तथा खेतों में बीजमात्र को भी अन्न पैदा नहीं हुआ। धीरे-धीरे उसका पैतृक धन समाप्त हो गया। उसका जीवन अभाव से युक्त हो गया।

[**शब्दार्थ**—**अत्रैव** = यहीं, **सकलं** = सम्पूर्ण, **सम्पादयन्ति** = करते हैं, **उपेक्षया** = उदासीनता से, **नोपद्यते (न + उत्पद्यते)** = उत्पन्न नहीं होता है, **क्रमशः** = धीरे-धीरे, **अभावग्रस्तं** = अभावों से युक्त।]

(ख) रामदासः नारायणपुरे निवसति। सः नित्यं ब्राह्मे मुहूर्त्ते उत्थाय नित्यकर्माणि करोति, नारायणं स्मरति, ततः परं पशुभ्यः घासं ददाति। अनन्तरं पुत्रेण सह सः क्षेत्राणि गच्छति। तत्र सः कठिनं श्रमं करोति। तस्य श्रमेण निरीक्षणेन च कृषौ प्रभूतम् अन्नम् उत्पद्यते। तस्य पशवः हृष्टपुष्टाङ्गाः सन्ति, गृहं च धनधान्यादिपूर्णम् अस्ति।

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यांश '**संस्कृत परिचायिका**' के '**सिद्धिमन्त्रः**' नामक पाठ से उद्धृत है। यहाँ लेखक ने कठोर परिश्रम की महत्ता पर प्रकाश डाला है। परिश्रम से ही सफलता मिलती है, यही सिद्धिमन्त्र है।

हिन्दी अनुवाद—रामदास नारायणपुर में रहता है। यह नित्य प्रति प्रातःकाल उठकर नित्य कर्म करता है, भगवान का स्मरण करता है, तब अपने पशुओं को घास देता है। इसके पश्चात् अपने पुत्र के साथ खेतों में चला जाता है, वहाँ वह कठोर परिश्रम करता है। उसके परिश्रम और देखभाल से उसके खेतों में अत्यधिक अन्न उत्पन्न होता है। उसके पशु हृष्ट-पुष्ट अंगों वाले हैं। घर धन-धान्य से भरा हुआ है।

[**शब्दार्थ**—**निवसति** = रहता है, **उत्थाय** = उठकर, **स्मरति** = स्मरण करता है, **निरीक्षणेन्** =देखभाल से, **प्रभूतम्** = अत्यधिक।]

(ग) एकदा वनात् प्रत्यागत्य रामदासः स्वद्वारि उपविष्टं धर्मदासं दुर्बलं खिन्नं च दृष्ट्वा अपृच्छत्, ''मित्र धर्मदास! चिराद् दृष्टोऽसि! किं केनापि रोगेण ग्रस्तः, येन एवं दुर्बलः।'' धर्मदासः प्रसन्नवदनं तम् अवदत्, ''मित्र! नाहं रुग्णः, परं क्षीणविभवः इदानीम् अन्य इव सञ्जातः। इदमेव चिन्तयामि केनोपयेन, मन्त्रेण-तन्त्रेण वा सम्पन्नः भवेयम्।'' रामदासः तस्य दारिद्र्यस्य कारणम् तस्यैव अकर्मण्यता इति विचार्य एवम् अकथयत्– ''मित्र! पूर्वं केनापि दयालुना साधुना मह्यम् एकः सम्पत्तिकारकः मन्त्रः दत्तः, यदि भवान् अपि तं मन्त्रम् इच्छति तर्हि तेन उपदिष्टम् अनुष्ठानम् आचरतु।'' ''मित्र! शीघ्रं कथय तदनुष्ठानं येनाहं पुनः सम्पन्नः भवेयम्।'' रामदासः अवदत्, ''मित्र! नित्यं सूर्योदयात् पूर्वम् उत्तिष्ठ, स्वपशूनां च उपचर्यां स्वयमेव कुरु, प्रतिदिनं च क्षेत्रेषु कर्मकराणां कार्याणि निरीक्षस्व। अनेन तव अनुष्ठानेन प्रसन्नः सः महात्मा वर्षान्ते अवश्यं तुभ्यं सिद्धिमन्त्रं दास्यति इति।''

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यांश '**संस्कृत परिचायिका**' के '**सिद्धिमन्त्रः**' नामक पाठ से उद्धृत है। यहाँ लेखक ने कठोर परिश्रम की महत्ता पर प्रकाश डाला है। परिश्रम से ही सफलता मिलती है, यही सिद्धिमन्त्र है।

हिन्दी अनुवाद—एक बार वन से लौटकर रामदास ने अपने दरवाजे पर बैठे हुए धर्मदास को अत्यन्त दुर्बल एवं दुःखी देखकर कहा, ''मित्र धर्मदास ! बहुत दिनों में दिखायी दिए हो। क्या किसी रोग से ग्रस्त हो' जिससे इतने दुःखी हो?'' धर्मदास ने प्रसन्न मुख से उत्तर दिया, ''मित्र। मैं रोगी नहीं हूँ, किन्तु धन के नष्ट होने से आज कुछ ऐसा ही हो गया हूँ। मैं विचार कर रहा हूँ कि किस उपाय से, मन्त्र से अथवा तन्त्र से सम्पत्ति वाला बन जाऊँ।'' रामदास ने उसकी दरिद्रता के कारण उसी की उदासीनता अथवा आलस्य समझकर इस प्रकार कहा, ''मित्र! पहले किसी दयालु महात्मा ने मुझे एक सम्पत्ति देने वाला मन्त्र दिया। यदि आप भी इस मन्त्र को चाहते हैं, तो उसके द्वारा दी गयी कार्यविधि का आचरण करो। उसके पश्चात् उसी मन्त्र को देने वाले साधु के पास जाओ। वह बोला ''मित्र। उस कार्य को शीघ्र कहो जिससे मैं पुनः सम्पत्ति वाला हो जाऊँ।'' रामदास बोला! ''मित्र नित्यप्रति सूर्योदय से पहले उठो। अपने पशुओं की सेवा अपने आप ही करो। प्रत्येक दिन खेतों में सेवकों का निरीक्षण करो। इस प्रकार से कार्य करने से प्रसन्न होकर वह महात्मा वर्ष के अन्त में अवश्य ही तुम्हें सिद्ध मन्त्र दे देगा।''।

[**शब्दार्थ**—**प्रत्यागत्य** = लौटकर, **उपविष्टं** = बैठे हुए, **दृष्ट्वा** = देखकर, **चिराद्** = बहुत समय से, **क्षीणविभवः** = धन से रहित, **इदानीम्** =इस समय, **सञ्जातः** = हो गये हो, **अकर्मण्यता** = आलस्य, **अनुष्ठान** = कार्यविधि, **येनाहम् (येन + अहम्)** = जिससे मैं, **उपचर्या** = सेवा, **कुरु** = करो।, **कर्मकाराणां** = सेवकों के, **वर्षान्ते (वर्ष + अन्ते)** = वर्ष के अन्त में।]

(घ) विपन्नः धर्मदासः सम्पत्तिम् अभिलषन् वर्षम् एकं यथोक्तम् अनुष्ठानम् अकरोत्। नित्यं प्रातः जागरणेन तस्य स्वास्थ्यम् अवर्धत्। तेन नियमेन पोषिताः पशवः स्वस्थाः सबलाः च जाताः, गावः महिष्यः च प्रचुरं दुग्धम् अयच्छन्। तदानीं तस्य कर्मकराः अपि कृषिकार्ये सन्नद्धाः अभवन्। अतः तस्मिन् वर्षे तस्य क्षेत्रेषु प्रभूतम् अन्नम् उत्पन्नम्, गृहं च धनधान्यपूर्णं जातम्।

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यांश '**संस्कृत परिचायिका**' के '**सिद्धिमन्त्रः**' नामक पाठ से उद्धृत है। यहाँ लेखक ने कठोर परिश्रम की महत्ता पर प्रकाश डाला है। परिश्रम से ही सफलता मिलती है, यही सिद्धिमन्त्र है।

हिन्दी अनुवाद—अत्यधिक दुःखी धर्मदास ने सम्पत्ति को चाहने की इच्छा से एक वर्ष तक विधिपूर्वक कठोर परिश्रम किया। नित्य प्रातः जागरण से उसका स्वास्थ्य अच्छा हो गया या बढ़ गया। उसके नियमपूर्वक पालन-पोषण करने से उसके पशु बलवान एवं स्वस्थ हो गए। गाय और भैंसें अत्यधिक दूध देने लगीं। उस समय उसके सेवक भी कृषि-कार्य में तत्पर हो गए। इसलिए उस वर्ष उसके खेतों में बहुत अधिक अन्न उत्पन्न हो गया और उसका घर धन-धान्य से भर गया।

[**शब्दार्थ**—**विपन्न** = दुःखी, **अभिलषन्** = इच्छा करते हुए, **पोषिताः** = पाले गये, **महिष्यः** = भैंसें, **प्रचुरं** = अत्यधिक, **तदानीं**= उस समय, **सन्नद्धाः** = संलग्न।]

(ङ) एकस्मिन् दिने प्रातः रामदासः क्षेत्राणि गच्छन् दुग्धपरिपूर्णपात्रं हस्ते दधानं प्रसन्नमुखं धर्मदासम् अवलोक्य अवदत्, ''अपि कुशलं ते, वर्धते किं तव अनुष्ठानम्? किं तं महात्मानं मन्त्रार्थम् उपगच्छाव?'' धर्मदासः प्रत्यवदत्– ''मित्र! वर्षपर्यन्तं श्रमं कृत्वा मया इदं सम्यग् ज्ञातं यत् 'कर्म' एव स सिद्धिमन्त्रः। तस्यैव अनुष्ठानेन मनुष्यः सर्वम् अभीष्टं फलं लभते। तस्यैव अनुष्ठानस्य प्रभावेण सम्प्रति अहं पुनः सुखं समृद्धिं च अनुभवामि।'' तत् श्रुत्वा प्रहृष्टः सन्तुष्टः च रामदासः यथास्थानम् अगच्छत्।

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यांश '**संस्कृत परिचायिका**' के '**सिद्धिमन्त्रः**' नामक पाठ से उद्धृत है। यहाँ लेखक ने कठोर परिश्रम की महत्ता पर प्रकाश डाला है। परिश्रम से ही सफलता मिलती है, यही सिद्धिमन्त्र है।

हिन्दी अनुवाद—एक दिन प्रात:काल रामदास ने खेत को जाते हुए, दूध से भरे हुए पात्र को हाथ में धारण किए हुए प्रसन्न मुख वाले धर्मदास को देखकर पूछा—"तुम कुशलपूर्वक तो हो, क्या तुम्हारा कार्य सही प्रकार से चल रहा है? क्या उस महात्मा के पास मन्त्र लेने के लिए चलें?" धर्मदास ने उत्तर दिया, "मित्र। पूरे वर्ष मेहनत करके मैंने यह भली-भाँति समझ लिया है कि कर्म ही वह सम्पन्नता देने वाला सिद्धिमन्त्र है। उसी को अनुष्ठानपूर्वक करने से मनुष्य सभी इच्छित फलों को प्राप्त करता है। उसी अनुष्ठान के प्रभाव से मैं अब फिर से सुख और वैभव का अनुभव कर रहा हूँ।" उसको सुनकर प्रसन्न होकर सन्तुष्ट हुआ रामदास अपने स्थान की ओर चला गया।

[**शब्दार्थ**—**गच्छन्** =जाते हुए, **दधान** = लिए हुये, **अवलोक्य** = देखकर, **सम्यग्** =अच्छी प्रकार, **अभीष्ट** = मन इच्छित, **सम्प्रति** = इस समय, **अनुभवामि** = अनुभव करता हूँ, **प्रहस्त:** = प्रसन्न होकर।]

(च) सत्यमेव उक्तम्–

उत्साहसम्पन्नमदीर्घसूत्रं क्रियाविधिज्ञं व्यसनेष्वसक्तम् ।
शूरं कृतज्ञं दृढसौहृदं च लक्ष्मी: स्वयं याति निवासहेतो: ।।

सन्दर्भ—प्रस्तुत श्लोक **'संस्कृत परिचायिका'** के **'सिद्धिमन्त्र:'** नामक पाठ से उद्धृत है। यहाँ लेखक ने कठोर परिश्रम की महत्ता पर प्रकाश डाला है। परिश्रम से ही सफलता मिलती है, यही सिद्धिमन्त्र है।

हिन्दी अनुवाद—सत्य ही कहा गया है— उत्साह से सम्पन्न, आलस्य से रहित, काम करने की विधि का ज्ञाता, बुरे कामों में न फँसने वाले, शूरवीर, किए गए उपकार को मानने वाले और पक्की मित्रता रखने वाले मनुष्य के पास लक्ष्मी स्वयं निवास करने आती है।

[**शब्दार्थ**—**उत्साहसम्पन्नम्** =उत्साहयुक्त, **अदीर्घसूत्रम्** =आलस्य रहित, **क्रियाविधिज्ञम्** = कार्य करने के प्रकार को जानने वाले, **व्यसनेषु** = बुराइयों में, **असक्तम्** = न लगे हुए, **शूरं** = शूरवीर, **कृतज्ञं** = उपकार को मानने वाला, **दृढसौहृदं** = पक्की मित्रता वाले, **निवासहेतो** = निवास करने के लिए।]

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

(क) रामदास: केन सह क्षेत्राणि गच्छति?

उत्तर—रामदास: पुत्रेण सह क्षेत्राणि गच्छति।

(ख) रामदास: कदा उत्तिष्ठति किं करोति च?

उत्तर—रामदास: ब्राह्मे मुहूर्ते उत्तिष्ठति नित्यकर्माणि करोति नारायणं स्मरति च।

(ग) रामदास: कुत्र निवसति?

उत्तर—रामदास: नारायणपुरे निवसति।

(घ) धर्मदासस्य दारिद्र्यस्य किं कारणम् आसीत्?

उत्तर—धर्मदासस्य दारिद्र्यस्य कारणम् अकर्मण्यता आसीत्।

(ङ) रामदास: धर्मदासं किम् अपृच्छत्?

उत्तर—रामदास: धर्मदासं अपृच्छत-"मित्र धर्मदास! चिराद् दृष्टोऽसि ! किं केनापि रोगेणग्रस्त:, येन एव दुर्बल:।

(च) केन कारणेन धर्मदासस्य स्वास्थ्यम् अवर्धत्?

उत्तर—नित्यं प्रात: जागरणेन धर्मदासस्य स्वास्थ्यम् अवर्धत्।

(छ) धर्मदास: कथं सम्पन्न: अभवत्?

उत्तर—धर्मदास: 'कर्म' करणेन सम्पन्न: अभवत्।

(ज) सिद्धिमन्त्र: किम् अस्ति?

उत्तर—कर्म एव स सिद्धिमन्त्र: अस्ति।

(झ) किंम् कृत्वा मनुष्य: सर्वम् अभीष्टं फलं लभते?

उत्तर—श्रमं कृत्वा मनुष्य: सर्वम् अभीष्टं फलं लभते।

(ञ) लक्ष्मी: निवासहेतो कं स्वयं याति?

उत्तर—उत्साहसम्पन्नं अदीर्घसूत्रं, क्रियाविधिज्ञं, व्यसनेषु, असक्तं, शूरं, कृतज्ञं, दृढ सौहृदं च लक्ष्मी: निवासहेतो स्वयं याति।

(ट) नारायणपुरै कौ निवसत:?

उत्तर—नारायणपुरे रामदास: धर्मदास च निवसत:

(ठ) रामदास: धर्मदासाय कं मन्त्रम् अददात्?

उत्तर—रामदास: धर्मदासाय सम्पत्तिकारकं मन्त्रम् अददात्

(ड) वर्षपर्यन्तं श्रमं कृत्वा धर्मदासेन किं ज्ञातम्?

उत्तर—वर्षपर्यन्तं श्रमं कृत्वा धर्मदासेन ज्ञातम् यत् 'कर्म' एव सिद्धमन्त्रा:।

बोधात्मक

1. कोष्ठक में दिये गये शब्दों के सही रूप से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) रामदास: ..... सह क्षेत्राणि गच्छति। (पुत्र)

उत्तर—पुत्रेण।

(ख) धर्मदास: प्रसन्नवदनं तम् ..... । (वद्)

उत्तर—अवदत्।

(ग) अनेन तव ..... प्रसन्न: स: महात्मा वर्षान्ते अवश्यं तुभ्यं सिद्धिमन्त्रं दास्यति इति। (अनुष्ठान)

उत्तर—अनुष्ठानेन।

(घ) किं तं ..... मन्त्रार्थम् उपगच्छाव? (महात्मा)

उत्तर—महात्मानं।

(ङ) अहं पुन: सुखं समृद्धि च ..... ।(अनुभव)

उत्तर—अनुभवामि।

अनुवादात्मक

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) धर्मदास बहुत दु:खी है।

उत्तर—धर्मदास अत्यधिक: दु:खी अस्ति।

(ख) मेरे समस्त कार्य नौकर सम्पन्न करते हैं।

उत्तर—मम सकलं कार्यं सेवका: सम्पादयन्ति।

(ग) रामदास नारायणपुर में रहता है।

उत्तर—रामदास: नाराणपुरे निवसति।

(घ) कल हम साधु के पास जाएँगे।

उत्तर—श्व वयम् साधुस्य समीपे गच्छाम:।

(ङ) वह मुझे देखकर बोला।

उत्तर—स: मां दृष्ट्वा अवदत्।

(च) एक बार रामदास ने धर्मदास से पूछा।

उत्तर—एकदा रामदास: धर्मदासम् च अपृच्छत्

(छ) ग्वाला गायों को घास देता है।

उत्तर—गोपाल: धनव: घासं ददाति।

(ज) वह खेत पर काम करता है।

उत्तर—स: क्षेत्रे कर्मं करोति।

(झ) प्रतिदिन सूर्योदय से पहले उठना चाहिए।

उत्तर—नित्यं सूर्योदयात् पूर्वम् उत्तिष्ठेयु।

(ञ) रामदास अपने घर गया।

उत्तर—रामदासः स्वगृहं अगच्छत्।

(ट) प्रतिदिन अपने कार्यों का निरीक्षण करो।

उत्तर—नित्यं स्वकार्याणि निरीक्षस्वः।

(ठ) कार्य ही सिद्धिमन्त्र है।

उत्तर—कर्म एव सिद्धिमन्त्रः अस्ति।

(ड) मैं सूर्योदय से पूर्व उठता हूँ।

उत्तर—अहं ब्राह्मे मुहूर्ते उत्थाय अस्मि।

व्याकरणात्मक

1. निम्नलिखित शब्द-रूपों में शब्द, विभक्ति एवं वचन बताइए–

पशुभ्यः, उपेक्षया, रोगेण, क्षेत्रेषु, कृषिकार्ये, अनुष्ठानेन।

उत्तर—	धातु	विभक्ति	वचन
पशुभ्यः	पशु	चतुर्थी/पञ्चमी	बहुवचन
उपेक्षया	उपेक्षा	तृतीया	एकवचन
रोगेण	रोग	तृतीया	एकवचन
क्षेत्रेषु	क्षेत्र	सप्तमी	बहुवचन
कृषिकार्ये	कृषि कार्य	सप्तमी	एकवचन
अनुष्ठानेन	अनुष्ठान	तृतीया	एकवचन

2. निम्नलिखित धातु-रूपों के मूल धातु, लकार, पुरुष एवं वचन का उल्लेख कीजिए–

निवसित, करोति, अभवत्, दास्यति, आचरतु, अगच्छत्।

उत्तर—	धातु	लकार	पुरुष	वचन
निवसित	नि + वस्	लट्	प्रथम पुरुष	एकवचन
करोति	कृ	लट्	प्रथम पुरुष	एकवचन
अभवत्	भू	लङ्	प्रथम पुरुष	एकवचन
दास्यति	दा	लट्	प्रथम पुरुष	एकवचन
आचरतु	आ + चर्	लोट्	प्रथम पुरुष	एकवचन
अगच्छत्	गम्	लङ्	प्रथम पुरुष	एकवचन

3. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि कीजिए–

अत्र + एव, केन + अपि, न + अहं, केन + उपायेन, मन्त्र + उपदेशकम्, सूर्य + उदयात्, वर्ष + अन्ते, यथा + उक्तम्, महा + आत्मा, मन्त्र + अर्थम्, अभि + इष्टम्, व्यसनेषु + असक्तम्।

उत्तर—

शब्द	सन्धि
अत्र + एव	अत्रैव
केन + अपि	केनापि
न + अहं	नाहम्
केन + उपायेन	केनोपायेन
मन्त्र + उपदेशकम्	मन्त्रोपदेशकम्
सूर्य + उदयात्	सूयोदयात्
वर्ष + अन्ते	वर्षान्ते
यथा + उक्तम्	यथोक्तम्
महा + आत्मा	महात्मा
मन्त्र + अर्थम्	मन्त्रार्थम्
अभि + इष्टम्	अभीष्टम्
व्यसनेषु + असक्तम्	व्यसनेष्वसक्तम्

4. निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखिए–

कठिनम्, दुर्बलः उपेक्षा, चिरात्, प्रसन्नः, दारिद्र्यम्, सम्पत्तिः, रुग्णः।

उत्तर—

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
कठिनम्	सरलम्	**प्रसन्नः**	खिन्न
दुर्बल	सबलः	**दारिद्र्यम्**	धनधान्यम्
उपेक्षा	अपेक्षा	**सम्पत्तिः**	विपत्तिः
चिरात्	अल्पात्	**रुग्णः**	स्वस्थम्

5. 'अवदत्' किस काल और वचन का रूप है? इस काल के अन्य रूपों को पूर्ण कीजिए।

उत्तर— 'अवदत्' लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन का रूप है। इसके सभी लकार रूप निम्नवत् हैं—

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अवदत्	अवदताम्	अवदन्
मध्यम	अवदः	अवदतम्	अवदत
उत्तम	अवदम्	अवदाव	अवदाम

6. निम्नलिखित वाक्यों में मोटे छपे शब्दों में कारक और विभक्ति का नाम बताते हुए उनके प्रयोग का कारण बताइए–

(क) रामदासः पुत्रेण सह क्षेत्राणि गच्छति।

उत्तर—'पुत्रेण' में करण कारक, तृतीय विभक्ति है। 'सह' के योग में तृतीया विभक्ति होती है।

(ख) सः कठिनं श्रमं करोति।

उत्तर—'श्रमं' में कर्म कारक द्वितीया विभक्ति है। कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है।

(ग) सः तुभ्यं सिद्धिमन्त्रं दास्यति।

उत्तर—'तुभ्यं' में सम्प्रदान कारक चतुर्थी विभक्ति है। 'दा' धातु के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है।

(घ) धर्मदासः प्रत्यवदत्।

उत्तर—'धर्मदासः' में कर्ता कारक प्रथम विभक्ति है। कर्ता में प्रथम विभक्ति होती है।

7. निम्नलिखित शब्दों में समास-विग्रह कीजिए–

सम्पत्तिकारकः, यथोक्तम्, वर्षपर्यन्तम्, अभावग्रस्तम्, मन्त्रार्थम्, यथास्थानम्।

उत्तर—

पुरुष	समास-विग्रह
सम्पत्तिकारकः	सम्पत्याः कारकः
यथोक्तम्	उक्तम् अनतिक्रम्य
वर्षपर्यन्तम्	वर्षस्य पर्यन्तम्
पुरुष	**समास-विग्रह**
अभावग्रस्तम्	अभावेन ग्रस्तम्
मन्त्रार्थम	मन्त्राय इदम्
यथास्थानम्	स्थानम् अनतिक्रम्यं

8. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नाम भी लिखिए–

प्रत्यागत, केनोपायेन, सूर्योदयात्, वर्षान्ते, यथोक्तम्, तस्यैव।

शब्द	सन्धि-विच्छेद	सन्धि का नाम
प्रत्यागत	प्रति + आगत	यण् सन्धि :
केनोपायेन	केन + उपायेन	गुण सन्धि :
सूर्योदयात्	सूर्य + उदयात्	गुण सन्धि :
वर्षान्ते	वर्षा + अन्ते	दीर्घ सन्धि :
यथोक्तम्	यथा + उक्तम्	गुण सन्धि :
तस्यैव	तस्य + एव	वृद्धि सन्धि :

❑

5 सुभाषितानि

परीक्षापयोगी प्रश्न

तथ्यात्मक

प्रश्न 1. निम्नलिखित श्लोकों का हिन्दी में अनुवाद लिखिए–

(क) मनीषिणः सन्ति न ते हितैषिणः
हितैषिणः सन्ति न ते मनीषिणः।
सुहृच्च विद्वानपि दुर्लभो नृणाम्,
यथौषधं स्वादु हितं च दुर्लभम् ।।

सन्दर्भ—प्रस्तुत श्लोक '**संस्कृत परिचायिका**' के '**सुभाषितानि**' नामक पाठ से उद्धृत है। इसमें जीवन उपयोगी शिक्षाएँ निहित हैं।

हिन्दी अनुवाद—जो मनुष्य विद्वान् हैं, वे हितैषी नहीं हैं। जो मनुष्य हितैषी हैं, वे विद्वान नहीं हैं। मित्र भी, और विद्वान भी, ऐसे व्यक्ति की उपस्थिति उसी प्रकार दुर्लभ है, जिस प्रकार स्वादिष्ट और लाभ प्रद औषधि दुर्लभ होती है।

[**शब्दार्थ—मनीषिणः** = विद्वान, **हितैषिणः** = हितैषी, **सुहृच्च** = और मित्र, **यथौषधं** = जिस प्रकार औषधि।]

(ख) वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्खशतैरपि।
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न च तारागणैरपि।।

सन्दर्भ—प्रस्तुत श्लोक '**संस्कृत परिचायिका**' के '**सुभाषितानि**' नामक पाठ से उद्धृत है। इसमे जीवन उपयोगी शिक्षाएँ निहित हैं।

हिन्दी अनुवाद—सैकड़ों मूर्ख पुत्रों के होने की अपेक्षा एक गुणवान पुत्र का होना श्रेष्ठ है। जिस प्रकार एक चन्द्रमा ही अन्धकार को दूर करता है, आकाश में सैकड़ों तारे भी अन्धकार को दूर नहीं कर पाते हैं।

[**शब्दार्थ—वरमेको** = एक ही, **शतैरपि** = सौ भी, **गणैरपि** = तारों का समूह।]

(ग) चक्षुषा मनसा वाचा कर्मणा च चतुर्विधम् ।
प्रसादयति यो लोकं तं लोको नु प्रसीदति ।।

सन्दर्भ—प्रस्तुत श्लोक '**संस्कृत परिचायिका**' के '**सुभाषितानि**' नामक पाठ से उद्धृत है। इसमें जीवन उपयोगी शिक्षाएँ निहित हैं।

हिन्दी अनुवाद—जो व्यक्ति नेत्र से, मन से, वाणी से तथा कर्म से —इन चारों से संसार को प्रसन्न करता है, संसार उसे प्रसन्न रखता है।

[**शब्दार्थ—चक्षुषा** = नेत्र से, **मनसा** = मन से, **वाचा** = वाणी से, **प्रसादयति** = प्रसन्न करता है, **लोक** = संसार।]

(घ) अक्रोधेन जयेत् क्रोधमसाधुं साधुना जयेत् ।
जयेत् कदर्यं दानेन जयेत् सत्येन चानृतम् ।।

सन्दर्भ—प्रस्तुत श्लोक '**संस्कृत परिचायिका**' के '**सुभाषितानि**' नामक पाठ से उद्धृत है। इसमें जीवन उपयोगी शिक्षाएँ निहित हैं।

हिन्दी अनुवाद—अक्रोध से क्रोध को जीतना चाहिये। सज्जनता से दुष्टता को जीतना चाहिये। ज्ञान देने से कृपणता (कंजूसी) को जीतना चाहिये। सत्य से असत्य को जीतना चाहिये।

[**शब्दार्थ—अक्रोधेन** = क्रोध न करके, **जयेत्** =जीतना चाहिये, **असाधुं** = दुष्टता को, **कदर्थ** = कृपणता, **चानृतम्** = असत्य।]

(ङ) अकृत्वा परसन्तापमगत्वा खलमन्दिरम् ।
अनुल्लङ्घ्य सतां मार्गं यत् स्वल्पमपि तद् बहु ।।

सन्दर्भ—प्रस्तुत श्लोक '**संस्कृत परिचायिका**' के '**सुभाषितानि**' नामक पाठ से उद्धृत है। इसमें जीवन उपयोगी शिक्षाएँ निहित हैं।

हिन्दी अनुवाद—दूसरों को दुखी न करके, दुष्ट के घर न जाकर, सज्जनों के मार्ग का बिना उल्लंघन किये जो थोड़ा ही मिल जाए, वही बहुत है।

[**शब्दार्थ—अकृत्वा** = न करके, **परसन्तापं** = दूसरों को दुःखी कर, **अगत्वा** = न जाकर, **खलमन्दिर** = दुष्ट के घर में, **तद्** = वही।]

(च) सत्याधारस्तपस्तैलं दयावर्तिः क्षमा शिखा ।
अन्धकारे प्रवेष्टव्ये दीपो यत्नेन वार्यताम् ।।

सन्दर्भ—प्रस्तुत श्लोक '**संस्कृत परिचायिका**' के '**सुभाषितानि**' नामक पाठ से उद्धृत है। इसमें जीवन उपयोगी शिक्षाएँ निहित हैं।

हिन्दी अनुवाद—सत्य को आधार मानकर उसमें तपस्या रूपी तेल, दया रूपी बत्ती और क्षमा रूपी लौ को उस समय यत्नपूर्वक जलाना चाहिये जब मनुष्य अज्ञान रूपी अन्धकार में प्रवेश कर रहा हो।

[**शब्दार्थ—वर्ति** = बत्ती, **शिखा** = लौ, **प्रवेष्टव्ये** = प्रवेश करना चाहिये, **वार्यताम्** =जलाना चाहिये।]

(छ) मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णा
स्त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः ।
परगुण-परमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यं,
निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः ।।

सन्दर्भ—प्रस्तुत श्लोक '**संस्कृत परिचायिका**' के '**सुभाषितानि**' नामक पाठ से उद्धृत है। इसमें जीवन उपयोगी शिक्षाएँ निहित हैं।

हिन्दी अनुवाद—मन, वाणी और शरीर में पुण्य रूपी अमृत को धारण करने वाले अपने उपकारों के समूह से तीनों लोकों को प्रसन्न करने वाले, दूसरों के छोटे-छोटे गुणों को पर्वत सदृश मानकर अपने हृदय में प्रसन्न होने वाले, सज्जन मनुष्य इस संसार में कितने हैं? (अर्थात् कम हैं।)

[**शब्दार्थ—मनसि** = मन से, **वचसि** = वाणी में, **काये** = शरीर में, **पुण्यपीयूष** = पुण्य रूपी अमृत, **प्रीणयन्तः** = प्रसन्न करते हैं।, **परमाणून्** = छोटे-छोटे, **निजहृदि** = अपने हृदय में, **कियन्तः** = **कितने**।]

(ज) त्यज दुर्जनसंसर्गं भज साधु समागमम् ।
कुरु पुण्यमहोरात्रं स्मरनित्यमनित्यताम् ।।

सन्दर्भ—प्रस्तुत श्लोक '**संस्कृत परिचायिका**' के '**सुभाषितानि**' नामक पाठ से उद्धृत है। इसमें जीवन उपयोगी शिक्षाएँ निहित हैं।

हिन्दी अनुवाद—दुर्जन की संगति त्याग दो तथा सज्जनों का आदर करो। रात-दिन पुण्य (कर्म) करो और नित्यप्रति अपनी इच्छाओं को पूर्ण करने वाले (परमात्मा) का ध्यान करो।

[**शब्दार्थ**—**त्यज** = त्याग दो, **साधु** = सज्जन, **समागमम्** = आदर करो।]

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

(क) लोकः कं प्रसीदति?

उत्तर—यः लोकः प्रसीदति, लोकः तं प्रसीदति।

(ख) कः तमः हन्ति?

उत्तर—चन्द्रः तमः हन्ति।

(ग) किमौषधं दुर्लभम्?

उत्तर—स्वादु हितं च औषधं दुर्लभम्।

(घ) क्रोधं केन जयेत्?

उत्तर—क्रोधं शानया (अक्रोधेन) जयेत्।

(ङ) कदर्यं केन जयेत्?

उत्तर—कदर्यं दानेन जयेत्।

(च) अनृतं केन जयेत्?

उत्तर—अनृतं सत्येन जयेत्।

(छ) किं स्वल्पमपि बहु?

उत्तर—परसन्तापं अकृत्वा खलमन्दिरं अगत्वा संता मार्गम् अनुल्ल्घ्य यत् स्वल्पमपि प्राप्तम् तद् बहु।

(ज) अन्धकारे प्रवेष्टव्ये दीपः केन वार्यताम्?

उत्तर—अन्धकारे प्रवेष्टष्ये दीपो यत्नेन वार्यताम्।

(झ) अहोरात्रं किं किं स्मर कुरु?

उत्तर—नित्यमनित्यताम् अहोरात्रं स्मर कुरु।

(ञ) लोके कियन्तः सन्तः सन्ति?

उत्तर—लोके अत्यलपोः सन्तः सन्ति।

(ट) कीदृशो मार्गः सर्वोत्तमः भवति?

उत्तर—सज्जनाः (सतां) मार्गः सर्वोत्तमः भवति।

(ठ) कस्य बृद्धिः विकसिता भवति?

उत्तर—यः पठति लिखति पश्यति परिपृच्छति पण्डितान् उपाश्रयति च तस्य बुद्धिः विकसिता भवति।

(ड) के मानवाः वन्दनीयाः भवन्ति?

उत्तर—येषां करणं परोपकरणं ते मानवाः वन्दनीयाः भवन्ति।

(ढ) कीदृशः जनाः लोकप्रियः भवति?

उत्तर—चक्षुसा मनसा वाचा कर्मणा च यो लोकं प्रसादयति सः लोकप्रियः भवति।

(ण) कीदृशाः जनाः लोकेः दुर्लभाः?

उत्तर—सुहृच्च विद्वानपि जनाः लोके दुर्लभा।

(त) केषां मार्गः अनुल्लङ्घनीयः भवति?

उत्तर—सतां मार्गः अनुलङ्घनीयः भवति।

(थ) कीदृशः दीपः यत्नेन वार्यताम्?

उत्तर—सत्याधारः तपस्तैलं दयावर्तिः क्षमाशिखा एतादृशः दीपः यत्नेन वार्यताम्।

अनुवादात्मक

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) वह झूठ बोलता है।

उत्तर—सः चानृतम् वद।

(ख) हमें दान अवश्य देना चाहिए।

उत्तर—वयं दानेन।

(ग) एक चन्द्रमा ही अन्धकार को नष्ट करता है।

उत्तर—एकः एव चन्द्र अन्धकारं नश्यति।

(घ) जो विद्वान् होते हैं, वे हितैषी नहीं होते हैं।

उत्तर—ये मनीषिणः सन्ति, ते हितैषिणः न सन्ति।

(ङ) जो मुझे प्रसन्न रखता है, मैं उसे प्रसन्न रखता हूँ।

उत्तर—यः मां प्रसादयति, अहं तं प्रसीदयामि।

(च) असहिष्णुता को उदारता से जीतना चाहिए।

उत्तर—असहिष्णुताम् उदारतया जयेत्।

(छ) दुष्टों की संगति त्याग दो।

उत्तर—दुर्जनस्य संसर्ग त्यजः।

(ज) विनय मनुष्यों का आभूषण है।

उत्तर—विनयः मनुष्याणाम् आभूणम् अस्ति।

(झ) एक ही गुणी पुत्र श्रेष्ठ होता है।

उत्तर—एको गुणी पुत्रः श्रेष्ठः अस्ति।

(ञ) वह सत्य बोलता है।

उत्तर—सः सत्यं वदति।

(ट) कंजूस को दान से जीतना चाहिए।

उत्तर—कदर्यः दानेन् जयेत्।

व्याकरणात्मक

1. निम्नलिखित शब्द-रूपों के विभक्ति एवं वचन बताइए–
यत्नेन, मनसि, हृदि, नृणाम्, चक्षुषा, वाचा, असाधुम्, अन्धकारे।

उत्तर—

शब्द-रूप	शब्द	विभक्ति	वचन
यत्नेन	यत्न	तृतीया	एकवचन
मनसि	मनस्	सप्तमी	एकवचन
हृदि	हृद	सप्तमी	एकवचन
नृणाम्	नृ	षष्ठी	बहुवचन
चक्षुषा	चक्षुष्	तृतीया	एकवचन
वाचा	वाच्	तृतीया	एकवचन
असाधुम्	असाधु	द्वितीया	एकवचन
अन्धकारे	अन्धकारं	सप्तमी	एकवचन

2. निम्नलिखित धातु-रूपों के लकार, वचन तथा पुरुष बताइए–
जयेत्, त्यज, हन्ति, सन्ति, प्रसीदति।

उत्तर—

धातुरूप	लकार	वचन	पुरुष
जयेत्	विधिलिङ्	एकवचन	प्रथम पुरुष
त्यज	लोट्	एकवचन	प्रथम पुरुष
हन्ति	लट्	बहुवचन	प्रथम पुरुष

सन्ति	लट्	बहुवचन	प्रथम पुरुष
प्रसीदति	लट्	बहुवचन	प्रथम पुरुष

3. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

साधु, सत्यम्, दुर्लभं, तमः, क्रोधम्, कदर्यम्, अन्धकारं, शुद्धं, हितम्।

उत्तर—

शब्द	**विलोम**	**शब्द**	**विलोम**
साधु	असाधु	**कदर्यम**	दानम्
सत्यम्	असत्यम्	**अन्धकारं**	प्रकाशं
दुर्लभं	सुलभं	**शुद्धं**	अशुद्धं
तमः	प्रकाशः	**हितम्**	अहितम्
क्रोधम्	अक्रोधम्		

4. निम्नलिखित शब्दों के सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नाम भी लिखिए–

शतैरपि, सुहृच्च, यथौषधम् चतुर्विधम्, चानृतम्।

उत्तर—

शब्द	**सन्धि-विच्छेद**	**सन्धि का नाम**
शतैरपि	शतै : + अपि:	ससजुषो रु:
सुहृच्च	सुहृत + च स्तो:	श्चुना श्चु:
यथौषधम्	यथा + औषधं	वृद्धिरोचि
चतुर्विधम्	चतु: + विधम्	ससजुषो रु:
चानृतम्	च + अनृतम्	दीर्घ सन्धि

5. अकृहवा वा गत्वा में प्रत्यय बताइए।

उत्तर–	**शब्द**
अ + कृ + त्वा	अकृत्वा
गम् + त्वा	गत्वा

❑

6

परमहंसः राकृष्णः

परीक्षापयोगी प्रश्न

तथ्यात्मक

प्रश्न 1. निम्नलिखित का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

संस्कृत-खण्ड : परमहंसः रामकृष्णः

(क) रामकृष्णः एकः विलक्षणः महापुरुषः अभवत्। तस्य विषये महात्मना गान्धिना उक्तम्– ''परमहंसस्य रामकृष्णस्य जीवनचरितं धर्माचरणस्य प्रायोगिकं विवरणं विद्यते। तस्य जीवनम् अस्मभ्यम् ईश्वरदर्शनाय शक्तिं प्रददाति। तस्य वचनानि न केवलं कस्यचित् नीरसानि ज्ञानवचनानि, अपितु तस्य जीवनग्रन्थस्य पृष्ठानि एव। तस्य जीवनम् अहिंसायाः मूर्तिमान् पाठः विद्यते।''

सन्दर्भ—प्रस्तुत पंक्तियाँ '**संस्कृत परिचायिका**' के '**परमहंसः रामकृष्णः**' निबन्ध से अवतरित हैं। इनमें रामकृष्ण परमहंस के जीवन-चरित्र पर प्रकाश डाला गया है।

हिन्दी अनुवाद—रामकृष्ण परमहंस एक अलौकिक महापुरुष हुए। इनके विषय में महात्मा गाँधी ने कहा था, ''रामकृष्ण परमहंस का जीवन-चरित्र धर्म के आवरण का प्रयोगात्मक विवेचन है, उनका जीवन हमारे लिये ईश्वर दर्शन की शक्ति प्रदान करता है। उनके वचन एकमात्र ज्ञान के नीरस वचन नहीं हैं, अपितु उनके जीवन रूपी ग्रन्थ के पृष्ठ ही हैं। उनका जीवन अहिंसा का साकार पाठ ही है।''

[**शब्दार्थ—उक्तम** = कहा था, **विलक्षणः** = अलौकिक, **प्रायोगिक** = प्रयोगात्मक, **असमभ्यम्** = हमारे लिये, **मूर्तिमान**= साकार।]

(ख) स्वामिनः रामकृष्णस्य जन्म बङ्गेषु हुगलीप्रदेशस्य कामारपुकुरस्थाने 1836 खिस्ताब्दे अभवत्। तस्य पितरौ परमधार्मिकौ आस्ताम्। बाल्यकालादेव रामकृष्णः अद्भुतं चरित्रम् अदर्शयत्। तदानीमेव ईश्वरे तस्य सहजा निष्ठा अजायत्। ईश्वरस्य आराधनावसरे स सहजे समाधौ अतिष्ठत्।

सन्दर्भ—प्रस्तुत पंक्तियाँ '**संस्कृत परिचायिका**' के '**परमहंसः रामकृष्णः**' निबन्ध से अवतरित हैं। इनमें रामकृष्ण परमहंस के जीवन-चरित्र पर प्रकाश डाला गया है।

हिन्दी अनुवाद—स्वामी रामकृष्ण का जन्म बंगाल प्रान्त के हुगली प्रदेश के 'कामारपुर' नामक स्थान में सन् 1836 ई. में हुआ था। उनके माता-पिता बहुत धार्मिक थे। बाल्यावस्था में रामकृष्ण ने अपने आश्चर्यजनक चरित्र का प्रदर्शन कर दिया था। उसी समय से ईश्वर में उनकी स्वाभाविक आस्था हो गयी थी। ईश्वर की आराधना के समय में वह स्वाभाविक रूप से समाधि में बैठ जाते थे।

[**शब्दार्थ—पितरौ** = माता-पिता, **अदर्शयत्** = दिखाया, **सहजा** = स्वाभाविक, **निष्ठा** = आस्था, **अजायत** = हुई, **आराधनावसरे (आराधना + अवसरे)** = आराधना के समय।]

(ग) परमसिद्धोऽपि सः सिद्धीनां प्रदर्शनं नोचितम् अमन्यत्। एकदा केनचित् भक्तेन कस्यचित् महिमा एवं वर्णितः, ''असौ महात्मा पादुकाभ्यां नदीं तरति, इति महतो विस्मयस्य विषयः।'' परमहंसः रामकृष्णः मन्दम् अहसत् अवदत् च ''अस्याः सिद्धेः मूल्यं पणद्वयमात्रम्, पणद्वयेन नौकया सामान्यो जनः नदीं तरति। अनया सिद्धया केवलं पणद्वयस्य लाभो भवति। किं प्रयोजनम् एतादृश्याः सिद्धेः प्रदर्शनेन।''

सन्दर्भ—प्रस्तुत पंक्तियाँ '**संस्कृत परिचायिका**' के '**परमहंसः रामकृष्णः**' निबन्ध से अवतरित हैं। इनमें रामकृष्ण परमहंस के जीवन-चरित्र पर प्रकाश डाला गया है।

हिन्दी अनुवाद—परमसिद्ध होते हुए भी वे कभी अपनी सिद्धियों का प्रदर्शन करना अच्छा नहीं समझते थे। एक समय किसी भक्त ने किसी अन्य महात्मा की प्रशंसा करते हुए कहा था कि यह महात्मा खडाऊँ से नदी को पार कर जाता है। यह अत्यन्त ही आश्चर्य का विषय है। परमहंस रामकृष्ण मन्द-मन्द मुस्कुराए और बोले ''इसकी सिद्धि का मूल्य दो पैसे मात्र है। दो पैसे देने से सामान्य मनुष्य भी नाव से नदी को पार कर देता है। इस सिद्धि

से केवल दो पैसे का ही लाभ होता है। इसलिये इस प्रकार की सिद्धि के प्रदर्शन से क्या लाभ है।''

[**शब्दार्थ**—**नोचितम् (न + उचितम्)** = उचित नहीं है, **अमन्यत** = मानते थे, **पादुकाभ्याम्** = खड़ाऊँ से, **अहसत्** = हँसे, **पणद्वयेन** = दो पैसे।]

(घ) रामकृष्णस्य विषये एवंविधा बहवः कथानकाः प्रसिद्धाः सन्ति। आजीवनं स आत्मचिन्तने निरतः आसीत्। अस्मिन् विषये तस्य अनेके अनुभवाः लोके प्रसिद्धाः।

तस्य एव वचनेषु तस्य अध्यात्मानुभवाः वर्णिताः–

(1) ''जले निमज्जिताः प्राणाः यथा निष्क्रमितुम् आकुलाः भवन्ति तथैव चेत् ईश्वरदर्शनाय अपि समुत्सुकाः भवन्तु जनाः तदा तस्य दर्शनं भवितुम् अर्हति।''

(2) ''किमपि साधनं साधयितुं मत्कृते दिनत्रयाधिकः कालः नैव अपेक्ष्यते।''

(3) ''नाहं वाञ्छामि भौतिकसुखप्रदां विद्याम्, अहं तु तां विद्यां वाञ्छामि यया हृदये ज्ञानस्य उदयो भवति।''

सन्दर्भ—प्रस्तुत पंक्तियाँ '**संस्कृत परिचायिका**' के '**परमहंसः रामकृष्णः**' निबन्ध से अवतरित हैं। इनमें रामकृष्ण परमहंस के जीवन-चरित्र पर प्रकाश डाला गया है।

हिन्दी अनुवाद—रामकृष्ण के विषय में इस प्रकार की बहुत-सी कथाए प्रसिद्ध हैं। जीवन-भर वे आत्मचिन्तन में लगे रहे। इस विषय में उनके अनेक अनुभव संसार में प्रसिद्ध हैं।

उन्हीं के शब्दों में उनके आध्यात्मिक अनुभव वर्णित हैं—

(1) ''जल में डूबे हुए प्राण जिस प्रकार बाहर निकलने के लिए व्याकुल होते हैं, उसी प्रकार यदि लोग ईश्वर-दर्शन के लिए उत्सुक होवें, तब उसका (ईश्वर का) दर्शन हो सकता है।''

(2) ''किसी भी साधना को पूरा करने के लिए मुझे तीन दिन से अधिक का समय नहीं चाहिए।''

(3) ''मैं भौतिक (सांसारिक) सुखों को प्रदान करने वाली विद्या नहीं चाहता हूँ। मैं तो उस विद्या को चाहता हूँ, जिससे हृदय में ज्ञान का उदय होता है।''

[**शब्दार्थ**—**एवंविध** = इस प्रकार के, **बहवः** = बहुत से, **कथानकाः** = कथाएँ, **आजीवन** = जीवनभर, **निरतः** = लगे रहे, **चेत्** = यदि, **निमज्जिताः** = डूबे हुये, **निष्क्रमितुम्** = बाहर आने के लिये। **अर्हति** = योग्य है। **मत्कृते** = मेरे लिये। **वाञ्छामि** = चाहता हूँ। **विभेदाः** = अनेक भेद, **समुत्सुकाः** = उत्सुक, **भवितुम् अर्हति** = हो सकती है, **मत्कृते** = मेरे लिए, **दिनत्रयाधिकः** = तीन दिन से अधिक, **अपेक्ष्यते** = आवश्यक है, **सुखप्रदां** = सुखों को प्रदान करने वाली, **वाञ्छामि** = चाहता हूँ।]

(ङ) अयं महापुरुषः स्वकीयेन योगाभ्यासबलेनैव एतावान् महान् सञ्जातः। स ईदृशः विवेकी शुद्धचित्तश्च आसीत् यत् तस्य कृते मानवकृताः विभेदाः निर्मूलाः अजायन्त। स्वकीयेन आचारेण एव तेन सर्वंसाधितम्।

विश्वविश्रुतः स्वामी विवेकानन्दः अस्यैव महाभागस्य शिष्यः आसीत्। तेन न केवलं भारतवर्षे अपितु पाश्चात्यदेशेष्वपि व्यापकस्य मानवधर्मस्य डिण्डिमघोषः कृतः। तेन अन्यैश्च शिष्यैः जनानां कल्याणार्थं स्थाने-स्थाने रामकृष्णसेवाश्रमाः स्थापिताः। ईश्वरानुभवः दुःखितानां जनानां सेवया पुष्यति, इति रामकृष्णस्य महान् सन्देशः।

सन्दर्भ—प्रस्तुत पंक्तियाँ '**संस्कृत परिचायिका**' के '**परमहंसः रामकृष्णः**' निबन्ध से अवतरित हैं। इनमें रामकृष्ण परमहंस के जीवन-चरित्र पर प्रकाश डाला गया है।

हिन्दी अनुवाद—वे महापुरुष अपने ही योगाभ्यास के बल पर इतने महान् हो गये। वे इस प्रकार के ज्ञानी और शुद्ध हृदय वाले थे कि उनके लिये मानव के द्वारा किये गये मतभेद निर्मूल थे। उन्होंने अपने ही आचरण से सब कुछ सिद्ध कर लिया था।

संसार में प्रसिद्ध स्वामी विवेकानन्द इन्हीं महानुभाव के शिष्य थे। उन्होंनें केवल भारतवर्ष में ही नहीं अपितु पश्चिमी देशों में भी व्यापक मानव धर्म का डंका बजाया (उच्च-स्वर से घोषणा की)। उन्होंने और उनके दूसरे शिष्यों ने लोगों के कल्याण के लिए स्थान-स्थान पर रामकृष्ण-सेवाश्रम स्थापित किये। ''ईश्वर का अनुभव दुःखी लोगों की सेवा से पुष्ट होता है'' यह रामकृष्ण का महान् सन्देश है।

[**शब्दार्थ**—**स्वकीयेन** = अपने, **एतावान्** = इतने, **सञ्जातः** = हुए, **मानवकृताः** = मानव के द्वारा बनाये गये, **विभेदाः** = भेदभाव, **निर्मूलाः** = निरर्थक, **अजायन्त** = हो गये थे, **साधितम्** = सिद्ध किया, **विश्व-विश्रुतः** = संसार में प्रसिद्ध, **अस्यैव** = इन्हीं, **महाभागस्य** = महानुभाव, **डिण्डिमघोषः** = उच्च स्वर से घोषणा, ढिंढोरा, **पुष्यति** = पुष्ट होता है।]

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए–

(क) श्रीरामकृष्णस्य जीवनम् अस्मभ्यं किं ददाति?

उत्तर—श्रीरामकृष्णस्य जीवनम् अस्मभ्यं ईश्वरदर्शनीय शक्ति ददाति।

(ख) रामकृष्णः केन बलेन महान् सञ्जातः?

उत्तर—रामकृष्णः स्वकीयेन योगाभ्यास बलेन महान् सञ्जातः।

(ग) केन उक्तं– ''रामकृष्णस्य जीवनचरितं धर्माचरणस्य प्रायोगिकं विवरणं विद्यते?''

उत्तर—''रामकृष्णस्य जीवनचरितं प्रायोगिकं विवरणं विद्यते'' महात्मना गान्धिना उक्तं यत।

(घ) जले निमज्जिताः प्राणाः किं कुर्वन्ति?

उत्तर—जले निमज्जिताः प्राणाः निष्क्रमितम् आकुलाः भवन्ति।

(ङ) कस्य जीवनचरितं धर्माचरणस्य प्रायोगिकं विवरणं विद्यते?

उत्तर—परमहंसस्य रामकृष्णस्य जीवनचरितं धर्माचरणस्य प्रायोगिकं विवरणं विद्यते।

(च) रामकृष्णाय किमपि साधनं साधपितुं कियत् कालः अपेक्ष्यते?

उत्तर—रामकृष्णाय किमपि साधनं साधपितुं दिनत्रय कालः अपेक्ष्यते।

(छ) केन प्रकारेण परमहंसरामकृष्णेन सर्वं साधितम्?

उत्तर—स्वकीयेन आचारेण एव परमहंसरामकृष्णेन सर्वं साधितम्।

(ज) रामकृष्णः कां विद्याम् अवाञ्छत्?

उत्तर—रामकृष्णः ता विद्याम् अवाञ्छत् यथा हृदये ज्ञानस्य उदयो भवति।

(झ) रामकृष्णः कथं महान् सञ्जातः?

उत्तर—रामकृष्णः योगाभ्यासबलेन महान् सञ्जातः।

(ञ) स्वामी विवेकानन्दः कस्य शिष्यः आसीत्?

उत्तर—स्वामी विवेकानन्दः स्वामी रामकृष्ण परमहंसस्य शिष्यः आसीत्।

(ट) स्वामी विवेकानन्दः पाश्चात्यदेशेषु कस्य डिण्डिमघोषः कृतः?

उत्तर—स्वामी विवेकानन्दः पाश्चात्यदेशेषु व्यापकस्य मानवधर्मस्य डिण्डिमघोषः कृतः।

(ठ) स्वामिनः रामकृष्णस्य जन्म कुत्र अभवत्?

उत्तर—स्वामिनः रामकृष्णस्य जन्म हुगली प्रदेशस्य कामारपुकुर स्थाने अभवत्।

(ड) रामकृष्णस्य पितरौ कीदृशी आस्ताम्?

उत्तर—रामकृष्णस्य पितरौ परमधार्मिकौ आस्ताम्।

(ढ) एकदा भक्तेन कस्यचित् किं महिमा वर्णितः?

उत्तर—एकदा भक्तेन कस्यचित् महिमा वर्णितः—"असौ महात्मा पादुकाभ्यां नदीं तरति, इति महतो विस्मस्य विषयः"।

(ण) ईश्वरानुभवः केषां जनानां सेवया पुष्यति?

उत्तर—दुःखितानां जनानां सेवया ईश्वरानुभवः पुष्यति।

(त) रामकृष्ण परमहंसस्य विषये महात्मना गान्धिना किम् उक्तम्?

उत्तर—महात्मा गान्धिना उक्तं तस्य जीवनं अस्मभ्यम् ईश्वरदर्शनाय शक्ति प्रददाति।

(थ) रामकृष्ण सेवाश्रमाः केन स्थापिताः?

उत्तर—रामकृष्ण परमहंसस्य शिष्यैः रामकृष्णसेवाश्रमान् अस्थापयतः।

अनुवादात्मक

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) रामकृष्ण एक विलक्षण बुद्धि के विद्वान थे।

उत्तर—रामकृष्णः एकः विलक्षणः महापुरुषः अभवत्।

(ख) रामकृष्ण का जन्म हुगली में हुआ था।

उत्तर—रामकृष्ण जन्म हुगली प्रदेशस्य अभवत्।

(ग) रामकृष्ण बड़े महात्मा थे।

उत्तर—रामकृष्णः उदारः महात्मा आसीत्।

(घ) रामकृष्ण का जन्म बंगाल में हुआ था।

उत्तर—रामकृष्णस्य जन्म बङ्गालप्रान्तेषु अभवत्।

(ङ) उनका जीवन शुद्ध था।

उत्तर—तस्य जीवनं शुद्धम् आसीत्।

(च) उनके माता-पिता परम धार्मिक थे।

उत्तर—तस्य पितरौ परमधार्मिको आस्तम्।

(छ) वे सभी से स्नेह करते थे।

उत्तर—सः सर्वेषु अस्निह्यत्।

(ज) मैं भौतिक सुख नहीं चाहता था।

उत्तर—अहं भौतिकं सुखं न इच्छामि।

(झ) गंगा नदी हिमालय से निकलती है।

उत्तर—गङ्गनदी हिमालयात् प्रभवति।

(ञ) दुःखी जनों की सेवा करनी चाहिए।

उत्तर—दुःखी जनानां सेवा कुर्युः।

(ट) विद्या से हृदय में ज्ञान का उदय होता है।

उत्तर—विद्या हृदये ज्ञानस्य उदयः भविष्यति।

(ठ) वे दोनों विद्वान थे।

उत्तर—तौ विद्वान् स्ताम्।

(ड) तुम पुस्तक पढ़ो।

उत्तर—त्वं पुस्तकं पठ।

(ढ) मोहन ने पत्र लिखा।

उत्तर—मोहनः पत्रं अलिखत्।

व्याकरणात्मक

1. निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त धातु, लकार, पुरुष एवं वचन बताइए–

अभवत्, आस्ताम्, अतिष्ठत्, भवति, तरति, अर्हति, वाञ्छामि।

उत्तर—

शब्द	धातु	लकार	पुरुष
अभवत्	भू	लङ्	प्रथम
आस्ताम्	अस्	लङ्	प्रथम
अतिष्ठत्	स्था	लङ्	प्रथम
भवति	भू	लट्	प्रथम
तरति	तृ	लट्	प्रथम
अर्हति	अर्ह	लट्	प्रथम
वाञ्छामि	वाञ्छ्	लट्	उत्तम

2. निम्नलिखित शब्दों का स्वनिर्मित संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

एकदा, महापुरुषः, आसीत्, लोके, निरतः।

उत्तर–1. अहम् **एकदा** स्वपित्रा सह वाराणसीम् अगच्छम्।

2. रामकृष्णः एकः विलक्षणः **महापुरुषः** अभवत्।

3. रघुः दिलीपस्य पुत्रः **आसीत्**।

4. अस्मिन् विषये रामकृष्णस्य अनेक अनुभवाः **लोके** प्रसिद्धाः।

5. रामकृष्णः आजीवनं आत्मचिन्तने **निरतः** आसीत्।

3. 'मूर्ति, शब्द में 'मान्' प्रत्यय जोड़कर 'मूर्तिमान्' शब्द की रचना की गयी है। ऐसे ही पाँच अन्य शब्दों की रचना कीजिए।

उत्तर–बुद्धिमान, श्रीमान्, मतिमान्, धीमान्, शक्तिमान्।

4. 'एव' तथा 'एवम्' शब्दों का अन्तर स्पष्ट करते हुए दोनों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

उत्तर–'एव' का अर्थ 'ही' तथा 'एवम्' का अर्थ 'इस प्रकार' है। दोनों का वाक्यों में प्रयोग निम्नलिखित है—

रामृष्णस्य विषये महात्मना गान्धिना एवम् उक्तमं—तस्य—ग्रन्थस्य पृष्ठानि एव।

5. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए–

बाल्याकालादेव, तदानीमेव, धर्माचरणस्य, नोचितम्, देशेष्वपि, आध्यात्मानुभवः, परमसिद्धोऽपि, अस्यैव, आराधनावसरे, बलेनैव, समुत्सुका।

उत्तर—

शब्द	सन्धि		
बाल्याकालादेव	बाल्यकालात्	+	एव
तदानीमेव	तदानीम्	+	एव
धर्माचरणस्य	धर्म	+	आचरणस्य
नौचितम्	न	+	उचितम्
देशेष्वदि	देशेषु	+	अपि
आध्यात्मानुभवः	आध्यात्म	+	अनुभवः
परमसिद्धोऽपि	परमसिद्धः	+	अपि
अस्यैव	अस्य	+	एव
आराधनावसरे	आराधना	+	अवसरे
बलेनैव	बलेन	+	एव
समुत्सका	सम्	+	उत्सुकाः

सेवाश्रमाः	सेवा	+	आश्रमाः
योगाभ्याम्	योग	+	अभ्याम्

6. निम्नलिखित शब्दों के समास-विग्रह करते हुए समास का नामोल्लेख कीजिए–

प्रतिदिनम्, विश्वविश्रुतः, पितरौ, महापुरुषः, ईश्वरानुभवः।

उत्तर—

शब्द	समास-विग्रह	समास का नाम
प्रतिदिनम्	दिनं दिनं प्रति	अव्ययीभाव
विश्वविश्रुतः	विश्वे विश्रुतः	सप्तमी तत्पुरुष
पितरौ	माता च पिता च	एकशेष द्वन्द
महापुरुष :	महान् (च असौ) पुरुषः	कर्मधारय
ईश्वरानुभवः	ईश्वरस्य अनुभवः	षष्ठीत तत्पुरुष

7. निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त मूल शब्द, विभक्ति तथा वचन बताइए–

परमहंसस्य, अस्मभ्यम्, बङ्गेषु, नौकया, तेन।

उत्तर—

शब्द	मूल शब्द	विभक्ति	वचन
परमहंसस्य	परमहंस	षष्ठी	एकवचन
अस्मभ्यम्	अस्मद्	चतुर्थी	बहुवचन
बङ्गेषु	बङ्ग	सप्तमी	बहुवचन
नौकया	नौका	तृतीया	एकवचन
तेन	तत्	तृतीया	एकवचन

8. 'भू' धातु में तुमुन् प्रत्यय के योग से 'भवितुम्' शब्द बनता है। इसी प्रकार पठ्, हन्, दृश्, गम्, धातुओं में तुमुन् प्रत्यय के योग से शब्द बनाइए। पाठ में प्रयुक्त तुमुन् प्रत्ययान्त शब्दों को भी लिखिए।

उत्तर– **पठ्** पठितुम **हन्** हन्तुम्
दृश दृष्टुम् **गम** गन्तुम्

❑

7 कृष्णः गोपालनन्दनः

परीक्षापयोगी प्रश्न

तथ्यात्मक

1. निम्नलिखित अनुच्छेदों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए

(क) सुविदितमेव श्रीकृष्णः लोकोत्तरो महापुरुषः आसीत्। अयं महापुरुषः सहस्रेभ्यः वर्षेभ्यः प्राक् उत्पन्नः अद्यापि जनानां हृदयेषु विराजमानः अस्ति।

श्रीकृष्णस्य मातुलः कंसः अत्याचारी शासकः आसीत्। सः पूर्वं स्वभगिन्याः देवक्याः श्रीवसुदेवेन सह विवाहम् अकरोत्, पश्चात् आकाशवाण्या देवकीपुत्रेण स्वमृत्युसमाचारं विज्ञाय उभावपि कारागारे न्यक्षिपत्। तत्रैव कारागारे श्रीकृष्णः जातः।

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यांश '**संस्कृत परिचायिका**' के '**कृष्णः गोपालनन्दनः**' पाठ से उद्धृत है। इसमें श्रीकृष्ण के बचपन और उनकी वीरता के कार्यों का वर्णन किया है।

हिन्दी अनुवाद—यह भली प्रकार से ज्ञात ही है कि श्रीकृष्ण महापुरुष थे। ये महापुरुष हजारों वर्ष पूर्व उत्पन्न हुए थे और आज भी लोगों के हृदयों में विराजमान हैं। श्रीकृष्ण का मामा कंस अत्याचारी राजा था। उसने पहले अपनी बहिन देवकी का विवाह वसुदेव के साथ कर दिया। बाद में आकाशवाणी सुनकर दोनों को ही जेल में डाल दिया। वहीं जेल में श्रीकृष्ण का जन्म हुआ।

[**शब्दार्थ**—**सुविदितमेव** = भली प्रकार से ज्ञात है, **लोकोत्तरः** = अलौकिक, **सहस्त्रेभ्यः** = हजारों, **प्राक्** = पूर्व, **स्वभगिन्याः** = अपनी बहिन की, **उभवपि** = दोनों को, **कारागारे** = जेल में, **न्यक्षिपत्** = डाल दिया।]

(ख) श्रीकृष्णस्य जन्म भाद्रपदमासस्य कृष्णपक्षस्य अष्टम्यां तिथौ मथुरायाम् अभवत्। मध्यरात्रे यदायम् उत्पन्नः जातः तदा आकाशे घटाटोपाः मेघाः मुसलधाराः वर्षाः अकुर्वन्। तदा रात्रिः अन्धकारपूर्णा आसीत्। परं वसुदेवः पुत्रस्य रक्षार्थं सद्योजातं तम् आदाय उत्तालतरङ्गां यमुनाम् उत्तीर्य गोकुले नन्दगृहं प्रापयत्। तत्र बाल्यादेव श्रीकृष्णः जनानां हृदयवल्लभः अभवत्।

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यांश '**संस्कृत परिचायिका**' के '**कृष्णः गोपालनन्दनः**' पाठ से उद्धृत है। इसमें श्रीकृष्ण के बचपन और उनकी वीरता के कार्यों का वर्णन किया है।

हिन्दी अनुवाद—श्रीकृष्ण का जन्म भाद्र मास के कृष्णपक्ष की अष्टमी तिथि को मथुरा में हुआ था। आधी रात में जब ये उत्पन्न हुए, तब आकाश में भयंकर काले बादल मूसलाधार वर्षा कर रहे थे। उस समय रात अन्धकार से परिपूर्ण थी परन्तु वसुदेव ने पुत्र की रक्षा के लिये, तत्काल उत्पन्न हुये उनको (श्रीकृष्ण को) लेकर यमुना की ऊँची-ऊँची तरंगों को पार कर गोकुल में नन्द के घर पहुँचा दिया। वहाँ बचपन से ही श्रीकृष्ण लोगों के हृदय के प्रिय हो गये।

[**शब्दार्थ**—**घटाटोपाः** = काले भयंकर, **सद्योजातं** = उसी समय पैदा हुए, **उत्ताल-तरंगां** = ऊँची लहरों से युक्त, **उत्तीर्य** = पार करके, **प्रापयत** = पहुँचे।]

(ग) बाल्यकाले अयं स्वसौन्दर्येण बाललीलया च सर्वेषां जनानां मनांसि अहरत्। कापि गोपिका तम् अङ्के निधाय स्वगृहं नयति, अपरा तं दुग्धं पाययति, अन्या च तस्मै नवनीतं ददाति। श्रीकृष्णः प्रेम्णा दत्तं दुग्धं पिबति, नवनीतं च खादति, अवसरं प्राप्य स स्वमित्रैः गोपैः सह कस्मिंश्चिद् गृहे प्रविश्य दधि खादति, मित्रेभ्यः ददाति, अवशिष्टं दधि भूमौ पातयति यदा कदा दधिभाण्डं च त्रोटयति। एतत् सर्वं कुर्वतोऽपि तस्य शीलेन सौन्दर्येण च प्रभावितः न कोऽपि तस्मै क्रुध्यति, परं सर्वे तस्मिन् स्निह्यन्ति।

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यांश '**संस्कृत परिचायिका**' के '**कृष्णः गोपालनन्दनः**' पाठ से उद्धृत है। इसमें श्रीकृष्ण के बचपन और उनकी वीरता के कार्यों का वर्णन किया है।

हिन्दी अनुवाद—बचपन में इन्होंने अपने सौन्दर्य और बाल-लीलाओं से सभी मनुष्यों के मन को हर लिया। कोई गोपी इन्हें अपनी गोद में उठाकर अपने घर ले जाती है, दूसरी उन्हें दूध पिलाती है और अन्य कोई उन्हें मक्खन देती है। श्रीकृष्ण प्रेम से दिये दूध को पीते हैं, मक्खन को खाते हैं।

अवसर पाकर अपने मित्रों व गोपों के साथ किसी के भी घर में घुसकर दही खाते हैं, मित्रों को देते हैं, शेष दही को भूमि पर गिरा देते हैं और कभी दही के बर्तन को तोड़ देते हैं। ऐसा सब कुछ करते हुये भी उनके शील एवं सौन्दर्य से प्रभावित होकर कोई भी उन पर क्रोध नहीं करता था अपितु सब उनसे स्नेह करते थे।

[**शब्दार्थ**—**मनांसि** = मनों का, **अहरत्** = अपने वश में कर लेता था, **कापि** = कोई भी, **निधाय** = लेकर, **पाययति**= पिलाती है, **नवनीत** = मक्खन, **पातयति** = गिराता है, **दधिभाण्डं** = दही के बर्तन को, **त्रोटयति** = तोड़ता है, **कुर्वतोऽपि** = करते हुये भी, **स्निह्यति** = प्यार करते हैं।]

(घ) अनन्तरं श्रीकृष्णः गोपालैः सह वनं गत्वा गाः चारयति, तत्र च वेणुं वादयति, अनेन सर्वाः गावः गोपालाश्च सर्वाणि कार्याणि विहाय तस्य वेणुवादनं शृण्वन्ति। महाकविः व्यासः संस्कृतभाषायां, भक्तकविः सूरदासः हिन्दीभाषायां तस्य बाललीलायाः अतिसुन्दरं वर्णनम् अकरोत्।

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यांश '**संस्कृत परिचायिका**' के '**कृष्णः गोपालनन्दनः**' पाठ से उद्धृत है। इसमें श्रीकृष्ण के बचपन और उनकी वीरता के कार्यों का वर्णन किया है।

हिन्दी अनुवाद—इसके बाद श्रीकृष्ण ग्वालों के साथ वन में जाकर गायों को चराते। वहाँ ये वंशी बजाते। इससे सभी गोप और गायें समस्य कार्यों को छोड़कर वंशीवादन को सुनते। महाकवि व्यास ने संस्कृत भाषा में, भक्त कवि सूरदास ने हिन्दी भाषा में बाल-लीलाओं का अत्यन्त सुन्दर वर्णन किया है।

[**शब्दार्थ**—**अन्तरं** = इसके बाद, **चारयति** = चराता है, **वेणुं** = वंशी, **वादियति** = बजाता है, **विहाय** = छोड़कर, **श्रण्वन्ति** = सुनते हैं।]

(ङ) यदा अयं बालः एव आसीत् तदा कंसः तं हन्तुं क्रमशः बहून् राक्षसान् प्रेषयत्, परं श्रीकृष्णः स्वकौशलेन शौर्येण च तान् सर्वान् अहन्। स न केवलं राक्षसेभ्यः अपितु अन्याभ्यः विपद्भ्यः गोकुलवासिनो जनान् अरक्षत्। एकदा वर्षाकाले गोकुले यमुनायाः जलं वेगेन अवर्धत, तदा श्रीकृष्णः स्वप्राणान् अविगणय्य सर्वान् गोकुलनिवासिनः अरक्षत्। एवमेव सन्दीप्ते वह्नौ अयं सर्वान् पशून् गोपालान् च ततः अत्रायत्। एवं निरन्तरं गोकुलवासिनां जनानां कष्टानि निवारयन् तेषां हृदये पदमधारयत्। अतः श्रीकृष्णः बाल्यकालादेव स्वोत्तमैः गुणैः परोपकारभावनया च लोकप्रियः अभवत्।

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यांश '**संस्कृत परिचायिका**' के '**कृष्णः गोपालनन्दनः**' पाठ से उद्धृत है। इसमें श्रीकृष्ण के बचपन और उनकी वीरता के कार्यों का वर्णन किया है।

हिन्दी अनुवाद—जब ये बालक ही थे, तब कंस ने श्रीकृष्ण को मारने के लिये एक के बाद एक कई राक्षसों को भेजा। किन्तु इन्होंनें अपनी कुशलता एवं वीरता से उन सभी को मार दिया। उन्होंने केवल राक्षसों से ही नहीं अपितु अन्य विपत्तियों से भी गोकुल के निवासियों की रक्षा की। एक बार वर्षा-काल में गोकुल में यमुना का जल बड़े वेग से बढ़ गया, उस समय श्रीकृष्ण ने अपने प्राणों की परवाह न करके सभी गोकुलवासियों की रक्षा की। इसी प्रकार जलती अग्नि में से उन्होंने सभी पशुओं एवं ग्वालों की रक्षा की थी। इसी प्रकार निरन्तर गोकुल वासियों के कष्टों का निवारण करते हुये उनके हृदय में स्थान बना दिया। अतः श्रीकृष्ण बचपन से ही अपने उत्तम गुणों तथा परोपकार की भावना से लोकप्रिय हो गये।

[**शब्दार्थ**—**हन्तुं** = मारने के लिये, **प्रैषयत्** = भेजा, **अहन्** = मारा, **अवर्धत** = बढ़ गया, **अविगणय्य** = बिना परवाह किये, **संदीप्ते** = जलती हुई, **वह्नौ:** = अग्नि में, **अत्रायत** = रक्षा की, **निवारयन्** = दूर करते हुये, **स्वोत्तमै: (स्व + उत्तमै)** = अपने उत्तम गुणों से।]

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

(क) किं विज्ञाय कंसः देवकीवसुदेवौ कारागारे न्यक्षिपत्?

उत्तर–आकाशवाणी देवकीपुत्रेण स्वमृत्युसमाचारं विज्ञाय कंसः देवकीवसुदेवौ कारागारे न्यक्षिपत्?

(ख) श्रीकृष्णः कः आसीत्?

उत्तर–श्रीकृष्णः लोकोत्तरः महापुरुषः आसीत्।

(ग) श्रीकृष्णस्य जन्म कुत्र अभवत्?

उत्तर–श्रीकृष्णस्य जन्म मथुरायाम् कारागारे अभवत्।

(घ) यदा श्रीकृष्णः उत्पन्नः जातः तदा वातावरणं कीदृशम् आसीत्?

उत्तर–यदा श्रीकृष्णः उत्पन्नः जातः तदा आकाशे घटाटोपाः मेघाः मुसलधाराः वर्षा अकुर्वन्, रात्रि अंधकार पूर्णा आसीत्।

(ङ) वसुदेवेन सद्योजातः कृष्णः कथं रक्षितः?

उत्तर–वसुदेवेन सद्योजातः कृष्णः गोकुले नन्दगृहं प्रैषयत्।

(च) श्रीकृष्णः गोपैः सह कस्मिंश्चिद् गृहे प्रविश्य किं करोति?

उत्तर–श्रीकृष्णः गोपैः सह कस्मिंश्चिद् गृहे प्रविश्य दधि खादति, मित्रेभ्यः ददाति, अवशिष्टं दधि भूमौ पातयति यदा-कदा दधिभाण्डं च त्रोटयति।

(छ) कः कविः संस्कृतभाषायां कृष्ण बाल लीलायाः अतिसुन्दरं वर्णनम् अकरोत्?

उत्तर–महाकवि व्यासः संस्कृतभाषायां कृष्णबाल लीलायाः अति सुन्दरम् वर्णनम् अकरोत्।

(ज) कंसः राक्षसान् किमर्थम् अप्रेष्यत्?

उत्तर–कंसः राक्षसान श्रीकृष्णं हन्तुम अप्रेष्यत्।

(झ) श्रीकृष्णः कथं लोकप्रियः अभवत्?

उत्तर–श्रीकृष्णः परोपकारभावनया लोकप्रिय अभवत्।

(ञ) श्रीकृष्णः गोकुलवासिनां किं कल्याणम् अकरोत्?

उत्तर–श्रीकृष्णः गोकुलवासिनां कष्टानि निवारयन् तेषां कल्याणम् अकरोत्।

(ट) श्रीकृष्णः कुत्रः जातः? श्रीकृष्णस्य जन्मतिथौ रात्रिः कीदृशी आसीत्?

उत्तर–श्रीकृष्णः कारागारे जातः। श्रीकृष्णस्य जन्मतिथौ रात्रिः अन्धकारपूर्णा आसीत्।

(ठ) आकाशवाणी श्रुत्वा कंसः किम् अकरोत्?

उत्तर–आकाशवाणी श्रुत्वा कंस वसुदेव-देवकीं च कारगारे न्यक्षिपत्।

(ड) श्रीकृष्णः कीदृशः महापुरुषः आसीत्?

उत्तर–श्रीकृष्णः लोकोत्तरः महापुरुषः आसीत्।

(ढ) श्रीकृष्णस्य पितुः किं नाम आसीत्?

उत्तर–श्रीकृष्णस्य पितुः नाम वसुदेवः आसीत्।

(ण) श्रीकृष्णस्य जन्म कस्मिन् तिथौ अभवत्?

उत्तर–श्रीकृष्णस्य जन्म भाद्रपदमासस्य कृष्णपक्षस्य अष्टम्यां तिथौ अभवत्।

(त) श्रीकृष्णः स्वकौशलेन शौर्येण च कान् अहन्?

उत्तर–श्रीकृष्णः स्वकौशलेन शौर्येण च बहून राक्षसान् अहन्।

(थ) संस्कृतभाषायां कृष्णस्य बाललीलायाः वर्णनं केन कृतम्।

उत्तर–संस्कृतभाषायां कृष्णस्य बाललीलायाः वर्णन महाकविना व्यासेन कृतम्।

अनुवादात्मक

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) श्रीकृष्ण के मित्र सुदामा थे।

उत्तर–श्रीकृष्णस्य मित्र सुदामा आसीत्।

(ख) श्रीकृष्ण लोकोत्तर महापुरुष थे।

उत्तर–श्रीकृष्णः लोकोत्तरो महापुरुषः आसीत्।

(ग) श्रीकृष्ण का जन्म मथुरा में हुआ थ।

उत्तर–श्रीकृष्णस्य जन्म मथुरायाम् अभवत्।

(घ) बचपन से ही लोग इनसे स्नेह करते थे।

उत्तर–बाल्यकालात् एव जनाः अस्मिन् अस्निह्यात्।

(ङ) उन्होंने गोकुलवासियों का बड़ा कल्याण किया।

उत्तर–सः गोकुलवासिनानां महत् कल्याणम् अकरोत्।

(च) वे अपने सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध थे।

उत्तर–सः स्वसौन्दर्याय प्रसिद्धः आसीत्।

(छ) श्रीकृष्ण बचपन से ही लोकप्रिय हुए।

उत्तर–श्रीकृष्णः बाल्यकालात् एव लोकप्रियः अभवत्।

(ज) कंस श्रीकृष्ण का मामा था।

उत्तर–कंस श्रीकृष्णस्य मातुलः आसीत्।

(झ) वह वन जाकर गाय चराता है।

उत्तर–सः वनं गत्वा गाः चारयति।

(ञ) वह प्रेम से दूध पीता है।

उत्तर–सः प्रेम्णा दुग्धं पिबति।

(ट) रात्रि अन्धकार से युक्त है।

उत्तर–रात्रिः अन्धकारपूर्णा अस्ति।

(ठ) परोपकार से व्यक्ति लोकप्रिय होता है।

उत्तर–परोपकारः जनानां लोकप्रियः भवति।

व्याकरणात्मक

1. 'अन्धकार' शब्द के अन्त में 'पूर्ण' जोड़कर 'अन्धकारपूर्ण' शब्द की रचना की गयी है। इसी प्रकार से 'पूर्ण' प्रत्यय जोड़कर दस अन्य शब्दों की रचना कीजिए।

उत्तर–सर्वांगपूर्ण, महत्त्वपूर्ण, ज्ञानपूर्ण, अर्थपूर्ण, दुःखपूर्ण, सुखपूर्ण, मूर्खतापूर्ण, रागपूर्ण, द्वेषपूर्ण, सम्पूर्ण।

2. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए–

स्वौत्तमैः, बाल्यकालादेव, कुर्वतोऽपि, उभावपि, परोपकारः, तत्रैव, अत्याचारी।

उत्तर–

शब्द	सन्धि-विच्छेद		
स्वौत्तमैः	स्व	+	उत्तमैः
बाल्यकालादेव	बाल्यकालात्	+	एव
कुर्वतोऽपि	कुर्वतः	+	अपि
उभावपि	उभौ	+	अपि
परोपकारः	पर	+	उपकारः
तत्रैव	तत्र	+	एव
अत्याचारी	अति	+	आचारी

3. 'भूमि' शब्द के निम्नलिखित पर्यायवाची हैं–

वसुमती, वसुन्धरा, अनन्ता, रसा, विश्वम्भरा, स्थिरा, गोत्रा, कु, पृथिवी, पृथ्वी, अवनि, मेदिनी, मही, क्षिती, क्षमा, धरा, धरित्रि, धरणि।

इसी प्रकार से 'आकाश', 'सूर्य', 'जल', 'मेघ', 'वन' और 'अग्नि' के पर्यायवाची लिखिए।

उत्तर–आकाश—अन्तरिक्ष, अम्बर, व्योम, नभ, गगन आदि।

सूर्य—भानु, भास्कर, दिनेश, दिनकर, आदित्य आदि।

जल—पय, सलिल, तोय, अम्बु, वारि आदि।

मेघ—जलद, नीरद, वारिद, पयोद, अम्बुद आदि।

वन—विपिन, जंगल, कानन, अटवी, अरण्य आदि।

अग्नि—वह्नि, अनल, पावक, दहन, ज्वाला आदि।

4. निम्नलिखित पदों का समास-विग्रह कीजिए–

गोकुलवासिनः, लोकप्रियः, अन्धकारपूर्णा, नन्दगृहम्, दधिभाण्डम्।

शब्द	समास-विग्रह	समास का नाम
गोकुलवासिनः	गोकुलस्य वासिनः	षष्ठी तत्पुरुष
लोकप्रियः	लोके प्रियः	सप्तमी तत्पुरुष
अन्धकारपूर्णा	अन्धकारेण पूर्णा	तृतीया तत्पुरुष
नन्दगृहम्	नन्दस्य गृहम्	षष्ठी तत्पुरुष
दधिभाण्डम्	दध्यः भाण्डम्	षष्ठी तत्पुरुष

5. निम्नलिखित शब्द-रूपों में प्रयुक्त वचन एवं विभक्ति का उल्लेख कीजिए–

हृदये, राक्षसेभ्यः, पुत्रेण, श्रीकृष्णस्य, नन्दगृहम्, बाललीलायाः, शौर्येण।

उत्तर—

शब्दरूप	शब्द	विभक्ति	वचन
हृदये	हृदि	चतुर्थी	एकवचन
राक्षसेभ्यः	राक्षस	चतुर्थी/पंचमी	बहुवचन
पुत्रेण	पुत्र	तृतीया	एकवचन
श्रीकृष्णस्य	श्रीकृष्ण	षष्ठी	एकवचन
नन्दगृहम्	नन्दगृह	प्रथमा	एकवचन
बाललीलायाः	बाललीला	षष्ठी	एकवचन
शौर्येण	शौर्य	तृतीया	एकवचन

6. निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त धातु, लकार, पुरुष एवं वचन बताइए–अभवत्, ददाति, शृण्वन्ति, पिबति।

उत्तर—

शब्द्	धातु	लकार	पुरुष	वचन
अभवत्	भू	लङ्	प्रथम	एकवचन
ददाति	दा	लट्	प्रथम	एकवचन
शृण्वन्ति	श्रु	लट्	प्रथम	बहुवचन
पिबति	पा	लट्	प्रथम	बहुवचन

❑

एकांकी खण्ड

1

दीपदान

(डॉ. रामकुमार वर्मा)

परीक्षापयोगी प्रश्न

तथ्यों पर आधारित प्रश्न

प्रश्न 1. पन्ना धाय दीपदान का उत्सव और नृत्य देखने क्यों नहीं गयी?

उत्तर—पन्ना धाय दीपदान का उत्सव और नृत्य देखने नहीं गई क्योंकि कुसमय रास-रंग की बात सुनकर उसके मन में शंका हो गयी थी। उसे शंका थी कि अगर कुँवरजी वहाँ गए तो बनवीर अपने सहायकों से कोई कांड अवश्य रचा देगा क्योंकि वह जानती थी कि बनवीर कुँवर उदयसिंह को मारकर स्वयं राजा बनना चाहता है।

प्रश्न 2. दीपदान उत्सव का आयोजन किसने कराया था और क्यों?

उत्तर—दीपदान उत्सव का आयोजन बनवीर ने चित्तौड़ के सिंहासन के उत्तराधिकारी कुँवर उदयसिंह की हत्या करने के लिए किया था।

प्रश्न 3. पन्ना धाय ने चन्दन को उदयसिंह की शैय्या पर क्यों सुला दिया?

उत्तर—कुँवर उदयसिंह के प्राण बचाने के लिए पन्ना ने उदयसिंह की शय्या पर चन्दन को सुला दिया क्योंकि वह चन्दन को उदयसिंह बनाकर बनवीर को धोखा देना चाहती थी।

प्रश्न 4. बनवीर द्वारा उदयसिंह के विरुद्ध रचे जाने वाले षड्यन्त्र का आभास पन्ना को कैसे हुआ?

उत्तर—अन्त:पुर की सेविका सामली घबरायी हुई पन्ना के पास आती है और उसको इस षडयन्त्र की सूचना देती है। सामली से ही उसे ज्ञात होता है कि अपने भाई विक्रमादित्य की हत्या करने के बाद बनवीर यह कह रहा था कि वह उदयसिंह को भी जीवित नहीं रहने देगा। उसी ने बनवीर के सैनिकों द्वारा उदयसिंह के महल को घेरे जाने की सूचना भी पन्ना को दी।

प्रश्न 5. दीपदान एकांकी का उद्देश्य लिखिए।

उत्तर—दीपदान एकांकी का उद्देश्य पन्ना के चरित्र में निहित है। वह देशप्रेम और कर्तव्यपालन को पुत्र-प्रेम से भी अधिक महत्त्व देती है। वह त्याग और बलिदान की प्रतिमूर्ति है। डॉ० रामकुमार वर्मा ने पन्ना के चरित्र के माध्यम से यह व्यक्त किया है कि राष्ट्रहित के लिए व्यक्तिगत और पारिवारिक हित का बलिदान करना पड़ता है।

प्रश्न 6. बनवीर ने पन्ना धाय को क्या लालच दिया?

उत्तर—बनवीर ने पन्ना धाय को जागीर देने का लालच दिया और यह कहा कि वह कुँवर उदयसिंह के बदले जो भी माँगेगी उसे दिया जायेगा।

प्रश्न 7. दीपदान एकांकी के कौन-कौन से स्थल आपको प्रिय लगते हैं और क्यों?

उत्तर—दीपदान एकांकी के कुछ स्थल विशेष रूप से प्रिय लगते हैं—सोना और पन्ना के संवाद, बनवीर और पन्ना के संवाद, पन्ना द्वारा अपने कुल दीपक का बलिदान देकर भी स्वामी के पुत्र की रक्षा करना तथा कीरत बारी द्वारा पन्ना की सहायता कर उदयसिंह को महल से बाहर सुरक्षित स्थान पर पहुँचाना—ये सभी स्थल प्रेरणादायक है और मानवीय गुणों को व्यक्त करते हैं। इनसे पन्ना की स्वामिभक्ति, कर्तव्यनिष्ठा, सहनशीलता और अपूर्व त्याग झलकता है।

प्रश्न 8. दीपदान एकांकी के शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—दीपदान एकांकी का शीर्षक प्रतीकात्मक है। पन्ना उदयसिंह की रक्षा के लिए अपने जीवन के दीप (पुत्र चन्दन) का दान कर देती है; अत: इस एकांकी का शीर्षक 'दीपदान' सर्वथा उपयुक्त है।

प्रश्न 9. ''बनवीर उदयसिंह को मारने आया था, चन्दन को नहीं। ''चन्दन की हत्या कराकर पन्ना ने सर्पिणी-सा आचरण किया है। वह कलंकिनी है।'' क्या यह बात आपको ठीक लगती है?

उत्तर—इसमें सन्देह नहीं है कि बनवीर उदयसिंह को ही मारने आया था, न कि चन्दन को, परन्तु पन्ना एक स्वामिभक्त एवं कर्तव्यनिष्ठ नारी थी। अपने कर्तव्य के निर्वाह और स्वामिभक्ति का परिचय देने के लिए ही उसने इतना बड़ा त्याग किया। कुँवर उदयसिंह को बचाने के लिए उसके पास और कोई विकल्प नहीं था। अत: अपने ममत्व को दबाकर उसने अपने पुत्र की हत्या हो जाने दी और बनवीर से उदयसिंह को बचा लिया। उसने अपने कर्तव्य के लिए अपनी ममता का भी त्याग कर दिया इसलिए पन्ना को कलंकिनी कहना अथवा उसके आचरण को सर्पिणी-सा सिद्ध करना पूर्णत: अनुपयुक्त एवं अनुचित है।

प्रश्न 10. चन्दन की हत्या के अतिरिक्त और क्या-क्या उपाय उदयसिंह को बचाने के लिए किए जा सकते थे?

उत्तर—चन्दन की हत्या के अतिरिक्त पन्ना बनवीर से यह भी कह सकती थी कि उदयसिंह उसके साथ ही उत्सव देखने गये थे और अभी तक वापस नहीं लौटे। वह अन्य किसी स्थान पर भी कुँवर को छिपा सकती थी। महल के किसी सैनिक को लोभ देकर भी वह चन्दन और उदयसिंह सहित स्वयं किसी सुरक्षित स्थान पर जा सकती थी।

कथानक व चरित्र-चित्रण पर आधारित प्रश्न

प्रश्न 1. दीपदान एकांकी के आधार पर पन्ना धाय के ममत्व एवं कर्तव्यनिष्ठा के बीच के अन्तर्द्वन्द्व का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर—डॉ० रामकुमार वर्मा ने अपनी कुशल लेखनी से पन्ना धाय के चरित्र को एक भारतीय नारी के अपूर्व त्याग, कर्तव्यनिष्ठा, राजभक्ति और वात्सल्य को चित्रित किया है। पन्ना धाय स्वर्गीय महाराणा संग्रामसिंह के कनिष्ठ पुत्र कुँवर उदयसिंह की संरक्षिका है। पन्ना को उदयसिंह के पालन

पोषण का दायित्व सौपा गया है। वह अन्त तक अपने इस पुनीत कर्तव्य का निष्ठापूर्वक पालन करती है। अपने कर्तव्यपालन के लिए वह अपने पुत्र (चन्दन) का भी बलिदान कर देती है। पन्ना वात्सल्यमयी माँ की प्रतिमूर्ति है। वह अपने पुत्र चन्दन को भी बहुत प्रेम करती है। उदयसिंह की शय्या पर अपने कुलदीपक चन्दन को सुलाते हुए उसका हृदय बिलख पड़ता है। वह अपने फूल से लाल को अंगारो की सेज पर सुलाने वाली सर्पिणी कहकर स्वयं को धिक्कारती है, ''तू सर्पिणी है। सर्पिणी जो अपने ही बच्चे को खा डालती है।'' वह अपने पुत्र चन्दन और कुँवर उदयसिंह दोनों को ही बराबर प्रेम करती है। परन्तु चित्तौड़ के उत्तराधिकारी कुँवर उदयसिंह को बचाने के लिए उसके पास और कोई विकल्प नहीं था। इसलिए वह अपनी ममता का बलिदान कर देती है। बनवीर जब पन्ना को जागीर का लालच देता है, तब वह बनवीर को फटकारती हुई कहती है कि ''राजपूतानी व्यापार नहीं करती, वह या तो रणभूमि पर चढ़ती है या चिता पर।'' पन्ना धाय अपूर्व त्याग की साकार मूर्ति है। वह चित्तौड़ के सूरज उदयसिंह की सुरक्षा के लिए अपने नन्हें से लाल को कुँवर की शय्या पर हत्यारे बनवीर की तलवार के नीचे सुला देती है और कहती है—दीपदान! अपने पुत्र, जीवन का दीप (पुत्र) मैंने रक्त की धारा पर तैरा दिया है। ऐसा दीपदान भी किसी ने नहीं किया।''

प्रश्न 2. दीपदान एकांकी का कथासार अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर—'दीपदान' एकांकी की कथावस्तु चित्तौड़ की एक ऐतिहासिक घटना पर आधारित है, जिसमें राजपूताना के त्याग-बलिदान का इतिहास चित्रित हुआ है। महाराणा संग्रामसिंह की मृत्यु के बाद उनके छोटे भाई पृथ्वीसिंह का दासी-पुत्र बनवीर चित्तौड़ का शासक बनना चाहता था। अपनी इस महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए उसने पहले तो सोते हुए विक्रमादित्य की हत्या कर दी और फिर कुँवर उदयसिंह की हत्या करने के लिए 'मयूर पक्ष' कुण्ड में असमय ही 'दीपदान' उत्सव का आयोजन किया। उदयसिंह राणा साँगा का पुत्र है और वही चित्तौड़ राज्य का वास्तविक उत्तराधिकारी भी है। इसलिए बनवीर अपने रास्ते के इस काँटे को दूर हटाना चाहता है।

कुँवर उदयसिंह की संरक्षिका पन्ना धाय, बनवीर के इस षडयन्त्र को भाँप जाती है और उदयसिंह को दीपदान उत्सव में नहीं जाने देती। कुँवर उदयसिंह दीपदान-उत्सव में जाने की जिद करते हैं और अन्ततः रूठकर सो जाते हैं। सोना नामक नर्तकी उदयसिंह को उत्सव में ले जाने के लिए आती है, किन्तु पन्ना उसको फटकारकर भगा देती है। वह सोना से साफ-साफ कहती है—''**चित्तौड़ राग-रंग की भूमि नहीं है, जौहर की भूमि है। यहाँ आग की लपटें नाचती हैं, सोना जैसी रावल की लड़कियाँ नहीं।**'' इसके बाद पन्ना का पुत्र चन्दन आता है। पन्ना उदयसिंह को वहाँ से बाहर भेज देने की योजना तैयार करती है और अपने पुत्र को उदयसिंह के स्थान पर सुला देती है। उदयसिंह को कीरतबारी की जूठी पत्तलों की टोकरी में छिपाकर किले के बाहर सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दिया जाता है।

कुछ देर बाद बनवीर नंगी तलवार हाथ में लेकर उदयसिंह के कमरे में आता है। वह पन्ना को जागीर का प्रलोभन देता है, पर पन्ना अपने कर्तव्य पर दृढ़ रहती है और बनवीर को फटकारती है, तब क्रोधित बनवीर उदयसिंह के धोखे में चन्दन को पन्ना की आँखों के सामने ही मौत के घाट उदार देता है।

प्रश्न 3. एकांकी के कथा-विकास की दृष्टि से 'दीपदान' की कथावस्तु की समीक्षा कीजिए।

उत्तर—कथावस्तु—यह सुगठित, गतिशील, कुतूहलवर्द्धक, अन्तर्द्वन्द्व से परिपूर्ण तथा अत्यन्त रोचक है। चित्तौड़ के शासक महाराणा संग्रामसिंह की मृत्यु के पश्चात् महाराणा के भाई पृथ्वीराज के दासी-पुत्र बनवीर को कुँवर उदयसिंह का संरक्षक बनाकर मेवाड़ का शासक नियुक्त कर दिया जाता है। वह चित्तौड़ पर निष्कण्टक राज्य करना चाहता है। इसके लिए उसने सोते हुए विक्रमादित्य की हत्या कर दी और अब कुँवर उदयसिंह की हत्या करना चाहता है, पर पन्ना धाय अपने पुत्र का बलिदान देकर उदयसिंह के प्राण बचाती है।

कथावस्तु का प्रारम्भ—एकांकी की कथावस्तु पन्ना धाय और उदयसिंह के वार्तालाप के साथ प्रारम्भ होती है। बनवीर असमय ही आयोजन कर उदयसिंह की हत्या करना चाहता है, पर पन्ना अपने स्वामी के पुत्र को उत्सव में नहीं जाने देती। वह उदयसिंह से कहती है—''**तुम रात में अकेले नहीं जाओगे। चारों तरफ जहरीले सर्प घूम रहे हैं।**''

कथावस्तु का विकास—रावल रूपसिंह की पुत्री सोना के प्रवेश के साथ कथावस्तु का विकास होता है। वह उदयसिह को उत्सव में ले जाना चाहती है, पर पन्ना उसे नहीं भेजती और कहती है—''**चित्तौड़ रास-रंग की भूमि नहीं है, जौहर की भूमि है।**''

कथावस्तु की चरम-सीमा—पन्ना के अन्तर्द्वन्द्व के साथ-साथ कथानक चरम-सीमा की ओर बढ़ता है। हाथ में नंगी तलवार लिये बनवीर के प्रवेश के साथ कथानक चरम-सीमा पर पहुँचता है।

कथावस्तु का अन्त—उदय के धोखे में **चन्दन के वध** के साथ एकांकी का करुण अन्त हो जाता है।

संकलन-त्रय—सारी एकांकी उदयसिंह के कक्ष में एक ही सन्ध्या को समाप्त हो जाती है। अतः इसमें समय, स्थान और कार्य का सफल निर्वाह हुआ है।

भाषा-शैली—'दीपदान' एकांकी की भाषा खड़ीबोली है, जोकि कठिन शब्दावली से रहित है। कीरत अपने व्यक्तित्व के आधार पर ही ग्राम्य-भाषा बोलता है। जहाँ चिन्तन है, वहाँ शैली में गम्भीरता है, किन्तु हास्य का पुट भी समयानुकूल सरसता लाने वाला है।

मौलिकता—यद्यपि इस एकांकी की कथा प्रसिद्ध ऐतिहासिक घटना पर आधारित है, फिर भी लेखक ने इसमें अपनी मौलिकता का परिचय दिया है। शैली की प्रतीकात्मकता प्रसिद्ध घटना को मौलिक बनाने में समर्थ है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि एकांकी की कथावस्तु अति उत्तम है, जो पाठकों को प्रभावित करने में पूर्णरूपेण सक्षम है।

प्रश्न 4. ''अपने जीवन का दीप मैंने रक्त की धारा पर तैरा दिया है।'' दीपदान एकांकी में पन्ना धाय के इस कथन के आधार पर उसका चरित्र चित्रण कीजिए।

उत्तर—पन्ना धाय 'दीपदान' एकांकी की नायिका है। वह चित्तौड़ के स्वर्गीय महाराणा संग्रामसिंह के कनिष्ठ पुत्र **कुँवर उदयसिंह** की संरक्षिका है। डॉ० रामकुमार वर्मा ने अपनी कुशल लेखनी से पन्ना धाय के माध्यम से एक भारतीय नारी के अपूर्व **त्याग, कर्तव्यनिष्ठा, राजभक्ति** और **वात्सल्य** को चित्रित किया है। *पन्ना धाय के चरित्र में अग्रलिखित विशेषताएँ हैं—*

वत्सला माँ—पन्ना वात्सल्यमयी माँ की प्रतिमूर्ति है। उदयसिंह की शय्या पर अपने कुल दीपक चन्दन को सुलाते हुए उसका हृदय बिलख पड़ता है। वह अपने फूल से लाल को अंगारों की सेज पर सुलाने वाली सर्पिणी कहकर स्वयं को धिक्कारती है—''**तू सर्पिणी है। सर्पिणी जो अपने ही बच्चे को खा डालती है।**''

स्वामिभक्त—वह राणा संग्रामसिंह की स्वामिभक्त सेविका है। उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके कनिष्ठ पुत्र की संरक्षिका बनकर वह अपनी स्वामिभक्ति का परिचय देती है। वह कहती है कि ''**मेरे महाराणा का नमक मेरे रक्त से भी महान् है। नमक से रक्त बनता है, रक्त से नमक नहीं।**'' अतः वह अपने रक्त (चन्दन) को देकर महाराणा के नमक (उदयसिंह) की रक्षा करती है।

आदर्श संरक्षिका—पन्ना ने एक आदर्श संरक्षिका के दायित्व को भली-भाँति निभाया है। उस पर कुँवर उदयसिंह के पालन-पोषण का भार है। इस भार को उठाते हुए वह सदैव कुँवर के हित में संलग्न रहती है। इस विषय में उसके सम्बन्ध में सोना का कथन पूर्णत: सार्थक सिद्ध होता है कि **''धाय माँ! तुमने उदयसिह के सामने तो अपने पुत्र चन्दन को भी भुला दिया।''**

कर्तव्यनिष्ठ नारी—पन्ना को उदयसिंह के पालन-पोषण का दायित्व सौंपा गया है। वह अन्त तक अपने इस पुनीत कर्तव्य का निष्ठापूर्वक पालन करती है। अपने कर्तव्यपालन के लिए वह अपने पुत्र (चन्दन) का भी बलिदान कर देती है। बनवीर जब पन्ना को जागीर का लालच देता है, तब वह बनवीर को फटकारती हुई कहती है कि **''राजपूतानी व्यापार नहीं करती, वह या तो रणभूमि पर चढ़ती है या चिता पर।''** वह अपने कर्तव्य के निर्वाह के लिए अपने प्राणों की परवाह न करके बनवीर पर कटार से आक्रमण भी करती है।

सच्ची क्षत्राणी—पन्ना सच्ची क्षत्राणी है। उसमें असीम साहस, अपूर्व त्याग और वीरता के गुण हैं। वह अच्छी तरह समझती है कि चित्तौड़ नाच-रंग की भूमि नहीं है, जौहर की भूमि है। इसलिए वह उदयसिंह से कहती है—**''चित्तौड़ में तलवार से कोई नहीं डरता, कुँवर! जैसे लता में फूल खिलते हैं, वैसे ही यहाँ के वीरों के हाथों में तलवार खिलती है।''**

अपूर्व त्याग की साकार प्रतिमा—पन्ना धाय अपूर्व त्याग की साकार मूर्ति है। वह चित्तौड़ के सूरज उदयसिंह की सुरक्षा के लिए अपने नन्हें से लाल को कुँवर की शय्या पर हत्यारे बनवीर की तलवार के नीचे सुला देती है और कहती है—**''दीपदान! अपने जीवन का दीप (पुत्र) मैंने रक्त की धारा पर तैरा दिया है। ऐसा दीपदान भी किसी ने किया है।''**

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि पन्ना एक सामान्य धाय माँ न होकर महान् क्षत्राणी है, जिसमें विवेक, उत्साह, वीरता, कर्तव्यपरायणता आदि गुण कूट-कूटकर भरे हुए हैं।

प्रश्न 5. सोना का चरित्र-चित्रण 'दीपदान' एकांकी के आधार पर कीजिए।

उत्तर—सोना 'दीपदान' एकांकी की दूसरी प्रमुख पात्र है। *उसकी प्रमुख चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—*

रूपवती—सोना रावल रूपसिंह की पुत्री है और अत्यन्त रूपवती है। उसकी आयु 16 वर्ष है। वह कुँवर उदयसिंह के साथ खेलती है तथा आयु में उनसे दो वर्ष बड़ी है।

वाक्पटु एवं शिष्टाचारी—सोना राजमहल के शिष्टाचार से परिचित है और बोलने में भी निपुण है। उसके शिष्टाचार एवं वाक्पटुता का पता उस समय चलता है, जब वह उदयसिंह को दीपदान महोत्सव में ले जाने के लिए आती है। महल में प्रवेश कर वह पन्ना धाय को प्रणाम करती है और उनसे उदयसिंह के विषय में पूछती है। तब पन्ना कहती है—**''वे थक गये हैं। सोना चाहते हैं।''** तभी वह प्रत्युत्तर देती है—**''सोना चाहते हैं! मैं भी तो सोना हूँ।''**

सरल स्वभाव—राजमहल से सम्बन्धित होते हुए भी वह वहाँ चलने वाले षड्यन्त्रों से अनभिज्ञ है। पन्ना के सम्मुख नृत्य की बात करना, बनवीर द्वारा कही गयी बातों को खेल-खेल में पन्ना को बता देना, मयूरपक्ष कुण्ड उत्सव की बातों का वर्णन करना उसके सरल स्वभाव के ही प्रमाण हैं।

भ्रमित—सोना अपने आपको स्थिर नहीं रख पाती। वह भ्रमित-सी प्रतीत होती है; क्योंकि एक ओर तो वह कुँवर उदयसिंह को चाहती है और दूसरी ओर बनवीर के प्रलोभन में भी आ जाती है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि सोना में एक अल्हड़ कन्या की समस्त विशेषताएँ विद्यमान है।

प्रश्न 6. ''बनवीर की महत्त्वाकांक्षा ने उसे हत्यारा बनवीर बना दिया है।''—दीपदान एकांकी के आधार पर इस कथन के आलोक में बनवीर का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर—'दीपदान' डॉ० रामकुमार वर्मा का एक सशक्त ऐतिहासिक घटना पर आधारित है। बनवीर का चरित्र इस एकांकी में खलनायक की भूमिका निभाता है। *बनवीर के चरित्र की मुख्य विशेषताएँ अग्रलिखित हैं—*

महत्त्वाकांक्षी—बनवीर महत्त्वाकांक्षी है। वह महाराणा संग्रामसिंह के छोटे भाई पृथ्वीसिंह का दासी-पुत्र है, फिर भी चित्तौड़ पर राज्य करना चाहता है। अपनी इसी महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए वह दीपदान उत्सव का आयोजन करता है और षड्यन्त्र रचकर पहले विक्रमादित्य की हत्या करता है, फिर उदयसिंह को अपने मार्ग से हटाने के लिए उसकी हत्या करने हेतु उसके महल में पहुँच जाता है। वहाँ वह उदयसिंह के धोखे में पन्ना के पुत्र चन्दन की हत्या कर देता है। इस प्रकार उसकी महत्त्वाकांक्षा उसे हत्यारा बनवीर बना देती है।

षड्यन्त्रकारी—चित्तौड़ राज्य का वास्तविक उत्तराधिकारी राणा साँगा का पुत्र कुँवर उदयसिंह है। इसलिए बनवीर कुँवर की हत्या करने के लिए एक षड्यन्त्र रचता है। वह असमय ही 'मयूरपक्ष' कुण्ड में दीपदान महोत्सव का आयोजन करता है तथा भीड़-भाड़ और शोरगुल के बीच कुँवर की हत्या करना चाहता है। इसी उत्सव के दौरान उसने सोते हुए विक्रमादित्य की हत्या भी कर दी थी।

कूटनीतिज्ञ—बनवीर साम-दाम-दण्ड-भेद की नीति अपनाकर पन्ना को जागीर का लालच देता है। वह पन्ना से कहता है कि **''मैं तुम्हें मारवाड़ में एक जागीर देना चाहता हूँ। वहाँ तुम्हारे लिए तुलजा भवानी का मन्दिर बनेगा। ..... तुम्हीं देवी के उस मन्दिर में रहोगी। लोग तुम्हारी पूजा करेंगे।''**

क्रूर और कायर हत्यारा—बनवीर बहत क्रूर और कायर हत्यारा है। पहले वह सोते हुए विक्रमादित्य की हत्या करता है और जब पन्ना कुँवर को दीपदान उत्सव में नहीं जाने देती, तब वह नंगी तलवार हाथ में लेकर उदयसिंह के कमरे में जाता है और यह कहता हुआ पन्ना के पुत्र चन्दन की हत्या कर देता है कि **''यही है मेरे मार्ग का कण्टक। यमराज! लो इस दीपक को। यह मेरा दीपदान है।''**

विलासी और विश्वासघाती—बनवीर विलासी शासक है। उसे नाच-गाने का शौक है। दीपदान के उत्सव पर उसने रावल की पुत्री सोना को भी पैरों में घुँघरू बाँधकर नाचने के लिए प्रेरित किया। वह एक विश्वासघाती व्यक्ति भी है, जो अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए अपने भाई की हत्या करता है तथा राज्य के वास्तविक उत्तराधिकारी की हत्या का षड्यन्त्र रचता है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि बनवीर अपने कुल का कलंक, निर्दयी, विलासी और विश्वासघाती व्यक्ति है। एकांकीकार ने उसमें एक क्रूर खलनायक के सभी गुण चित्रित किये हैं।

प्रश्न 7. यदि आप पन्ना धाय के स्थान पर होते तो क्या करते?

उत्तर—पन्ना धाय ने चित्तौड़ के उत्तराधिकारी कुँवर उदयसिंह को बचाने के लिए अपने पुत्र (चन्दन) का बलिदान दिया। इससे यह व्यक्त होता है कि पन्ना अपने पुत्र से ज्यादा प्रेम अपने देश और कर्तव्य से करती थी। अगर हम पन्ना धाय के स्थान पर होते तो यही करते जो पन्ना ने किया क्योंकि पन्ना ने अपने पुत्र का बलिदान देकर अपनी स्वामिभक्ति और

कर्तव्य निष्ठा का पालन किया है। पन्ना ने कुवर उदयसिंह के प्राण बचाने के लिए जो बलिदान दिया वह हर किसी के लिए आसान नही है, परन्तु पन्ना एक राजभक्त नारी थी, उसके लिए पुत्र से पहले अपना राज्य और कर्तव्य की भूमिका थी। हम पन्नाधाय के द्वारा दिए गए बलिदान से पूरी तरह सहमत हैं।

❑

2

नये मेहमान

(उदयशंकर भट्ट)

परीक्षापयोगी प्रश्न

तथ्यों पर आधारित प्रश्न

प्रश्न 1. विश्वनाथ मेहमानों के आगमन से क्यों प्रसन्न नहीं था?

उत्तर—विश्वनाथ मेहमानों के आगमन से प्रसन्न नहीं था क्योंकि उसका मकान बहुत छोटा था. उसी में वह अपनी पत्नी और बच्चों के साथ किसी प्रकार जीवन व्यतीत कर रहा था। मकान की छत इतनी छोटी थी कि उस पर एक चारपाई बिछाने का भी स्थान नहीं था।

प्रश्न 2. मेहमानों से स्पष्ट परिचय पूछने में विश्वनाथ क्यों हिचकिचा रहा था?

उत्तर—विश्वनाथ संकोची स्वभाव का था, अत: वह नवागन्तुकों से स्पष्ट परिचय पूछने में हिचकिचा रहा था। साथ ही उसे इस बात का सन्देह भी था कि यदि वे लोग वास्तविक रूप में उसके परिचित निकले तो कहीं उसका स्पष्ट परिचय पूछना उनके लिए असम्मानजनक न हो जाए।

प्रश्न 3. 'नये मेहमान' एकांकी हास्यप्रधान है या समस्याप्रधान? कारण सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर—'नये मेहमान' एकांकी सामाजिक समस्या प्रधान एकांकी है। प्रस्तुत एकांकी में भट्ट जी ने बड़े-बड़े नगरों में मध्यम वर्ग की आवास की समस्या के विकराल रूप को उजागर किया है। इस समस्या के कारण मेहमानों के आगमन पर ये लोग किस प्रकार चिन्तित हो उठते हैं, इस तथ्य को भट्ट जी ने अपनी हास्य-व्यंग्यपूर्ण शैली में कुशलता से स्पष्ट किया है।

प्रश्न 4. यदि नन्हेमल और बाबूलाल आपके घर आते हैं तो आपकी क्या स्थिति होगी? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर—यदि नन्हेमल और बाबूलाल जैसे बिन बुलाये मेहमान अचानक ही हमारे घर आ जाएँ तो हमारी स्थिति भी विश्वनाथ और रेवती जैसी हो जाती। जब हमारे पास स्वयं के सोने के लिए ही पर्याप्त जगह नहीं है तो उनके सोने की व्यवस्था कैसे करेंगे?

प्रश्न 5. बड़े नगरों में विश्वनाथ जैसी स्थिति के लोगों के जीवन पर एक संक्षिप्त निबन्ध लिखिए।

उत्तर—इसमें सन्देह नहीं है कि बड़े नगरों में विश्वनाथ जैसी स्थिति के लोगों का जीवन अत्यन्त दयनीय है। बड़े नगरों में आवास की विकट समस्या है और विश्वनाथ जैसे कवि व सहृदय लोग मध्यम वर्ग के होने के कारण अपने से निम्नवर्ग के साथ भी जुड़े होते हैं और उच्च वर्ग के साथ भी। इन्हें जब आवासीय समस्या से गुजरना पड़ता है तो वे बड़े तनाव में जीवनयापन करते हैं। इसमें भी यदि मकान किराये का है, तो समस्या और भी बढ़ जाती है।

विश्वनाथ जैसे लोगों का खान-पान और रहन-सहन भी उच्च नहीं हो पाता। सुशिक्षित होने पर भी उन्हें सामान्य भौतिक स्तर से ही जीना पड़ता है। इनकी आय का अधिकांश भाग सामाजिकता का निर्वाह करते हुए ही खर्च हो जाता है। वे अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा भी नहीं दे पाते।

प्रश्न 6. 'नये मेहमान' एकांकी के आधार पर पराये मेहमान और अपने मेहमान के लिए रेवती के भावों का अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—रेवती आधुनिक मध्यमवर्गीय परिवार की सामान्य नारी है। वह अपनी समस्याओं एवं अभावों से परेशान है। एक दिन रात्रि में दो अपरिचित मेहमान उनके घर पर आ धमकते हैं। भीषण गर्मी में सिरदर्द से पीड़ित रेवती अपरिचित मेहमानों के लिए खाना नहीं बनाना चाहती। अपरिचित मेहमानों के चले जाने के कुछ ही देर के बाद रेवती का भाई आ जाता है। अपने भाई को देखकर रेवती प्रसन्न हो जाती है। वह अपने अभावों की चिन्ता न करके उसके लिए बर्फ और मिठाई मँगाती है और देर रात में ही उसके लिए खाना बनाती है। अत: स्पष्ट है कि अपने और पराये मेहमानों के प्रति रेवती के भावों में अन्तर है, जोकि स्वाभाविक मानवीय प्रवृत्ति है।

प्रश्न 7. 'नये मेहमान' एकांकी की कथावस्तु की क्या विशेषताएँ हैं?

उत्तर—श्री उदयशंकर भट्ट द्वारा लिखित 'नये मेहमान' एकांकी एक समस्या-प्रधान सामाजिक एकांकी है, जो नगरों के मध्यमवर्गीय परिवार का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करती है। इसमें लेखक ने महानगरों की आवास-समस्या को संकेत रूप में उजागर किया है। महानगरों में मध्यम वर्ग के परिवारों के लिए आवास की समस्या बड़ी विकट है।

प्रश्न 8. नया मेहमान वास्तव में कौन है? प्रमाण और तर्कसहित उत्तर दीजिए।

उत्तर—शाब्दिक रूप में 'मेहमान' का आशय उस आगन्तुक से होता है, जो बिना बताये ही आ जाए। एकांकी में रेवती के घर तीन मेहमान आते हैं। पहले आने वाले मेहमान-नन्हेमल और बाबूलाल है, जो बिना जान-पहचान के ही रेवती के यहाँ आ धमकते हैं और सिर-दर्द बन जाते हैं। उनके किसी प्रकार चले जाने के बाद घर के नीचे से फिर किसी मेहमान की आवाज आती है। पहले मेहमानों से दु:खी हुई रेवती, इस नये मेहमान की आवाज को सुनकर एक बार तो चौंक जाती है, परन्तु जब वह देखती है कि यह नया मेहमान उसका भाई ही है, तो वह हर्ष से फूली नहीं समाती और अपने भाई की आवभगत में जुट जाती है। प्रस्तुत एकांकी में रेवती का यह भाई ही 'नया मेहमान' के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

कथानक व चरित्र-चित्रण पर आधारित प्रश्न

प्रश्न 1. ''किसी को क्या जरूरत पड़ी जो गर्मी में भुने यह तो हमारा ही भाग्य है कि चने की तरह भाड़ में भुनते हैं।'' रेवती के इस कथन में भरी पीड़ा को शब्दों में व्यक्त कीजिए।

उत्तर—रेवती और उसका परिवार छोटे घर की वजह से परेशान है। रहने और सोने के लिए पर्याप्त जगह नहीं है। पड़ोसी भी झगड़ालू किस्म के हैं और ऐसे हालात में आ जाते हैं दो अपरिचित मेहमान। उनके लिए स्नान

के पानी का प्रबन्ध करना, बाजार से मँहगी वस्तुएँ लाकर उनकी आवभगत करना रेवती के लिए बहुत ही मुश्किल है। रेवती का स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता है और ऊपर से असहनीय गर्मी जो रेवती के लिए परेशानी का कारण है। ऊपर तीन मन्जिल पर पानी चढ़ाने का काम और भी मुश्किल है। इतनी गर्मी में नीचे से ऊपर पानी चढ़ाने का काम नौकर को भी मुश्किल ही लगता है जिसे देखकर कोई भी नौकर नहीं रुकता। इसलिए रेवती अपनी पीड़ा को कुछ इन शब्दों में व्यक्त करती है कि ''किसी को क्या जरूरत पड़ी जो गर्मी में भुने। यह तो हमारा ही भाग्य है कि चने की तरह भाड़ में भुनते हैं। घर में जो मेहमान आए हुए हैं उनके लिए खाने का बन्दोबस्त करना रेवती के लिए और भी मुश्किल पड़ जाता है। रेवती बड़े नगर में रहने वाली एक मध्यमवर्गीय युवती है जिसकी पीड़ा है आवासीय स्थिति और गर्मी।

प्रश्न 2. 'नये मेहमान' एकांकी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर—'नये मेहमान' उदयशंकर भट्ट का एक यथार्थवादी सशक्त एकांकी है। इसमें बड़े नगरों में आवास की समस्या पर रोचक ढंग से प्रकाश डाला गया है।

एकांकी का मुख्य पात्र विश्वनाथ है। वह एक बड़े नगर की घनी बस्ती में रहता है। उसका मकान बहुत छोटा है। उसी में वह अपनी पत्नी और बच्चों के साथ किसी प्रकार जीवन व्यतीत कर रहा है। गर्मी का दिन है, उसका छोटा बच्चा बीमार है और पत्नी का भी गर्मी के कारण बुरा हाल है। मकान की छत छोटी है, उस पर चारपाई बिछाने का भी स्थान नहीं है। पड़ोसिन बहुत कठोर स्वभाव की है। वह अपनी खाली छत का भी प्रयोग नहीं करने देती। इस कारण विश्वनाथ बहुत दु:खी है।

ये लोग सोने की तैयारी कर रहे होते हैं कि बाहर से कोई दरवाजा खटखटाता है। विश्वनाथ दरवाज खोलता है। दो अपरिचित व्यक्ति बाबूलाल और नन्हेमल बिस्तर और सन्दूक के साथ अन्दर प्रवेश करते हैं और बेशर्मी से घर में जम जाते हैं। विश्वनाथ से बर्फ के ठण्डे पानी की माँग करते हैं। विश्वनाथ उनका पता पूछता है तो वे दोनों बातों में टाल देते हैं। संकोच के कारण विश्वनाथ कुछ कह नहीं पाता। उसकी पत्नी खाना बनाने के लिए तैयार नहीं होती और अपने पति से जिद करती है कि पहले इनका पता-परिचय पूछो। जब विश्वनाथ साफ-साफ पूछता है तो पता चलता है कि वे भूल से उसके घर आ गए हैं। वास्तव में उन्हें पड़ोस के कविराज रामलाल के घर जाना था और वे भूल से कवि विश्वनाथ के घर आ गये थे। इस पर विश्वनाथ के बच्चे उन्हें सही स्थान पर पहुँचाकर आते हैं।

जैसे ही पति-पत्नी इन दोनों से मुक्त होते हैं वैसे ही रेवती का भाई आ जाता है। अपने भाई के आगमन पर रेवती अत्यधिक प्रसन्न होती है। उसे इस बात का दु:ख है कि उसका भाई उनका मकान ढूँढ़ता रहा और बहुत देर बाद सही स्थान पर पहुँचा। वह भाई के बार-बार मना करने पर भी उसके लिए खाना बनाती है और बच्चों को बर्फ और मिठाई लाने के लिए भेजती है। विश्वनाथ मुस्कराकर व्यंग्य में कहता है—**कहो अब?** इस पर रेवती कहती है—**अब क्या—मैं खाना बनाऊँगी, भैया भूखे नहीं सो सकते।** यहीं पर एकांकी समाप्त हो जाता है।

प्रश्न 3. कथा संघटन के विकास को दृष्टि में रखते हुए 'नये मेहमान' एकांकी की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर—श्री उदयशंकर भट्ट द्वारा लिखित 'नये मेहमान' एकांकी में महानगरों में रहने वाले मध्यम वर्ग की आवास-समस्या और कष्टपूर्ण जीवन का यथार्थ चित्रण किया गया है।

कथावस्तु का आरम्भ—नये मेहमान की कथावस्तु यथार्थ पर आधारित है। इसका आरम्भ गर्मी की एक रात को भारत के किसी महानगर में आवास की समस्या से जूझते विश्वनाथ के घर से होता है। गृह-स्वामी विश्वनाथ किसी महानगर में अपनी पत्नी रेवती और बच्चों के साथ तंग गली के एक छोटे से मकान में रहता है। उसका छोटा पुत्र बीमार है। गर्मी के कारण उसकी पत्नी सिरदर्द से परेशान है। खुली हवा में सोने की कोई व्यवस्था नहीं है। उनकी पड़ोसिन दुष्ट स्वभाव की है। खाली छत पड़ी रहने पर भी उन्हें अपनी छत पर नहीं सोने देती। विश्वनाथ के घर पर मेहमानों का आना भी उसे अच्छा नहीं लगता और छोटी-छोटी बातों पर वह इनसे झगड़ा करती रहती है।

कथावस्तु का विकास—कथावस्तु का विकास नये मेहमानों के आगमन के साथ होता है। जब विश्वनाथ और उसकी पत्नी सोने की तैयारी कर रहे होते हैं, उसी समय रात्रि के 8 बजे बिजनौर से कोई दो अपरिचित व्यक्ति बाबूलाल और नन्हेमल अपने गन्तव्य का सही पता न होने के कारण विश्वनाथ के घर आ जाते हैं। विश्वनाथ द्वारा परिचय पूछे जाने पर भी वे बातों में टाल देते हैं। गर्मी के कारण वे भी परेशान हैं। बर्फ का पानी पीकर और स्नान करके उन्हें राहत अनुभव होती है। भूखे होने के कारण वे भोजन बनाने को कहकर **मान न मान हम तेरे मेहमान** वाली उक्ति को चरितार्थ करते हैं। भीषण गर्मी में सिरदर्द से पीड़ित देवती देर रात में अपरिचित जनों के लिए खाना बनाने में असमर्थता प्रकट करती है। जब विश्वनाथ संकोच को त्यागकर मेहमानों से उनका साफ-साफ पता पूछ ही लेता है, तब भेद खुलता है कि उन्हें उसी गली में किसी **कविराज रामलाल** के यहाँ जाना था। वे पता भूल गये थे अत: कवि विश्वनाथ के घर आ गये थे। विश्वनाथ के बच्चे उन्हें सही स्थान पर पहुँचा देते हैं।

चरम-सीमा—नये मेहमानों के चले जाने के बाद रेवती के भाई के आगमन पर एकांकी चरम-सीमा पर पहुँचता है। यहाँ पर सबसे अधिक कुतूहल उत्पन्न होता है। लगता है कि दोनों नये मेहमान फिर लौट आये हैं या कोई दूसरी मुसीबत पैदा हो गयी है, पर ऐसा नहीं होता। इस बार रेवती का अपना भाई आया था। उसे देखकर सब प्रसन्न थे। रेवती पंखा झलती है तथा ठण्डा पानी और मिठाई की व्यवस्था करती है।

अन्त—रेवती के भाई को भूख नहीं है। वह इतनी गर्मी में खाना बनाने को मना करता है। पर रेवती कहती है—**''मैं खाना बनाऊँगी, भैया भूखे नहीं सो सकते।''**

संकलन-त्रय—इस एकांकी में संकलन-त्रय का पूर्ण निर्वाह हुआ है। पूरा एकांकी एक ही कमरे में एक-आध घण्टे में घटित नाटकीय संवेदना के साथ समाप्त हो जाता है। अत: **कार्य, स्थान** और **समय** का सुन्दर समायोजन हुआ है।

प्रश्न 4. 'नये मेहमान' एकांकी के प्रमुख पात्र विश्वनाथ का चरित्रांकन कीजिए।

उत्तर—विश्वनाथ 45 वर्षीय गठे शरीर का, गम्भीर और सुसंस्कृत व्यक्ति है। वह अपनी पत्नी रेवती और बच्चों के साथ किसी महानगर के एक छोटे-से मकान में रहता है। *उसके चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—*

सहृदय नागरिक—विश्वनाथ महानगर में रहने वाला एक सहृदय नागरिक है। वह मध्यम-वर्गीय समाज का प्रतिनिधित्व करता है। वह नौकरी करके अपनी सीमित आय से किसी तरह परिवार का भरण-पोषण करता है। वह पढ़ा' लिखा, समझदार एवं सुसंस्कृत व्यक्ति है। वह अपनी पत्नी एवं बच्चों के सुख-दु:ख का पूरा ध्यान रखता है।

आवास-समस्या से पीड़ित—विश्वनाथ मध्यमवर्गीय परिवार की आम समस्या आवास-समस्या से पीड़ित है। वह किराये पर छोटा-सा तंग मकान लेकर परिवार के साथ जीवन-निर्वाह कर रहा है। वह दो वर्ष से हवादार, खुले और अच्छे मकान की तलाश में है। वह पड़ोसिन के दुर्व्यवहार को सहन करता हुआ संघर्षशील व्यक्ति की तरह अपने जीवन की

गाड़ी को खींच रहा है। उसकी व्यथा उसी के शब्दों में—''**मकान मिलता ही नहीं। आज दो साल से दिन-रात एक करके ढूँढ़ रहा हूँ। ..... एक ये पड़ोसी हैं, निर्दयी, जो खाली छत पड़ी रहने पर भी बच्चों के लिए एक खाट नहीं बिछाने देते।**''

संकोची एवं विनम्र—विश्वनाथ संकोची और विनम्र स्वभाव का है। यही कारण है कि देर रात के समय आये अपरिचित मेहमानों से उनका परिचय तक नहीं पूछ पाता है। पड़ोसियों का व्यवहार कलहपूर्ण होने पर भी वह उनसे क्षमा माँगकर विनम्रता का व्यवहार करता है—''**अनजान आदमी से गलती हो ही जाती है। उसे क्षमा कर देना चाहिए। कल से ऐसा नहीं होगा।**''

अतिथि-सत्कार करने वाला—विश्वनाथ के हृदय में अतिथियों के प्रति सेवाभाव है। अपरिचित अतिथियों को भी परिचितों के समान प्रेम से बैठाता है, बर्फ मँगाकर ठण्डा पानी पिलाता है, स्नान का प्रबन्ध कराता है और पत्नी से उनके लिए भोजन बनाने को कहता है तथा गन्तव्य स्थान का पता लगने पर अपने बच्चों द्वारा उन्हें सही स्थान पर पहुँचवा देता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि विश्वनाथ सभ्य, सुसंस्कृत, पढ़ा-लिखा, सुनागरिक है। अभावग्रस्त होते हुए भी अतिथि-सेवा का संस्कार उसमें विद्यमान है।

प्रश्न 5. 'नये मेहमान' एकांकी के आधार पर रेवती की चरित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—रेवती 'नये मेहमान' एकांकी के प्रधान पात्र विश्वनाथ की पत्नी है। वह मध्यम वर्ग के परिवार की गृहस्वामिनी का प्रतिनिधित्व करती है। *उसके चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—*

आवास की समस्या से पीड़ित—रेवती एक सामान्य नारी है। उसका बच्चा बीमार है, मकान छोटा एवं कम हवादार है। भीषण गर्मी पड़ रही है—इन सब परिस्थितियों का वह सामना करती है। वह कहती है—''**जाने कब तक इस जेलखाने में सड़ना होगा।**''

पति-परायणा एवं सहनशील—अपनी वर्तमान समस्याओं से पीड़ित होते हुए भी उसे अपने पति से अत्यन्त प्रेम है। वह स्वयं आँगन में लेटकर गर्मी में रात काटने को तैयार है, परन्तु पति को छत पर खुली हवा में सोने के लिए विवश कर देती है। वह चाहती है कि उसका पति आराम से सोये। वह अत्यधिक गर्मी में भी सारे कष्ट उठाकर परिस्थितियों के साथ समझौता कर लेती है। सहनशीलता उसका प्रमुख गुण है।

भाई से ममता—रेवती अपने भाई से बहुत स्नेह करती है। वह भाई के लिए मिठाई व बर्फ मँगाती है तथा भीषण गर्मी और सिरदर्द से पीड़ित रहने पर भी उसके लिए देर रात में खाना बनाती है। अनजान मेहमान को 'मुसीबत' समझने वाली रेवती भाई के आने पर प्रसन्न होती है। वह कहती है कि ''**मैं खाना बनाऊँगी। भैया भूखे नहीं सो सकते।**''

तुनकमिजाज एवं शंकालु—परिस्थितियों ने रेवती को तुनकमिजाज बना दिया है। अपरिचित मेहमानों के आ जाने पर वह खाना नहीं बनाती और उनके प्रति शंका प्रकट करते हुए कहती है—''**दर्द के मारे सिर फटा जा रहा है, फिर खाना बनाना; इनके लिए और इस समय? आखिर ये आये कहाँ से हैं?**''

समझदार स्त्री—रेवती समझदार स्त्री है। विश्वनाथ अपने संकोची स्वभाव के कारण मेहमानों से उनका परिचय पूछने में झिझकता है, परन्तु रेवती एक समझदार स्त्री की भाँति विश्वनाथ को बार-बार प्रेरित करती है। आखिर में पता चलता है कि मेहमान भूल से गलत स्थान पर आ गये हैं।

प्रश्न 6. नन्हेमल और बाबूलाल का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर—नन्हेमल और बाबूलाल इस एकांकी के आकर्षण बिन्दु है, *जिनकी मुख्य चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—*

भटके परदेशी—नन्हेमल 35 वर्ष तथा उसका भतीजा बाबूलाल 24 वर्ष का है। दोनों नगर में आकर भटक जाते हैं। यहाँ कविराज के नाम सादृश्य के आधार पर उन्हें कोई विश्वनाथ कवि का घर बता देता है। वे नि:संकोच भाव से उसके घर में घुस जाते हैं और अपनी वाचालता के कारण जबरदस्ती विश्वनाथ के मेहमान बन जाते हैं।

इस प्रकार ये दोनों ऐसे चरित्र हैं, जो केवल अपनी सुख-सुविधाओं का ध्यान रखते हैं, किन्तु दूसरे की परेशानी को तनिक भी महसूस नहीं करते। वे स्वयं हँसी के पात्र बनकर दूसरों को भी अपनी बातों और क्रियाकलापों से हँसने के लिए विवश कर देते हैं।

मान न मान, मैं तेरा मेहमान—न तो विश्वनाथ ही उन दोनों को जानते हैं और न वे ही विश्वनाथ को, फिर भी नि:संकोच भाव से वे उसके घर में घुस आते हैं। नहाने की, पीने के ठण्डे पानी तथा भोजन की फरमाइशें वे विश्वनाथ से कर डालते हैं। वे विश्वनाथ के गले पड़े हुए ऐसे मेहमान है जो 'मान न मान, मैं तेरा मेहमान' की कहावत को पूरी तरह चरितार्थ करते हैं।

हँसोड़, निर्लज्ज एवं वाचाल—नन्हेमल और बाबूलाल दोनों बड़े वाचाल हैं। इनके प्रवेश के साथ ही एकांकी में हास्य का प्रवेश भी हो जाता है। वे आते ही गर्मी और प्यास की ऐसे चर्चा करते हैं कि हँसी आये बिना नहीं रहती। वे बड़ी निर्लज्जता के साथ अपनी फरमाइशें करते हैं और गृहस्वामी विश्वनाथ उनका परिचय जान सके, इसका अवसर भी उसे नहीं देते हैं।

❑

3

व्यवहार

(सेठ गोविन्द दास)

परीक्षापयोगी प्रश्न

तथ्यों पर आधारित प्रश्न

प्रश्न 1. 'भक्षक और भक्ष्य का कैसा व्यवहार' इस कथन की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—'भक्षक और भक्ष्य का कैसा व्यवहार' कथन का मतलब भक्षक जमींदार को और भक्ष्य किसानों को कहा गया है और जमींदारी प्रथा में जमींदार किसानों का किस प्रकार शोषण करते थे और किसानों के साथ किस प्रकार व्यवहार करते थे, यही सब इस कथन में व्यक्त किया गया है।

प्रश्न 2. किसानों द्वारा क्रान्तिचन्द्र का आग्रह मानकर भोज में न जाने का फैसला करना क्या आपको उचित लगता है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—किसानों द्वारा क्रान्तिचन्द्र का आग्रह मानकर भोज में न जाने का फैसला करना हमें उचित लगता है; क्योंकि अन्याय और अत्याचार को सहन करने वाला व्यक्ति भी उतना ही दोषी होता है, जितना कि करने वाला। विरोध-प्रदर्शन के द्वारा ही शोषकों से मुक्ति मिल सकती है। सतत संघर्ष के उपरान्त ही मनुष्य को स्वतन्त्रता अर्थात् सफलता प्राप्त होती है। अत: किसानों ने भोज में न जाने का फैसला करके जमींदार को यह स्पष्ट कर दिया कि वे अब शोषण नहीं सहेंगे तथा अन्याय और अत्याचार का डटकर मुकाबला करेंगे।

प्रश्न 3. क्रान्तिचन्द्र किसानों से भोज में न जाने का आग्रह क्यों करता है?

उत्तर—क्रान्तिचन्द्र किसानों से भोज में न जाने का आग्रह इसलिए करता है क्योंकि वह जमींदार को ही किसानों की दयनीय स्थिति का जिम्मेदार मानता है। वह किसानों को समझाता है कि किसानों को भोज में निमन्त्रित करके जमींदार अपना हित साध रहा है। शोषक और शोषित के मध्य मित्रता का नहीं वरन् शत्रुता का व्यवहार होता है। अत: जमींदार किसानों का शत्रु है, हितैषी नहीं।

प्रश्न 4. जमींदार रघुराजसिंह की कार्यप्रणाली पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—रघुराजसिंह और उसके पूर्वजों की कार्य-प्रणाली में बहुत अन्तर है। उसके पूर्वज किसानों का शोषण करते थे, उन पर अत्याचार करते थे; जबकि रघुराजसिंह किसानों का शोषण करना तथा उनसे किसी भी प्रकार का व्यवहार लेना धर्म के विरुद्ध मानता है। जब उसे ज्ञात होता है कि उसके पूर्वजों ने किसानों पर इतने अत्याचार किये हैं, जिसे वे आज तक नहीं भूले हैं, तब वह यह अनुभव करता है कि उसे अब कुछ और परिवर्तन लाने होंगे, जिससे वह किसानों का प्यार पा सके।

प्रश्न 5. 'व्यवहार' किस प्रकार का एकांकी है?

उत्तर—सेठ गोविन्ददास द्वारा रचित 'व्यवहार' ग्रामीण परिवेश में रचित सामाजिक एकांकी है। इसमें जमींदारी प्रथा के समय की सामाजिक स्थिति पर वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रकाश डाला गया है।

प्रश्न 6. 'व्यवहार' एकांकी की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—सेठ गोविन्ददास द्वारा रचित व्यवहार एकांकी ग्रामीण पृष्ठभूमि के कथानक पर आधारित है। एकांकी में एकांकीकार ने ग्रामीण किसानों व आधुनिक परिवेश में शिक्षित एक किसान-पुत्र के मध्य विचारों की विभिन्नता का द्वन्द्व प्रस्तुत किया है। *एकांकी की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—*

कथा-संगठन—एकांकी का कथानक सर्वथा सुसंगठित एवं व्यवस्थित है। एकांकी में तीन दृश्य हैं तथा तीनों दृश्यों की कथा परस्पर सम्बद्ध है। कथानक का कोई भी अंश अलग करना सम्भव नहीं। कथानक में स्वाभाविक प्रवाह एवं गतिमयता विद्यमान है।

स्वाभाविक विकास—कथानक का स्वाभाविक गति से विकास होना ही एकांकी की विशेषता होती है। प्रस्तुत एकांकी में कथानक का प्रारम्भ रघुराजसिंह और नर्मदाशंकर के वार्तालाप से होता है। क्रान्तिचन्द्र और किसानों के वार्तालाप से विकसित होता हुआ कथानक किसानों के द्वारा भोज के निमन्त्रण को अस्वीकार कर देने पर चरम सीमा को प्राप्त होता है। किसानों के हित में जीवन व्यतीत करने के निर्णय पर कथानक समाप्त हो जाता है।

कौतूहल—एकांकी की सफलता के लिए उसके कथानक में कौतूहल का होना नितान्त आवश्यक है। एकांकी के प्रारम्भ से अन्त तक कौतूहल बना हुआ है। नर्मदाशंकर की बात पर रघुराजसिंह नाराज तो नहीं होगा, किसान क्रान्तिचन्द्र की बात को स्वीकार करेंगे या नहीं तथा किसानों द्वारा निमन्त्रण अस्वीकार किये जाने पर जमींदार क्या कदम उठाएगा, इस बात का कौतूहल एकांकी के समाप्त होने तक बना ही रहता है।

संकलन-त्रय—एकांकीकार ने एकांकी की कथावस्तु को तीन दृश्यों में विभाजित किया है। पहला और तीसरा दृश्य तो रघुराजसिंह के महल के हैं तथा दूसरा दृश्य गाँव में घटित होता है। एकांकी के मंचन में दो दृश्यों के ही विधान की आवश्यकता है जिसके प्रस्तुतीकरण में कोई अस्वाभाविकता दृष्टिगत नहीं होती। पात्रों की भाषा तथा दृश्य-विधान के अनुकूल वातावरण के संयोजन में एकांकीकार पूर्ण सफल है। सम्पूर्ण कथानक दिन-दिन में ही घटित हो जाता है। अत: कहा जा सकता है कि संकलन-त्रय—स्थान, काल तथा वातावरण—की योजना में एकांकीकार को पूर्ण सफलता मिली है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि सेठ गोविन्ददास द्वारा रचित एकांकी अत्यधिक सजीव, स्वाभाविक, संक्षिप्त तथा कौतूहलपूर्ण है। इसमें अच्छे एकांकी की समस्त विशेषताएँ निहित हैं।

प्रश्न 7. 'व्यवहार' एकांकी के द्वारा क्या सन्देश दिया गया है?

उत्तर—प्रस्तुत एकांकी का सन्देश जमींदारी व जमींदारों के वास्तविक स्वरूप को समाज के उन लोगों के सामने प्रकट करना है, जो उनके अन्धभक्त हैं। क्रान्तिचन्द्र एक शिक्षित नवयुवक है। वह रघुराजसिंह द्वारा किसानों को भोज में आमन्त्रित किये जाने को धोखा बताता है। जब वह रघुराजसिंह का विरोध करता है और किसान उसके सम्मुख जब रघुराजसिंह के अच्छे कार्यों की दुहाई देते हैं तो क्रान्तिचन्द्र यह सिद्ध कर देता है कि जमींदार ने अपने लाभ के लिए ही ये कार्य किये थे। एकांकी से यह स्पष्ट हो जाता है कि जमींदार और किसान के हित एक-दूसरे के विपरीत हैं। दोनों एक-दूसरे का हित-साधन कर ही नहीं सकते।

रघुराजसिंह गाँव का जमींदार है। वह एक विवेकशील व्यक्ति है। उसके पूर्वजों के द्वारा किये गये ग्रामीणों के शोषण को उसके द्वारा जारी रखना उसके लिए कठिन है। विचारों के मन्थन से वह मानवता के सच्चे स्वरूप को पहचान लेता है और अन्तत: अपनी कार्य-प्रणाली में बदलाव लाने का विचार करता है। एकांकी का मुख्य सन्देश यही है कि जमींदारी प्रथा अथवा इस प्रकार की किसी भी शोषक प्रथा को जड़ से समाप्त करने के लिए मात्र शोषितों का संगठित होना ही पर्याप्त नहीं है, वरन् उन्हें एक उचित नेतृत्व भी मिलना चाहिए। साथ ही शोषक का हृदय-परिवर्तन भी आवश्यक है।

प्रश्न 8. 'व्यवहार' एकांकी के शीर्षक की उपयुक्तता पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—प्रस्तुत एकांकी का शीर्षक 'व्यवहार' सभी दृष्टियों से सार्थक है। शीर्षक संक्षिप्त हैं, रोचक है, उत्सुकता से परिपूर्ण है तथा सम्पूर्ण कथानक को अपने में समाये हुए है। शीर्षक को पढ़ते ही यह जिज्ञासा बन जाती है कि कैसा व्यवहार और किसका व्यवहार? व्यवहार से अभिप्राय जमींदार के सम्मान में उसे भेंट देने से है जोकि एकांकी के मध्य में स्पष्ट होता है। अत: एकांकी का शीर्षक सभी प्रकार से उचित तथा समीचीन है और इसी पर समस्त कथानक आधारित भी है।

प्रश्न 9. 'व्यवहार' एकांकी के अनुसार व्यवहार की परिभाषा क्या है?

उत्तर—भोज में आमन्त्रित व्यक्ति जमींदार के सम्मान में जो कुछ भी अर्थात् अधिक-से-अधिक रुपया-पैसा उपहारस्वरूप जमींदार को देता है, उसे ही व्यवहार कहा गया है।

प्रश्न 10. 'व्यवहार' एकांकी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—प्रस्तुत एकांकी का उद्देश्य जमींदारों के असली रूप को उद्घाटित करके, किसानों को उनके संगठित बल का अनुभव कराके जमींदारों के चंगुल से मुक्त कराना है। एकांकीकार ने किसानों की इस पीड़ा को विभिन्न पात्रों के माध्यम से, संकेत रूप में पाठकों के सम्मुख रखा है। प्रत्येक एकांकी के पीछे एकांकीकार का उद्देश्य किसी विशेष संवेदना, समस्या, भावना एवं जीवन-दृष्टि को स्पष्ट करना होता है। प्रस्तुत एकांकी में भी एकांकीकार ने जमींदारों द्वारा किये गये किसानों के शोषण की बात को स्पष्ट किया है। प्रस्तुत एकांकी का उद्देश्य किसानों को जमींदारों के शोषण से बचाना, उन्हें उनके वास्तविक बल का ज्ञान कराना तथा जमींदारों को भी अपना हृदय-परिवर्तन करने के लिए प्रेरित करना है। एकांकीकार को इसमें पूर्ण सफलता मिली है।

प्रश्न 11. 'व्यवहार' एकांकी का सर्वश्रेष्ठ पात्र कौन है और क्यों?

उत्तर—'व्यवहार' एकांकी का सर्वश्रेष्ठ पात्र क्रान्तिचन्द्र है। वह एक शिक्षित नवयुवक है, जो जमींदारों की कार्य-प्रणाली को भली प्रकार से जानता-समझता है। वह किसानों को उनकी शक्ति के बारे में बताता है तथा शोषक के विरुद्ध आवाज उठाने के लिए उनको भोज में न जाने हेतु सहमत कर लेता है। ऐसा करने के लिए वह निरर्थक दलीलों का सहारा नहीं लेता, वरन् पुष्ट तार्किक आधार भी प्रस्तुत करता है। वह एक किसान का पुत्र है तथा किसानों के हित को भली-भाँति जानता समझता है और उचित समय पर उचित कदम उठाता है। अत: क्रान्तिचन्द्र एकांकी का सर्वश्रेष्ठ पात्र है।

प्रश्न 12. जमींदार द्वारा प्रतिभोज का आयोजन क्यों किया गया? सभी किसान प्रतिभोज में क्यों नहीं गए?

उत्तर—जमींदार रघुराजसिंह ने अपनी बहन के विवाह के उपलक्ष्य में प्रतिभोज का आयोजन किया था। रघुराजसिंह ने सभी ग्रामवासियों को प्रतिभोज पर आमंत्रित किया था। चूरामन का पुत्र क्रान्तिचन्द्र सभी किसानों को सम्बोधित करता हुआ कहता है कि किस प्रकार जमींदार उन लोगों को धोखा दे रहा है। सभी किसान, पंच तथा ग्रामीण क्रान्तिचन्द्र की बातों से सहमत हो जाते हैं तथा जमींदार के यहाँ आयोजित भोज में न जाने का निर्णय लेते हैं।

कथानक व चरित्र चित्रण पर आधारित प्रश्न

प्रश्न 1. 'व्यवहार' एकांकी के शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—सेठ गोविन्ददास द्वारा रचित 'व्यवहार' एकांकी का शीर्षक सभी दृष्टियों से सार्थक है। शीर्षक संक्षिप्त है, रोचक है, उत्सुकता से परिपूर्ण है तथा सम्पूर्ण कथानक को अपने में समाये हुए है। शीर्षक को पढ़ते ही यह जिज्ञासा बन जाती है कि कैसा व्यवहार और किसका व्यवहार? व्यवहार से अभिप्राय जमींदार के सम्मान में उसे भेंट देने से है जोकि एकांकी के मध्य में स्पष्ट होता है। अत: एकांकी का शीर्षक सभी प्रकार से उचित तथा समीचीन है और इसी पर समस्त कथानक आधारित भी है। 'व्यवहार' एकांकी की कथावस्तु मुख्यत: तीन दृश्यों में विभाजित है। पहला और तीसरा दृश्य तो रघुराजसिंह के महल में ही घटित होते हैं, किन्तु दूसरा दृश्य गाँव में घटित होता है। अत: इसके मंचन में दो सेटों का विधान है। कथा संगठन में शिथिलता नहीं है और कथानक गतिशील है। इस एकांकी में एक दिन का ही कथानक है किन्तु इसके प्रस्तुतीकरण में कोई अस्वाभाविकता नहीं है। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि सेठ गोविन्ददास द्वारा रचित एकांकी अत्यधिक सजीव, स्वाभाविक, संक्षिप्त तथा कौतहलपूर्ण है।

प्रश्न 2. 'व्यवहार' एकांकी का कथासार अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर—सेठ गोविन्ददास द्वारा रचित 'व्यवहार' एकांकी ग्रामीण पृष्ठभूमि के कथानक पर आधारित है। इसमें वर्णित है कि जमींदारी प्रथा के प्रचलन के समय जमींदार लोग किसानों का किस प्रकार से शोषण करते थे। प्रस्तुत एकांकी में जमींदार तथा ग्रामीणों के मध्य द्वन्द्व प्रस्तुत किया गया है।

एकांकी की कथावस्तु संक्षेप में निम्नवत् है—

प्रथम दृश्य : किसानों को भोज पर आमन्त्रण—रघुराजसिंह एक गाँव का जमींदार है तथा नर्मदा-शंकर उसकी जमींदारी का मैनेजर। रघुराजसिंह अपनी बहन के विवाह के उपलक्ष्य में आयोजित भोज में समस्त ग्रामीण-किसानों को आमन्त्रित करता है। रघुराजसिंह के इस निर्णय को उसका मैनेजर नर्मदाशंकर गलत बताता है। उसका कहना है कि उसके ऐसा करने से उसे पर्याप्त आर्थिक हानि होगी; क्योंकि उसके पूर्वज ऐसे अवसरों पर कुछ चुने हुए लोगों को ही बुलाते थे। इससे भोजन कराने में खर्च कम होता था और व्यवहार (उपहार) से आमदनी अधिक होती थी। रघुराजसिंह का मानना है कि किसानों का शोषण करना तथा उनसे व्यवहार लेना अनुचित है।

द्वितीय दृश्य : किसानों द्वारा पंचायत—क्रान्तिचन्द्र एक शिक्षित नवयुवक है जो चूरामन नामक किसान का पुत्र है। उसने गाँव के एक घर में सभी किसान, गाँव के पंच तथा अन्य ग्रामीणों की एक सभा आयोजित की है। इस सभा में यह निर्णय लिया जाना है कि जमींदार द्वारा दिये गये निमन्त्रण में किसान जाएँ या नहीं। सभी ग्रामीण-किसान इस बात पर एक मत नहीं हो पाते। कुछ का मानना है कि जाना चाहिए और कुछ का मानना है कि नहीं जाना चाहिए। तब क्रान्तिचन्द्र सभी किसानों को यह बताता है कि किस प्रकार से जमींदार उन लोगों को धोखा दे रहा है। जब-जब किसान जमींदार द्वारा किये गये अच्छे कार्यों की दुहाई देते हैं तो क्रान्तिचन्द्र यह सिद्ध कर उन किसानों का मुँह बन्द कर देता है कि जमींदार ने अपने लाभ के लिए ही ये कार्य किये थे। जमींदार तो सदा से ही किसानों का खून चूस रहे हैं। अन्त में सभी किसान, पंच तथा ग्रामीण क्रान्तिचन्द्र की बातों से सहमत हो जाते हैं तथा जमींदार के यहाँ आयोजित भोज में सम्मिलित न होने का निर्णय लेते हैं।

तृतीय दृश्य : विचारमग्न रघुराजसिंह—भोज का समय बीतने पर जमींदार रघुराजसिंह अत्यधिक चिन्तित होते हैं। उसी समय उनका मैनेजर नर्मदाशंकर आता है और किसानों के प्रतिनिधि क्रान्तिचन्द्र का पत्र उनको सौंपता है। पत्र को पढ़कर जमींदार को ज्ञात होता है कि ग्रामीण-किसान अभी भी उसको अपना भक्षक ही मानते हैं। रघुराजसिंह यह निश्चय करते हैं कि उन्हें अभी कुछ और बदलाव करने होंगे, जिससे वे किसानों का स्नेह प्राप्त कर सकें। नर्मदाशंकर के समझाने पर भी रघुराजसिंह अपने निर्णय पर अटल रहते हैं। यहीं पर एकांकी का समापन होता है।

प्रश्न 3. 'व्यवहार' एकांकी के आधार पर 'रघुराजसिंह' का चरित्र चित्रण कीजिए।

उत्तर—रघुराजसिंह गाँव का जमींदार है। अपनी बहन के विवाह के अवसर पर वह गाँव के समस्त किसानों व ग्रामीणों को भोज में; अपने मैनेजर नर्मदाशंकर की इच्छा के विरुद्ध; आमन्त्रित करता है।

उसके चरित्र की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

किसानों का हितैषी—जमींदार के पैतृक उत्तरदायित्व को सँभालते ही रघुराजसिंह ने किसानों का सारा बकाया कर्ज माफ कर दिया। जिन किसानों की जमीन का लगान अधिक था, उनका लगान घटा दिया गया। कुछ

भूमिहीन किसानों को खेती के लिए भूमि बिना किसी नजराने (बयाना) के दी गयी। वह उनका हितचिन्तक था तथा उनका सच्चा-वास्तविक हितैषी था।

पूर्वजों से वैचारिक भिन्नता—जमींदारों की पुरानी पीढ़ी का मानना था कि ग्रामीणों-किसानों का अधिकाधिक शोषण किया जाना चाहिए। उनका कोई लाभ हो या न हो, किसानों को कुचलकर रखना ही उनका उद्देश्य होता था, जिससे कि वे उनके समक्ष सिर ऊँचा न कर सकें। लेकिन रघुराजसिंह की मान्यता अपने पूर्ववर्तियों से पूर्णतया भिन्न थी। वह मानवीय समानता का पक्षधर था।

विवेकयुक्त—रघुराजसिंह पूर्णतया विवेकशील व्यक्ति है। किसानों को आमन्त्रित करने और अपने मैनेजर नर्मदाशंकर द्वारा विरोध किये जाने पर भी वह भली-भाँति जानता और समझता है कि उसे क्या करना चाहिए और क्या नहीं। मैनेजर द्वारा अत्यधिक तर्क दिये जाने पर भी वह उसकी बातों से सहमत नहीं होता। उसे अपने विवेकपूर्ण निर्णय पर पूरा भरोसा है।

दूरदर्शी—जब क्रान्तिचन्द्र पत्र के द्वारा रघुराजसिंह को अवगत कराता है कि किसान भोज में सम्मिलित नहीं होंगे तथा हृदय को आघात पहुँचाने वाली बात 'भक्षक और भक्ष्य में कैसा व्यवहार' लिखता है, तो भी उसे क्रोध नहीं आता; क्योंकि वह दूरदर्शी है। वह जानता है कि उसके द्वारा किए गये क्रोध का क्या परिणाम हो सकता है, इसलिए वह शान्त रहता है।

निश्छल हृदय—रघुराज सिंह के हृदय में किसानों के प्रति कोई दुर्भावना नहीं है। वह उनका हृदय से हित चाहता है, उनकी पीड़ा को समझता है। इसीलिए विवाहोत्सव पर आयोजित भोज का उनके द्वारा बहिष्कार किये जाने पर भी वह अपना अपमान नहीं समझता, वरन् उनके हित में अपना जीवन व्यतीत करने को कहता है।

मानवीयता का पोषक—रघुराजसिंह में मानवीयता का गुण पूर्णरूपेण विद्यमान है। वह मनुष्य-मनुष्य में भेद नहीं मानता। उसका मानना है कि सभी ईश्वर की सन्तान हैं, इसलिए सभी समान हैं। वह किसानों का शोषण करना उचित नहीं समझता। वह कहता है कि शोषण और व्यवहार दोनों ही धर्मविरुद्ध हैं।

उपर्युक्त गुणों के आधार पर हम कह सकते हैं कि रघुराजसिंह सच्चा किसान हितैषी, विवेकी, दूरदर्शी, मानवता का पोषक तथा निर्लोभी पात्र है। ईमानदारी एवं मानवीयता की भावना उसमें कूट-कूटकर भरी हुई है। निस्सन्देह रघुराजसिंह का चरित्र आदर्श एवं अनुकरणीय है।

प्रश्न 4. 'व्यवहार' एकांकी के आधार पर 'क्रान्तिचन्द्र' का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर—क्रान्तिचन्द्र चूरामन नामक किसान का पुत्र और कॉलेज से शिक्षित एक नवयुवक है। वह किसानों को जमींदारों के चंगुल से मुक्त कराना चाहता है। *उसके चरित्र की विशेषताओं को अधोलिखित बिन्दुओं में निबद्ध किया गया है—*

शिक्षित व्यक्ति—शिक्षित होने के कारण ही क्रान्तिचन्द्र अपना व गाँव के किसानों का हित-अहित भली प्रकार जानता है और समझता है। शिक्षित होने के कारण ही सभी ग्रामीण-किसान उसके नेतृत्व को स्वीकार करते हैं और उसकी बातों से सहमत हो जाते हैं।

विवेकशील—शिक्षित होने के साथ-साथ क्रान्तिचन्द्र विवेकी भी है। क्या करना चाहिए और क्या नहीं, इसका समयानुसार निर्णय करने में वह भली-भाँति समर्थ है। इसीलिए भोज का बहिष्कार करने के लिए वह सभी किसानों को तर्क देकर अपने पक्ष में कर लेता है।

नेतृत्व की क्षमता—क्रान्तिचन्द्र एक शिक्षित नवयुवक है। इसी कारण उसमें किसानों का नेतृत्व करने की क्षमता भी है। वह सभी किसानों को भोज का बहिष्कार करने के अपने निर्णय पर सहमत कर लेता है। इससे स्पष्ट होता है कि उसमें नेतृत्व की क्षमता विद्यमान है।

मानवता का पोषक—क्रान्तिचन्द्र में मानवता विद्यमान है। वह स्वार्थी नहीं परार्थी है। जमींदार द्वारा किसानों के शोषण को वह सहन नहीं कर पाता। बचपन में अपने एवं पिता के हुए अपमान को वह भूलता नहीं है। स्पष्ट है कि वह मानवता और समानता में विश्वास रखने वाला है।

उत्साही नवयुवक—क्रान्तिचन्द्र अपने नाम के अनुरूप एक उत्साही नवयुवक है। उसकी रगों में युवा रक्त प्रवाहित है। वह बड़े उत्साह के साथ किसानों की बैठक आहूत करता है तथा उनका उचित पथ-प्रदर्शन करता है।

निर्भीक—क्रान्तिचन्द्र एक निर्भीक युवक है। जमींदारों के विरुद्ध आवाज ऊँची करने के परिणाम को वह भली-भाँति जानता है, फिर भी वह जमींदार का विरोध करने में बिल्कुल भी भयभीत नहीं होता और उसको पत्र भेजने में कठोर भाषा का प्रयोग भी करता है।

आत्मविश्वासी एवं स्वाभिमानी—क्रान्तिचन्द्र आत्म-विश्वासी नवयुवक है। अपने इसी गुण के कारण वह ग्रामीण-किसानों की सभा बुलाता है। स्वाभिमानी होने के कारण ही वह जमींदार के आमन्त्रण को ठुकरा देता है और उनके भोजन का बहिष्कार कर देता है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि क्रान्तिचन्द्र निर्भीक, उत्साही, विवेकशील एवं आत्मविश्वासी स्वाभिमानी नवयुवक है।

प्रश्न 5. 'व्यवहार' एकांकी के आधार पर 'नर्मदाशंकर' का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर—नर्मदाशंकर चालीस वर्ष से रघुराजसिंह की जमींदारी का मैनेजर है। नर्मदाशंकर के चरित्र की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(1) जमींदारी प्रथा का समर्थक—नर्मदाशंकर जमींदारी प्रथा का समर्थक है। वह जानता है कि इस प्रथा का उन्मूलन होने के पश्चात् उसकी पूछ समाप्त हो जाएगी। इसीलिए वह रघुराजसिंह को कमजोर शब्दों में ही सही किसानों के विरुद्ध भड़काता रहता है।

(2) जमींदारी का हितैषी—नर्मदाशंकर सदैव अपने स्वामी के हित की बात सोचता है। जब रघुराजसिंह सभी किसानों को भोज पर आमन्त्रित करता है तो वह कहता है कि इससे आपको हानि होगी।

(3) किसानों का विरोधी—नर्मदाशंकर किसान विरोधी विचारधारा वाला व्यक्ति है। रघुराजसिंह किसानों के हित की जो बात सोचता है वह उसका विरोध करता है।

(4) अहंकारी—नर्मदाशंकर में अहंकार विद्यमान है। जब किसान भोज में सम्मिलित न होने का निर्णय लेते हैं तो वह एकाएक कह उठता है कि ''दो कौड़ी के किसानों की यह मजाल। इनकी यह हिम्मत! इनका यह साहस!'' ये सब बातें उसके अहंकारी होने का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि नर्मदाशंकर किसानों का विरोधी, अहंकारी और जमींदारी प्रथा का समर्थक व्यक्ति हैं।

प्रश्न 6. 'व्यवहार' एकांकी को आप किस प्रकार का एकांकी मानते हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—एकांकीकार सेठ गोविन्ददास द्वारा रचित 'व्यवहार' ग्रामीण परिवेश में रचित सामाजिक एकांकी है। इसमें जमींदारी प्रथा के समय की सामाजिक स्थिति पर वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रकाश डाला गया है। यह एकांकी ग्रामीण पृष्ठभूमि के कथानक पर आधारित है।

एकांकी में एकांकीकार ने ग्रामीण किसानों व आधुनिक परिवेश में शिक्षित एक किसान-पुत्र के मध्य विचारों की विभिन्नता का द्वन्द्व प्रस्तुत किया है।

इसमें वर्णित है कि जमींदारी प्रथा के प्रचलन के समय जमींदार लोग किसानों का किस प्रकार से शोषण करते थे। रघुराजसिंह गाँव का जमींदार है। वह एक विवेकशील व्यक्ति है। उसके पूर्वजों के द्वारा किये गये ग्रामीणों के शोषण को उसके द्वारा जारी रखना उसके लिए कठिन है। विचारों के मन्थन से वह मानवता के सच्चे स्वरूप को पहचान लेता है और अन्तत: अपनी कार्यप्रणाली में बदलाव लाने का विचार करता है। एकांकी का सन्देश एक पढ़े-लिखे शिक्षित नवयुवक क्रान्तिचन्द्र के चरित्र-चित्रण में है। इसीलिए उसे ग्रामीण किसानों का शोषण होते देखना नागवार गुजरा।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि सेठ गोविन्ददास द्वारा रचित एकांकी अत्यधिक सजीव, स्वाभाविक, संक्षिप्त तथा कौतूहलपूर्ण है तथा इसमें जमींदारी प्रथा के समय की सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डाला गया है।

प्रश्न 7. 'व्यवहार' एकांकी में आपको सर्वश्रेष्ठ पात्र कौन-सा लगा? उसका चरित्र चित्रण कीजिए।

उत्तर—'व्यवहार' एकांकी का सर्वश्रेष्ठ पात्र क्रान्तिचन्द्र है। क्रान्तिचन्द्र चूरामन नामक किसान का पुत्र और कॉलेज से शिक्षित एक नवयुवक है। वह किसानों को जमींदारों के चंगुल से मुक्त कराना चाहता है। उसके चरित्र की विशेषताओं को अधोलिखित बिन्दुओं में निबद्ध किया गया है—

शिक्षित व्यक्ति—शिक्षित होने के कारण ही क्रान्तिचन्द्र अपना व गाँव के किसानों का हित-अहित भली प्रकार जानता है और समझता है। शिक्षित होने के कारण ही सभी ग्रामीण-किसान उसके नेतृत्व को स्वीकार करते हैं और उसकी बातों से सहमत हो जाते हैं।

विवेकशील—शिक्षित होने के साथ-साथ क्रान्तिचन्द्र विवेकी भी है। क्या करना चाहिए और क्या नहीं, इसका समयानुसार निर्णय करने में वह भली-भाँति समर्थ है। इसीलिए भोज का बहिष्कार करने के लिए वह सभी किसानों को तर्क देकर अपने पक्ष में कर लेता है।

नेतृत्व की क्षमता—क्रान्तिचन्द्र एक शिक्षित नवयुवक है। इसी कारण उसमें किसानों का नेतृत्व करने की क्षमता भी है। वह सभी किसानों को भोज का बहिष्कार करने के अपने निर्णय पर सहमत कर लेता है। इससे स्पष्ट होता है कि उसमें नेतृत्व की क्षमता विद्यमान है।

मानवता का पोषक—क्रान्तिचन्द्र में मानवता विद्यमान है। वह स्वार्थी नहीं परार्थी है। जमींदार द्वारा किसानों के शोषण को वह सहन नहीं कर पाता। बचपन में अपने एवं पिता के हुए अपमान को वह भूलता नहीं है। स्पष्ट है कि वह मानवता और समानता में विश्वास रखने वाला है।

उत्साही नवयुवक—क्रान्तिचन्द्र अपने नाम के अनुरूप एक उत्साही नवयुवक है। उसकी रगों में युवा रक्त प्रवाहित है। वह बड़े उत्साह के साथ किसानों की बैठक आहूत करता है तथा उनका उचित पथ-प्रदर्शन करता है।

निर्भीक—क्रान्तिचन्द्र एक निर्भीक युवक है। जमींदारों के विरुद्ध आवाज ऊँची करने के परिणाम को वह भली-भाँति जानता है, फिर भी वह जमींदार का विरोध करने में बिल्कुल भी भयभीत नहीं होता और उसको पत्र भेजने में कठोर भाषा का प्रयोग भी करता है।

आत्मविश्वासी एवं स्वाभिमानी—क्रान्तिचन्द्र आत्म-विश्वासी नवयुवक है। अपने इसी गुण के कारण वह ग्रामीण-किसानों की सभा बुलाता है। स्वाभिमानी होने के कारण ही वह जमींदार के आमन्त्रण को ठुकरा देता है और उनके भोजन का बहिष्कार कर देता है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि क्रान्तिचन्द्र निर्भीक, उत्साही, विवेकशील एवं आत्मविश्वासी स्वाभिमानी नवयुवक है।

प्रश्न 8. सेठ गोविन्ददास के एकांकी की क्या विशेषताएँ हैं? उल्लेख कीजिए।

उत्तर—सेठ गोविन्ददास द्वारा रचित व्यवहार एकांकी ग्रामीण पृष्ठभूमि के कथानक पर आधारित है। एकांकी में एकांकीकार ने ग्रामीण किसानों व आधुनिक परिवेश में शिक्षित एक किसान-पुत्र के मध्य विचारों की विभिन्नता का द्वन्द्व प्रस्तुत किया है। *एकांकी की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—*

कथा-संगठन—एकांकी का कथानक सर्वथा सुसंगठित एवं व्यवस्थित है। एकांकी में तीन दृश्य हैं तथा तीनों दृश्यों की कथा परस्पर सम्बद्ध है। कथानक का कोई भी अंश अलग करना सम्भव नहीं। कथानक में स्वाभाविक प्रवाह एवं गतिमयता विद्यमान है।

स्वाभाविक विकास—कथानक का स्वाभाविक गति से विकास होना ही एकांकी की विशेषता होती है। प्रस्तुत एकांकी में कथानक का प्रारम्भ रघुराजसिंह और नर्मदाशंकर के वार्तालाप से होता है। क्रान्तिचन्द्र और किसानों के वार्तालाप से विकसित होता हुआ कथानक किसानों के द्वारा भोज के निमन्त्रण को अस्वीकार कर देने पर चरम सीमा को प्राप्त होता है। किसानों के हित में जीवन व्यतीत करने के निर्णय पर कथानक समाप्त हो जाता है।

कौतूहल—एकांकी की सफलता के लिए उसके कथानक में कौतूहल का होना नितान्त आवश्यक है। एकांकी के प्रारम्भ से अन्त तक कौतूहल बना हुआ है। नर्मदाशंकर की बात पर रघुराजसिंह नाराज तो नहीं होगा, किसान क्रान्तिचन्द्र की बात को स्वीकार करेंगे या नहीं तथा किसानों द्वारा निमन्त्रण अस्वीकार किये जाने पर जमींदार क्या कदम उठाएगा, इस बात का कौतूहल एकांकी के समाप्त होने तक बना ही रहता है।

संकलन-त्रय—एकांकीकार ने एकांकी की कथावस्तु को तीन दृश्यों में विभाजित किया है। पहला और तीसरा दृश्य तो रघुराज सिंह के महल हैं तथा दूसरा दृश्य गाँव में घटित होता है। एकांकी के मंचन में दो दृश्यों के ही विधान की आवश्यकता है जिसके प्रस्तुतीकरण में कोई अस्वाभाविकता दृष्टिगत नहीं होती। पात्रों की भाषा तथा दृश्य-विधान के अनुकूल वातावरण के संयोजन में एकांकीकार पूर्ण सफल है। सम्पूर्ण कथानक दिन-दिन में ही घटित हो जाता है। अत: कहा जा सकता है कि संकलन-त्रय—स्थान, काल तथा वातावरण—की योजना में एकांकीकार को पूर्ण सफलता मिली है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि सेठ गोविन्ददास द्वारा रचित एकांकी अत्यधिक सजीव, स्वाभाविक, संक्षिप्त तथा कौतूहलपूर्ण है। इसमें अच्छे एकांकी की समस्त विशेषताएँ निहित हैं।

प्रश्न 9. 'व्यवहार' एकांकी में समाज के किस दुर्बल पक्ष पर कुठारघात किया गया?

उत्तर—सेठ गोविन्द दास द्वारा रचित 'व्यवहार' एकांकी ग्रामीण पृष्ठभूमि के कथानक पर आधारित है। इसमें वर्णित है कि जमींदारी प्रथा के प्रचलन के समय जमींदार लोग किसानों का किस प्रकार से शोषण करते थे। प्रस्तुत एकांकी में रघुराज सिंह एक जमींदार है जोकि अपने पूर्वजों के विपरीत किसानों का शोषक नहीं था बल्कि उनका पोषक था, उनका हित चिन्तक था। जबकि जमींदारी की पुरानी पीढ़ी का मानना था कि ग्रामीणों-किसानों का अधिक से अधिक शोषण किया जाना चाहिए। उनका कोई लाभ हो या न हो, किसानों को कुचलकर रखना ही उनका उद्देश्य था। जिससे कि किसान उनके समक्ष सिर ऊँचा न कर सकें। लेकिन रघुराजसिंह की मान्यता अपने पूर्ववर्तियों से भिन्न थी।

'क्रान्तिचन्द्र' जो चूरामन नामक किसान का पुत्र है सभी किसानों को यह बताता है कि किस प्रकार से जमींदार उन लोगों को धोखा दे रहा है। जब-जब किसान जमींदार द्वारा किये गये अच्छे कार्यों की दुहाई देते हैं तो

क्रान्तिचन्द्र यह सिद्ध कर उन किसानों का मुँह बन्द कर देता है कि जमींदार ने अपने लाभ के लिए ही ये कार्य किये थे। जमींदार तो सदा से ही किसानों का खून चूस रहे हैं।

अन्तत: ये कहा जा सकता है कि एकांकी 'व्यवहार' में समाज के किसान पक्ष पर कुठाराघात किया गया है।

4

लक्ष्मी का स्वागत

(उपेन्द्रनाथ 'अश्क')

परीक्षापयोगी प्रश्न

तथ्यों पर आधारित प्रश्न

प्रश्न 1. रौशन की मन:स्थिति का वर्णन कीजिए।

उत्तर—रौशन एक शिक्षित, सजग, स्नेहशील युवक है। कुछ ही दिन हुए उसकी जीवन-संगिनी ने उससे अन्तिम विदा ली है और अपने इकलौते पुत्र अरुण को स्नेह देने का उत्तरदायित्व अपने पति रौशन पर छोड़ गयी। रौशन पर अपने रुग्ण पुत्र अरुण की चिन्ता छायी हुई है किन्तु उसके माता-पिता अपने विधुर बेटे का अतिशीघ्र पुनर्विवाह कर देना चाहते हैं। रौशन अपनी मन:स्थिति अपने माता-पिता को समझा नहीं पाता। उसे उनकी बुद्धि पर खेद होता है कि वे बीमार पोते और हाल ही में गुजरी बहू को भुलाकर उसकी शादी का उपक्रम कर रहे हैं। रौशन खिन्नता व अवसाद की पीड़ा से बुरी तरह टूट जाता है।

प्रश्न 2. क्या आप रौशन के पिता के विचारों से सहमत हैं? यदि नहीं, तो क्यों? तर्कसहित समीक्षा कीजिए।

उत्तर—रौशन के पिता का विचार अत्यन्त निम्न स्तर का है। वह पुराने विचारों का स्वार्थी और दहेज-लोलुप व्यक्ति है। रौशन की पत्नी मरी नहीं कि वह उसका दूसरा विवाह करने को तैयार हो जाता है। उसका नवजात पौत्र बीमार है, जिसके उचित इलाज की उसे कोई चिन्ता नहीं। चिन्ता है तो धनवान परिवार से रौशन के लिए शगुन लेने की और इस निमित्त वह रौशन की अनुमति की भी जरूरत नहीं समझता।

रौशन का पिता यह भी नहीं मानता है कि हर आदमी को अपने ढंग से जीवन जीने का अधिकार है। फिर शादी-ब्याह कोई ऐसा खेल नहीं जिसे जब और जैसे चाहा खेल लिया। माता-पिता को सन्तान से उसके विवाह के सम्बन्ध में उसकी अनुमति लेकर ही बात चलानी चाहिए। उन्हें अपनी सन्तान की भावनाओं से खेलने का कोई अधिकार नहीं है। धन के लोभ में किया गया फैसला तो और भी घातक होता है। लेकिन रौशन के पिता को इन सभी बातों से कोई सरोकार नहीं। वह तो येन-केन प्रकारेण अमानवीयता की चरम सीमा को भी पार करता हुआ रौशन से विवाह के लिए 'हाँ' कहलवाने का प्रयास करता है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि रौशन के पिता के विचार पूर्णत: स्वार्थ-केन्द्रित और अमानवीयता की भावना पर आधारित हैं। ऐसे व्यक्ति के विचारों से कोई भी सहृदय व्यक्ति किसी भी स्थिति में सहमत नहीं हो सकता।

प्रश्न 3. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी का उद्देश्य क्या है? एकांकीकार को इसकी पूर्ति में कहाँ तक सफलता मिली है? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर—उपेन्द्रनाथ 'अश्क' द्वारा रचित 'लक्ष्मी का स्वागत' चर्चित एकांकी रहा है। इसका मुख्य उद्देश्य है—**पुनर्विवाह की समस्या**। रौशन की पत्नी की एक माह पूर्व मृत्यु हो चुकी है और उसके माता-पिता उसका दूसरा विवाह शीघ्र ही कर देना चाहते हैं।

प्रमुख उद्देश्य के साथ-साथ कतिपय गौण उद्देश्य भी देखे जा सकते हैं; जैसे—दूषित सामाजिक मान्यताओं व रीति-नीति का चित्रण, मानव की हृदयहीनता व धन-लिप्सा आदि।

एकांकीकार ने माँ के माध्यम से सामाजिक रीति-नीति और मान्यताओं का उल्लेख किया है। रौशन के पुनर्विवाह का समर्थन करती हुई वह कहती है कि रौशन के पिता ने भी तो पहली पत्नी की मृत्यु के दूसरे महीने ही विवाह कर लिया था।

सामाजिक रीति-नीति के मूल में 'मानव की हृदयहीनता और क्रूरता' का आभास होता है। रौशन के माता-पिता रौशन के बच्चे अरुण की बीमारी की ओर कुछ ध्यान न देकर सियालकोट से आने वाले बड़े व्यापारी के स्वागत और सत्कार में लग जाते हैं।

मानव की क्रूरता का कारण है—धन-लिप्सा। आज बढ़ती हुई धन की महत्ता तथा इच्छा ने मनुष्य को कितना पतित बना दिया है, इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है—रौशन का पिता। रौशन के बार-बार मना करने पर भी वह अन्त में शगुन ले ही लेता है और कहता है कि "**घर आयी लक्ष्मी का निरादर नहीं कर सकता।**"

प्रश्न 4. प्रस्तुत एकांकी के शीर्षक की उपयुक्तता बताइये।

उत्तर—एकांकी का शीर्षक रोचक सटीक व कथावस्तु से सम्बन्धित है। यह एक व्यंग्यात्मक प्रतीक भी है। लक्ष्मी का स्वागत हर घर में होता है, किन्तु इस धनरूपी लक्ष्मी के स्वागत में लोभी माता-पिता अपनी वास्तविक लक्ष्मी अर्थात् बहू को कैसे भूल जाते हैं, इसका यथार्थ अंकन इस एकांकी के शीर्षक को सार्थक करता है। रौशन के माता-पिता सद्य: विधुर रौशन के प्रति सहानुभूति रखने के स्थान पर उसका दूसरा विवाह करने की तैयारी में लगे हुए हैं, क्योंकि नया रिश्ता लेकर आने वाले लोग धनवान हैं। इसीलिए वे घर में आती लक्ष्मी के स्वागत के लिए पूर्णतया सचेष्ट दिखाई पड़ते हैं। इस प्रकार एकांकी का शीर्षक पूर्णतया उपयुक्त है।

प्रश्न 5. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी के पात्रों की व्यवहार-कुशलता की समीक्षा कीजिए।

उत्तर—प्रस्तुत एकांकी के मुख्य पात्रों में रौशन के अतिरिक्त सभी पात्र अत्यन्त व्यवहारकुशल हैं। अपने विचारों को मूर्त्त रूप देने के लिए उसके माता-पिता निरन्तर उसके रिश्ते की बात करते रहते हैं। रौशन के न चाहते हुए भी वे उसके विवाह के लिए लड़की वालों से शगुन ले लेते हैं, यह उनकी व्यवहारकुशलता का ही परिचायक है। रौशन का मित्र सुरेन्द्र भी

प्रश्न 10. क्रान्तिचन्द्र ने 'भय से अधिक बुरी वस्तु इस संसार में कोई और नहीं।' ऐसा क्यों कहा?

उत्तर—छात्र स्वयं करें।

❑

समय-समय पर सबको सटीक उत्तर देता है तथा अपने मित्र को भी सहयोग देता है, एकमात्र रौशन ही ऐसा पात्र दिखाई पड़ता है जो बीमार पुत्र के स्नेह में जोकि उसकी दिवंगत पत्नी की निशानी है; सारी व्यवहारकुशलता भूला हुआ है।

कथानक व चरित्र-चित्रण पर आधारित प्रश्न

प्रश्न 1. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी की कथा संक्षेप में लिखिए।

उत्तर—'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी उपेन्द्रनाथ 'अश्क' द्वारा लिखित सामाजिक विद्रूपताओं पर सटीक चोट करने वाली एक सशक्त रचना है। यह मनुष्य में क्रमश: आती जा रही कठोरता का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करती है। मनुष्य द्वारा मानवीय मूल्यों की निरन्तर की जाने वाली उपेक्षा कितनी चिन्तनीय है, अपरोक्ष रूप से लेखक ने इस समस्या को प्रतिबिम्बित किया है।

इसकी कथावस्तु संक्षेप में अग्रवत् है—

शिक्षित विधुर युवक की मनोदशा—रौशन एक शिक्षित, सजग, स्नेहशील युवक है। कुछ ही दिन हुए उसकी जीवन-संगिनी ने उससे अन्तिम विदा ली है। उसकी पत्नी सरला स्वयं तो परलोकवासी हो गयी, किन्तु अपने इकलौते पुत्र अरुण को स्नेह देने का उत्तरदायित्व अपने पति रौशन पर छोड़ गयी। रौशन पर अपने रुग्ण पुत्र अरुण की चिन्ता छायी हुई है, किन्तु उसके माता-पिता इस निरीह बालक की पूर्ण उपेक्षा कर रहे हैं। वे अपने विधुर बेटे का अतिशीघ्र पुनर्विवाह कर देना चाहते हैं और यह भी चाहते हैं कि उनका पोता इसमें किसी प्रकार का बाधक न बने। रौशन अपनी मन:स्थिति अपने माता-पिता को समझा नहीं पाता। उसे उनकी बुद्धि पर खेद होता है कि वे बीमार पोते और हाल ही में गुजरी बहू को भुलाकर उसकी शादी का उपक्रम कर रहे हैं। रौशन खिन्नता व अवसाद की पीड़ा से बुरी तरह टूट जाता है।

लोभी तथा हृदयहीन माता-पिता के तर्क—रौशन के माता-पिता अत्यन्त लोभी व कठोर हैं। उसके पिता अपने बेटे का अतिशीघ्र विवाह इसलिए कर देना चाहते हैं क्योंकि उनके हाथ में एक धनवान घर का रिश्ता आया है। वह कहते हैं—**इनको कैसे मना कर दें, सियालकोट में इनकी बड़ी भारी फर्म हैं ..... हजारों का तो इनके यहाँ लेन-देन है।**'' वे इस बात से पूर्णतया अनजान बने रहते हैं कि उनका पुत्र पत्नी के वियोग और अरुण की बीमारी से कितना त्रस्त और दु:खी है। रौशन का मन रह-रहकर घबराता है, ''**यह वर्षा, यह आँधी, यह मेरे मन में हौल पैदा कर रहे हैं। कुछ अनिष्ट होने को है। प्रकृति का यह भयानक खेल, मौत की ये आवाजें .....।**'' और उसके माता-पिता को ऐसे समय में शगुन, ब्याह और शहनाइयाँ सूझ रही हैं।

मित्र द्वारा सहयोग-सान्त्वना—लेखक ने एक आधुनिक सत्य को भी उद्घाटित किया है कि जहाँ एक ओर दकियानूसी और स्वार्थी माता-पिता अपनी सन्तान की मनोदशा को नहीं समझ पाते, वहीं पराये कहे जाने वाले मित्र अथवा परिचित ऐसे समय में बहुत सहयोगी सिद्ध होते हैं। रौशन अपने मन की व्यथा अपने माता-पिता पर तो प्रकट नहीं कर पाता, किन्तु अपने मित्र सुरेन्द्र को अपने मन का हाल कह सुनाता है। सुरेन्द्र भी उसे पूर्ण सान्त्वना और सहयोग देते हुए ढाढस बँधाता है। यदि रौशन को ऐसे समय में सुरेन्द्र का साथ नहीं मिलता तो सम्भवत: उसके माता-पिता की घृणित बातें उसे विक्षिप्त ही कर डालतीं।

अशिक्षित धारणाओं का शिक्षित मनोवृत्ति से संघर्ष—रौशन के अशिक्षित माता-पिता घोर अहंकारवादी हैं तथा पिछड़ेपन की बातें करते हैं। रौशन की माँ का विचार है कि रौशन का अरुण को लेकर डॉक्टरों के पीछे भागना बेवकूफी है—''**आखिर मैंने भी तो पाँच-पाँच बच्चे पाले हैं। बीमारियाँ हुईं, कष्ट हुए, डॉक्टरों के पीछे भागी-भागी नहीं फिरी।**''

अरुण की मृत्यु—एकांकी का चरम अत्यन्त मार्मिक है। दादा-दादी तथा असहाय पिता रौशन को अकेला छोड़ अरुण सदा-सदा के लिए आँखें बन्द कर लेता है। पाठक को उससे भी अधिक आघात तब लगता है, जब उस क्षण भी रौशन के पिता, रौशन की माँ को उसके रिश्ते की बधाइयाँ देते हुए प्रसन्न होते हैं।

प्रश्न 2. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी के आधार पर रौशन का चरित्र चित्रण कीजिए।

उत्तर—रौशन इस एकांकी का मुख्य पात्र है। वह एक क्रूर परिवार का स्नेही सदस्य है। *उसके चरित्र में निम्नलिखित विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं—*

भावुक व स्नेहशील—रौशन भावुक तथा कोमल हृदय वाला युवक है। उसे अपनी पत्नी से बहुत प्यार था तथा वह अपने पुत्र को एक माँ की तरह पूर्ण प्रेम, सुरक्षा व आत्मीयता देता है। उसकी बीमारी में वह उसका उपचार बड़ी सावधानी व तत्परता से करवाता है। उसे अपने पुत्र अरुण की बड़ी चिन्ता है। वह डॉक्टर और अपने मित्र सुरेन्द्र के सामने भावुक होकर कहता है—''**मेरा तो जैसे हौसला टूट रहा है।**'', ''**कहीं अपनी माँ की भाँति अरुण भी तो मुझे धोखा न दे जाएगा।**''

माता-पिता द्वारा शासित—यद्यपि रौशन शिक्षित व समझदार युवक है, किन्तु वह अपने माता-पिता को उनकी मनमानी करने से रोक नहीं पाता। वह पुनर्विवाह नहीं करना चाहता, किन्तु उसके माता-पिता को उसकी इच्छा की कोई परवाह नहीं है। वे जानते हैं कि कोमल तथा संवेदनशील होने के कारण उसमें विरोध कर पाने का साहस नहीं है। ''**वह माता-पिता का आज्ञाकारी है, और यह पढ़-लिखकर अवज्ञा करनी सीख गया है।**'' अपने ऊपर लगे इन आरोपों तथा लांछनों का वह कोई प्रबल उत्तर नहीं देता। यह बात घर में माता-पिता द्वारा उसके शासित होने को सिद्ध करती है।

मानवीय गुणों से युक्त—रौशन के माता-पिता जितने दकियानूसी, लोभी व कठोर हैं, रौशन उतना ही अधिक दयायुक्त, प्रगतिशील व संवेदनशील है। उसे अपने बेटे से अगाध प्रेम है, अपनी पत्नी को भी वह बार-बार याद करता है। अपने पिता होने के कर्तव्य को वह पूरे प्राण-पण से निभाता है। अपने माता-पिता के गलत विचारों से बेहद पीड़ित होते हुए भी वह उनको कोई दु:ख नहीं पहुँचाता।

तर्कशील—अपनी माँ द्वारा रामप्रताप के पुनर्विवाह का उदाहरण दिये जाने पर वह तर्क देता है कि मनुष्य-मनुष्य की मानसिकता में भेद होता है—''**तुम रामप्रताप को मुझसे मिलाती हो! अनपढ़, अशिक्षित, गँवार। उसके दिल कहाँ है? महसूस करने का माद्दा कहाँ है? वह जानवर है।**''

अविचल एवं दृढ़—रौशन अपने विचारों में अविचल एवं दृढ़ रहने वाला है। माँ के बार-बार कहने पर भी वह सियालकोट के रिश्ते का समर्थन नहीं करता। वह क्रोध से परिपूर्ण हो माँ से कह देता है—

''**उनसे कहो-जहाँ से आये हैं, वहीं चले जाएँ।**'' इतना ही नहीं, पिता के बुलाये जाने पर भी वह कहता है—''**मेरे पास समय नहीं! ..... मैं नहीं जा सकता।**''

परम्परागत मान्यताओं का विरोधी—रौशन को परम्परागत नीति-रीति अथवा मान्यताओं में जरा भी विश्वास नहीं है। अपने विवाह के प्रसंग में वह सुरेन्द्र से कहता है—''**दुनिया की रीति इतनी निष्ठुर, इतनी निर्मम, इतनी क्रूर!**'' बच्चे की बीमारी के प्रसंग में उसे माँ की घुट्टी आदि में कोई रुचि नहीं। वह आजकल की चिकित्सा में विश्वास रखता है।

वस्तुत: रौशन एक आदर्श पिता, सज्जन पति, सन्त्रस्त पुत्र, विवेकी, सभ्य तथा संवेदनशील युवक है। उसका चरित्र ही एकांकी का मूल आधार है।

प्रश्न 3. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी के एकमात्र स्त्री-पात्र रौशन की माँ का चरित्रांकन कीजिए।

उत्तर—'लक्ष्मी का स्वागत' में मुख्य स्त्री पात्र रौशन की माँ ही है। वह एक सामान्य मध्यम परिवार की सामान्य नारी है। वह उस महिला वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है, जो अशिक्षित, अहंकेन्द्रित तथा दकियानूसी प्रौढ़ा है। उसके चरित्र में निम्नलिखित विशेषताएँ देखने को मिलती हैं—

वाचाल—रौशन की माँ समय और स्थिति की गम्भीरता को न देखते हुए कटु वाक्य बोलती ही रहती है। पोते की अत्यन्त चिन्ताजनक स्थिति भी उसे अनर्गल बोलने से नहीं रोक पाती। वह अपने दूषित मनोभाव निरन्तर प्रकट करती रहती है तथा अपना निर्णय अपने पुत्र पर थोप देना चाहती है।

परम्परागत रूढ़ियों का शिकार—प्राय: वृद्ध लोग अपने जमाने की लकीर पीटते ही रहते हैं। आधुनिक वैज्ञानिक प्रगति उनकी दृष्टि में हेय होती है। वह तो केवल अपनी पुरानी पद्धतियों को ही श्रेष्ठ मानते हैं। रौशन की माँ भी एक ऐसी ही महिला है।

कठोर व भावनाहीन—स्त्री होने के बावजूद उसमें लेशमात्र को भी ममता व सहानुभूति नहीं है। वह न तो अपने पुत्र की पीड़ा समझती है और न ही अपने पौत्र का कष्ट उसे द्रवित कर पाता है। बहू का मर जाना तो उसे रत्तीभर भी प्रभावित नहीं करता।

व्यावहारिक—रौशन की माँ पूर्णत: व्यावहारिक है। इसीलिए वह रौशन को रामप्रताप का उदाहरण देकर समझाती भी है कि उसे भी रामप्रताप की तरह जल्दी दूसरा विवाह कर लेना चाहिए, क्योंकि '**अभी तो चार नाते आते हैं, फिर देर हो गयी तो इधर कोई मुँह भी न करेगा।**'

अनिश्चित मानसिकता से ग्रसित—सियालकोट से आने वाले अतिथियों को देखकर वह प्रसन्न हो उठती है। वह रौशन को बुलाकर समझाती है कि वह इस रिश्ते की स्वीकृति दे दे। बच्चे की बिगड़ती स्थिति से वह कुछ चिन्तित हो उठती है। पिता से कहती है—"**वह तो बात भी नहीं सुनता, जाने बच्चे की तबियत बहुत खराब है।**" दूसरी चिन्ता उसे रिश्तेवालों की भी होती है कि "**बहू की बीमारी का पूछते होंगे?**", "**बच्चे को पूछते होंगे!**"

चरित्र में स्वाभाविकता—रौशन की माँ के चरित्र में आदि से अन्त तक स्वाभाविकता विद्यमान है। घर की बड़ी-बूढ़ियाँ जिस स्वभाव की होती हैं और जैसी बातचीत करती हैं, रौशन की माँ उसका सुन्दर उदाहरण है।

अत: रौशन की माँ एक अत्यन्त निम्न मनोवृत्ति की दकियानूसी व लोभी स्त्री है। उसका चरित्र-चित्रण लेखक ने अत्यन्त यथार्थता से एक लोभी माँ के रूप में; जो अपनी लालसाएँ पूरी करने में लगी है; किया है।

प्रश्न 4. अभिनेयता की दृष्टि से 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी की समीक्षा कीजिए।

उत्तर— अभिनेयता एकांकी का प्राण है। अभिनय के बिना एकांकी का रसोपभोग नहीं किया जा सकता। इस दृष्टि से कथावस्तु, देश-काल, वातावरण और संवाद-योजना ऐसी होनी चाहिए कि एकांकी को मंचित किया जा सके। इस दृष्टि से हम पाते हैं कि 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी पूर्णत: अभिनेय है। इसकी कथावस्तु ऐसी है कि इसके लिए विशेष मंच की जरूरत नहीं है। एक दालान की योजना करनी है, जो आसानी से हो सकती है। कथा का विस्तार भी ऐसा नहीं है कि अनेक दृश्यों की योजना करनी पड़े। बीमार अरुण से सम्बन्धित गतिविधियाँ नेपथ्य में घटित होती हैं। साँय-साँय, वर्षा के थपेड़ों की ध्वनि तथा बिजली की चमक की योजना नेपथ्य से ध्वनि और प्रकाश के माध्यम से करके अपेक्षित प्रभाव उत्पन्न किया जा सकता है। एकांकी में संवाद भी ऐसे हैं कि इनसे मंच-सम्बन्धी व्यवस्था में हास्यास्पद स्थिति पैदा नहीं होती और न असुविधा होती है।

इस प्रकार, हम कह सकते हैं कि 'लक्ष्मी का स्वागत' रंगमंच की दृष्टि से पूर्णत: अभिनेय एकांकी है।

प्रश्न 5. 'लक्ष्मी का स्वागत' भावनाप्रधान, मर्मस्पर्शी, सामाजिक एकांकी है। इस पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर—'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी एक सामाजिक एकांकी है। सामाजिक यथार्थ के घटनाक्रम पर आधारित इसका सम्पूर्ण कथानक भावनाप्रधान और अत्यन्त मर्मस्पर्शी है।

एकांकी के सम्पूर्ण कथानक में एक ओर रौशन का चरित्र है, जो अपनी पत्नी के वियोग और पुत्र की गम्भीर बीमारी के कारण दु:खी है। पत्नी की मृत्यु के कारण वह घोर अवसाद की स्थिति में है। विगत जीवन की स्मृति आते ही उसकी मन:स्थिति अत्यन्त व्यथापूर्ण हो जाती है। इस घोर पीड़ादायी स्थिति में उसका मित्र उससे सहानुभूति दर्शाता है। अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद से ही उसे एक और दु:खद त्रासदी झेलनी पड़ती है, जब बीमारी के कारण उसका पुत्र मरणासन्न स्थिति में पहुँच जाता है। उसकी मानसिक दशा पागलों जैसी हो जाती है और वह किसी प्रकार अपने पुत्र को बचा लेना चाहता है।

रौशन के संवादों से उसकी व्यथा का पूर्ण आभास हो जाता है। उसका चरित्र हमारे मन को आन्दोलित कर देता है और उसके प्रति करुणा एवं सहानुभूति के भाव जागृत हो जाते हैं।

दूसरी ओर रौशन के माता-पिता का चरित्र है, जो अत्यन्त निर्दयी, दहेज-लोभी और पाषाण-हृदय लोगों में से हैं। वे अपने बेटे और पोते की दु:खद स्थिति के प्रति पूर्णत: उदासीन हैं; उन्हें केवल ऐसी बहू की आवश्यकता है, जो अपने साथ दहेज में ढेर सारा धन लेकर आये।

इस प्रकार पत्नी एवं पुत्र के प्रति सच्चे प्रेम और दूसरी ओर धन एवं बहू की लालसा को दर्शाने वाला यह भावना-प्रधान एकांकी अत्यन्त मर्मस्पर्शी है और भारतीय समाज की यथार्थ मानसिकता का स्पष्ट बोध करता है।

प्रश्न 6. भाषी की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—भाषी रौशन का छोटा भाई है।

वह अत्यन्त सुशील है, आज्ञाकारी और परिश्रमी है। अपने भतीजे की बीमारी में वह आँधी-वर्षा और तूफान में दौड़ता रहता है—कभी डॉक्टर को बुला लाने के लिए और कभी दवाखाने से दवा ले आने के लिए। अपने भतीजे अरुण को वह किसी भी प्रकार बचा लेना चाहता है। वह आज्ञाकारी और अत्यन्त परिश्रमी है। वह कभी आज्ञा का उल्लंघन नहीं करता। वह भाई ही नहीं माँ-बाप के इशारे पर भी नाचता है। वह किसी से ऊँची आवाज में बात नहीं करता वस्तुत: भाषी एक आदर्श भाई है जो विनम्र, सुशील और मानवीयता की भावना से ओत-प्रोत है।

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि सुरेन्द्र और भाषी की तरह ही मानवीय गुणों और संवदेनाओं से पूर्ण चरित्र के व्यक्ति हैं।

प्रश्न 7. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी की कथावस्तु की समीक्षा कीजिए।

उत्तर—एकांकी उपेन्द्रनाथ 'अश्क' का एक सामाजिक एकांकी है। इस एकांकी में इन्होंने भारतीय समाज में युवक को शादी के बाजार में बेचने की तुच्छ मनोवृत्ति को दर्शाया है।

कथावस्तु—कथावस्तु का प्रसार मुख्य पात्र के विधुर होने तथा उसके पुत्र की रोग से मृत्यु के समय उसके नये विवाह-प्रस्ताव की स्वीकृति तक है। जो पाठकों को एक मार्मिक पीड़ा से भर देता है।

आरम्भ—कथा का आरम्भ रौशन की पत्नी-वियोग की टूटनभरी स्थिति तथा पुत्र की बीमारी की चिन्ता से होता है।

विकास—अपने पुत्र के प्रति इधर रौशन की चिन्ता प्रतिफल बढ़ती है तो उधर उसके माता-पिता के नये विवाह के प्रयास तीव्रतर होते जाते हैं। एक विशेष अन्त: संघर्ष से कथा विकसित होती जाती है।

चरम सीमा—डॉक्टर के बहुत प्रयासों के उपरान्त भी अरुण की हालत बिगड़ती चली जाती है। उसकी इस स्थिति की उपेक्षा पर विचार-विमर्श करते रहते हैं।

अन्त—अरुण अन्तत: चल बसता है तथा उसके दादा अपने बेटे का रिश्ता तय करके खुशी से फूले नहीं समाते। इस घृणित सत्य को पाठक की आत्मा यथार्थ रूप में परख लेती है।

सरल भाषा तथा छोटे कथोपकथन—एकांकी के कथोपकथन या संवाद छोटे होने चाहिएँ और भाषा सरल होनी चाहिए, जिससे अभिनेताओं को विचार-सम्प्रेषण में कोई परेशानी न हो। इस कसौटी पर भी प्रस्तुत नाटक खरा उतरता है।

संकलन-त्रय का निर्वाह—प्रस्तुत एकांकी में संकलन-त्रय (स्थान, समय और कार्य) का सुन्दर रूप में निर्वाह हुआ है। अश्क ने एकांकी के प्रारम्भ में स्वयं ही बता दिया है कि **स्थान-जालन्धर** के इलाके में मध्यम श्रेणी के मकान का एक दालान, **समय**-नौ-दस बजे सुबह।

कार्य—बच्चे की बीमारी और पिता के द्वारा पुत्र के पुनर्विवाह की तैयारी।

अत: एकांकी संघटन की दृष्टि से यह एक सफल एकांकी है जिसका कथानक सहज, यथार्थवादी व प्रभावशाली है।

❑

5

सीमा-रेखा

(विष्णु प्रभाकर)

परीक्षापयोगी प्रश्न

तथ्यों पर आधारित प्रश्न

प्रश्न 1. प्रस्तुत एकांकी 'सीमा-रेखा' के माध्यम से किस समस्या को रखा गया है?

उत्तर—'सीमा-रेखा' राष्ट्रीय चेतना प्रधान एकांकी है। राष्ट्रीय चेतना के अभाव में दिन-प्रतिदिन के आन्दोलनों में राष्ट्रीय सम्पत्ति की हानि चिन्ता का विषय बन गयी है। एकांकीकार ने प्रस्तुत एकांकी में इसी समस्या को उभारा है। सरकार और जनता के बीच बढ़ती खाई और दिनोदिन हडताल, बन्द और जन-धन की हानि इस एकांकी का विषय है।

प्रश्न 2. 'सीमा-रेखा' एकांकी का मूल उद्देश्य लिखिए।

उत्तर—एकांकीकार ने प्रस्तुत एकांकी के उद्देश्य को संकेत-रूप में व्यक्त किया है। लेखक ने एकांकी के अन्त में बताया है कि "**जनतन्त्र में सरकार और जनता के बीच कोई विभाजक रेखा नहीं होती।**" जनता सरकार से और सरकार जनता से अलग नहीं है। इनमें से एक की भी क्षति देश की क्षति है। देश की क्षति जनता और सरकार दोनों की क्षति है। राष्ट्रीय चेतना के अभाव में जनतन्त्र में विसंगति उत्पन्न होने से हम जनता की क्षति और सरकार की क्षति को अलग-अलग समझ बैठते हैं। हम यह नहीं सोचते कि दोनों प्रकार से देश को ही क्षति पहुँचती है। यही कारण है कि **हम जन-आन्दोलनों के समय सरकार की सम्पत्ति का नुकसान करके देश को क्षति पहुँचाते हैं**। यही हमारी चिन्ता का विषय है—एक राष्ट्रीय समस्या है। लेखक ने इसी समस्या को उद्घाटित कर जनता में राष्ट्रीय चेतना जागृत करने का प्रयत्न किया है।

प्रश्न 3. 'सीमा-रेखा' एकांकी के शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—प्रस्तुत एकांकी का शीर्षक सार्थक, उपयुक्त एवं सोद्देश्य है। यह शीर्षक कथानक की मूल संवेदना की ओर संकेत करता है। जनता के द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों ने अपने और जनता के बीच जो विभाजक रेखा खींच ली, वह अनुचित है। एकांकी में उपमन्त्री शरतचन्द्र जनता के सामने जाने से कतराते हैं, जबकि जनता ने उन्हें अपने हित के लिए ही चुनकर भेजा है। सविता व्यंग्य में शरतचन्द्र से कहती भी है कि "**जो एक दिन जनता की आँखों के तारे थे, वे आज जनता के सामने पुलिस के पहरे में जाते हैं।**" अन्त में वे इस बात को स्वीकार करते हैं कि "**जनता और सरकार के बीच कोई विभाजक रेखा नहीं होनी चाहिए।**" यह शीर्षक एकांकी के उद्देश्य की ओर संकेत करता है; अत: पूर्ण उपयुक्त, सार्थक एवं सोद्देश्य है।

प्रश्न 4. अरविन्द, सुभाष तथा विजय की मृत्यु को अन्नपूर्णा, सविता और शरत किस रूप में देखते हैं?

उत्तर—गोलीकाण्ड और तत्पश्चात् भीड़ द्वारा कुचले जाने से हुई अरविन्द, सुभाष तथा विजय की मृत्यु को अन्नपूर्णा, सविता और शरत अलग-अलग दृष्टिकोण से देखते हैं। अन्नपूर्णा के लिए यह उनके घर की क्षति है। शरत् इसे जनता और सरकार की क्षति मानते हैं, जबकि सविता इनकी मौत को सारे देश की क्षति मानती है; क्योंकि जनतन्त्र में जनता और सरकार के बीच कोई सीमा-रेखा नहीं होती।

प्रश्न 5. विजय अनियंत्रित भीड़ पर गोली क्यों चलवाता है?

उत्तर—उग्र भीड़ के बेकाबू हो जाने पर अनियंत्रित भीड़ को काबू में करने के लिए पुलिस कप्तान विजय भीड़ पर गोली चलवाता है।

प्रश्न 6. देश व्यक्ति से अलग क्यों नहीं माना गया?

उत्तर—देश व्यक्ति से अलग इसलिए नहीं माना गया क्योंकि जनतन्त्र में जनता और सरकार के बीच कोई सीमा-रेखा नहीं होती। क्योंकि सरकार जनता की होती है अत: सरकार का मूल कर्तव्य जनता का हर प्रकार से कल्याण करना होता है।

प्रश्न 7. एकांकी में किस सीमा-रेखा का उल्लंघन हुआ है?

उत्तर—प्रस्तुत एकांकी में सीमा-रेखा से आशय सरकार और जनता के बीच विभाजक रेखा से है। लेखक ने एकांकी के अन्त में बताया है कि जनता सरकार से और सरकार जनता से अलग नहीं है।

कथानक व चरित्र-चित्रण पर आधारित प्रश्न

प्रश्न 1. 'सीमा-रेखा' एकांकी के माध्यम से लेखक ने राजनीतिज्ञों को क्या सन्देश दिया है? व्याख्या कीजिए।

उत्तर—श्री विष्णु प्रभाकर का 'सीमा-रेखा' एक राष्ट्रीय चेतनाप्रधान एकांकी है। इसमें आधुनिक युग में निरन्तर चलते रहने वाले नाना प्रकार के आन्दोलनों तथा उनके प्रति सरकार के विरोधी तथा कड़े रुख और उसके घातक परिणामों पर प्रकाश डाला गया है। इसमें यह दर्शाया गया है कि जनतांत्रिक देश होते हुए भी भारत का प्रत्येक व्यक्ति अपने तथा अपने वर्ग के स्वार्थ के लिए ही सोचता है। वह समग्र देश और समाज के सामूहिक कल्याण की दृष्टि से नहीं सोचता। इसी कारण आये दिन जनता और सरकार में संघर्ष होते रहते हैं। जनतन्त्र में सरकार और जनता के बीच कोई सीमा रेखा नहीं होती। क्योंकि सरकार जनता की होती है। अत: सरकार का मूल कर्तव्य जनता का हर प्रकार से कल्याण करना होता है। जब सरकार ऐसा नहीं करती, तभी सरकार और जनता में संघर्ष होता है।

प्रश्न 2. 'सीमा-रेखा' एकांकी का कथासार अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर—**'सीमा-रेखा'** राष्ट्रीय चेतनाप्रधान एकांकी है। राष्ट्रीय चेतना के अभाव में दिन-प्रतिदिन के आन्दोलनों में राष्ट्रीय सम्पत्ति की हानि चिन्ता का विषय बन गयी है। एकांकीकार ने प्रस्तुत एकांकी में इसी समस्या को उभारा है। एकांकीकार ने एक ही परिवार के चार भाइयों के संघर्ष को चार वर्गों के प्रतिनिधियों के रूप में चित्रित किया है। एकांकी का कथानक संक्षेप में निम्नलिखित है—

एकांकी के पात्र एक ही परिवार से सम्बन्धित—प्रस्तुत एकांकी में एक ही परिवार के चार भाई भिन्न-भिन्न चार वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं। बड़े भाई लक्ष्मीचन्द्र व्यापारी हैं। दूसरे भाई शरतचन्द्र उपमन्त्री हैं, उनकी पत्नी का नाम अन्नपूर्णा है। तीसरे भाई सुभाषचन्द्र जन-नेता हैं और चौथे भाई विजय पुलिस कप्तान हैं। अरविन्द बड़े भाई लक्ष्मीचन्द्र का दस-वर्षीय पुत्र है।

जन-आन्दोलन और गोलीकाण्ड—उपमन्त्री शरत्चन्द्र अपने ड्राइंगरूम में बैठे हैं। शरतचन्द्र नगर में चल रहे जन-आन्दोलन का फोन से हाल मालूम करते हैं। उत्तर में मालूम करते हैं। उत्तर में मालूम होता है—**''उग्र भीड़ के बेकाबू हो जाने पर पुलिस को गोली चलानी पड़ी, जिसमें बीस व्यक्ति घायल हो गये और पाँच मर गये।''** व्यापारी लक्ष्मीचन्द्र और उपमन्त्री शरत्चन्द्र पुलिस की गोली चलाने को उचित ठहराते हैं, परन्तु शरत्चन्द्र की पत्नी अन्नपूर्णा एवं तीसरे भाई जन-नेता सुभाषचन्द्र की पत्नी सविता इस गोलीकाण्ड को अनुचित ठहराती हैं।

जन-नेता सुभाष के विचार एवं माँग—सुभाषचन्द्र स्वतन्त्र भारत में गोली चलाने पुलिस कप्तान की मुअत्तली और निहत्थों पर गोली चलाने के बर्बर काण्ड की जाँच की माँग करता है। वह कहता है कि **''जब तक सरकार और उसके अधिकारी ठीक आचरण नहीं करेंगे, सड़कों पर प्रदर्शन होते रहेंगे और जनता कानून हाथ में लेती रहेगी।''**

गोली से अरविन्द की मृत्यु—अरविन्द व्यापारी लक्ष्मीचन्द्र का दस-वर्षीय पुत्र है। वह इस गोलीकाण्ड में मारा जाता है। लक्ष्मीचन्द्र एवं उसकी पत्नी तारादेवी पुत्र की मृत्यु का दोष विजय को देते हैं। विजय को अपने इस कार्य पर अत्यन्त पश्चात्ताप होता है।

सुभाष एवं विजय का बलिदान—शरत्चन्द्र के घर के बाहर एकत्रित भीड़ गोलीकाण्ड के विरोध में बहुत उत्तेजित है। सुभाष और विजय भीड़ पर नियन्त्रण करने की कोशिश करते हैं। विजय गोली चलाने से इंकार कर देता है। विजय और सुभाष उत्तेजित भीड़ से कुचलकर मर जाते हैं। उनके गिरते ही भीड़ शान्त हो जाती है। नगर में इन बलिदानों की चर्चा होने लगती है और सभी शोक-सन्तप्त होते हैं। शरतचन्द्र अरविन्द और सुभाष की मृत्यु को जनता की और विजय की मृत्यु को सरकार की क्षति बताते हैं। अन्नपूर्णा इसे घर की क्षति बताती है, परन्तु सविता इसे सारे देश की क्षति बताती हुई कहती है कि देश, बना हम से और हम क्या देश से अलग हैं? शरत् भी सविता की बात को स्वीकार करते हुए इस बलिदान को देश की क्षति कहते हैं; क्योंकि **''जनतन्त्र में सरकार और जनता के बीच कोई विभाजक रेखा नहीं होती है।''**

प्रश्न 3. 'सीमा-रेखा' एकांकी के प्रमुख पात्र शरतचन्द्र का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर—सीमा-रेखा के सभी पात्र एक ही परिवार के सदस्य एवं विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधि-पात्र हैं। इनमें शरतचन्द्र द्वितीय भाई एवं अन्नपूर्णा के पति हैं। ये सरकार में उपमन्त्री के पद पर रहते हुए भी जनता से दूर रहने वाले मन्त्रियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। *इनके चरित्र की निम्नलिखित विशेषाएँ हैं—*

व्यस्त मन्त्री—शरतचन्द्र उपमन्त्री हैं। वे व्यस्त दिखाई देते हैं। वह दंगे की सूचना, भाई के व्यवसाय की सुरक्षा की चिन्ता, जनता के क्षोभ, पारिवारिक असन्तोष आदि के बीच कठपुतली की तरह घूमते दिखाई देते हैं।

शासकवर्ग का प्रतिनिधि—शरत्चन्द्र की अपनी कोई राय नहीं है। वह सरकार की कार्यवाही का समर्थन करते हैं। वह पुलिस के गोलीकाण्ड को बिना जाँच किये ही सही बताते हैं और इसे सरकार की नैतिक जिम्मेदारी सिद्ध करते हैं।

अधिकार के प्रति सजग—शरतचन्द्र अपने अधिकार के प्रति पूर्ण सजग हैं। विद्रोह को दबाना सरकार का उत्तरदायित्व समझते हैं तथा विद्रोह के कारणों के पीछे की समस्याओं को सुलझाने की ओर उनका कोई ध्यान नहीं है।

सिद्धान्त से जनतन्त्र का पक्षपाती—सैद्धान्तिक रूप से शरत्चन्द्र जनतन्त्र के समर्थक हैं, अत: वे जनता और सरकार के बीच विभाजक रेखा को नहीं मानते।

जनता से भयभीत—शरत्चन्द्र उन मन्त्रियों में से हैं, जो जनता के बीच जाने से डरते हैं। जन-विद्रोह के समय वे केवल फोन से ही जानकारी प्राप्त करते हैं। सुभाष उनकी इस कमजोरी को पहचानता है और स्पष्ट कहता है कि आप जनता के बीच जाने से न डरते तो घर में छिपकर न बैठते।

संवेदनशील एवं गतिशील व्यक्तित्व—शरतचन्द्र संवेदनशील व्यक्ति हैं। अरविन्द, सुभाष और विजय की मृत्यु पर उन्हें हार्दिक कष्ट होता है। जनतन्त्र में जनता और सरकार के बीच कोई विभाजक रेखा नहीं होती—इस तथ्य की स्वीकृति उनके गतिशील व्यक्तित्व का ही द्योतक है।

संयत और गम्भीर—एक कुशल राजनीतिज्ञ होने के कारण शरतचन्द्र को एक गम्भीर और संयत व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया है। अपने भाइयों द्वारा उलाहना दिये जाने पर वह अन्दर-ही-अन्दर तिलमिला जाता है, फिर भी बाहर से अपने को संयत किये रहता है।

इस प्रकार शरतचन्द्र एक कुशल राजनीतिज्ञ, व्यस्त मन्त्री, सरकारी कार्यवाही के समर्थक, संवेदनशील एवं परिवर्तनशील चरित्र के व्यक्ति हैं।

प्रश्न 4. कथा-संघटन के विकास की दृष्टि से 'सीमा-रेखा' एकांकी की कथावस्तु की समीक्षा संक्षेप में कीजिए।

उत्तर—'सीमा-रेखा' श्री विष्णु प्रभाकर का राष्ट्रीय चेतनाप्रधान एकांकी है। इसकी कथावस्तु का चयन आज के लोकतन्त्र की विसंगतियों के बीच से किया गया है, जबकि राष्ट्रीय चेतना के अभाव में आन्दोलन और राष्ट्रीय सम्पत्ति की हानि चिन्ता का विषय बन चुकी है। कथावस्तु का निर्माण एक ही परिवार के चार भाइयों के स्वार्थ-संघर्षों के ताने-बाने से हुआ है। चारों भाई अपने-अपने वर्गों के प्रतिनिधि पात्र हैं और सविता लोकतन्त्र का सही स्वरूप सामने रखती है।

आरम्भ—इसकी कथावस्तु का आरम्भ उपमन्त्री शरतचन्द्र के ड्राइंग रूम से होता है। उन्हें टेलीफोन पर पता चलता है कि आन्दोलनकारियों की बेकाबू भीड़ पर पुलिस ने गोली चलायी, जिसमें बड़े भाई लक्ष्मीचन्द्र का दस-वर्षीय पुत्र भी मारा गया। कुल पाँच लोग मरे और बीस घायल हो गये।

विकास—अरविन्द की मृत्यु और भीड़ के बेकाबू होने के साथ कथानक विकसित होता है। इसके अन्तर्गत पुलिस, सरकार, विपक्ष और जनता की भावनाओं का सारा संघर्ष खुलकर सामने आ जाता है। पुलिस कप्तान विजय तथा जननेता सुभाष भीड़ को शान्त करने चले जाते हैं।

चरम-सीमा—पुलिस कप्तान विजय गोली चलाने का आदेश नहीं देता और सुभाष जनता को समझाने का प्रयास करता है। दोनों ही बेकाबू भीड़ में कुचलकर मारे जाते हैं। यहीं पर एकांकी की चरम-सीमा है।

अन्त—एक ही परिवार के तीन सदस्यों की मृत्यु से भीड़ स्वयं शान्त हो जाती है। इन तीनों की मृत्यु एक घर की नहीं, वरन् पूरे राष्ट्र की क्षति थी। अन्त में एकांकी यही सन्देश देता है कि ''**जनतन्त्र में जनता और सरकार के बीच कोई विभाजक रेखा नहीं होती।**''

भाषा-शैली और संवाद—एकांकी की भाषा सरस, सरल, व्यावहारिक एवं वातावरण के अनुकूल है। आवश्यकतानुसार भावात्मक, विचारात्मक, संवादात्मक आदि विभिन्न शैलियों का सफलतापूर्वक प्रयोग किया गया है। उर्दू के शब्दों के प्रयोग से भाषा में स्वाभाविकता एवं गतिशीलता उत्पन्न हो गयी है। संवाद सरल, संक्षिप्त, रोचक, सरस एवं कथा के अनुरूप हैं। संवादों के माध्यम से एकांकीकार ने पात्रों की भावनाओं और विचारधाराओं को व्यक्त करने में विशेष सफलता प्राप्त की है।

संकलन-त्रय का निर्वाह—एकांकी में कार्य, समय तथा स्थान का सुन्दर संकलन है। सम्पूर्ण कथानक उपमन्त्री शरतचन्द्र के ड्राइंगरूम में कुछ ही समय में घटित हो जाता है। अन्य घटनाएँ सूचना के रूप में प्रस्तुत की गयी हैं। यह ध्वनिप्रधान रचना रेडियो रूपक की श्रेणी में रखी जा सकती है तथा इसका अभिनय भी सफलतापूर्वक किया जा सकता है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि प्रस्तुत एकांकी 'सीमा-रेखा' एकांकी कला की दृष्टि से पूर्ण सफल है। एकांकी के समस्त तत्वों का इसमें सम्यक् निर्वाह हुआ है।

प्रश्न 5. 'सीमा-रेखा' एकांकी की विशेषताओं का संक्षेप में उल्लेख कीजिए।

उत्तर—'सीमा-रेखा' विष्णु प्रभाकर का राष्ट्रीय-चेतनाप्रधान एकांकी है, जिसमें हमारे जनतन्त्र में उभरी विसंगतियों का उल्लेख है, जिसके कारण राष्ट्र की क्षति हो रही है। सरकार और जनता के बीच बढ़ती खाई और दिनोदिन हड़ताल, बन्द और जन-धन की हानि इस एकांकी का विषय है।

एकांकी का कथानक एक ही परिवार के चार भाइयों के स्वार्थ-संघर्ष के ताने-बाने पर खड़ा किया गया है। लक्ष्मीचन्द्र व्यापारी हैं, शरतचन्द्र उपमन्त्री, सुभाषचन्द्र जन-नेता और विजय पुलिस कप्तान। एक दिन बैंक के पास बेकाबू भीड़ पर पुलिस की गोली से लक्ष्मीचन्द्र का पुत्र मारा जाता है। लक्ष्मीचन्द्र और उनकी पत्नी तारा इसे विजय की क्रूरता कहते हैं। भीड़ फिर भी नहीं मानती। विजय और सुभाष भीड़ को रोकने की कोशिश करते हैं, लेकिन भीड़ नहीं रुकती। विजय गोली चलाने से मना करते हैं और अन्त में विजय तथा सुभाष भीड़ में कुचलकर मारे जाते हैं। इस प्रकार कथावस्तु अत्यन्त सुगठित, घटनापूर्ण और जीवन्त है।

एकांकी में आये सभी पात्रों का चरित्र-चित्रण बड़ी कुशलता से किया गया है। लक्ष्मीचन्द्र का व्यापारी मन कहता है—'हाँ, मेरा नुकसान होता।' शरतचन्द्र लोगों के कानून हाथ में लेने के खिलाफ हैं। विजय और सुभाष के अपने दायरे हैं। सबका व्यक्तित्व अच्छी तरह उभरकर सामने आया है।

संवाद-योजना ऐसी है कि कथानक तेजी से आगे बढ़ता है। संकलन-त्रय का अच्छी तरह निर्वाह हुआ है। सब कुछ शरतचन्द्र के ड्राइंगरूम में ही घटित होता है। वातावरण की दृष्टि से एकांकीकार को विशेष सफलता मिली है। शिल्प की दृष्टि से यह एकांकी रेडियो रूपक है, पर इसे मंचित भी किया जा सकता है। जनतन्त्र के चित्रण में एकांकीकार पूरी तरह सफल होता है। सविता जनतन्त्र का सच्चा स्वरूप प्रस्तुत करती है।

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि 'सीमा-रेखा' सभी दृष्टियों से एक सफल एकांकी है।

प्रश्न 6. 'सीमा-रेखा' एकांकी के नायक सुभाष का चरित्र-चित्रण अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर—सुभाषचन्द्र तीसरे नम्बर का भाई और सविता का पति है। वह जन-नेता के रूप में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। *उसके चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—*

जनतन्त्र का समर्थक—सुभाष जनतन्त्र का घोर समर्थक है। यही कारण है कि जन-आन्दोलन के समय पुलिस के द्वारा गोली चलाये जाने पर वह अपने भाई शरतचन्द्र को खरी-खोटी सुनाता है। वह जनतन्त्र में राज्य और जनता की रक्षा करते-करते प्राण देने को पुनीत कर्तव्य मानता है। वह इस बात का भी समर्थक है कि प्रजातन्त्र में शासन सेवा-भाव से चलता है, गोलियों के बल पर नहीं।

जनता का सच्चा सेवक—सुभाष जनता का सच्चा सेवक है। वह सरकार और अधिकारियों के आचरण को सुधारने के लिए जन-आन्दोलनों को आवश्यक मानता है। वह शरतचन्द्र के सामने भाई की हैसियत से नहीं, जन-नेता की हैसियत से बात करता है। वह निर्भीक भाव से जनता में जाता है तथा जन-सेवा में अपने प्राणों की आहुति देकर अपने को सच्चा जन-सेवक सिद्ध करता है।

साहसी और स्पष्टवक्ता—सुभाष में अदम्य साहस है। वह भारी भीड़ में भी विजय की रक्षा करना चाहता था। अपने बड़े भाई शरत् को खरी-खोटी सुनाना उसका स्पष्टवादी होना सिद्ध करता है। वह उनसे स्पष्ट रूप से कहता है कि ''**जब तक सरकार और उसके अधिकारी ठीक आचरण नहीं करेंगे, तब तक जनता प्रश्न करती ही रहेगी, कानून हाथ में लेती रहेगी।**''

साम्यवादी विचारधारा का समर्थक—सुभाष साम्यवादी विचारधारा का समर्थक है, फिर भी वह अपने को कम्युनिस्ट कहलाना पसन्द नहीं करता। वह अपने पूँजीपति भाई को भी खरी-खोटी सुनाता है और कहता है—''**दादा जी आप न बोलें। आप व्यापारी हैं। आपका सिद्धान्त आपका स्वार्थ है .....।**''

कर्तव्यनिष्ठ—सुभाष एक कर्त्तव्यनिष्ठ जन-नेता है। उसका कर्तव्य है—जनता की आवाज को शासन के बहरे कानों तक पहुँचाना। वह अन्त तक अपने इस कार्य में लगा रहता है। उसकी कर्तव्यनिष्ठा को एकांकीकार ने इन पंक्तियों में साकार किया है—''**कर्तव्य का पालन करते हुए मरना**

यदि आदर्शवाद है तो मैं कहूँगा कि विश्व के प्रत्येक नागरिक को ऐसा ही आदर्शवादी होना चाहिए।''

महान् बलिदानी—सुभाष देश-सेवा और जन-सेवा को अपना पुनीत कर्तव्य मानता है। जनता की रक्षा के लिए वह अपने प्राणों का बलिदान कर देता है। उसका यह बलिदान व्यर्थ नही जाता और अनियन्त्रित जनता भी उसके इस बलिदान पर मौन साधकर खड़ी हो जाती है।

इस प्रकार सुभाष जनतन्त्र का समर्थक, सच्चा जन-सेवक, निर्भीक, स्पष्टवक्ता एवं महान् बलिदानी व्यक्ति है।

प्रश्न 7. 'सीमा-रेखा' एकांकी के आधार पर शरत्चन्द्र तथा सुभाषचन्द्र के चरित्रों की तुलना कीजिए।

उत्तर—'सीमा-रेखा' एकांकी के पात्र एक ही परिवार के किन्तु अपने-अपने वर्गों के प्रतिनिधि पात्र हैं। शरत्चन्द्र सरकार में उपमन्त्री हैं तो सुभाषचन्द्र जन-नेता। शरतचन्द्र की अपनी कोई राय नहीं है। वह सरकार का तथा पुलिस द्वारा गोली चलाने का समर्थन करता है, किन्तु सुभाषचन्द्र का कहना है कि पुलिस को गोली आत्म-रक्षा के लिए नहीं, अपितु जनता की रक्षा के लिए दी जाती है—''**हमें राज्य की रक्षा करते-करते प्राण दे देने चाहिएँ, प्राण लेने नहीं चाहिएँ। हमें देने का ही अधिकार है, लेने का नहीं।**'' शरतचन्द्र सरकार के पक्ष में कहता है कि जनता को सड़कों पर प्रदर्शन नहीं करना चाहिए और भीड़ को कानून हाथ में नहीं लेना चाहिए, पर सुभाष का कहना है कि जब तक सरकार और उसके अधिकारियों के आचरण में ईमानदारी और हमदर्दी नहीं होगी, तब तक जनता सड़कों पर प्रदर्शन करती ही रहेगी। एकांकी के अन्त में अपने विचारों के अनुसार ही कर्तव्य का निर्वाह करते हुए सुभाष अपना बलिदान कर देता है, जिससे शरत के विचार बदल जाते हैं। वह मानने लगता है कि ''**जनतन्त्र में सरकार और जनता के बीच कोई विभाजक रेखा नहीं होती।**''

प्रश्न 8. 'सीमा-रेखा' एकांकी के स्त्री पात्रों में कौन सर्वोत्कृष्ट पात्र है? उसका चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर—'सीमा-रेखा' एकांकी में चार स्त्री पात्र हैं—तारा, अन्नपूर्णा, सविता और उमा। इनमें सविता देशप्रेम और जन-कल्याण की भावना से ओत-प्रोत सर्वोत्तम नारी पात्र है। वह जनता के प्रिय नेता सुभाषचन्द्र की पत्नी है। **उसके चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं**—

निर्भीक एवं स्पष्टवादिनी—सविता 46 वर्षीया निर्भीक एवं स्पष्टवादिनी महिला है। वह उचित व सही बात को कहने में जरा भी संकोच नहीं करतीं। वह पुलिस के गोली चलाने का अपने ज्येष्ठ लक्ष्मीचन्द्र और शरतचन्द्र के सामने कड़ा विरोध करती है। वह कहती है कि ''**सरकार को जनता के विरोध के कारणों का पता लगाना चाहिए न कि गोली चलानी चाहिए।**''

जनता की प्रवक्ता—वह सरकार के सामने जनता की वकालत करती है। वह जनतन्त्र को जनता का राज बताती हुई कहती है कि जनतन्त्र में जनता की प्रतिष्ठा होनी चाहिए। वह शरतचन्द्र से कहती है कि ''**आप अपने को केवल शासक मानने लगे हैं, जबकि जनता के राज में शासक कोई नहीं होता, सब जनता के सेवक होते हैं।**''

उदार-हृदया नारी—सविता करुणा, परोपकार एवं त्याग के भावों से ओतप्रोत नारी है। वह सभी के प्रति समानता का भाव रखती है। अहंकार, स्वार्थ जैसे दुर्गुणों का उसमें पूरा अभाव दिखलाई पड़ता है।

क्रान्तिकारी विचार—वह देश के शासन के सुधार के लिए जन-आन्दोलन का समर्थन कारती है। जन-नेता सुभाषचन्द्र की पत्नी होने के कारण उसमें देशभक्ति कूट-कूटकर भरी हुई है।

विवेकशील—सविता एक विचार-विवेकशील स्त्री है और प्रत्येक बात के हर पहलू पर गहनता से विचार करने में सक्षम है। सत्य बात कहने में वह किसी भी प्रकार का संकोच नहीं करती। रिश्ते में शरतचन्द्र के बड़े होते हुए भी वह नि:संकोच उनसे अपनी बात कहती है—''**इस नाते-रिश्ते से ऊपर भी तो हम कुछ हैं। हम स्वतन्त्र भारत की प्रजा हैं, हम एक स्वतन्त्र देश के नागरिक हैं।**''

देशभक्त—सविता की दृष्टि में देश महान् है। वह पारिवारिक जनों की मृत्यु को राष्ट्र की क्षति बताती है। देश और जनता अलग-अलग नहीं हैं। वह उनके बीच कोई विभाजक रेखा नहीं मानती। उसका कहना है—''**देश क्या हमसे और हम क्या देश से अलग हैं?**''

प्रश्न 9. अन्नपूर्णा पुलिस द्वारा गोली चलाने का समर्थन क्यों करती है? उल्लेख कीजिए।

उत्तर—प्रस्तुत एकांकी का शीर्षक सार्थक, उपयुक्त एवं सोद्देश्य है। यह शीर्षक कथानक की मूल संवेदना की ओर संकेत करता है। जनता के द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों ने अपने और जनता के बीच जो विभाजक रेखा खींच ली, वह अनुचित है। एकांकी में उपमन्त्री शरतचन्द्र जनता के सामने जाने से कतराते हैं, जबकि जनता ने उन्हें अपने हित के लिए चुना है। 'सीमा-रेखा' राष्ट्रीय चेतना प्रधान एकांकी है। राष्ट्रीय चेतना के अभाव में दिन-प्रतिदिन के आन्दोलनों में राष्ट्रीय सम्पत्ति की हानि चिन्ता का विषय बन गई है। एकांकीकार ने प्रस्तुत एकांकी में इसी समस्या को उभारा है। एकांकीकार ने एक ही परिवार के चार भाइयों के संघर्ष को चार वर्गों के प्रतिनिधियों के रूप में चित्रित किया है। चारों भाई अपने-अपने वर्गों के प्रतिनिधि पात्र है। 'सीमा-रेखा' की कथावस्तु का चयन आज के लोकतन्त्र की विसंगतियों के बीच से किया गया है।

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि प्रस्तुत एकांकी 'सीमा-रेखा' एकांकी कला की दृष्टि से पूर्ण सफल है।

प्रश्न 10. 'सीमा-रेखा' शीर्षक की महत्ता को प्रस्तुत एकांकी के माध्यम से व्यक्त कीजिए।

उत्तर—प्रस्तुत एकांकी का शीर्षक सार्थक, उपयुक्त एवं सोद्देश्य है। यह शीर्षक कथानक की मूल संवेदना की ओर संकेत करता है। जनता के द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों ने अपने और जनता के बीच जो विभाजक रेखा खींच ली, वह अनुचित है। एकांकी में उपमन्त्री शरतचन्द्र जनता के सामने जाने से कतराते हैं, जबकि जनता ने उन्हें अपने हित के लिए चुना है। 'सीमा-रेखा' राष्ट्रीय चेतना प्रधान एकांकी है। राष्ट्रीय चेतना के अभाव में दिन-प्रतिदिन के आन्दोलनों में राष्ट्रीय सम्पत्ति की हानि चिन्ता का विषय बन गयी है। एकांकीकार ने प्रस्तुत एकांकी में इसी समस्या को उभारा है। एकांकीकार ने एक ही परिवार के चार भाइयों के संघर्ष को चार वर्गों के प्रतिनिधियों के रूप में चित्रित किया है। चारों भाई अपने-अपने वर्गों के प्रतिनिधि पात्र है। 'सीमा-रेखा' की कथावस्तु का चयन आज के लोकतन्त्र की विसंगतियों के बीच से किया गया है।

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि प्रस्तुत एकांकी 'सीमा-रेखा' एकांकी कला की दृष्टि से पूर्ण सफल है।

❑